पंचम गणधर भगवत् सुधर्मा स्वामि-प्रणीत षष्ट आगम अग

सचित्र
ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र

द्वितीय भाग

(मूल पाठ–हिन्दी, अग्रेजी अनुवाद सहित)

प्रधान सम्पादक
उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

सम्पादक
श्रीचन्द सुराना 'सरस'

प्रकाशक
पद्म प्रकाशन
पद्मधाम, नरेला मण्डी, दिल्ली–११० ०४०

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की
चौसठवी पावन दीक्षा जयन्ती पर प्रकाशित
सचित्र आगम माला का चतुर्थ पुष्प

सचित्र ज्ञाताधर्मकथाग सूत्र
(द्वितीय भाग)

प्रधान सम्पादक
उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

सम्पादक
श्रीचन्द सुराना 'सरस'

अग्रेजी अनुवादक
सुरेन्द्र बोथरा

चित्रकार
सरदार पुरुषोत्तमसिंह
सरदार हरविंदरसिंह

प्रकाशक

पद्म प्रकाशन
पद्मधाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

दिवाकर प्रकाशन
ए-७ अवागढ हाउस, एम जी रोड,
आगरा-२८२ ००२ फोन ३५११६५

प्रथम आवृत्ति
वि स २०५३ पौष
ईस्वी सन् १९९७, जनवरी

मूल्य
पॉच सौ रुपया मात्र

NAMO SUYADEVASSA

THE SIXTH AGAM-ANGA BY THE FIFTH GANADHAR, BHAGAVAT SUDHARMA SWAMI

ILLUSTRATED
JNĀTĀ DHARMA KATHĀNGA SŪTRA

SECOND PART

(ORIGINAL TEXT WITH HINDI AND ENGLISH TRANSLATIONS)

Editor-in-Chief
UP PRAVARTAK SHRI AMAR MUNI

Editor
SHRICHAND SURANA 'SARAS'

PUBLISHERS
PADMA PRAKASHAN
PADMADHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

Published on the occasion of the sixty fourth anniversary of the pious Diksha ceremony of Uttar Bharatiya Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj

THE FOURTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

Illustrated Jnātā Dharma Kathānga Sūtra
(Second Part)

Editor-in-Chief :
Up-pravartak Shri Amar Muni

Editor :
Srichand Surana 'Saras'

Translator :
Surendra Bothara

Illustrator :
Sardar Purushottam Singh
Sardar Harvinder Singh

Publishers :
PADMA PRAKASHAN
Padmadham, Narela Mandi, Delhi-110 040

DIWAKAR PRAKASHAN
A-7, Awagarh House, M G Road,
Agra-282 002 Phone 351165

First Edition :
Paush, 2053 Vikram
January, 1997

Price :
Rupees Five Hundred only

समर्पण

राष्ट्र संत उत्तरभारतीय प्रवर्त्तक
परम श्रद्धेय गुरुदेव
भण्डारी श्री पद्मचन्द्रजी महाराज सा.
की ६४ वीं दीक्षा जयन्ती
के उपलक्ष्य में सविनय
सभक्ति सादर समर्पित ...

— अमर मुनि
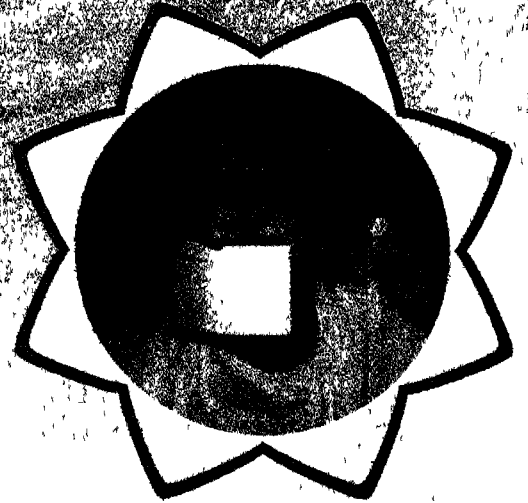
श्रुत सेवा में विशिष्ट सहयोग प्रदाता
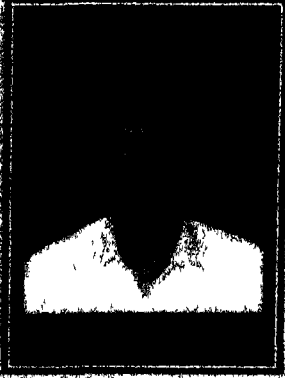
श्री रामकरण दास गोयल

धर्मपत्नी–श्रीमती कृष्णा देवी
सुपुत्र–अशोककुमार,
अजयकुमार
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

श्री सतपाल जैन

धर्मपत्नी–श्रीमती प्रेमलता
सुपुत्र–राजेशकुमार,
नरेशकुमार, राकेशकुमार
पेहवा मण्डी (हरियाणा)

श्री शोरीलाल जैन

सुपुत्र-स्व. श्री बालमुकुन्द
शाह जी जैन (आफ
रावलपिंडी) ने अपनी
धर्मपत्नी–श्रीमती गुणवंती
जैन की पुण्य स्मृति में
सहयोग प्रदान किया।

श्री [illegible] जैन

पिता–स्व. श्री [illegible] जी जैन
माता–श्रीमति शान्ति देवी जैन
घरौंडा मण्डी (हरियाणा)

श्री सुभाष जैन

धर्मपत्नी–श्री मती शशी जैन
भाई–सतीश जैन कमल जैन
सुपुत्र–अभिषेक जैन

प्रकाशकीय

इस ससार मे बुद्धिमान् और विद्वान् तो हजारो-लाखो मिलेगे, परन्तु ज्ञानी बहुत कम मिलेगे। ज्ञानी होने का मतलब है—जीव और जगत् के प्रति सतुलित ज्ञान तथा आत्मा-परमात्मा, जड-चेतन, अध्यात्म और विज्ञान की सही समझ और सही वर्तना। वही सतुलित जीवन जी सकता है और दूसरो को भी जीवन की सतुलित शैली सिखा सकता है।

धर्मशास्त्र ज्ञान देता है, जीवन जीने की कला सिखाता है। इसलिए हम धर्मशास्त्र को कोरी पुस्तक या ग्रन्थ नही कह सकते, वह शास्त्र है और शास्त्र जीवन पर, मन पर शासन करने वाला होता है। इसलिए वह मानव का तृतीय नेत्र है। आज की भाषा मे शास्त्र इसान का जमीर है, आत्मा का विवेक है। और इसीलिए शास्त्र-स्वाध्याय का अपना खास महत्त्व है।

उ भा प्रवर्त्तक गुरुदेव भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज सतत शास्त्र-स्वाध्याय की प्रेरणा देते रहते है। धर्मशास्त्र घर-घर मे पहुँचे, पढ़े जाये, उनका स्वाध्याय हो—यही उनकी हार्दिक इच्छा है, जीवन की बहुत बडी अभिलाषा है। इसलिए वे पिछले तीस से अधिक वर्षों से सतत प्रेरणा एव प्रचार करते रहे हैं। शास्त्र प्रकाशन के क्षेत्र मे उनकी प्रेरणा एव मार्गदर्शन से लगभग ३५ लाख रुपए से अधिक का साहित्य अब तक प्रकाशित/प्रचारित भी हो चुका है। यह हमारे लिए गौरव और प्रेरणा की बात है।

गुरुदेवश्री के प्रधान शिष्य, विद्वद्रत्न और प्रबल धर्म प्रचारक, प्रवचन भूषण उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज इस दिशा मे बड़े उत्साह और निष्ठा के साथ प्रयत्न कर रहे है। आपश्री के प्रयत्नो से पहले श्री प्रश्नव्याकरणसूत्र (दो भाग), श्री सूत्रकृतागसूत्र (दो भाग), भगवतीसूत्र (चार भाग) हिन्दी व्याख्या सहित प्रकाशित हुए। फिर आपश्री ने आगमो के सचित्र प्रकाशन की योजना पर कार्यारम्भ किया, जिसके अन्तर्गत अब तक अन्तकृद्दशासूत्र, उत्तराध्ययनसूत्र, कल्पसूत्र, तीर्थकर चरित्र एव ज्ञातासूत्र (प्रथम भाग) प्रकाशित हो चुके है। अब ज्ञातासूत्र का द्वितीय भाग पाठको के हाथो मे है।

हम चाहते है चित्रो मे रुचि लेकर पाठक इन शास्त्रो का स्वाध्याय करे। चित्रो के कारण कठिन विषय भी सरल बन जाने के कारण उन्हे समझने मे भी सुविधा रहेगी।

सचित्र आगम प्रकाशन के क्षेत्र मे गुरुदेवश्री के आशीर्वाद तथा उपप्रवर्त्तकश्री की सबल प्रेरणा एव प्रोत्साहन से प्रसिद्ध विद्वान् श्रीचन्द जी सुराना इस शास्त्र-सेवा के कार्य मे निष्ठापूर्वक सलग्न है और उनके सत्प्रयासो से यह कार्य सुचारु रूप से आगे बढ़ रहा है।

शास्त्र-सेवा के इस बहुत ही खर्चीले कार्य मे गुरुदेवश्री के अनेक श्रद्धालु भक्तजनो ने अपनी अन्त करण की प्रेरणा से उदारतापूर्वक सहयोग किया है और कर रहे है। अनेक विदुषी श्रमणियो ने भी इस कार्य मे सद्गृहस्थो को प्रेरणा प्रदान कर सहयोग का हाथ-बढ़ाया है और हमारी योजना को बल प्रदान किया है। हम आप सभी के सहयोग, सद्भाव का स्वागत करते है और आशा करते है कि भविष्य मे भी इसी प्रकार सहयोग मिलता रहेगा।

हम अपने पाठको से भी अपेक्षा करते है कि वे स्वय इन शास्त्रो को पढे, दूसरो को पढ़ने की प्रेरणा देवे तथा विभिन्न ज्ञान भण्डारो, पुस्तकालयो आदि मे भेट करे ताकि अन्य लोग भी लाभ उठा सके। विदेशो मे बसे अपने प्रिय मित्रो को भी अमूल्य उपहार रूप मे भेट भेजे। इसी शुभ भावना के साथ-

महेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष, पद्म प्रकाशन

PUBLISHERS NOTE

One may find thousands of intelligent and scholarly individuals in this world but it is hard to find even a few truly wise and sagacious ones Balanced knowledge of life and matter, right understanding of soul, super-soul (the God), living and non-living, spiritualism and science, and other such concepts, and moulding ones life accordingly makes a person truly wise or sagacious Only such an individual can lead a balanced life and inspire and guide others towards a balanced life style

Religious texts provide knowledge and teach the art of living As such, religious texts are not mere books, they are Shastras or that which rules over life and soul It is for this reason that they are known as the third eye of the humans In modern idiom Shastra is the morality and rationality of man That is why the study of Shastras is given so much importance

U B Pravartak Gurudev Bhandari Shri Padmachandra ji Maharaj always inspires his followers to study Shastras It is his earnest desire that religious texts reach every house and, more and more people read and study them In fact it is like an important ambition to him He has been working whole heartedly towards this goal for more than thirty years Thanks to his inspiration and guidance that in the field of publication alone, a large sum of thirtyfive lacs rupees has been spent till date This is a matter of pride as well as encouragement for us

The principle disciple of Gurudev Shri, Up-pravartak Shri Amar Muni ji Maharaj, who himself is a great scholar, strong propagator, and eloquent orator, is working hard in this direction with all sincerity and enthusiasm It was with his efforts that Shri Prashna-vyakaran Sutra (two volumes), Shri Sutra-kritanga Sutra (two volumes), and Shri Bhagavati Sutra (four volumes) were published After this, he launched the

project of publishing illustrated Agam literature Under this project the already published works are—Illustrated Antakritdasha Sutra, Illustrated Uttaradhyayan Sutra, Illustrated Kalpa Sutra, Illustrated Tirthankar Charitra and Jnata Sutra (First Part) We are now pleased to present the Jnata Dharma Katha Sutra (Second Part) to our readers

It is our earnest desire that the reader studies these texts with the help of the illustrations Even difficult and hard subjects are made simple and easy to comprehend with the help of illustrations Blessings of Gurudev Shri and continued inspiration by Up-pravartak Shri have drawn the famous scholar Srichand ji Surana and his team into this project and with his earnest efforts it is progressing satisfactorily

In this high cost project, many of Gurudev Shri's devotees have generously contributed and continue to do so Many scholarly Shraman's have extended a helping hand by inspiring devotees to contribute and thus bolstered our involvement in this project We gratefully welcome your good wishes and contributions and hope that it would continue in the future

We expect from our readers that they read, inspire others to read these attractive and informative publications, and send these as gift to various libraries and other such centres so that many others may be benefitted These books may also be sent to friends living abroad With the hope that you will respond—

Mahendra Kumar Jain
President, Padma Prakashan

श्रुत सेवा में विशिष्ट सहयोग प्रदाता

संघ शिरोमणि
स्व श्री पद्मश्री जी म.
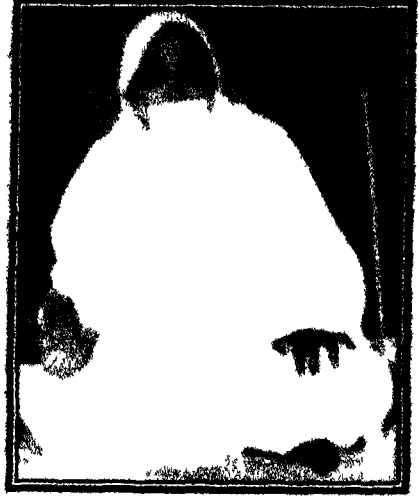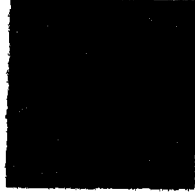
साध्वीरत्ना स्व. श्री प्रवेश कुमारी जी म.

उपप्रवर्तिनी श्री पवनकुमारी जी म

संघ शिरोमणि स्व श्री पद्मश्री जी म. की सुशिष्या उपप्रवर्तिनी श्री पवनकुमारी जी म की प्रेरणा से श्री हिमानी जैन की दीक्षा उपलक्ष्य में एक दानी सज्जन द्वारा ६३ हजार रुपया शास्त्र प्रकाशन में गुप्त दान प्राप्त हुआ।

तपचक्रेश्वरी
श्री मोहन माला जी म.

साध्वीरत्न स्व श्री प्रवेश कुमारी जी म की सुशिष्या तपचक्रेश्वरी श्री मोहनमाला जी म. के ऋषभ विहार क्षेत्र में ११२ व्रतों की प्रसन्नता में वैरागिन कुमारी आरती जैन ने ६३ हजार रु. शास्त्र प्रकाशन में दान दिए।

श्रुत सेवा में विशिष्ट सहयोग प्रदाता

स्व. श्री आत्माराम जैन
की पुण्य स्मृति

सुपुत्र—स्व पवनकुमार जैन
नेमकुमार जैन, दमनकुमार जैन,
सुशीलकुमार जैन
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
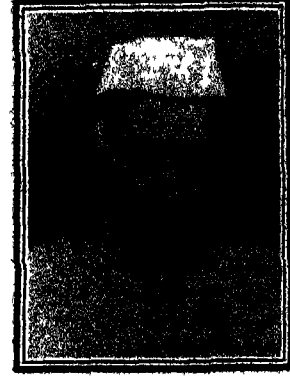
स्व. श्री मेलीराम जैन
की पुण्य स्मृति

सुपुत्र—सतपाल जैन,
यशपाल जैन, श्रीपाल जैन
सुरेन्द्रपाल जैन
कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

श्री चतरसैन जैन (हाट वाले)

सुपुत्र—कैलाश चन्द जैन
आनन्द कुमार जैन
शालीमार बाग, दिल्ली

श्री रामेश्वरदास जैन (भुआने वाले)

धर्मपत्नी—श्रीमती सुजानी देवी जैन
सुपुत्र—ओमप्रकाश जैन,
पवनकुमार जैन, रमेशचन्द जैन
पीतमपुरा, दिल्ली

आत्म-कथ्य

आत्मा को पवित्र और विशुद्ध बनाने वाला साधन है–धर्म। शुद्धि (उपादान) की दृष्टि मे धर्म का आधार है–आत्मा। किन्तु आत्म-शुद्धि के लिए साधना तप-जप आदि की क्रियाओ का सम्यक् ज्ञान होना भी जरूरी है और उस ज्ञान का निमित्त कारण है–शास्त्र। धर्म-ग्रन्थ।

प्रत्येक धर्म-परम्परा मे धर्म-ग्रन्थो का पठन-पाठन-स्वाध्याय-श्रवण इसलिए किया जाता है कि उनसे साध्य का, साधनो का ज्ञान भी होता है और जिन महापुरुषो व सत्पुरुषो ने धर्माचरण द्वारा अपना कल्याण किया है उनका प्रेरक पवित्र जीवन दर्पण की भाँति हमारे सामने उपस्थित हो जाता है, जिससे धर्माचरण की क्रिया सुविधाजनक हो जाती है।

भगवान महावीर ने जो धर्मोपदेश दिया, आत्म-शुद्धि की साधना का मार्ग बताया, उन धर्म-वचनो का सकलित रूप आगम है। आगम वाणी उस समय की लोक-भाषा प्राकृत–अर्द्धमागधी मे है। किसी समय अर्द्धमागधी जनता की बोलचाल की भाषा थी, परन्तु आज वह अनजान और कठिन भाषा बन गई है। इसलिए शास्त्र पढने से लोग कतराते है और केवल उनका अनुवाद अपनी भाषा मे पढ़कर ही सतोष कर लेते है।

भगवान महावीर के उपदेशो व तत्त्वज्ञान को विषयक्रम के अनुसार चार अनुयोगो मे बॉटा गया है, जिनमे एक अनुयोग है–धर्म-कथानुयोग। कथा, उदाहरण, दृष्टान्त व रूपक के द्वारा उपदेश देना और धर्म का तत्त्व समझाना एक सरल और रोचक शैली है। इसलिए कथानुयोग की शैली सबसे अधिक रुचिकर व लोकप्रिय बनी है। कथानुयोग मे जिन शास्त्रो/आगमो का नाम आता है उनमे **ज्ञाताधर्मकथागसूत्र** सबसे अधिक प्रसिद्ध और सबसे अधिक रोचक तथा सबसे बडा है। यो तो अन्तकृद्दशासूत्र, उपासकदशाग, अनुत्तरोपपातिक, निरयावलिका, राजप्रश्नीय, विपाकसूत्र आदि भी कथा-प्रधान होने से कथानुयोग मे ही गिने जाते है किन्तु ज्ञाताधर्मकथासूत्र का स्थान कुछ विशेषता रखता है। इस सूत्र की भाषा अन्य आगमो की अपेक्षा अधिक प्रौढ़, साहित्यिक और लालित्यपूर्ण है। अन्य कथाओं की अपेक्षा इसकी कथाएँ भी अधिक रोचक और विश्वस्तर की है। ज्ञातासूत्र की कुछ कथाएँ तो बौद्ध साहित्य मे, वैदिक ग्रन्थो व विदेशी कथा साहित्य मे भी मिलती है। जैसे मेघकुमार की कथा जातक के नन्द की कथा से, दो कछुओ की कथा गीता की टीकाओ मे तथा रोहिणी ज्ञात की कथा बाइबिल की मेथ्यू और लूक की कथा से काफी समानता रखती है। इससे यह प्रतीत होता है कि ज्ञातासूत्र की सैकड़ो कथाएँ धीरे-धीरे सम्पूर्ण विश्व साहित्य मे रूपान्तरित हो गई हैं।

अन्तरग परिचय

इस सूत्र का नाम **ज्ञाता-धर्म-कथा** है। जिस पर टीका करते हुए आचार्य श्री अभयदेवसूरि ने लिखा है-- ज्ञात का अर्थ है उदाहरण और धर्मकथा से तात्पर्य है प्रसिद्ध धर्म-कथाएँ। दोनो शब्द मिलकर बनता है--ज्ञात-धर्म-कथा। किन्तु कुछ विद्वानो का मत है कि यहॉ 'ज्ञात' शब्द प्राकृत शब्द 'नाय' से बना है। भगवान महावीर का एक नाम है ज्ञातपुत्र। नायपुत्त। यहाँ 'ज्ञात' शब्द भगवान महावीर की ओर सकेत करता है और तब इसका अर्थ होता है--ज्ञात-धर्म-कथाएँ अर्थात् भगवान महावीर द्वारा कथित धर्म-कथाऍ। यह अर्थ अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। ज्ञाताधर्मकथा का सरल अर्थ यह भी कर सकते है कि ज्ञाता अर्थात् सर्वज्ञ, भगवान महावीर। उनकी कही हुई धर्म-कथाऍ। ज्ञातासूत्र के दो श्रुतस्कध है। प्रथम श्रुतस्कध मे १९ अध्ययन है जबकि दूसरे श्रुतस्कध के १० वर्ग है।

प्रथम श्रुतस्कध की सभी कथाऍ स्वय उदाहरण हैं और फिर उपनय के साथ विषय को अधिक सगति देती है। इन कथाओं के माध्यम से अनेक प्रकार की शिक्षाएँ, तत्त्वज्ञान, प्रेरणा और साधक के लिए मार्गदर्शन मिलता है।

सचित्र आगम प्रकाशन माला

लगभग चार वर्ष पूर्व हमने पूज्य गुरुदेव उ भा प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की साठवी दीक्षा जयन्ती मनाई थी। तब मेरे मन मे सचित्र आगम प्रकाशन की भावना मूर्तरूप ले रही थी। उसी वर्ष मैने प्रयोग के रूप मे भगवान महावीर की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र का सचित्र सम्पादन प्रकाशन किया था। वह प्रयोग बहुत सफल रहा। सर्वत्र प्रशसित हुआ और आगम के अध्ययन से दूर रहने वाले भी चित्रमय आगम होने से रुचिपूर्वक पढने लगे। मेरे पास अनेक विद्वानो के, विज्ञ मुनिवरो के तथा अनेकानेक धर्म-प्रेमियो के पत्र आये और सभी ने इस प्रयास की मुक्त कठ से प्रशसा की। युग की इस आवश्यकता और उपयोगिता को देखकर हमने इस योजना को और आगे बढ़ाने का सकल्प किया। जिसके अन्तर्गत सचित्र अन्तकृद्दशासूत्र, सचित्र कल्पसूत्र, सचित्र तीर्थकर चरित्र, सचित्र ज्ञाताधर्मकथागसूत्र (प्रथम भाग) पाठको के हाथो मे पहुँच चुके है।

ज्ञातासूत्र काफी बडा होने से उसे दो भागो मे प्रकाशित किया जा रहा है। प्रथम भाग मे आठ अध्ययन लिए गये है। दूसरे भाग मे शेष सपूर्ण ज्ञातासूत्र लिया गया है।

इस सूत्र की सम्पादन शैली मे थोडा परिवर्तन भी किया है। आमुख मे सर्वप्रथम अध्ययन के शीर्षक का स्पष्टीकरण किया है जिससे अध्ययन का विषय ज्ञात हो सके तथा इसी के साथ कथा-सार भी दिया है।

मूल पाठ मे सूत्र सख्या की कोई निश्चित परम्परा प्राचीन प्रतियो मे नही अपनाई गई है अत इस सस्करण मे सूत्र सख्या कथा-प्रवाह की सुविधानुसार रखी गई है। मूल पाठ मे अपेक्षाकृत लम्बे तथा सयुक्त शब्दो मे सधि-स्थलो पर विराम चिह्न (डैश) दिये है जिससे पठन तथा उच्चारण मे सुविधा हो।

मूल पाठ मे वर्णनात्मक तथा विवरणात्मक अशो को अनेकानेक बार दोहराए जाने की शैली का प्रयोग हुआ है। अनुवाद में इन्हे यथासभव संक्षिप्त किया है तथा 'पूर्वसम' आदि इंगितों का प्रयोग किया गया है। चित्रो को अधिक सुगमता से बोधगम्य बनाने के लिए चित्र-शीर्षक के स्थान पर प्रत्येक चित्र के पीछे तत्सबधित कथा-प्रसग संक्षेप मे दिया गया है।

अध्ययन के अन्त में विशेष शब्दो का स्पष्टीकरण एव उपसहार तथा टीका मे आई हुई उपनय गाथाएँ भी ले ली हैं। इस प्रकार सम्पादन में सर्वांगता लाने का प्रयास किया है। टिप्पण एव परिशिष्ट की शैली मुझे कम पसन्द है, क्योकि उससे पाठक को इधर-उधर पृष्ठ उलटने पड़ते है। अत प्रत्येक अध्ययन से सम्बन्धित सभी सामग्री वही एक स्थान पर देने का प्रयास किया है। आशा है पाठको को यह शैली अधिक सुन्दर व रुचिकर लगेगी।

कृतज्ञता प्रदर्शन

परम पूज्य गुरुदेव उ भा प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के असीम आशीर्वाद से सचित्र आगम प्रकाशन का यह कार्यक्रम निर्विघ्न रूप से गति पकड रहा है यह मेरे लिए परम प्रसन्नता का विषय है। इस प्रकाशन मे सघ शिरोमणि स्व श्री पद्मश्री जी म की सुशिष्या उपप्रवर्तिनी श्री पवन कुमारी जी म तथा साध्वी रत्नाश्री प्रवेश कुमारी जी म की सुशिष्या तप-चक्रेश्वरी महासती उपप्रवर्तिनी श्री मोहनमाला जी के ११२ व्रतो (उपवास) के उपलक्ष्य मे श्रुत-सेवा के शुभ कार्य हेतु अनेक गुरुभक्त उदार सद्गृहस्थो ने अपना सहयोग करके गुरुभक्ति और श्रुतभक्ति का परिचय दिया है तथा शास्त्र-सेवा का पुण्य उपार्जन किया है। यह सभी के लिए अनुकरणीय है।

साहित्यकार श्रीचन्द जी सुराना ने सदा की भाँति इसके सम्पादन, मुद्रण मे अपनी सम्पूर्ण बौद्धिक-चेतना को नियोजित किया है तथा श्रीयुत सुरेन्द्र जी बोथरा ने सुन्दर सटीक अग्रेजी अनुवाद के साथ सपादन सहयोग करके इसकी उपयोगिता मे चार चॉद लगाये है। मै सभी के प्रति हार्दिक भाव से कृतज्ञ हूँ।

—अमर मुनि

NOTE FROM THE EDITOR-IN-CHIEF

The means of making the soul pious and pure is Dharma The subjective basis of Dharma is soul But in order to achieve the goal of purification it is essential to have the proper and working knowledge of the processes like penance, chanting, meditation, and other such practices The source of this knowledge are Shastra or religious scriptures

In every religious tradition the reading, teaching, listening, and study of religious books is done for the purpose of acquiring knowledge about the means of upliftment and the goal, they also give us vivid description of the inspiring lives of great and pious souls who have attained high status with the help of religious conduct All this helps us follow the right path or proper conduct

The religious teachings of Bhagavan Mahavir and the path of purification shown by him are compiled as Agams These scriptures are in the then prevailing language of the common man, Ardhamagadhi—Prakrit Some time in the past, Ardhamagadhi was the most popular language of the masses, but today it has become a lesser known and so a difficult language That is why people avoid reading original texts and are content with reading translations in the language they know

The teachings of Bhagavan Mahavir have been divided subject-wise into four categories titled Anuyog The first Anuyog or category is Dharma Kathanuyog or the category of religious stories To preach religion and explain its fundamentals with the help of stories, examples, instances, and metaphors is a simple and absorbing style As such, this category has proved to be the most accepted and popular one

Of the works listed in this category the most famous, interesting, and largest is Jnata Dharma Kathanga Although Antakritdasha Sutra, Upasakdashang, Anuttaropapatik, Niriyavalika, Rajprashniya, Vipak Sutra etc are listed in this category, Jnata Dharma Katha Sutra occupies a very special place The language of this scripture is mature, refined, and flowery As compared to the stories from other works those in this work are much more interesting and conforming to international standards

Some of the stories from Jnata Sutra have parallels in Buddhist, Vedic as well as foreign literature For example the story of Megh Kumar has a parallel in the story of Nand from the Jatak literature, the story of two tortoises has parallels in commentaries on Gita, the

story of Rohini has similarities with stories of Methew and Luke from the Bible All this points toward the fact that many stories from Jnata Sutra have slowly spread all around the world and have been adapted and absorbed in the world literature

INTRODUCTION TO THE TEXT

There are two sections in the Jnata Sutra The first section contains nineteen chapters and the second has ten sub-sections The name of this work is Jnata Dharma Katha Acharya Abhaya Dev Suri has commented on this term—Jnata means example and Dharma Katha means popular religious tales Both these combined mean—examples and religious tales Some scholars say that the word Jnata has been derived from the Prakrit word Naya One of the names of Bhagavan Mahavir is Naya-putta or Jnata-putra Here the word Jnata points towards Bhagavan Mahavir So according to this theory Jnata Dharma Katha means the religious stories told by Bhagavan Mahavir This interpretation appears to be more appropriate Another meaning is religious tales told by Jnata (omniscient or Bhagavan Mahavir)

All the stories in the first section are based on examples The verses drawing conclusion at the end of each story make it easy to grasp the lesson contained These stories impart moral values, knowledge of the fundamentals, inspiration, and guidance for spiritual practices

THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

About four years back we had celebrated the sixtieth anniversary of the Diksha ceremony of revered Gurudev U B Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji Maharaj At that time the plan for publication of illustrated Agams was taking shape in my mind The very same year I launched and concluded the editing and publication of the last sermon of Bhagavan Mahavir, Illustrated Uttaradhyayan Sutra The experiment proved to be highly successful It was widely acclaimed and even the unwilling started studying the illustrated Agam with interest I received numerous letters from scholars, scholarly ascetics, and devotees freely praising this effort I resolved to further this project looking at the prevailing need and usefulness of such works Illustrated Antakritdasha Sutra, Illustrated Kalpa Sutra, Illustrated Tirthankar Charitra and Illustrated Jnata Dharma Kathanga Sutra (First Part) have already been published under this scheme

As the Jnata Sutra is a voluminous work, it is being published in two parts First part contains eight chapters The remaining all Jnata Sutra has been taken in this second part

Some changes have been incorporated in the style of editing A section has been added before every chapter This contains explanation about the title and topic of this chapter and, gist of the story

In the old copies of the original text no established rule has been followed regarding the numbering of the paragraphs or Sutras As such, freedom has been taken in numbering the paragraphs according to the flow of the story In the Prakrit text dash has been given to break the long combined words to facilitate reciting

In the original text the descriptive and elaborative passages are repeated verbatim again and again This appears to be the writing style of that period However, in the translation such passages have been made as brief as possible using the indicators like (etc), (as mentioned earlier), etc To make the illustration easily understandable relevant brief excerpts from the stories have been given on the back of every illustration

At the end of the chapter a glossary, conclusion and the verses indicating the message of the story have been given Thus effort has been made to use an all enveloping editing style I do not like much the use of foot notes and appendices unless it becomes essential This is because in that style of editing the reader has to suffer breaks while reading, by repeatedly referring to foot notes and turning pages to look for appendices As such, effort has been made to provide all possible reference material with the chapter itself I hope that the readers would appreciate and like this style

ACKNOWLEDGEMENTS

It is a matter of extreme pleasure for me that with the blessings of revered Gurudev U B Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji Maharaj the project of publication of illustrated Agam literature is gathering speed By extending whole hearted support to this publication Tap-Chakreshwari Mahasati Sangh Shiromani late Shri Padmashri ji Maharaj's pupil Up-Pravartini Shri Pawan Kumari ji M and Sadhviratna Shri Pravesh Kumaari ji Maharaj's pupil Mahasati Up-Pravartini Shri Mohanmala ji M , many devoted and generous followers have revealed their devotion for the Guru and the word of the Lord Such gesture is exemplary and should be emulated by all

As always, Srichand ji Surana, an author and scholar in his own right, has incorporated all his acumen in editing and printing this work Shri Surendra Bothara has added to its utility by providing a comprehensive free flowing English translation as well as assistance in editing I express my sincere gratitude to them all

—**Amar Muni**

विषयानुक्रम

CONTENTS

सहयोग के प्रति आभार

ज्ञाता धर्मकथाग सूत्र के सम्पादन मे पाठ-शुद्धि एव अनुवाद आदि मे निम्न पुस्तको से सहयोग लिया गया उन आधारभूत आगम ग्रथो के सम्पादको-प्रकाशको के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना हमारा कर्त्तव्य है।

१ **णाया धम्म कहाओ**
सपादक मुनि जम्बूविजय जी
प्रकाशक श्री महावीर जैन विद्यालय, मुम्बई

२ **ज्ञाता धर्मकथांग सूत्र**
प्रधान सम्पादक युवाचार्य श्री मधुकर मुनि
सपादक प श्री शोभाचन्द्र जी भारिल्ल
प्रकाशक आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर

सचित्र

ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र

द्वितीय भाग

ILLUSTRATED

JNĀTĀ DHARMA KATHĀNGA SŪTRA

SECOND PART

नवम अध्ययन : माकन्दी : आमुख

शीर्षक–मायदी–माकन्दी–नाम विशेष। माकन्दी नाम के सार्थवाह के दो पुत्रो की कथा के माध्यम से पाँच इन्द्रियो सम्बन्धी भोगोपभोगो के प्रति आसक्ति और अनासक्ति के गुण-दोष तथा लाभ-हानि का मर्म समझाया गया है।

कथासार–चम्पानगरी मे माकन्दी नाम का एक सार्थवाह रहता था। उसके दो पुत्र थे–जिनपालित व जिनरक्षित। वे ग्यारह बार समुद्र-यात्राएँ कर चुके थे और बारहवी बार फिर जाना चाहते थे। उनके माता-पिता ने समझाया कि बारहवी यात्रा दु खदायी तथा अपशकुनी मानी गई है अत उन्हे यह विचार छोड देना चाहिए। किन्तु पुत्रो ने जिद की और अन्तत माता-पिता बिना मन के ही चुप रहे।

उन्होने अपने जहाज मे माल भर यात्रा आरम्भ की। समुद्र मे कई सौ योजन दूर निकल जाने के बाद उनका जहाज तूफान मे फँस कर डूब गया। सारा माल और यात्री डूब गए किन्तु दोनो माकन्दी-पुत्रो ने लकडी के एक बडे लट्ठे को पकड लिया और उसके सहारे तैरते हुए निकट के एक द्वीप पर जा पहुँचे। यह द्वीप रत्न-द्वीप कहलाता था।

उस द्वीप पर एक विशाल भवन मे एक नीच स्वभाव वाली देवी रहती थी, जिसका नाम रत्ना देवी था। अपने अवधिज्ञान मे देवी ने माकन्दी पुत्रो को विषम परिस्थिति मे घिरे देखा। वह तत्काल उनके पास पहुँची और कहा कि यदि वे अपने जीवन को अक्षुण्ण रखना चाहते है तो उसकी वासना इच्छा के आगे झुकना होगा। भयभीत माकन्दी-पुत्रो ने उसके प्रस्ताव को चुपचाप स्वीकार कर लिया।

देवी उन्हे अपने महल मे ले आई और उनके साथ भोग-विलास का आनन्द लेने लगी। कुछ दिनो के बाद लवण-समुद्र के आरक्षक सुस्थित देव ने इस देवी को समुद्र की सफाई के काम पर लगा दिया। देवी ने माकन्दी पुत्रो को यह बात बताई और आदेश दिया कि जब तक वह अपना काम पूरा कर लौटती नही वे उस भवन की सुविधाओ का उपयोग करते रहे। ऊब जाने पर वे पूर्वी उत्तरी, और पश्चिमी उद्यानो मे जा सकते है। किन्तु किसी भी परिस्थिति मे दक्षिणी उद्यान मे न जावे क्योकि वहाँ एक विशाल विषैला सर्प रहता है जो उन्हे तत्काल नष्ट कर सकता है। यह चेतावनी देकर देवी अपने काम पर चली गई। कुछ समय बाद दोनो भाई ऊब गए और उन्हे एकाकीपन खलने लगा। एक के बाद एक, वे तीनो उद्यानो मे गये पर वहाँ भी वे शीघ्र ही ऊब गये और तब वे दक्षिण दिशा वाले उद्यान की ओर बढ चले।

वहाँ वे एक विशाल वध स्थल पर पहुँचे तथा सूली पर चढे एक आदमी को रोते-कलपते देखा। उन्होने उसका परिचय पूछा तथा इस कठिन परिस्थिति का कारण भी। सूली पर चढे आदमी ने बताया कि वह कालन्दी नगरी का एक अश्व-व्यापारी है। उसका जहाज डूब गया था और वह तैरता हुआ रत्नद्वीप आ पहुँचा था। रत्नद्वीप की दुष्ट स्वभाव वाली देवी उसे अपने महल मे ले जाकर अपनी वासना शान्त करने लगी। एक दिन वह उससे क्षुब्ध हो गई और उसे इस दशा मे पहुँचा दिया।

माकन्दी-पुत्रो ने भयभीत हो उस देवी के चगुल से छूटने का उपाय पूछा। सूली पर चढे व्यक्ति ने बताया कि पूर्वी दिशा वाले उद्यान मे शैलक-यक्ष का मंदिर है जो घोडे के रूप मे रहता है। प्रत्येक चतुर्दशी, पूर्णिमा,

अमावस्या तथा अष्टमी के दिन वह प्रकट होकर समस्या ग्रसित लोगो की सहायता करता है। अत उन्हे पूर्वी उद्यान मे जाकर उसकी सहायता मॉगनी चाहिए।

माकन्दी पुत्र तत्काल पूर्वी उद्यान मे गये और यथाविधि यक्ष की पूजा करने लगे। यथा समय यक्ष प्रकट हुआ और उन्होने उससे सहायता मॉगी।

शैलक ने कहा–"जब समुद्र मे आधी दूरी पार कर लोगे तब वह देवी तुम्हे आकर्षित करने के लिए आएगी। यदि तुमने उसकी बातो पर ध्यान दिया तो मै तुम्हे अपनी पीठ से गिरा दूँगा। हॉ ! यदि तुमने उसकी चेष्टाओ पर ध्यान नही दिया और तुम्हारा मन चचल नही हुआ तो मै तुम्हे उसके चगुल से छुडा लूँगा।"

माकन्दी-पुत्रो ने यह शर्त स्वीकार कर ली। यक्ष ने एक विशाल घोडे का रूप धारण कर लिया। माकन्दी पुत्रो ने उसकी वन्दना की और उसकी पीठ पर सवार हो गए। यक्ष ने उडान भरी और आकाश मार्ग से चम्पानगरी की ओर यात्रा आरम्भ कर दी।

देवी जब महल मे लौटी और माकन्दी पुत्रो को नही पाया तो उसने अपने अवधिज्ञान का उपयोग करके देखा कि वे दोनों शैलक यक्ष की सहायता से समुद्र पार कर भाग रहे है। वह तत्काल उनके निकट पहुँची और बोली, "हे माकन्दी पुत्रो ! यदि तुम अपने जीवन की रक्षा करना चाहते हो तो मेरी इच्छा पूरी करो, मुझे प्यार करो। अन्यथा मै अभी अपनी तलवार से तुम्हारे सर काट दूँगी।'

माकन्दी पुत्र उसके इस प्रदर्शन से उद्विग्न नही हुए। तब उस देवी ने अनेक प्रकार के प्रलोभनो से उन्हे आकर्षित करने की चेष्टा की, पर वे सभी व्यर्थ हो गई। इस पर उसने अपने अवधिज्ञान से जिनरक्षित के मन मे झॉककर देखा। उसे जैसे ही वहाँ चचलता, दुर्बलता दिखाई दी उसने विशेष प्रयत्नो से उसे लुभाया। जिनरक्षित का मन डिग गया और उसने देवी की ओर घूमकर देखा। शैलक को उसके घूमने और देवी की ओर देखने का आभास हो गया उसने तत्काल जिनरक्षित को अपनी पीठ से गिरा दिया।

उस चण्डिका ने असहाय जिनरक्षित को शैलक की पीठ से गिरते हुए देखा तो तत्काल अपनी तलवार से उसके टुकडे-टुकडे कर समुद्र मे चारो ओर फेक दिये। इसके बाद उसने जिनपालित को लुभाने के प्रयत्न किये। परन्तु उसके सभी उपाय विफल गये तो वह थककर अपने स्थान को लौट गई।

जिनपालित को लेकर शैलक चम्पानगरी जा पहुँचा। वहाँ जिनपालित ने नगर मे प्रवेश किया और अपने घर पहुँचा। वह अपने माता-पिता के पास गया और रोते-रोते जिनरक्षित की मृत्यु के समाचार बताये। समय बीतने पर उसे शोक से मुक्ति मिली और वह सामान्य जीवन व्यतीत करने लगा।

कुछ समय बाद श्रमण भगवान महावीर चम्पानगरी पधारे। जिनपालित ने दीक्षा ले ली। अन्त समय आने पर उसने एक माह की सलेखना के पश्चात् देह त्यागी और देवलोक मे जन्म लिया। वहाँ से वह महाविदेह मे जन्म लेकर मुक्ति प्राप्त करेगा।

NINTH CHAPTER . MAKANDI : INTRODUCTION

Title—Mayandi—Makandi—a name Vices and virtues as well as the good and bad results of cravings and indifference for sensual pleasures have been explained with the help of the story of the two sons of the merchant named Makandi

Gist of the story—A merchant named Makandi lived in Champa He had two sons named Jinapalit and Jinarakshit They had done eleven sea voyages and wanted to go on a twelfth Their parents told them that a twelfth sea voyage is always inauspicious and painful and so they should abandon the idea The sons persisted and at last the parents relented

They filled their ships with cargo and commenced their voyage When they went hundreds of Yojans over the sea their ship was caught in a storm and it capsized All the cargo and the passengers drowned, but the sons of Makandi caught hold of a large wooden plank and drifted to a nearby island named Ratnadveep

On that island, in a large mansion, lived the evil goddess of Ratnadveep Through her magical powers she saw the sons of Makandi in their wretched state She at once arrived near them and said that if they wanted to save their lives they would have to submit to her libidinous designs The terror stricken sons of Makandi agreed to whatever she said

The goddess brought them to her palace and started satisfying her lust After some days, god Susthit gave her the job of cleaning the sea The goddess informed the sons of Makandi of this and said that as long as she was busy with this work they could enjoy the facilities of the large mansion If they got bored they could proceed to the eastern, northern, or western gardens But they should never go to the southern garden because in that garden lived a giant venomous serpent that could kill them instantaneously

The goddess proceeded for her job Soon the two brothers got bored and lonely One after the other, they went to the three gardens they were allowed to visit But soon they got bored with these and proceeded in the direction of the southern garden

There they came to a large execution ground and saw a person on a gibbet He was wailing pathetically They enquired about him and his desperate condition The man informed them that the execution ground belonged to the evil goddess and he was a horse trader from Kakandi His ship had capsized and he had drifted to Ratnadveep The goddess had taken him to her mansion and had indulged in her lewd enjoyments One day she got extremely annoyed with him and put him into his current predicament

The sons of Makandi got panicky and asked how could they save themselves from the clutches of the evil goddess? The man on the gibbet explained that in the eastern garden there was a temple of a demigod named Shailak, who was in the form of a horse On the

fifteenth, fourteenth and eighth days of every fortnight, he presented himself and offered help to the needy They should go to the eastern garden and seek his help

The sons of Makandi at once rushed to the eastern garden and started doing worship of the deity in the prescribed manner The Yaksha came and they sought his help

Shailak said, "When you are half way through the sea with me the goddess will try to distract you If you give heed to her gestures, I will throw you off my back However, if you ignore her gestures I will free you from her clutches "

The sons of Makandi accepted the condition Shailak transformed himself into a giant horse The sons of Makandi saluted Shailak and rode his back The Yaksha commenced its flight over the sea in the direction of Champa

When the evil goddess returned and found no trace of them she used her Avadhi Jnana (extra sensory perception of the physical world) and saw them crossing the sea with Shailak She lost her temper and arrived near them with divine speed When she came near them she uttered, "O sons of Makandi! you can save yourselves only if you love and desire me Otherwise I will behead you with this blue sword of mine

The sons of Makandi did not lose their composure at this outburst The goddess now resorted to her enticements, but in vain She then peeped into the mind of Jinarakshit through her Avadhi Jnana When she saw some weakness there she at once tried to exploit it Jinarakshit was allured and he looked at the goddess Shailak became aware of his turning He at once pushed Jinarakshit off of his back

The she-devil saw helpless Jinarakshit falling from the back of Shailak and with her sword she sliced Jinarakshit into pieces and threw them in all direction Later the evil-goddess approached Jinapalit and tried to disturb him in vain and returned to her abode

Carrying Jinapalit over the sea, Shailak at last reached Champa city Jinapalit went to his parents and tearfully gave the news of the demise of Jinarakshit Vanquishing his grief in due course, Jinapalit resumed his normal life

When Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the Champa city Jinapalit got initiated He left his earthly body after a month long fast and reincarnated as a god From there he will be reborn in the Maha-videh area and obtain liberation

■■

णवमं अज्झयणं : मायंदी
नवम अध्ययन : माकन्दी
NINTH CHAPTER : MAYANDI - MAKANDI

सूत्र १ जइ ण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं अट्ठमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स ण भते ! णायज्झयणस्स समणेण के अट्ठे पण्णत्ते?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने पूछा–"भते ! श्रमण भगवान महावीर ने सूत्र के आठवे ज्ञाता अध्ययन का जो यह अर्थ बताया है वह मैने सुना, कृपया बताये उन्होने नवम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! I have grasped the meaning of the eighth chapter of the Jnata as explained by Shraman Bhagavan Mahavir Now please tell me what is the meaning of the ninth chapter according to him "

सूत्र २ एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था। तीसे ण चपाए नयरीए कोणिए नाम राया होत्था।

तत्थ ण चपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नाम चेइए होत्था।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–हे जम्बू ! उस काल के उस भाग मे चम्पा नाम की एक नगरी थी। वहाँ कुणिक नाम के राजा राज्य करते थे।

चम्पानगरी के बाहर उत्तरपूर्व दिशा मे पूर्णभद्र नामक एक चैत्य था।

2. Sudharma Swami said— Jambu! During that period of time there was a city named Champa It was under the reign of a king named Kunik

In the north eastern direction of Champa there was a garden named Purnabhadra

सूत्र ३ तत्थ ण माकदी नाम सत्थवाहे परिवसइ, अड्ढे। तस्स ण भद्दा नाम भारिया होत्था। तीसे ण भद्दाए भारियाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था। तं जहा–जिणपालिए य जिणरक्खिए य। तए ण तेसि मागदियदारगाण अण्णया कयाइ एगयओ इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–

'एव खलु अम्हे लवणसमुद्द पोयवहणेण एक्कारस वारा ओगाढा, सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि निययघर हव्वमागया। त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! दुवालसम पि लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहित्तए।' त्ति कट्टु अण्णमण्णस्सेयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एव वयासी–

'एव खलु अम्हे अम्मयाओ! एक्कारस वारा त चेव जाव नियय घरं हव्वमागया। त इच्छामो ण अम्मयाओ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसमं लवणसमुद्द पोयवहणेण ओगाहित्तए।'

सूत्र ३ चम्पानगरी मे माकन्दी नाम का एक समृद्ध सार्थवाह (व्यापारी) रहता था। उसकी भद्रा नाम की पत्नी थी। भद्रा के दो आत्मज पुत्र थे जिनके नाम थे–जिनपालित और जिनरक्षित। दोनो माकन्दी पुत्रो ने एक बार परस्पर इस प्रकार विचार विनिमय किया–

"हमने जहाज द्वारा लवण-समुद्र की ग्यारह बार यात्रा की है। प्रत्येक बार हमने धन-लाभ किया, करने योग्य अन्य सभी कार्य किये और अन्त मे यथासमय निर्विघ्न घर लौटे। अत हे देवानुप्रिय! हम उसी प्रकार बारहवी यात्रा भी करे तो अच्छा होगा।" दोनो ने परस्पर विमर्श कर यह निर्णय ले लिया और अपने माता-पिता से बोले–

"हे माता-पिता! हम ग्यारह बार लवण-समुद्र की यात्रा से सफल व सकुशल लौट चुके है। अब आपकी आज्ञा प्राप्तकर हम बारहवी बार पुन वैसी यात्रा करना चाहते है।"

3. A wealthy merchant named Makandi lived in Champa The name of his wife was Bhadra The couple had two sons — Jinapalit and Jinarakshit One day these two sons of Makandi deliberated —

"We have made eleven voyages across the sea Every time we earned a lot of money, enjoyed as much as we could, and returned in time without any problem As such, Beloved of gods! It would be good if we go on a twelfth voyage " They both agreed and approached their parents for permission —

"Mother and father! We have successfully and safely completed eleven sea voyages With your permission we want to go on a sea voyage again, for the twelfth time "

यात्रा की अनुमति

सूत्र ४ तए ण ते मागदियदारए अम्मापियरो एव वयासी–'इमे ते जाया! अज्जग जाव परिभाएत्तए, त अणुहोह ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढी-सक्कार-समुदए। कि भे सपच्चवाएण निरालबणेण लवणसमुद्दोत्तारेण? एव खलु पुत्ता! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ। त मा ण तुब्भे दुवे पुत्ता दुवालसम पि लवणसमुद्द जाव ओगाहेह, मा हु तुब्भ सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ।

सूत्र ४ तब उनके माता-पिता ने इस प्रकार कहा–"हे पुत्रो ! तुम्हारे पुरखों, दादा-परदादा आदि की कमाई हुई अपार धन-सम्पत्ति हमारे पास है जो सात पीढियो तक हर प्रकार के उपभोग तथा वितरण के लिये यथेष्ट है। अत हे पुत्रो ! मनुष्योपयोगी इस विपुल ऋद्धि-सत्कार सामग्री का उपभोग करो। आपदाओ से भरे और आलम्बनरहित लवणसमुद्र मे तैरने से क्या लाभ? और फिर बारहवी बार लवण समुद्र की यात्रा सोपसर्ग (कष्टदायी) होती है, अत तुम मत जाओ, ताकि तुम्हारे शरीर को कष्ट न हो।

PERMISSION OF VOYAGE

4. The parents replied, "Sons! We have unlimited inherited wealth It is more than enough to last seven generations of consumption and distribution by our family Thus sons! enjoy this enormous means of grandeur, utility, and charity fully What is the use of floating adrift on the insecure and hazardous sea? Moreover, a twelfth sea voyage is inauspicious and dangerous So, in order to avoid any affliction to your bodies you should abandon the idea"

सूत्र ५ तए ण मागदियदारगा अम्मापियरो दोच्च पि तच्च पि एव वयासी–'एव खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारस वारा लवणसमुद्द ओगाढा। सव्वत्थ वि य ण लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघर हव्वमागया। त सेय खलु अम्मयाओ ! दुवालसंपि लवणसमुद्द ओगाहित्तए।

सूत्र ५ माकदी पुत्रो ने दुवारा-तिवारा फिर अपने माता-पिता से उन्ही शब्दो मे अपनी आग्रह पूर्ण प्रार्थना की। हे माता-पिता ! हमने ग्यारह वार सफलता प्राप्त की है अत अव बारहवी बार यात्रा करने की इच्छा है। (सू ३ के समान)

5. The sons of Makandi persisted, again and again repeating their request that having experienced eleven successful voyages they should be permitted to go on the twelfth (as in para 3)

सूत्र ६ तए ण ते मागदीदारए अम्मापियरो जाहे नो सचाएति बहूहि आघवणाहि य पन्नवणाहि य आघवित्तए वा पन्नवित्तए वा, ताहे अकामा चेव एयमट्ठ अणुजाणित्था।

सूत्र ६ माता-पिता जव उन माकदी पुत्रो को सामान्य वातो से अथवा विशेष बातो से समझाने-बुझाने मे असमर्थ रहे तव इच्छा नही होते हुए भी उन्हे समुद्र यात्रा की अनुमति दे दी।

6. When the parents failed in all their casual as well as persistent efforts, they reluctantly granted permission

सूत्र ७ : तए ण ते मागदियदारगा अम्मापिऊहि अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिम च मेज्ज च पारिच्छेज्जं च जहा अरहण्णगस्स जाव लवणसमुद्दं बहूइं जोयणसयाइ ओगाढा। तए

णं तेसि मागंदियदारगाणं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं।

सूत्र ७ : माता-पिता से आज्ञा प्राप्त कर माकंदी पुत्रों ने अपने जहाजों में गणिम (गिनती से बेचा जाने वाला), धरिम (तोल से बेचा जाने वाला), मेय (नाप से बेचा जाने वाला), तथा पारिच्छेद्य (काटकर बेचा जाने वाला) माल भर दिया जैसे अर्हन्नक श्रावक के वर्णन में है (अ. ८ देखें) और लवणसमुद्र में कई सौ योजन दूर निकल गए। वहाँ उनका अनेक प्रकार की आपदाओं से सामना हुआ।

7. Glad to get permission, the sons of Makandi filled their ships with all the four types of goods The four types were—Ganim (sold by counting), Dharim (sold by weight), Meya (sold by measurement), and Paricched (sold in parts) as mentioned in the story of Arhannak Shravak, (as detailed in ch 8, p 48) They commenced their voyage When they crossed hundreds of Yojans into the sea they faced a series of afflictions

लवण समुद्र में तूफान

सूत्र ८ : तं जहा—अकाले गज्जिय जाव (अकाले विज्जुए, अकाले) थणियसद्दे कालियवाए तत्थ समुट्ठिए।

तए णं सा णावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी सलिल-तिक्ख-वेगेहिं आयट्टिज्जमाणी आयट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि करतलाहते विव तेंदूसए तत्थेव तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य,

उप्पयमाणी विव धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा,
ओवयमाणी विव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगा,
विपलायमाणी विव महागरुलवेगवित्तासिया भुयगवरकन्नगा,
धावमाणी विव महाजण-रसियसद्दवित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी,
णिगुंजमाणी विव गुरुजणादिट्ठावराहा सुयण-कुलकन्नगा,
घुम्ममाणी विव वीची-पहार-सत-तालिया, गलिय-लंबणाविव गगणतलाओ,
रोयमाणी विव सलिलगंठि-विप्पइरमाणथोरंसुवाएहिं णववहू उवरतभत्तुया,
विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुयया महापुरवरी,
झायमाणी विव कवडच्छोमप्पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया,
णिसासमाणी विव महाकंतार-विणिग्गयपरिस्संता परिणयवया अम्मया,
सोयमाणी विव तव-चरण-खीण-परिभोगा चयणकाले देववरवहू,
संचुण्णियकट्ठकूबरा, भग्ग-मेढि-मोडिय सहस्समाला, सूलाइयवंक-परिमासा,

फलहतर-तडतडेत-फुट्टत-सधिवियलत-लोहकीलिया, सव्वग-वियभिया, परिसडिय-रज्जु-विसरत-सव्वगत्ता, आमगमल्लगभूया, अकयपुण्ण-जणमणोरहो विव चितिज्जमाणागुरुई,

हाहाकय-कण्णधार-नाविय-वाणियगजण-कम्मगार-विलविया,

णाणाविह-रयण-पणिय-सपुण्णा, बहूहि पुरिस-सएहि रोयमाणेहि कंदमाणेहि सोयमाणेहि तिप्पमाणेहि विलवमाणेहि एग मह अतोजलगय गिरिसिहर-मासायइत्ता सभग्ग-कूवतोरणा मोडिय-झय-दडा वलयसयखडिया करकरस्स तत्थेव विद्दव उवगया।

सूत्र ८ वे (आपदाएँ) इसप्रकार है--असमय गर्जना होन लगी और बिजली चमकने लगी। असमय ही तीव्र कडकडाहट जैसी ध्वनियो क साथ भयकर ऑधी चलने लगी।

और तब वह नाव काल तुल्य तूफानी हवा के प्रभाव मे बार-बार कॉपने लगी, इधर उधर डोलने लगी, डूबन उतरने लगी, तीव्र वेग वाली लहरो स टकराकर चक्कर लगाने लगी, और धरती पर पटकी हुई गेद की तरह यहॉ-वहॉ उठने-गिरने लगी।

जैसे सिद्धि प्राप्त विद्याधर कन्या धरती की सतह स उछलती है उसी प्रकार वह नाव उछलने लगी।

जेस विद्याभ्रष्ट विद्याधरकन्या गगन से नीचे गिरती है वैसे ही वह नाव गिरने लगी।

जेस विशाल गरुड स डरी हुई नागकन्या भागती है वैस ही वह नाव इधर-उधर भागने लगी।

जैसे खोई हुई बछेरी (अश्वकन्या) भीड के शोर से भयभीत हो दौडती है वैसे ही वह नाव भी दौडन लगी।

जैसे गुरुजनो द्वारा दोष जान लिय जान पर कुलीन कन्या नीच झुकने लगती है वैसे ही वह नाव झुकने लगी।

सैकडो लहरो क निरन्तर प्रहार स वह थरथराने लगी। वह नाव आकाश मे बिना सहारे रही वस्तु के समान नीचे गिरन लगी।

उसके पानी भर जोडो स जलधाराएँ बहने लगी मानो पति की मृत्यु पर कोई नववधू ऑसू बहा रही है।

उस नाव स विलाप के स्वर या उठ रह थ कि मानो किसी शत्रु राजा की सेना से घिरी हुई घोर महाभय से पीडित कोई श्रेष्ठ नगरी हो।

बगुले के समान कपट-सहित योग-साधनारत परिव्राजिका की तरह वह रह-रह कर स्थिर हो जाती थी।

विशाल जगल मे से पैदल चलकर आई वृद्धा गर्भवती स्त्री के समान वह नौका हॉफने लगी थी।

तपस्या के फलस्वरूप प्राप्त स्वर्ग के सुख समाप्त प्राय हो जाने पर च्यवन के समय जैसे कोई देवी शोक करती है वैसे ही वह नौका शोक-मग्न हो गई।

उसके काठ से बने भाग चूर-चूर हो गये। उसकी मेढी (मोटे लट्ठे का बना आधार) तथा माल (ऊपरी भाग), जहाँ सहस्रों यात्री बैठते थे, भग्न हो गये थे। उसका परिमास (नौका का काठ का एक भाग) सूली पर चढे व्यक्ति के समान मुड गया था।

लकडी के पाटियों को जोडने वाले लोहे के कील तडतडाकर निकल गये और जोडों के खुल जाने से उसके समस्त अवयव बिखर गये। रस्सों के गल जाने से उनसे बंधे जोड भी खुल गये। इस प्रकार वह नाव कच्चे सिकोरे जैसी हो गई। उसकी दशा पुण्यहीन व्यक्ति के मनोरथ जैसी दयनीय हो गई और चिंता से उसका भार बढ गया।

उस पर सवार कर्णधार, नाविक, व्यापारी, कर्मचारी आदि हाय ! हाय ! कर रो रहे थे।

अनेक प्रकार के रत्नों तथा बिक्री के माल से भरी रोने वाले, क्रन्दन करने वाले, शोक करने वाले और आँसू बहाने वाले सैकडों लोगों से भरी वह नाव जल मग्न (अदृश्य) एक पर्वत से टकरा गई। उसकी मस्तूल और तोरण टूट गये। ध्वज दंड मुड गया। उसके सैकडों काष्टखण्ड टूट गये। कड-कड की ध्वनि के साथ वह नाव वहीं डूब गई।

STORM IN THE SEA

8. Unexpected thunder and lightning started Suddenly a terrible storm with ear shattering whiplash sounds engulfed them

The ship whipped by a murderous stormy gale started trembling, swaying to and fro, vanishing and reappearing, circling around caught in the tremendous force of whirling waves and going up and down like a ball tossed on the ground

It went up as a divine girl with her acquired power ascends from the surface of the earth into the sky

It fell as a divine girl deprived of her powers falls from the heavens

It started running from one place to another as runs a serpent goddess afraid of a giant eagle

It started galloping like a colt frightened by uproar of a large crowd

It started bowing down as a girl from a cultured family bows when her elders become aware of her misdeed

It started trembling under the continuous thrashing of hundreds of waves That ship started falling down in the air like an unbound object

Water leaked from its joints in streams as if a newly wedded bride were shedding tears on the sudden death of her husband

Sounds of wailing came from that ship as if it were a gorgeous town under siege and deadly persecution by an attacking army

From time to time it became stable as if a phoney nun were meditating like a preying heron

The ship appeared to be gasping like an aging pregnant woman after a long and hard walk through a forest

It became mournful like a goddess about to descend to the earth at the end of her divine life-span earned by penance

Its wooden parts shattered, the main plank and the decks, where hundreds of passengers could alight, were damaged Its mast bent like a condemned man on a gibbet

The iron nails and pins popped out and all its components held together by them were scattered The decayed ropes also broke and all the joints became loose The ship became as fragile as an unbaked pot of clay Its condition was as precarious as the wish of an ill fated person The load of worry was added to its already heavy cargo

Every one aboard the ship including the crew and passengers were crying and wailing

Heavy with a variety of valuable cargo and hundreds of crying, wailing, mournful, and weeping passengers that ship hit a submerged mountain Its sails and mast broke down and the flag pole doubled With a loud noise the ship disintegrated into hundreds of pieces and capsized

सूत्र ९ तए णं तीए णावाए भिज्जमाणीए वहवे पुरिसा विपुलपडिय-भडमायाए अतोजलम्मि णिमज्जा यावि होत्था। तए णं मागदियदारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुला मेहावी निउणसिप्पोवगया वहुसु पोतवहण-सपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एग मह फलगखड आसादेंति।

सूत्र ९ नाव के डूवने के साथ अनेक लोग विपुल रत्न, व माल के साथ जल में डूव गये। किन्तु दोनो माकदी पुत्र चतुर, दक्ष, अर्थवान, कुशल, मेधावी, निपुण, शिल्प के ज्ञाता, नौका युद्ध जैसे अनेक भयावह कार्यों में विजय के अनुभवी, मूढता रहित तथा फुर्तीले थे। अत उन्होने लकडी का एक वडा लट्ठा पकड लिया।

9. With the boat all the valuable cargo and the passengers drowned However, the two sons of Makandi were wise, proficient, knowledgeable, sharp, skilled, artful, and experienced in naval war and other such fields, active, and agile They did not panic like others and caught hold of a large wooden plank

रत्न-द्वीप मे प्रवेश

सूत्र १० जम्मि च ण पदेसमि पोयवहणे विवन्ने, तसि च ण पदेसमि एग मह रयणदीवे णाम दीवे होत्था। अणेगाइ जोअणाइ आयामविक्खभेण, अणेगाइ जोअणाइ परिक्खेवेण, नानादुमसड-मडिउद्देस सस्सिरीए पासाईए, दसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

तस्स ण बहुमज्झदेसभाए तत्थ ण मह एगे पासायवडेसए होत्था–अब्भुग्गयमूसियपहसिए जाव सस्सिरीभूयरूवे पासाईए दसणिज्ज अभिरूवे पडिरूवे।

तत्थ ण पासायवडेसए रयणदीवदेवया नाम देवया परिवसइ, पावा, चडा, रुद्दा, खुद्दा, साहसिया।

तस्स ण पासायवडेसयस्स चउद्दिसि चत्तारि वणसडा किण्हा, किण्होभासा।

सूत्र १० जिस क्षेत्र म वह पोतवहन–जहाज नष्ट हुआ था उस क्षेत्र म निकट ही रत्न-द्वीप नाम का एक विशाल द्वीप था। उसकी लम्बाई चौडाई तथा घेरा अनेक योजन विस्तृत था। अनेक प्रकार के वृक्षो के वनो स भरा-पूरा वह द्वीप सुन्दर सुषमा वाला आनन्द देने वाला, दर्शनीय और विविध रूप वाला था।

उस द्वीप के मध्य म एक उत्तम भवन था। वह अत्यन्त ऊँचा और सुन्दर था।

उस भवन मे रत्नद्वीप देवी नामकी एक देवी रहती थी। वह पापी, चड, रौद्र, क्षुद्र व साहसी प्रवृत्ति वाली थी।

उस भवन की चारो दिशाओ म चार उद्यान थ जो घन श्याम रग तथा श्याम आभा वाले थ।

COMING TO RATNADVEEP

10. Near the spot where the ship had capsized was a large island known as Ratnadveep It was spread in an area of many Yojans Full of vegetation the island was beautiful scenic, enchanting and full of diversions

There was a large mansion in the middle of that island It was grand and beautiful

In this building lived the evil goddess of Ratnadveep who was sinful, violent, vicious, mean, and bold

On four sides of that mansion there were four lush green gardens
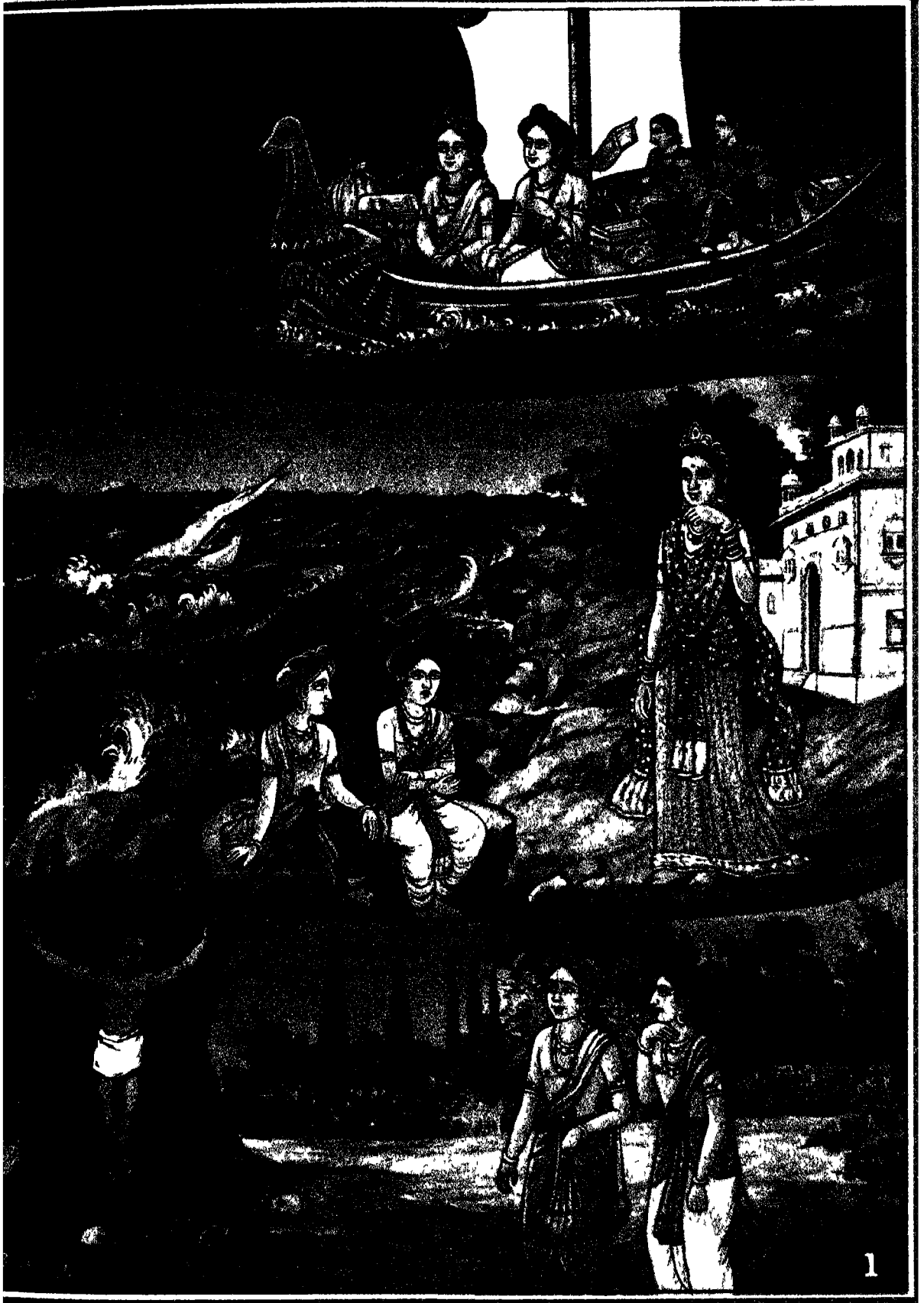
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

लवण समुद्र-यात्रा : रत्नद्वीप देवी

चित्र : १

१ चंपानगरी निवासी माकन्दी-पुत्र जिनपालित एवं जिनरक्षित बारहवीं बार समुद्र-यात्रा करते हुए लवणसमुद्र में अनेक योजन दूर चले गये। अचानक समुद्र में भीषण तूफान आया। नाव एक समुद्री पर्वत से टकराकर टूट गई।

२ दोनों भाई तैरते हुए रत्नद्वीप के तट पर पहुँचे। वहाँ विश्राम कर रहे थे, तभी रत्नद्वीप की देवी वहाँ आई। अनेक प्रकार का प्रलोभन तथा भय दिखाकर वह उन्हें अपने महलों में ले गई।

३ एक बार माकन्दी-पुत्र पूर्व-पश्चिम दिशा के उद्यानों में घूमते हुए दक्षिणदिशा के भयानक वनखण्ड में पहुँच गये। वहाँ एक विशाल वधस्थल दिखाई दिया जहाँ चारों ओर हड्डियों के ढेर (नर-कंकाल) पड़े थे। वहाँ शूली पर लटका एक पुरुष दिखाई देने पर भयभीत हुए माकन्दी-पुत्रों ने उससे पूछा–"तुम कौन हो? तुम्हारी यह दुर्दशा किसने की?" (नवम अध्ययन)

THE SEA VOYAGE : THE GODDESS OF RATNADVEEP

ILLUSTRATION 1

1 Jinapalit and Jinarakshit, the sons of Makandi of Champa, set out on their twelfth sea voyage When they went hundreds of Yojans on the sea their ship was caught in a storm and capsized

2 The two brothers drifted to an island named Ratnadveep While they were taking rest the evil goddess of Ratnadveep arrived there Using a variety of allurements and fear she took them to her palace

3 Once the sons of Makandi went into the three gardens they were allowed to visit Later they proceeded towards the southern garden They arrived at a large and stinking execution ground littered with heaps of skeletons There they saw a person on a gibbet Terrified, the sons of Makandi inquired about him and his desperate condition

(CHAPTER - 9)

सूत्र ११ . तए ण ते मागंदियदारगा तेण फलयखडेण उवुज्झमाणा उवुज्झमाणा रयणदीवतेण सवूढा यावि होत्था।

सूत्र ११ तब दोनो माकदी पुत्र लट्ठे के सहारे बहते-बहते रत्नद्वीप के निकट आ पहुँचे।

11. Drifting on the wooden plank the sons of Makandi arrived near Ratnadveep island

सूत्र १२ तए ण ते मागदियदारगा थाह लभंति, लभित्ता मुहुत्ततर आससंति, आससित्ता फलगखड विसज्जेंति, विसज्जित्ता रयणद्दीव उत्तरति, उत्तरित्ता फलाण मग्गणगवेसण करेति, करित्ता फलाइं गेण्हंति, गेण्हित्ता आहारेंति, आहारित्ता णालिएराण मग्गणगवेसण करेंति, करित्ता नालिएराइ फोडेति, फोडित्ता नालिएरतेल्लेण अण्णमण्णस्स गत्ताइ अब्भगति, अब्भगित्ता पोक्खरणीओ ओगाहिति, ओगाहित्ता जलमज्जण करेति, करित्ता जाव पच्चुत्तरंति, पच्चुत्तरित्ता पुढविसिलापट्टयसि निसीयति,

निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चपानयरि अम्मापिउआपुच्छण च लवणसमुद्दोत्तार च कालियवायसमुत्थण च पोयवहणविवत्ति च फलयखडस्स आसायण च रयणदीवुत्तार च अणुचिंतेमाणा अणुचिंतेमाणा ओहयमणसकप्पा जाव झियाएति।

सूत्र १२ उन माकदी पुत्रो को (जिनपाल-जिनरक्ष) को तट मिला तो घडीभर विश्राम करके लट्ठे को छोडा और रत्नद्वीप मे उतर गये। भूखे होने से वहाँ फल ढूढे और तोडकर खाये। इसके बाद उन्होंने नारियल ढूढे और फोडकर उनका तेल निकाल कर परस्पर मालिश की। मालिश के बाद वे एक बावडी मे उतरे और स्नान किया। तब बावडी से बाहर निकलकर एक चट्टान पर बैठ गए और शात हो विश्राम किया।

फिर वे आराम से बैठे-बैठे चम्पानगरी, माता-पिता से आज्ञा, लवण-समुद्र की यात्रा, तूफान, नौका टूट कर डूब जाना, लकडी के लट्ठे का मिलना और अन्त मे रत्नद्वीप मे आना, आदि का बार-बार स्मरण करने लगे। फलस्वरूप भग्न-हृदय (उदास-हताश) हुये और हथेली पर मुख रखकर चिन्ता मे डूब गये।

12. When they reached the shore they rested for a few moments and then left the plank They searched for some fruit bearing trees and satisfied their hunger After filling their bellies they looked around for coconut trees, plucked and broke open some coconuts, squeezed out some oily juice and massaged each other's bodies They entered a nearby fresh-water pond and took bath Once these essentials were over they sat down on a nearby rock and rested calmly

While resting they went over all the incidents of the recent past starting from the moment they got permission from their parents All the horrifying details of the storm and capsizing of their ship flashed into their memory again and again They were overwhelmed by fog of depression and, resting their chins on the palms, they started brooding

देवी की धमकी

सूत्र १३ · तए ण सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए ओहिणा आभोएइ, आभोइत्ता असिफलग-वग्ग-हत्था सत्तट्ठतालप्पमाण उड्ढं वेहास उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए वीइवयमाणी वीइवयमाणी जेणेव मागदियदारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरुत्ता मागदियदारए खर-फरुस-निट्ठुरवयणेहिं एव वयासी–

'हं भो मागंदियदारगा ! अप्पत्थियपत्थिया ! जइ ण तुब्भे मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरइ, तो भे अत्थि जीविय, अहण्ण तुब्भे मए सद्धि विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणा नो विहरइ, तो भे इमेणं नीलुप्पल-गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण खुरधारेणं असिणा रत्तगडमसुयाइ माउयाहि उवसोहियाइ तालफलाणि व सीसाइं एगते एडेमि।'

सूत्र १३ · उस समय रत्न-द्वीप की देवी ने अवधिज्ञान से माकन्दी पुत्रो को वहा आये देखा। उसने अपने हाथ में ढाल-तलवार ली और सात-आठ ताड जितनी ऊँचाई पर आकाश मे उड कर तीव्र दिव्यगति से चलती-चलती माकन्दी पुत्रो के निकट आई। उसने अपना क्रोध प्रकट कर तीखे, कठोर और निष्ठुर वचनो मे कहा–

"हे माकन्दी पुत्रो ! हे अनिच्छित (मृत्यु) की इच्छा करने वालो ! यदि तुम मेरे साथ विपुल काम-भोग भोगने को तैयार हो तो तुम्हारा जीवन बचेगा। वैसा न करने पर नील कमल, भैंसे के सीग, नीलम की मणि तथा अलसी के फूल के समान नीली और छुरे की धार के समान तीक्ष्ण इस तलवार से मै तुम्हारे ये तरुणाई से गुलाबी, दाढी-मूछो से शोभित और माता-पिता द्वारा सवार कर सुन्दर बनाए मस्तक ताडफल की तरह काट कर एक ओर डाल दूगी।

THREAT OF THE GODDESS

13 The evil goddess of Ratnadveep saw the sons of Makandi, through her magical powers, in this state of depression She at once got up, picked her sword and shield up and, flying with a divine speed at a height of eight to ten feet from the ground, arrived near the sons of Makandi Expressing her anger she uttered in harsh, cruel and commanding voice —

"O sons of Makandi! O desirous of the undesired! If you want to save your lives you will have to agree to enjoy libidinous and lusty pleasures of the

body with me If you refuse I will behead you with my sword which is blue as the blue lotus, buffalo horn, blue sapphire and Alsi flower, and sharp as a stiletto These rosy young heads with mustache and beard, trimmed and powdered with loving care by your parents, will be sliced off and thrown like palm-fruits "

सूत्र १४ तए ण ते मागंदियदारगा रयणद्दीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया सजायभया करयल जाव एव वयासी–जं ण देवाणुप्पिया वइस्ससि तस्स आणा-उववाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामो।

सूत्र १४ तब माकन्दीपुत्र देवी की यह बात सुन-समझकर डर गये। हाथ जोडकर वे बोले– "देवानुप्रिये ! आपके कहे अनुसार हम आपकी आज्ञा, सेवा, आदेश व निर्देश का पालन करेगे।"

14. These words of The evil goddess terrorized the sons of Makandi Joining their palms and bowing before the evil goddess they submitted, "Beloved of gods! As desired, we shall explicitly follow your orders, demands, instructions and directions "

सूत्र १५ तए ण सा रयणद्दीवदेवया ते मागंदियदारए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असुभपुग्गलावहार करेइ, करित्ता सुभपोग्गलपक्खेव करेइ, करित्ता पच्छा तेहि सद्धिं विउलाइ भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ। कल्लाकल्लि च अमयफलाइ उवणेइ।

सूत्र १५ देवी ने माकन्दी पुत्रो को साथ लिया और उन्हे अपने महल मे ले आई। वहाँ उनके शरीर से अशुभ पुद्‌गलो (मैल, गन्दगी) को दूर किया और शुभ पुद्‌गलो का प्रक्षेपण किया (लेप,सुगन्धादि द्वारा) और उनके साथ विपुल काम-भोग के सेवन मे लीन हो गई। उनके लिए प्रतिदिन अमृत जैसे मधुर फल लाने लगी।

15. The evil goddess brought along the sons of Makandi to her palace Once in the palace she arranged for them to get rid of the slime and other dirty particles from their bodies and to apply perfumes and other pleasant particles on their bodies And then she indulged in satisfying her carnal desires Every day she would bring sweet and nutritious fruits for them

शक्रेन्द्र का आदेश

सूत्र १६ तए णं सा रयणद्दीवदेवया सक्कवयणसंदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवणसमुद्द ति-सत्त-खुत्तो अणुपरियट्टियव्वेति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्त वा कट्ठ वा कयवरं वा असुइ पूईय दुरभिगंधमचोक्खं त सव्व आहुणिय आहुणिय ति-सत्त-खुत्तो एगते एडेयव्व ति कट्टु णिउत्ता।

सूत्र १६ . कुछ समय बाद लवणसमुद्र के अधिपति सुस्थित देव ने शक्रेन्द्र के निर्देशानुसार उस देवी को आज्ञा दी–"तुम्हे इक्कीस वार लवणसमुद्र का चक्कर काटना है। और हर बार उसमे रहे घास, पत्ते, काठ, कचरा, अशुचि, सडी-गली व दुर्गन्धित वस्तुओ को हिला डुलाकर समुद्र से निकालकर एकान्त स्थान मे डाल देना है।" इस प्रकार कहकर उस देवी को समुद्र की सफाई के कार्य मे नियुक्त कर दिया गया।

SHAKRENDRA'S ORDER

16. After some days, on the direction of Shakrendra (the king of gods) the god of the sea, god Susthit, ordered the evil goddess, "You have to go around the sea twenty one times and every time you have to collect all garbage, including grass, leaves, pieces of wood, and other decayed and decomposed things, and dump it at some remote isolated spot" With these words he appointed the evil goddess to the job of cleaning the sea

सूत्र १७ तए ण सा रयणद्दीवदेवया ते मागदियदारए एव वयासी–एव खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कवयणसदेसेण सुट्ठिएण लवणाहिवइणा त चेव जाव णिउत्ता। त जाव अह देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे जाव एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडिसए, सुहसुहेण अभिरममाणा चिट्ठह। जइ ण तुब्भे एयसि अतरसि उव्विग्गा वा, उस्सुया वा, उप्पुया वा भवेज्जाह, तो ण तुब्भे पुरच्छिमिल्ल वणसड गच्छेज्जाह।

सूत्र १७ रत्नद्वीप की देवी ने तव माकन्दी पुत्रो से कहा–हे देवानुप्रियो ! शक्रेन्द्र की आज्ञा से सुस्थित देव ने मुझे लवण-समुद्र की सफाई के काम मे नियुक्त किया है। मै जब तक लवण-समुद्र मे जाकर इस कार्य मे सलग्न रहूँ तब तक तुम इस श्रेष्ठ भवन मे आनन्दपूर्वक रमण करना। इस बीच मे यदि तुम ऊब जाओ, उत्सुक हो जाओ, अथवा कोई उपद्रव हो तो पूर्व दिशा के उद्यान मे चले जाना।

17. The evil goddess came to the sons of Makandi and said, "Beloved of gods! On the direction of Shakrendra I have been appointed by Susthit god to clean the sea As long as I am busy with this work you may enjoy the facilities of this large mansion In case you get bored or want to break the monotony, or face some problem you may proceed to the eastern garden

उद्यान वर्णन

सूत्र १८ : तत्थ ण दो उऊ सया साहीणा, त जहा–पाउसे य वासारत्ते य। तत्थ उ–

कदल-सिलिंध-दतो णिउर-वर-पुप्फपीवरकरो।

कुडयज्जुण-णीव-सुरभिदाणो, पाउसउउ-गयवरो साहीणो ॥१॥

तत्थ य–

सुरगोवमणि विचित्तो, दरदुकुलरसिय-उज्झररवो।

बरिहिणविंद-परिणद्धसिहरो, वासाउउ-पव्वतो साहीणो।।२ ।।

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहुसु वावीसु य जाव सरसरपंतियासु बहुसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा विहरेज्जाह।

सूत्र १८ उस उद्यान में पावस (आषाढ और श्रावण मास) तथा वर्षारात्र (भाद्रपद और आश्विन) ये दोनों ऋतुएँ सदा विद्यमान रहती हैं। यथा–

नई लताएँ और सिलिध्र (वर्षा ऋतु में फूटने वाला सफेद फूल वाला पौधा) जिसके दांत है; निकुर-वृक्ष के श्रेष्ठ फूल जिसकी सूंड है, कुटज, अर्जुन तथा नीम नाम के वृक्षो के फूल जिसका सुगधित मदजल है ऐसा गजराज रूपी पावस उस उद्यान में सदा स्वाधीन विचरता है।।१ ।।

इन्द्रगोप (सावन की डोकरी) आदि कीडो रूपी माणक आदि मणियों से सुशोभित, मेढकों की टर्र-टर्र के समान निर्झरो की ध्वनि से भरा, मयूरों रूपी चोटियो (शिखरो) वाला यह पर्वत रूपी वर्षारात्र उस वनक्षेत्र मे सदा स्वाधीन रहता है।।२ ।।

अत. हे देवानुप्रियो ! पूर्व दिशा के ऐसे उद्यान मे रही अनेक बावडियों में, अनेक सरोवरो की पक्तियो मे, अनेक लतामण्डपो, कली मडपों, पुष्प मंडपो आदि मे तुम सुखपूर्वक रमण करना।

DESCRIPTION OF THE GARDENS

18 The two seasons of Pawas and Varsharatra (monsoon) always prevail in the eastern garden

In that garden always roams free the elephant-like Pawas season with new creepers and the Silindhra plant (seasonal plant with white flowers) as its tusks, the large flowers of the Nikur tree as its trunk, and fragrant flowers of Kutaj, Arjun, and Neem as its humor (rut-fluid) (1)

In that garden is always present the mountain-like Varsharatra season with the beetles and other insects as its embellishment of scattered gems, the croaking of frogs as the crackling of its streams, and peacocks as its peaks (2)

So, Beloved of gods! move around in the eastern garden and enjoy its numerous pools, ponds, and dwellings covered with creepers, buds and flowers

सूत्र १९ : जइ णं तुब्भे एत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया उप्पुया वा भवेज्जाह, तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा–सरदो य हेमंतो य।

तत्थ उ–

सण-सत्तवण्ण-कउओ, नीलुप्पल-पउम-नलिण-सिगो।

सारस-चक्कवाय-रवित-घोसो, सरयउऊ-गोवती साहीणो॥१॥

तत्थ य–

सियकुंद-धवलजोण्हो, कुसुमित-लोद्धवणसंड-मंडलतलो।

तुसार-दगधार-पीवरकरो, हेमंतउऊ-ससी सया साहीणो॥२॥

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! वावीसु य जाव विहराहि।

सूत्र १९ यदि तुम वहाँ भी ऊब जाओ, उत्सुक हो जाओ, अथवा कोई उपद्रव हो जाये, तो तुम उत्तर दिशा के वन-खण्ड मे चले जाना। वहाँ भी शरद व हेमन्त दो ऋतुएँ सदा विद्यमान रहती हैं। यथा–

सन और सप्तपर्ण वृक्षो के फूल जिसका कुकुद (कधे पर का उठा हुआ भाग) है, नीलोत्पल, पद्म और नलिन फूल जिसके सीग है, और सारस तथा चकवा पक्षियो का कलरव जिसका घोष है ऐसा वृषभराज रूपी शरद वहाँ सदा स्वाधीन विचरता है ॥१॥

श्वेत कुन्द-पुष्प जिसकी धवल ज्योत्स्ना है; खिले हुए लोध्र (महुआ) फूलो वाला वनखण्ड जिसका आभा मडल है, और तुषार (हिम-बर्फ) के जल बिन्दुओ की धाराएँ जिसकी किरणे है ऐसा चन्द्रमा रूपी हेमन्त वहाँ सदा स्वाधीन विचरता है।॥२॥

हे देवानुप्रियो ! उत्तर दिशा के ऐसे उद्यान में तुम सुख पूर्वक रमण/क्रीडा करना। (पूर्व वर्णन समान)

19. In case there also you get bored or want to break the monotony, or face some problem you may proceed to the northern garden The two seasons of Sharad and Hemant (winter) always prevail in the eastern garden

In that garden always roams free the bull-like Sharad season with flowers of San-tree and Saptaparna-tree as its hump, the flowers of Neelotpal, Padma, and Nalin as its horns, and the combined noise of flocks of cranes and ruddy-goose as its thunder (1)

In that garden is always present the moon-like Hemant season with the white Kund flowers as its soothing glow, the clump of thickets of blossoming Lodhra plants as its orb, and streaming dew drops as its rays (2)

So, Beloved of gods! move around and enjoy the northern garden

सूत्र २० . जइ ण तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा जाव उस्सुया वा भवेज्जाह, तो णं तुब्भ अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ साहीणा, त जहा–वसंते य गिम्हे य। तत्थ उ–

सहकार-चारुहारो, किसुय-कण्णियारासोग-मउडो।

ऊसियतिलग बउलायवत्तो, वसंतउऊ-णरवई साहीणो॥१॥

तत्थ य–

पाडल-सिरीस-सलिलो, मलिया-वासंतिय-धवलवेलो.

सीयल-सुरभि-अनल-मगरचरिओ, गिम्हउऊ-सागरो साहीणो॥२॥

सूत्र २० : यदि तुम वहाँ भी ऊब जाओ (आदि–सूत्र १९ के समान) तो तुम पश्चिम दिशा के वन-खण्ड में चले जाना। वहाँ भी वसन्त (फाल्गुन-चैत्र) व ग्रीष्म (वैशाख-ज्येष्ठ) दो ऋतुएँ सदा विद्यमान रहती है। यथा–

आम के फूलो का जिसके मनोहर हार है, पलाश, कनेर और अशोक के फूलो का जिसके मुकुट है, ऊँचे-ऊँचे तिलक वृक्ष और बकुल वृक्ष के फूलो का जिसके छत्र है ऐसा बसन्त रूपी राजा वहाँ सदा विद्यमान रहता है॥१॥

पाटल और शिरीष के फूलो रूपी जल से जो परिपूर्ण है, मल्लिका और वासन्तिकी बेलो के फूल जिसका ज्वार है, शीतल और सुरभित पवन जिसके मगरो की हलचल है ऐसा ग्रीष्म ऋतु रूपी सागर वहाँ सदा विद्यमान रहता है॥२॥

20. In case you get bored there also, etc (as para 19) you may proceed to the western garden The two seasons of Vasant (spring) and Greeshm (Summer) always prevail in the western garden

In that garden always roams free the king-like Vasant season with mango flowers as his necklace, the flowers of Palash, Kaner, and Ashok as his crown, and the flowers of Bakul as his royal canopy (1)

In that garden is always present the sea-like Greeshm season with the Patal and Shirish flowers as its immense spread of water; the flowers of Mallika and other seasonal creepers as its tide; and the cool fragrant wind as the disturbance caused by marine creatures (2)

दक्षिण दिशा में जाने का निषेध

सूत्र २१ : जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा उस्सुया भवेज्जाह, तओ तुब्भ जेणेव पासायवडिसए तेणेव उवागच्छेज्जाह, उवागच्छित्ता ममं पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह। मा ण तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह।

तत्थ णं महं एगे उग्गविसे चंडविसे घोरविसे महाविसे अइकाय-महाकाए। जहा तेयनिसग्गे–मसि-महिस-मूसाकालए नयणविसरोसपुण्णे अंजण-पुंजनियरप्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-चंचल

चलंतजीहे धरणियलवेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडिल-कक्खड- वियड-फडाडोव-करणदच्छ लोहागार-धम्ममाण-धमधमेंतगोसे अणागलिय-चंड-तिव्वरोसे समुहिय तुरियं चवलं धमधमत दिट्ठीविसे सप्पे य परिवसइ।

मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ।

सूत्र २१ · यदि तुम वहाॅ भी ऊब जाओ (आदि–सूत्र १९ के समान) तो इसी अपने भवन मे लौट आना और यही ठहर कर मेरी प्रतीक्षा करना। किन्तु भूल कर भी दक्षिण दिशा वाले वन-खण्ड मे मत चले जाना।

वहाॅ उग्र, चड, घोर तथा महा विषधारी और अन्य सब सर्पों से विशाल काया वाला एक सर्प रहता है। वह सर्प काजल, भैसे और कसौटी के समान काला है। नेत्र-विष और रोष से भरा है। काजल के ढेर जैसी चमक है उसमे। उसकी आँखे लाल और दोनों जीभे लपलपाती रहती है। वह पृथ्वी रूपी स्त्री की वेणी के समान है। वह सर्प उत्कट (दूसरो से नही रुकने वाला), स्फुट, कुटिल, जटिल, कर्कश तथा विकट है और फण फैलाने मे दक्ष है। वह लुहार की धौंकनी की धम-धम ध्वनि के समान घोष करता रहता है। उसका प्रचड और तीव्र रोष कोई रोक नही सकता। वह कुत्ते के भौंकने जैसी ध्वनि उत्पन्न करता रहता है। वह फुर्तीला और चपल है तथा उसकी दृष्टि विष की तीव्रता से दपदपाती रहती है। अत कही ऐसा न हो कि तुम वहाॅ जा पहुॅचो और तुम्हारे शरीर नष्ट हो जाएँ।

PROHIBITION TO GO SOUTH

21. In case you get bored, etc (as para 19) you should return to this mansion and wait for me But under no circumstance should you ever go to the southern garden

In that garden dwells a violent, ferocious, vicious and highly venomous serpent It is larger than any other snake It is as black as soot, buffalo, or black granite It is filled with anger and poison in its eyes It shines like a heap of lamp-black It is coiled like the hairdo of a woman That serpent is indomitable, large, sly, wicked, harsh and fierce It spreads its hood wide It emits hissing sound as loud as a blacksmith's bellow Its violent anger is impossible to pacify It produces rattling sound as loud as the barking of a dog It is quick and agile and its eyes glow with the intensity of its eye-venom

As such, ensure that you do not go there even accidentally and get your bodies destroyed

सूत्र २२ : ते मागदियदारए दोच्चं पि तच्चं पि एवं वदइ, वदित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए देवगईए लवणसमुद्दं ति-सत्त-खुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था।

सूत्र २२ : देवी ने माकन्दी पुत्रों को यह चेतावनी दो तीन बार दी। फिर उसने वैक्रिय समुद्घात करके तीव्र गति से लवण समुद्र के इक्कीस चक्कर काटना आरम्भ कर दिया।

22. The evil goddess warned the sons of Makandi two three times and then she transformed herself into a form suitable for the task at hand and with divine speed commenced her scheduled twenty one trips around the sea.

वन में परिभ्रमण

सूत्र २३ : तए णं ते मागंदियदारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडिंसए सइं वा रइं व धिइ वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवया अम्हे एवं वयासी-एवं खलु अहं सक्कवयणसदेसेण सुट्ठिएण लवणाहिवइणा जाव वावत्ती भविस्सइ, त सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्लं वणसंड गमित्तए।' अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति। उवागच्छित्ता तत्थ णं वावीसु य जाव अभिरममाणा आलीघरएसु य जाव विहरंति।

सूत्र २३ देवी के जाने के कुछ देर बाद ही उस भवन में मधुर कल्पना, रति (आनन्द), और धृति का अनुभव नही होने पर ऊबकर दोनो माकन्दी पुत्रो ने परस्पर बात की-"देवानुप्रिय ! रत्नद्वीप देवी ने हम से कहा है कि वह शक्रेन्द्र के इंगित पर लवणसमुद्र के अधिपति सुस्थित देव के आदेशानुसार कार्य हेतु जा रही है अत हम दक्षिण दिशा के वन-खण्ड मे न जावे अन्यथा वहाँ शरीर के नष्ट होने की सभावना है। इसलिए भाई ! हमें पूर्व दिशा के वनखण्ड मे चलना चाहिए।" दोनो भाई इस योजना से सहमत हो गये और पूर्व दिशा के वनखण्ड में चले आये। वहाँ वे बावडी आदि मे क्रीडा करते हुए लता मंडपो आदि मे घूमने लगे (पूर्व सम-सू. १८)।

EXCURSIONS

23 Some time after the departure of the evil goddess the two brothers felt the absence of pleasant feelings, physical pleasures, and satisfaction. They deliberated, "Beloved of gods! The evil goddess of Ratnadveep has informed us that she is going on an assignment entrusted to her by god Susthit, the lord of seas, on the direction of Shakrendra She has prohibited us to go to the southern garden due to the fear of our destruction As such, brother! we should go to the eastern garden" They both agreed and accordingly proceeded to the eastern garden and started roaming around and enjoying the water bodies, flower covered dwellings etc (as detailed in para 18).

सूत्र २४ : तए णं ते मागंदियदारया तत्थ वि सइं वा जाव अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तत्थ णं वावीसु य जाव आलीघरएसु य विहरंति।

सूत्र २४ : कुछ समय पश्चात् वहाँ भी मधुर कल्पना, सुख आदि (सू २३) के अभाव मे घूमते घूमते वे उत्तर दिशा के वनखण्ड मे चले गये और पूर्ववत् विचरने लगे (सू. १८)।

24. After some time, there also, they felt the absence of pleasant feelings, etc (as in para 23), proceeded to the northern garden, and started roaming around (as detailed in para 18)

सूत्र २५ : तए ण ते मागदियदारया तत्थ वि सइं वा जाव अलभमाणा जेणेव पच्चत्थमिल्ल वणसंडे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जाव विहरंति।

सूत्र २५ : उत्तर दिशा के वनखण्ड मे भी मन न लगने पर वे पश्चिम दिशा के वनखण्ड मे गये और पूर्ववत विचरने लगे (सू १८)।

25. After some time, in the northern garden also, they felt the absence of pleasant feelings, etc (as in para 23), proceeded to the western garden, and started roaming around (as detailed in para 18)

सूत्र २६ तए णं ते मागंदियदारया तत्थ वि सइं वा जाव अलभमाणा अण्णमण्ण एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणद्दीवदेवया एव वयासी–'एव खलु अह देवाणुप्पिया ! सक्कस्स वयणसदेसेणं सुट्ठिएणलवणाहिवइणा जाव. मा ण तुब्भ सरीरगस्स बावत्ती भविस्सइ।' त भवियव्वं एत्थ कारणेण। त सेयं खलु अम्ह दक्खिणिल्ल वणसंडं [illegible]मित्तए, त्ति कट्ट अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र २६ माकन्दी पुत्रो को जब वहॉ भी शान्ति नही मिली तो उन्होने परस्पर विचार किया– "हे देवानुप्रिय ! रत्नद्वीप देवी ने हमसे यह कहा कि वह शक्रेन्द्र के निर्देशानुसार सुस्थित देव के आदेश से कार्यवश जा रही है तथा हमे दक्षिण दिशा के वनखण्ड मे नही जाना चाहिए अन्यथा हमारे शरीर का नाश हो जायेगा (विस्तार सू १७-२१ के समान)। तो इसका कोई कारण होना चाहिए। इसलिए हमे दक्षिण दिशा के वनखण्ड मे भी जाना चाहिए।" इस बात पर सहमत हो दोनो दक्षिण दिशा की ओर चल दिए।

26 When the sons of Makandi could not get the desired mental satisfaction in the western garden also they again deliberated, "Beloved of gods! The evil goddess of Ratnadveep has informed us that she is going on an assignment entrusted to her by god Susthit, the lord of seas, on the direction of Shakrendra She has prohibited us to go to the southern garden due to the fear of our destruction (details as in para 17-21) There must be some purpose behind this and as such, we should go to the southern garden and find out" Agreeing on this they both proceeded in the direction of the southern garden

दक्षिण दिशा के वन का रहस्य

सूत्र २७ : तए णं गंधे निद्धाति से जहानामए अहिमडेइ वा जाव अणिट्ठतराए चेव।

तए णं ते मागदियदारया तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं सएहिं उत्तरिज्जेहि आसाइं पिहेंति, पिहित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया।

सूत्र २७ : कुछ दूर चलते-चलते दक्षिण दिशा से तीव्र दुर्गन्ध आने लगी। ऐसा लगता था जैसे किसी मृत सर्प अथवा अन्य पशु की सडी देह से निकली सडांध हो या कि कोई उससे भी अधिक अनिष्टकर अप्रिय दुर्गन्ध हो।

माकन्दी पुत्रों ने उस अशुभ गध से घबराकर अपने उत्तरीय वस्त्रों से मुँह ढक लिये और आगे दक्षिण दिशा वाले वनखण्ड मे जा पहुँचे।

THE SECRET

27. After covering some distance an obnoxious stench came from the south It appeared to be the stench of the decomposed corpse of a snake or some other animal In fact, it was even more obnoxious and repelling than that

The sons of Makandi, disturbed by the stench, covered their faces with their shawls and entered the southern garden

सूत्र २८ . तत्थण महं एग आघायणं पासति, पासित्ता अट्ठियरासिसतसंकुलं भीमदरिसणिज्जं एग च तत्थ सूलाइतय पुरिस कलुणाइ विस्सराइ कट्ठाइं कुव्वमाण पासंति, पासित्ता भीया जाव सजायभया जेणेव से सूलाइयपुरिसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी–

'एस ण देवाणुप्पिया ! कस्साघायणे? तुम च णं के कओ वा इहं हव्वमागए? केण वा इमेयारूवं आवइं पाविए?'

सूत्र २८ . वहाँ उन्होने एक विशाल वधस्थल देखा। हड्डियो के ढेरो से भरे उस भयावह स्थल पर उन्होने सूली पर चढाए एक व्यक्ति को करुण, विरस और कष्टमय क्रन्दन करते देखा। इस दृश्य से वे बहुत घबरा गये। मन मे बडा भय उत्पन्न हुआ। फिर भी वे उस सूली पर चढ़े व्यक्ति के निकट जा कर बोले–

"हे देवानुप्रिय ! यह वधस्थल किसका है? तुम कौन हो और यहाँ क्यो आये थे? किसने तुम्हे इस विपत्ति मे डाला?"

28. There they saw a large execution ground At that awesome place, filled with scattered heaps of bones, they saw a person on a gibbet He was

wailing painfully, pathetically and woefully This scene filled them with fear and terror. However, they approached the individual and asked—

"Beloved of gods! Who owns this execution ground? Who are you and what has brought you here? Who has put you into this predicament?"

सूत्र २९ . तए णं से सूलाइयपुरिसे मागंदियदारए एवं वयासी--'एस णं देवाणुप्पिया ! रयण-द्दीवदेवयाए आघायणे, अहण्ण देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदीए आसवाणियए विपुल पडियभंडमायाए पोतवहणेणं लवणसमुद्द ओयाए। तए णं अहं पोयवहणविवत्तीए निब्बुड्ड-भंडसारे एग फलगखंडं आसाएमि। तए णं अहं उवुज्झमाण उवुज्झमाणे रयणदीवंतेणं संवूढे। तए णं सा रयणद्दीवदेवया ममं ओहिणा पासइ, पासित्ता मम गेण्हाइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विपुलाइं भोग-भोगाइं भुंजमाणी विहरइ।

तए णं सा रयणद्दीवदेवया अन्नया कयाई अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी मम एयारूवं आवइ पावेइ।

तं णं णज्जइ णं देवाणुप्पिया ! तुम्हं पि इमेसि सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ?'

सूत्र २९ शूली पर चढ़े उस पुरुष ने माकन्दी पुत्रो से कहा–"हे देवानुप्रियो ! यह रत्नद्वीप की देवी का वधस्थल है। मैं जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे स्थित काकदी नगरी का निवासी एक अश्व-व्यापारी हूँ। मै बहुत से अश्व और भाण्डोपकरण अपनी नाव मे भर कर लवणसमुद्र मे निकला। जहाज के टूट जाने से मेरा सारा श्रेष्ठ माल समुद्र में डूब गया। मुझे लकडी का एक पाटिया मिल गया, जिसके सहारे तैरता-तैरता मै रत्नद्वीप के निकट आ पहुँचा। रत्नद्वीप की देवी ने अपने अवधिज्ञान से मुझे देखा और ग्रहण कर लिया। फिर वह मेरे साथ विपुल काम-भोगो का आनन्द लेने लगी। इसके कुछ समय बाद एक बार वह देवी किसी छोटे से अपराध के कारण मुझ पर अत्यन्त कुपित हो गई और मुझे इस विपदा मे डाल दिया।

"देवानुप्रियो ! पता नही तुम्हारे इन शरीरो को भी किस आपत्ति का सामना करना पडे ?"

29. The man on the gibbet replied, "Beloved of gods! This execution ground belongs to the evil-goddess of Ratnadveep I am a horse trader from the town of Kakandi in the Bharat area of the Jambu continent I had filled my ship with horses and various other merchandise and set out on a sea voyage. As my ship capsized all my merchandize drowned into the sea I caught hold of a wooden plank and drifted to Ratnadveep The evil goddess became aware of me through her super natural powers and took me to her mansion There she had all her lusty enjoyments with me After some time she got extremely annoyed with me on some minor mistake and put me into this predicament

"Beloved of gods! Who knows what tortures your bodies may also have to suffer?"

सूत्र ३० : तए णं ते मागंदियदारया तस्स सूलाइयगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म बलियतरं भीया जाव संजातभया सूलाइययं पुरिसं एवं वयासी–'कहं णं देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थरिज्जामो?'

सूत्र ३० शूली पर टगे उस पुरुष की यह कथा सुन-समझकर दोनो माकन्दी पुत्र और भी अधिक भयभीत और आक्रान्त हो गये। उन्होने पूछा–"देवानुप्रिय ! रत्नद्वीप की इस देवी के चगुल से हम अपने प्रयत्नो से कैसे निस्तार पा सकते हैं?"

30. When they listened and comprehended what the man on the gibbet said, the terror and panic of the sons of Makandi increased They asked, "Beloved of gods! How can we free ourselves from the clutches of the evil goddess of Ratnadveep?"

सूत्र ३१ तए ण से सूलाइयए पुरिसे ते मागंदियदारगे एव वयासी–एस ण देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ले वणसडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नाम आसरूवधारी जक्खे परिवसइ।

तए णं से सेलए जक्खे चोद्दसट्ठमुद्दिट्ठ-पुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया महया सद्देण एव वदइ–'कं तारयामि? क पालयामि?'

त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरच्छिमिल्ल वणसंड सेलगस्स जक्खस्स महरिह पुप्फच्चणियं करेह, करित्ता जण्णुपायवडिया पजलिउडा विणएण पज्जुवासमाणा चिट्ठह।

जाहे ण से सेलए जक्खे आगयसमए एवं वएज्जा–'क तारयामि? कं पालयामि?' ताह तुब्भे वदह–'अम्हे तारयाहि, अम्हे पालयाहि।' सेलए भे जक्खे परं रयणद्दीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थि णित्थारेज्जा। अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाण का मण्णे आवई भविस्सइ।

सूत्र ३१ उस व्यक्ति ने माकन्दी पुत्रो को बताया–"देवानुप्रियो ! पूर्व दिशा के वनखण्ड मे शैलक नाम के यक्ष का यक्षायतन है। जहा अश्व का रूप धारण किये वह यक्ष रहता है।

"वह यक्ष चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या और पूर्णिमा के दिन एक निश्चित समय पर उच्च स्वर मे पुकारता है–'किसका तारण करूँ? किसका पालन करूँ?'

"अतः हे देवानुप्रियो ! तुम पूर्व दिशा के वनखण्ड में जाना और शैलक यक्ष की फूलो से उसी प्रकार पूजा करना जैसे महान लोगो की पूजा की जाती है। पूजा के बाद घुटने और पैर झुका कर, दोनों हाथ जोडकर विनय पूर्वक उसकी सेवा में खड़े हो जाना।

"जब निश्चित समय आने पर वह यक्ष पुकारे–'किसका तारण करूँ? किसका पालन करूँ?' तब तुम कहना–'हमारा तारण करें! हमारा पालन करें!' और तब वह शैलक यक्ष ही स्वय इस रत्नद्वीप की देवी के चगुल से तुम्हार निस्तार करेगा। अन्यथा तुम्हारे शरीरो को क्या क्या कष्ट भोगना पड़ेगा, मैं नही कह सकता।"

31. The man on the gibbet explained, "Beloved of gods! In the eastern garden there is a temple of a Yaksh (a demigod) named Shailak He lives there in the form of a horse

"On the fifteenth, fourteenth and eighth day of every fortnight at a fixed time that Yaksh announces loudly—'Who needs my protection? Who needs freedom?'

"So, Beloved of gods! Go to the eastern garden and worship Shailak Yaksh with flowers as is done to other great souls After this, stay there in a humble posture with bent knees and joined palms

"When at the fixed time he calls, 'Who needs my protection? Who needs freedom?' you should say, 'Protect us! Free us!' And then Shailak Yaksh will himself free you from the clutches of the evil goddess of Ratnadveep Otherwise it is hard to say what tortures your bodies may have to suffer"

शैलक यक्ष की शरण में

सूत्र ३२ तए ण ते मागदियदारगा तस्स सूलाइयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म सिग्घ चड चवलं तुरिय वेइयं जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसडे, जेणेव पोक्खरिणी, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं गाहति, गाहित्ता जलमज्जण करेंति, करित्ता जाइ तत्थ उप्पलाइं जाव गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता आलोए पणाम करेंति, करित्ता महरिह पुप्फच्चणिय करेंति, करित्ता जण्णुपायवडिया सुस्सूसमाणा णमसमाणा पज्जुवासंति।

सूत्र ३२ सूली पर टगे उस व्यक्ति की यह बात सुन-समझकर माकन्दी पुत्र शीघ्र, प्रचण्ड, चपल, त्वरित वेगवाली गति से चल कर पूर्व दिशा के वनखण्ड मे एक पुष्करिणी के निकट गये। पुष्करिणी मे उतरे, स्नान किया और वहाँ से कमल, उत्पल, नलिन, सुभग आदि कमल जाति के पुष्प एकत्र कर शैलक यक्ष के यक्षायतन मे आए। यक्ष की ओर दृष्टि कर उसे प्रणाम किया और यथाविधि पुष्प-पूजा की। इसके बाद घुटने और पैर नीचे झुका हाथ जोड उपासना मे लग गए।

IN REFUGE OF SHAILAK

32. On hearing and comprehending the advice of the man on the gibbet the sons of Makandi at once rushed to the eastern garden They stopped near

a stream, got into it and bathed. They collected different species of lotus flowers including Utpal, Nalin, Subhag, etc. and entered the Yaksh temple Standing before the idol they offered salutations and then bending their knees and joining their palms they started worshiping the deity in the prescribed manner

सूत्र ३३ : तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वयासी–'कं तारयामि? कं पालयामि?'

तए णं ते मागंदियदारया उट्ठाए उट्ठेंति, करयल जाव एवं वयासी–'अम्हे तारयाहि। अम्हे पालयाहि।'

तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदियदारए एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भे मए सद्धिं लवणसमुद्देणं मज्झमज्झेणं वीइवयमाणेणं सा रयणद्दीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गं करेहिइ। त जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणद्दीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवएक्खह वा तो भे अहं पिट्ठातो विधुणामि। अह ण तुब्भे रयणद्दीवदेवयाए एयमट्ठ णो आढाह, णो परियाणह, णो अवेक्खह, तो भे रयणद्दीवदेवयाहत्थाओ साहत्थि णित्थारेमि।'

सूत्र ३३ : तब वहाँ निश्चित समय आने पर शैलक यक्ष ने पुकारा–"किसका तारण करूँ? किसका पालन करूँ?"

माकन्दी पुत्र खडे हुए और हाथ जोडकर बोले–"हमारा तारण करिए, हमारा पालन करिए !"

इस पर शैलक यक्ष ने कहा, "देवानुप्रियो ! जब तुम मेरे साथ लवणसमुद्र के मध्य पहुँचोगे तब वह पापिनी, चण्ड, रुद्र, क्षुद्र और साहसी देवी तुम्हे अनेक प्रकार के कठोर, कोमल, अनुकूल, प्रतिकूल, सुन्दर तथा मोहक उपायो से डिगाने का प्रयत्न करेगी। हे देवानुप्रियो ! यदि तुम उस देवी के आग्रह का आदर करोगे, स्वीकार करोगे या आकर्षित भी हो जाओगे, तो मैं तुम्हें अपनी पीठ से नीचे गिरा दूगा। और यदि तुमने वैसा नही किया, उसकी ओर आकर्षित नहीं हुए तो मैं अवश्य स्वय ही रत्नद्वीप की देवी के चगुल से तुम्हें छुटकारा दिला दूँगा।"

33. At the fixed time the Yaksh called—"Who needs my protection? Who needs freedom?"

The sons of Makandi stood up and with joined palms submitted, "Protect us! Free us!"

At this request Shailak Yaksh said, "Beloved of gods! When you are half way through the sea with me that sinful, violent, vicious, mean and bold evil

goddess will try to distract you by a variety of harsh and tender, favourable and unfavourable, and attractive and enchanting methods Beloved of gods! If you honour, accept, or even give heed to her inviting gestures, I will throw you off my back However, if you do not do that and ignore her gestures I will certainly free you from the clutches of the evil goddess of Ratnadveep "

सूत्र ३४ · तए णं ते मागदियदारया सेलग जक्खं एवं वयासी-'ज णं देवाणुप्पिया ! वइस्संति तस्स ण उववायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामो।

सूत्र ३४ · माकन्दी पुत्रों ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिय ! आप जैसा कहेगे हम उसी के अनुसार उपासना (सेवा), वचन (आदेश), तथा निर्देश (आज्ञा) पालन मे ही रहेंगे।"

34 The sons of Makandi replied, "Beloved of gods! we shall strictly adhere to your advice, instruction, and direction "

शैलक द्वारा उद्धार

सूत्र ३५ तए ण से सेलए जक्खे उत्तरपुरच्छिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएण समोहणइ, समोहणित्ता सखेज्जाइं जोयणाइ दड निस्सरइ, दोच्च पि तच्च पि वेउव्विय-समुग्घाएण समोहणइ, समोहणित्ता एग मह आसरूव विउव्वइ। विउव्वित्ता ते मागंदियदारए एव वयासी-'ह भो मागदियदारया ! आरुह ण देवाणुप्पिया ! मम पिट्ठंसि।'

सूत्र ३५ तब शैलक यक्ष उत्तर-पूर्व दिशा मे गया और वैक्रिय समुद्घात कर अपने शरीर को सख्यात योजन के एक दड मे परिवर्तित किया। पुन दो बार वही क्रिया करके उसने एक बडे विशाल अश्व का रूप धारण किया और माकन्दी पुत्रो से कहा-"हे माकन्दी पुत्रो ! मेरी पीठ पर चढ जाओ।"

DELIVERANCE BY SHAILAK

35. Shailak Yaksh went in the north-eastern direction and with the help of Vaikriya Samudghat transformed himself into an enormous rod Going through the same process twice again he finally transformed himself into a giant horse He then called the sons of Makandi, "O sons of Makandi! come, ride on my back "

सूत्र ३६ तए ण से मागदियदारया हट्ठतुट्ठा सेलगस्स जक्खस्स पणाम करेति, करित्ता सेलगस्स पिट्ठि दुरूढा

तए ण से सेलए ते मागदियदारए पिट्ठिं दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतालप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहाय उप्पयइ, उप्पइत्ता य ताए उक्किट्ठाए तुरियाए देवयाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव चपानयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

2
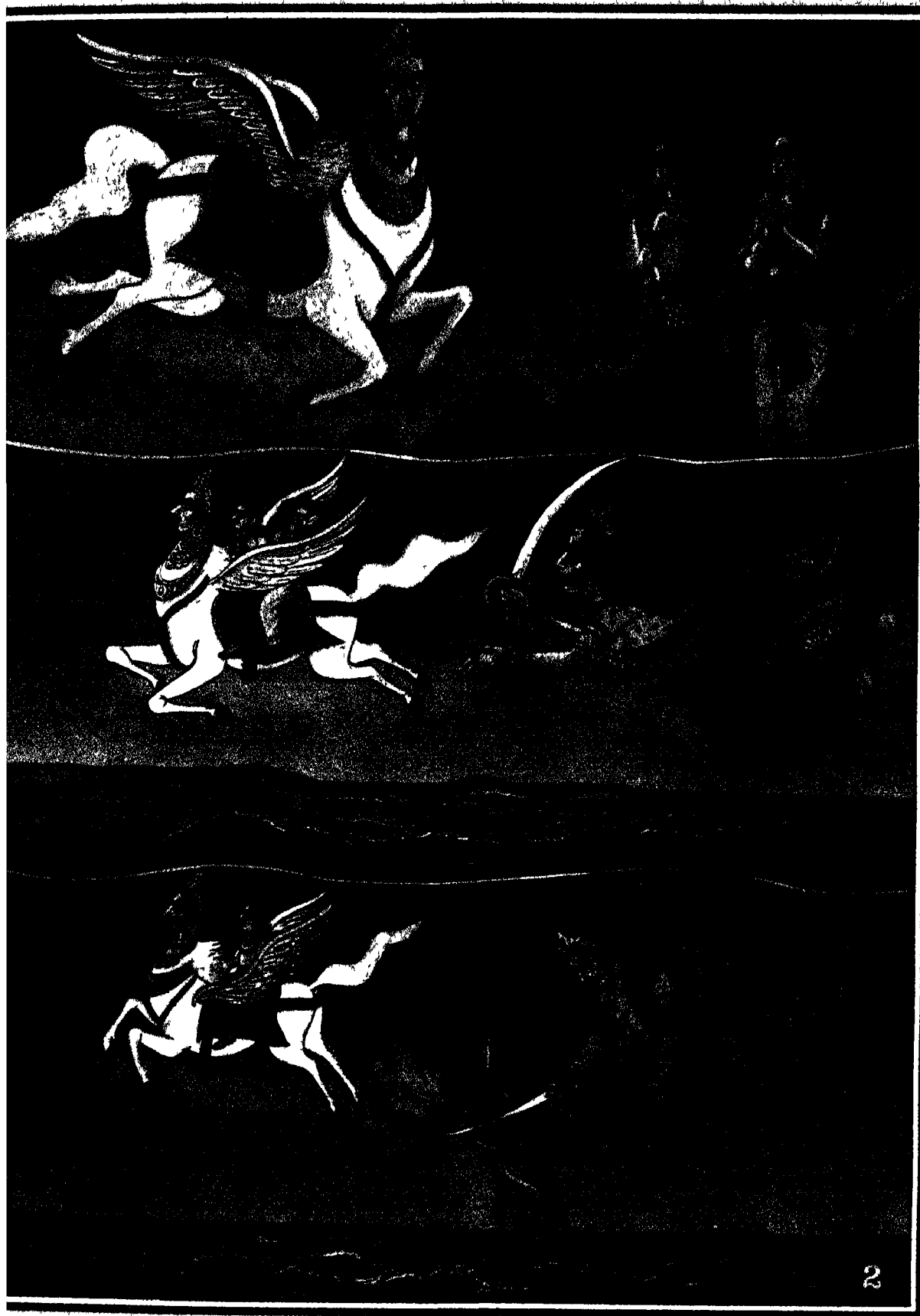
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

प्रलोभनों का दुष्परिणाम

चित्र २

सूली पर टँगे पुरुष के बताये अनुसार भयभीत हुए दोनों भाइयों ने देवी के चंगुल से छूटने के लिए शैलक यक्ष की पूजा एवं प्रार्थना की-"इस दुष्ट देवी के चंगुल से हमारी रक्षा कीजिए।' यक्ष ने अपनी शर्त रखी-"मैं अश्वरूप धारणकर तुम्हें पीठ पर बैठाकर इच्छित स्थान पर पहुँचा सकता हूँ, किन्तु देवी के मायाजाल में लुभाकर जरा सा भी मन विचलित कर दिया तो मैं पीठ पर से गिरा दूँगा। यदि तुम स्थिर चित्त रहे तो तुम्हें सुरक्षित पहुँचाऊँगा।'

शर्त मान्य करने पर विशाल अश्वरूप धारणकर शैलक यक्ष ने उन्हें पीठ पर बिठाया और समुद्र के ऊपर से चंपानगरी की तरफ उड़ा। पता लगते ही देवी हाथ में तलवार लेकर पीछे दौड़ी। उसके मधुर वचनों से जिनरक्षित का मन कुछ विचलित हो उठा। उसने पीछे मुड़कर देखा। तभी शैलक यक्ष ने उसे पीठ पर से गिरा दिया। क्रूर देवी ने बीच में ही उसे झेल लिया और तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (नवम अध्ययन)

THE CONSEQUENCES OF ATTRACTION

ILLUSTRATION 2

As advised by the man on the gibbet sons of Makandi started doing worship of Shailak Yaksh, "To free themselves from the clutches of the goddess " The Yaksh came and said, "When you are half way accross the sea the goddess will try to distract you If you give heed to her gestures, I will throw you off of my back However, if you ignore her gestures I will free you from her clutches "

The sons of Makandi agreed Shailak transformed himself into a giant horse, took them on his back, and commenced his flight over the sea towards Champa When the evil goddess found them crossing the sea she rushed after them with her sword and tried to lure them with sweet words Jinarakshit was lured and looked at the goddess Shailak became aware of this and pushed him off of his back The she-devil sliced Jinarakshit into pieces with her sword Stable-minded Jinapalit reached home safely

(CHAPTER - 9)

सूत्र ३६ : माकन्दी पुत्रों ने प्रसन्न और सन्तुष्ट होकर यक्ष को प्रणाम किया। फिर वे शैलक की पीठ पर चढ गए।

उन्हें अपनी पीठ पर चढा देख अश्वरूपी शैलक यक्ष आकाश में सात-आठ ताड की ऊँचाई पर उडा और उत्कृष्ट दिव्य गति से लवणसमुद्र के बीच से जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में स्थित चम्पानगरी की दिशा में रवाना हो गया।

36. The happy and contented sons of Makandi saluted Shailak Yaksh and rode its back

Taking them on its back the Yaksha in the form of a horse jumped to a height of seven to eight palm trees and commenced its flight over the sea in the direction of Champa city in the Jambu continent with its divine speed

देवी की धमकी

सूत्र ३७ : तए ण सा रयणद्दीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ, जं जत्थ तणं वा जाव एडइ, एडित्ता जेणेव पासायवडेसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते मागंदियदारया पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरच्छिमिल्ले वणसंडे जाव सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता तेसिं मागंदियदारागाणं कत्थइ सुइं वा अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले वणसडे, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ते मागंदियदारए सेलएण सद्धि लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणे वीइवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडग गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठ जाव उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जेणेव मागंदियदारगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एव वयासी–

'ह भो मागदियदारगा ! अपत्थियपत्थिया ! किं ण तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा? तं एवमवि गए जइ णं तुब्भे ममं अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं, अहण्ण णावयक्खह तो भे इमेण नीलुप्पलगवल. जाव एडेमि।

सूत्र ३७ उधर रत्नद्वीप की देवी ने लवण समुद्र के चारो ओर इक्कीस चक्कर लगाए और उसमे रहा समस्त कचरा आदि दूर कर दिया। यह कार्य सम्पन्न करके वह अपने भवन मे आई। वहाँ जब उसने माकन्दी पुत्रो को नहीं देखा तो वह पूर्व दिशा के वनखण्ड मे गई और सब जगह उनकी खोज की। वहाँ भी जब उनकी कोई आवाज तक सुनाई नहीं दी तो वह उत्तर दिशा के वनखण्ड में गई। फिर वह पश्चिम दिशा के वनखण्ड मे भी गई, परन्तु वे कहीं भी नहीं दिखाई दिए। तब उसने अवधि- ज्ञान प्रयोग से देखा कि माकन्दी पुत्र शैलक यक्ष के साथ लवण समुद्र के बीच से जा रहे हैं। यह देखते ही वह क्रुद्ध हो गई और अपनी ढाल-तलवार लेकर सात-आठ ताड की ऊँचाई पर उडकर दिव्य गति से वहाँ आई जहाँ माकन्दी पुत्र थे। वहाँ पहुँच कर बोली–

"ओ माकन्दी पुत्रो ! अवाछित (मृत्यु) की वाँछा रखने वालो ! क्या तुम यह समझते हो कि मुझे छोडकर तुम शैलक यक्ष के साथ लवण समुद्र के बीच से निकल जाओगे? इतनी दूर आ जाने के बाद भी यदि तुम मेरी अपेक्षा (इच्छा) रखते हो तो तुम जीवित रह सकोगे ! अन्यथा इस काली तलवार से तुम्हारे मस्तक काटकर फेक दूँगी।"

THREAT FROM THE GODDESS

37. After completing the twenty one circuits around the sea and removing all the garbage the evil goddess of Ratnadveep returned to her mansion When she did not find the sons of Makandi in the mansion she proceeded to the eastern garden and searched them everywhere When she did not hear even a human whisper there she proceeded to the western garden When she found no trace of them anywhere she used her Avadhi Jnana and saw that the sons of Makandi were crossing the sea with Shailak Yaksh She lost her temper and taking her sword and shield jumped into the sky at a height of seven to eight palm trees and arrived near the sons of Makandi with divine speed As soon as she came near them she uttered—

"O sons of Makandi! O desirous of the undesired! Do you really think that you can abandon me and with the help of Shailak Yaksh you can cross the sea? Even after covering so much distance you can save yourselves only if you love and desire me Otherwise I will behead you with this blue sword of mine "

सूत्र ३८ तए णं ते मागदियदारए रयणद्दीवदेवयाए अतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असभता रयणद्दीवदेवयाए एयमट्ठ नो आढंति, नो परियाणति, नो अवेक्खति, अणाढायमाणा अपरियाणमाणा अणवेक्खमाणा सेलएण जक्खेण सद्धिं लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयंति।

सूत्र ३८ माकन्दी पुत्र देवी के आक्रोशपूर्ण वचन सुनकर उद्विग्न, या भय-भ्रान्त नही हुए। उन्होने देवी की बात को न तो कोई महत्व दिया, न स्वीकार किया और न ही कोई परवाह की। वे बिना प्रभावित हुए शैलक यक्ष के साथ समुद्र के बीच चलते रहे।

38. The sons of Makandi did not lose their composure at this outburst of the evil goddess They did not give any importance, recognition or heed to her warning Unmoved, they continued their journey on the back of Shailak Yaksh

मधुर प्रलोभन

सूत्र ३९ : तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिया जाहे नो संचाएइ बहूहिं पडिलोमेहि य उवसग्गेहि य चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा ताहे महुरेहि सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि य उवसग्गेउं पयत्ता यावि होत्था–

'हं भो मागंदियदारगा ! जइ णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया ! मए सद्धिं हसियाणि य, रमियाणि य, ललियाणि य, कीलियाणि य, हिंडियाणि य, मोहियाणि य, ताहे णं तुब्भे सव्वाइं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयह?'

सूत्र ३९ जब वह देवी माकन्दी पुत्रो को ऐसे अनेक प्रतिकूल उपसर्गो द्वारा चचल एव क्षुब्ध करने या पलटने व लुभाने मे सफल नही हुई तब उसने अपने मधुर श्रृंगारमय और अनुराग उत्पन्न करने वाले अनुकूल उपसर्ग (प्रलोभन) करना आरम्भ कर दिया।

वह कहने लगी–"हे माकन्दी पुत्रों ! हे देवनुप्रियो ! तुमने मेरे साथ हँस खेल कर समय बिताया है, रमण किया है, ललित मनोरजन किए है, क्रीडाएँ की है, लीलाएँ की है, भ्रमण किये है, काम-भोग किया है। उन सभी को भुलाकर आज तुम इस शैलक यक्ष के साथ जा रहे हो और मुझे निराधार को त्याग रहे हो?"

ENTICEMENTS

39. When the evil goddess was unable to move or force or frighten or change the sons of Makandi she resorted to her tender, enchanting, and lusty enticements She uttered —

"O sons of Makandi! O Beloved of gods! You have spent time with me in playful and pleasant activities You have enjoyed my company in a variety of entertainments, excursions, sports, etc And besides all this you have made love to me and enjoyed my body Forgetting everything you are going away with this Shailak Yaksh and leaving me alone and helpless?"

सूत्र ४० . तए णं सा रयणदीवदेवता जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एव वयासी–'णिच्च पि य ण अहं जिनपालियस्स अणिट्ठा, अकंता, अप्पिया, अमणुण्णा, अमणामा, णिच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे, अकंते, अप्पिए, अमणुण्णे, अमणामे। णिच्चं पि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा, कंता, पिया, मणुण्णा, मणामा, णिच्चं पि य णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे, कंते, पिए, मणुण्णे, मणामे। जइ णं ममं जिणपालिए रोयमाणिं कंदमाणिं सोयमाणिं तिप्पमाणिं विलवमाणिं णावयक्खइ, किं णं तुमं जिणरक्खिया ! ममं रोयमाणिं जाव णावयक्खसि?"

सूत्र ४० · उस देवी ने फिर अपने अवधिज्ञान से जिनरक्षित के मन में झाक कर देखा। वहॉ कुछ चंचलता देखकर वह बोली–"मै जिनपालित के लिए तथा जिनपालित मेरे लिए सदा ही अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ और खेददायक रहे। परन्तु मै जिनरक्षित के लिए और वह मेरे लिए सदा ही इष्ट, कान्त, प्रिय आदि रहे हैं। हे जिनरक्षित ! यदि मेरे रोने, क्रन्दन, शोक, अनुताप और विलाप करने पर जिनपालित ध्यान नही देता तो क्या तुम भी ध्यान नही दोगे?"

40. The evil goddess then peeped into the mind of Jinarakshit through her Avadhi Jnana When she saw some weakness there she at once tried to exploit it, "Indeed, I and Jinapalit had no liking, desire, or love for each other, in fact we were repulsive and painful to each other But Jinarakshit and I always cared, liked, and loved each other Darling Jinarakshit! It hardly matters if Jinapalit does not care for my pain, sorrow, crying, weeping, and wailing but would you also not care for me?"

(In other words —)

सूत्र ४१ तए ण

सा पवररयणदीवस्स देवया ओहिणा उ जिनरक्खियस्स मण।

नाऊण वधनिमित्त उवरि मागदियदारयाण दोण्ह पि॥१॥

सूत्र ४१ रत्नद्वीप की देवी ने अवधिज्ञान द्वारा जिनरक्षित का मन (चचल हुआ) भॉप कर अपने मन मे दोनो माकन्दीपुत्रो का वध करने की ठान ली॥१॥

41. Recognizing the weakness of Jinarakshit through her Avadhi Jnana the evil goddess of Ratnadveep decided to kill both the sons of Makandi (1)

सूत्र ४२ दोसकलिया सलीलय, णाणाविह-चुण्णवासमीसियं दिव्व।
घाण-मण-णिव्वुइकरं सव्वोउयसुरभिकुसुमवुट्ठि पमुचमाणी॥२॥

सूत्र ४२ मन मे द्वेष से भरी उस देवी ने लीला करते हुए तरह-तरह के सुगधित चूर्ण सहित नाक और मन को तृप्त करने वाले, दिव्य, सर्व-ऋतु मे खिलने वाले सुगन्धित फूलो की वृष्टि की॥२॥

42. Filled with aversion, the evil goddess playfully sprinkled a variety of perfumed powders along with a shower of all season fragrant divine flowers that were pleasing to the senses and mind (2)

सूत्र ४३ णाणामणि-कणग-रयण-घटिय-खिंखिणि-णेउर-मेहल-भूसणरवेण।
दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेति सा सकलुसा॥३॥

सूत्र ४३ : विभिन्न प्रकार के मणि, सुवर्ण व रत्नों की घंटियाँ, घुँघरू, नूपुर, करधनी आदि आभूषणों की मीठी ध्वनि से सब दिशाओं को गुंजाती हुई वह पापिनी बोली-।।३।।

43. Filling the surrounding space with the melodious sound of large and small jingle bells of beads, gold and gems attached to her anklets, girdle and other ornaments, that she devil said,—(3)

सूत्र ४४ · होल वसुल गोल णाह दइत, पिय रमण कंत सामिय णिग्घण णित्थक्क।
छिण्ण निक्किव अकयण्णुय सिढिलभाव निल्लज्ज लुक्ख,
अकलुण जिणरक्खिय ! मज्झं हिययरक्खगा।।४।।

सूत्र ४४ "हे मुग्ध, सुकुमार, कठोर, नाथ ! हे दयालु, प्रिय, रमण, कान्त, स्वामी ! हे स्नेह रहित, अवसर-ज्ञान शून्य, पाषाण-हृदय, निर्दय, कृतघ्न, शिथिल-चित्त, निर्लज्ज, रूखे और करुणाहीन जिनरक्षित ! तुम ही मेरे प्राणो (हृदय) के रक्षक हो ! ।।४।।

44. "O possessed, tender but hard lord! O compassionate, beloved, seductive and adorable darling! O apathetic, impractical, rock-hearted, cruel, thankless, listless, shameless, dry and pitiless Jinarakshit! you are my only guardian angel (4)

सूत्र ४५ न हु जुज्जसि एक्किय अणाहं,
अबधवं तुज्झ चलणओवायकारियं उज्झिउमहण्णं।
गुणसंकर ! अहं तुमे विहूणा,
ण समत्था वि जीविउं खणं पि।।५।।

सूत्र ४५ · "मुझ अकेली, अनाथ, बान्धवहीन और तुम्हारी हतभागिनी चरणसेविक को त्याग देना तुम्हारे लिए शोभनीय नहीं है। हे गुण-पुंज ! मै तुम्हारे बिना क्षण भर जीवित रहने मे भी समर्थ नही हूँ।।५।।

45. "It is not befitting you to abandon me who is lonely, orphan, friendless and your ill fated slave O abode of virtues! It is impossible for me to live in your absence even for a second (5)

सूत्र ४६ · इमस्स उ अणेग झस-मगर-विविधसावय-सयाउल घरस्स
रयणागरस्स मज्झे। अप्पाणं वहेमि
तुज्झ पुरओ एहि,
णियत्ताहि जइ सि कुविओ खमाहि एक्कावराहं मे।।६।।

सूत्र ४६ : मै इस सैकडों मत्स्य, मगर तथा अन्य छोटे जलचरों के घर रत्नाकर समुद्र के बीच तुम्हारे देखते-देखते अपने प्राण त्याग दूँगी। यदि तुम ऐसा नही चाहते तो आओ वापस लौट चलो। यदि तुम कुपित हो गए हो तो मेरा एक अपराध क्षमा कर दो॥६॥

46. "Before you could act, I will end my life in this sea infested with crocodiles and other small and large marine creatures If you don't want that, please come back to me If you are angry, please pardon this one mistake of mine (6)

सूत्र ४७ . तुज्झ य विगयघण-विमल-ससिमंडलगारसस्सिरीयं,
सारय-नवकमल-कुमुद-कुवलयविमलदल-निकरसरिस निभनयण।
वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउ जे अवलोएहि,
ता इओ मम णाह जा ते पेच्छामि वयणकमल॥७॥

सूत्र ४७ · "तुम्हारा मुख मेघ-विहीन विमल चन्द्र-मण्डल के समान है। तुम्हारे नयन शरद्ऋतु के नव-पल्लवित कमल, कुमुद और कुवलय के पत्तो के समान अत्यन्त शोभा युक्त है। ऐसे नेत्रों वाले तुम्हारे मुख-दर्शन की प्यास लिए मै यहाँ आई हूँ। तुम्हारे मुख को देखने की मेरी अभिलाषा को पूरी करो। हे नाथ ! मेरी ओर देखो जिससे मै तुम्हारा मुख-कमल निहार लूँ"॥७॥

47 "Your face is like the radiant orb of a full moon in cloudless sky Your eyes are as divinely beautiful as petals of fresh and blooming lotus flowers including Kamal, Kumud and Kuvalay I have come here craving to behold your enchanting face with such beautiful eyes Please fulfill my desire of beholding your face O lord of my heart! Please look at me so that I may behold your lotus-face " (7)

सूत्र ४८ · एवं सप्पणय-सरलमहुराइ पुणो पुणो कलुणाइ वयणाइ।
जपमाणी सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया॥८॥

सूत्र ४८ इस प्रकार प्रेम पूर्ण, सरल और मधुर वचन बार-बार बोलती हुई वह पापिनी उस मार्ग मे पीछे-पीछे चलने लगी॥८॥

48. Thus, uttering sweet, loving, and tender words again and again that she devil persistently followed (8)

चंचल जिनरक्षित

सूत्र ४९ तए णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुह-मणोहरेणं तेहि य सप्पणय-सरल-महुर-भणिएहिं संजायविउणराए रयणदीवस्सदेवयाए तीसे सुंदरथण-जहण-वयण-

कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वणसिरिं च दिव्वं सरभ-सउवगूहियाइं जाइं विब्बोय-बिलसियाणि य विहसिय सकडक्ख-दिट्ठि-निस्ससिय-मलिय-उवललिय- ठिय-गमण-पणय-खिज्जिय-पासादियाणि य सरमाणे राग-मोहियमई अवसे कम्मवसगए अवयक्खइ मग्गओ सविलियं।

सूत्र ४९ : आभूषणों के ऐसे कर्णप्रिय और मनोहारी शब्द तथा देवी के प्रणय भरे सरल और मधुर वचनो को सुन जिनरक्षित का मन चंचल हो उठा। उसे देवी पर पहले से दुगुना अनुराग उत्पन्न हो गया। वह देवी के सुन्दर स्तन, जघाएँ, मुख, हाथ, पैर और नयनो के रूप और यौवन रूपी लक्ष्मी का स्मरण करने लगा। देवी के द्वारा किये हर्ष और आवेग भरे आलिगन, चेष्टाएँ, विलास, मुस्कान, कटाक्ष, निश्वास, मर्दन, उपललित (क्रीडाविशेष), स्थिति, गति, प्रणय, कोप, रिझाने की चेष्टा, आदि को याद कर-कर के जिनरक्षित की मति अनुराग और मोह से परिपूर्ण हो गई। वह अवश हो गया और कर्म के वश हुआ लज्जा सहित मुडकर देवी के मुख की तरफ देखने लगा।

ALLURED JINARAKSHIT

49. Jinarakshit was allured by the sweet and enchanting sound of the jingling ornaments and the loving, tender, and sweet appeal of the evil goddess His love for the evil goddess doubled He ruminated upon the memories of the wanton youthful beauty of her breasts, thighs, face, arms, legs and eyes He was filled with infatuating lure of the memories of the happy and lusty embraces, playful and sensuous activities, smiles, libidinous glances, panting, rubbing, fore-play, holding, and movement, mixed with gestures of love, anger, and enticement He lost his control over himself, turned his head and started looking at the evil goddess shyly.

सूत्र ५० . तए ण जिणरक्खियं समुप्पन्नकलुणभावं मच्चु-गलत्थल्ल-णोल्लियमइं अवयक्खंत तहेव जक्खे उ सेलए जाणिऊण सणियं सणियं उव्विहइ नियगपिट्ठाहि विगयसत्थं।

सूत्र ५० . देवी के प्रति अनुराग उत्पन्न होते ही जैसे यमराज (मृत्यु रूपी राक्षस) ने उसके गले में हाथ डाल उसकी मति भ्रष्ट करदी अर्थात् वह मृत्यु के मुँह मे जाने लगा। उसने देवी की ओर देखा है यह बात अवधि-ज्ञान से जानकर शैलक यक्ष ने उस अस्वस्थ मन वाले जिनरक्षित को धीरे से अपनी पीठ से नीचे गिरा दिया।

50. The moment he was allured by the evil goddess the god of death caught hold of him and drew him to his doom With the help of his Avadhi Jnana, Shailak Yaksh became aware of his turning and looking at the evil goddess. He at once pushed weak hearted Jinarakshit from his back

जिनरक्षित का अंग-भंग

सूत्र ५१ : तए णं सा रयणदीवदेवया निस्ससा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा सेलगपिट्ठाहि उवयंतं 'दास ! मओसि' त्ति जंपमाणी, अप्पत्तं सागरसलिलं, गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहइ अंबरतले ओवयमाण च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवल-अयसिप्पगासेण असिवरेणं खंडाखंडिं करेइ, करित्ता तत्थ विलवमाणं तस्स य सरसवहियस्स घेत्तूण अंगमंगाइं सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसि करेइ सा पंजली पहिट्ठा।

सूत्र ५१ : वह निर्दय और पापिनी देवी दयनीय जिनरक्षित को शैलक की पीठ से गिरते देखकर बोली–"हे दास ! तू मरा !" और समुद्र के जल तक पहुँचने से पहले ही चिल्लाते जिनरक्षित को दोनो हाथों से पकडकर ऊपर उछाल दिया। जब वह वापस नीचे गिरने लगा तो उसे तलवार की नोक पर झेल लिया। श्याम रग की उस श्रेष्ठ तलवार से उसने रोते हुए जिनरक्षित के टुकडे-टुकडे कर डाले। अभिमान से भरी देवी ने जिनरक्षित के रक्त से सने अगोपागों को अजली मे ले लिया और प्रसन्न चित्त हो देवताओ के निमित्त उछाली बलि की तरह चारों दिशाओ मे फेक दिया।

DISMEMBERING OF JINARAKSHIT

51 The cruel she-devil saw helpless Jinarakshit falling from the back of Shailak Yaksh and uttered, "Slave! This is your doom!" Before Jinarakshit could reach the surface of the sea she caught hold of his hands and tossed him in the sky When he again fell she took him on the edge of her sword With the blue sword she sliced wailing Jinarakshit into pieces Filled with the ego of her power the evil goddess took the pieces of the body of Jinarakshit in her hands and happily threw them in all direction as is done with the offerings to the gods.

सूत्र ५२ . एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसायइ, पत्थयइ, पीहेइ, अभिलसइ, से णं इह भवे चेव बहूण समणाणं बहूण समणीण बहूण सावयाणं बहूण सावियाणं जाव ससार अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा से जिणरक्खिए।

छलिओ अवयक्खतो, निरावयक्खो गओ अविग्घेण।
तम्हा पवयणसारे, निरावयक्खेण भवियव्व ॥१॥
भोगे अवयक्खंता, पडंति ससार-सायरे घोरे।
भोगेहिं निरवयक्खा, तरंति संसारकंतारं ॥२॥

सूत्र ५२ : इसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणों ! जो साधु-साध्वी आचार्य-उपाध्याय के पास दीक्षा ग्रहण करने के बाद भी मानवोचित कामभोगों का आश्रय लेता है, याचना करता है, उनकी स्पृहा करता है, अथवा दृष्ट तथा अदृष्ट शब्दादि के भोग की इच्छा रखता है वह इस भव में अनेक साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका आदि द्वारा निन्दनीय होता है तथा अनन्त-संसार में परिभ्रमण करता है। उसकी गति जिनरक्षित जैसी हो जाती है। यथा–

पीछे देखने वाला छला गया और पीछे न देखने वाला निर्विघ्न पार उतर गया। इसलिए चारित्र पालन (–प्रवचनसार) में आसक्तियों से दूर रहना चाहिए।।१।।

साधना पथ पर चलते हुए जो भोग की इच्छा रखते हैं, वे घोर संसार-सागर में गिर कर नष्ट हो जाते हैं और जो भोग की इच्छा से परे रहते हैं वे पार उतर जाते हैं।।२।।

52. Long-lived Shramans! Those of our ascetics who, after getting initiated, resort to, beg for, or desire for indulging into lusty libidinous activities and crave for real or vicarious carnal pleasures become the objects of criticism, public contempt, hatred and disrespect in this life And moreover they also suffer misery in the next life and are caught in the cycle of rebirth indefinitely They end up just as Jinarakshit did As is said—

He who turned back was caught in the web and he who did not, crossed unhindered As such, on the path of spiritual practice, one should be free of indulgences (1)

On the path of spiritual practices those who have desires for carnal pleasures fall into the whirlpool of rebirths and those who are above these desires cross the ocean (2)

स्थिर जिनपालित

सूत्र ५३ : तए णं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खर-महुर-सिंगारेहिं कलुणेहि य उवसग्गेहि या जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विप्परिणामित्तए वा, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

सूत्र ५३ : इसके बाद वह रत्नद्वीप की देवी जिनपालित के निकट गई और बहुत से मनोनुकूल, प्रतिकूल, कठोर, मधुर, शृँगार युक्त तथा करुणोत्पादक उपसर्ग करने लगी। किन्तु जब उसे चचल व क्षुब्ध कर उसका हृदय परिवर्तन करने में विफल हुई तो वह मन और शरीर से थक गई। पूरी तरह ग्लानि तथा खिन्नता से भरी वह जिस दिशा से आई थी उसी दिशा की ओर लौट गई।

COMPOSED JINAPALIT

53. Later the evil goddess of Ratnadveep approached Jinapalit and tried to disturb him with numerous favourable and unfavourable, harsh and sweet, lustful and pathetic displays But when after all her efforts she failed to disturb or allure him she got tired At last, filled with disappointment and dejection she returned to her abode

सूत्र ५४ : तए ण से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झं-मज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पिट्ठाओ ओयारेइ, ओयारित्ता एवं वयासी–

'एस णं देवाणुप्पिया ! चपा नयरी दीसइ' त्ति कट्टु जिणपालियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए।

सूत्र ५४ · शैलक यक्ष जिनपालित को लिए लवणसमुद्र के मध्य से चलता-चलता चम्पानगरी पहुँचा। नगरी के बाहर श्रेष्ठ उद्यान मे जिनपालित को अपनी पीठ से नीचे उतारा और बोला–"हे देवानुप्रिय ! यह चम्पानगरी दिखाई देती है।" यक्ष ने जिनपालित से विदा ली और अपने स्थान को लौट गया।

54. Carrying Jinapalit over the sea Shailak Yaksh at last reached Champa city Landing in the garden outside the town he put down Jinapalit and said, "Beloved of gods! This is Champa city" He took leave of Jinapalit and left for his abode

सूत्र ५५ · ते ण जिणपालिए चप अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणे सए गिहे, जेणेव अम्मापियरो, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे जाव विलवमाणे जिणरक्खियवावत्ति निवेदेइ।

तए णं जिणपालिए अम्मापियरो मित्तणाइ जाव परियणेण सद्धि रोयमाणा बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइ करेति, करित्ता कालेणं विगयसोया जाया।

सूत्र ५५ जिनपालित ने चम्पानगरी मे प्रवेश किया और अपने घर पहुँचा। अपने माता-पिता के पास जाकर उसने रोते-कलपते जिनरक्षित की मृत्यु का समाचार सुनाया।

जिनपालित, ने अपने माता-पिता तथा मित्र, स्वजातीय, तथा सम्बन्धियो के साथ शोक-संताप सहित मृत्यु सम्बन्धी सभी लौकिक कृत्य पूर्ण किए। समय बीतने पर वे धीरे-धीरे शोक मुक्त हुए।

55. Jinapalit entered Champa and reached his house. He went to his parents and tearfully gave the news of demise of Jinarakshit.

With his parents, relatives, and friends Jinapalit concluded the formal mourning rituals With passage of time the family slowly won over the grief

सूत्र ५६ : तए णं जिणपालियं अन्नया कयाइ सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासी–'कहं णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए?

सूत्र ५६ : कुछ दिनों बाद आराम करते हुए जिनपालित से उसके माता-पिता ने पूछा–"हे पुत्र ! जिनरक्षित की मृत्यु कैसे हुई ?"

56. After a few days rest when Jinapalit recovered, his parents asked, "Son! How did Jinarakshit die?"

सूत्र ५७ : तए णं जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवाय-समुत्थणं च पोयवहण-विवत्तिं च फलगखंडआसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीवदेवयागिहं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवयाघायण च सूलाइयपुरिसदरिसणं च सेलगजक्खआरुहण च रयणदीवदेवयाउवसग्गं च जिणरक्खियविवत्तिं च लवणसमुद्दउत्तरणं च चंपागमण च सेलगजक्खआपुच्छणं च जहाभूयमवितह-मसंदिद्धं परिकहेइ।

सूत्र ५७ : जिनपालित ने लवणसमुद्र मे यात्रा आरम्भ, तूफान का आना, जहाज का नष्ट होना, लकडी के लट्ठे का मिलना, रत्नद्वीप मे पहुँचना, वहाँ की देवी के घर जाना, वहाँ के भोग व वैभव तथा वधस्थल पर जाना, शूली पर टगे पुरुष के दर्शन, शैलक यक्ष की पीठ पर चढना, देवी द्वारा उपसर्ग करना, जिनरक्षित की मृत्यु, लवण समुद्र को पार कर चम्पानगरी पहुँचना और शैलक की विदा आदि सभी घटनाएँ यथारूप ज्यो की त्यों और असंदिग्ध रूप में अपने माता-पिता को सुना दी।

57. Beginning from the commencement of the sea voyage Jinapalit narrated all the incidents in detail as they had occurred

सूत्र ५८ : तए णं जिणपालिए जाव अप्पसोगे जाव विउलाइ भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ।

सूत्र ५८ : तपश्चात् शोक मुक्त हो जिनपालित मानवोचित विपुल भोगोपभोग का आनन्द लेता जीवन व्यतीत करने लगा।

58. And then, overcoming his grief Jinapalit resumed his normal life enjoying all the pleasures of life

उपसंहार

सूत्र ५९ : तेण कालेणं तेण समएणं समणे भगवं महावीरे जाव जेणेव चंपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, तेणेव समोसढे। परिसा निग्गया। कूणिओ वि राया निग्गओ। जिणपालिए धम्मं सोच्चा पव्वइए। एक्कारसअंगविऊ, मासिएणं भत्तेणं जाव सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववन्ने, दो सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता, जाव महाविदेह सिज्झिहिइ।

सूत्र ५९ : काल के उस भाग में श्रमण भगवान महावीर चम्पानगरी के पूर्णभद्र चैत्य में पधारे और उनकी वन्दना हेतु परिषद निकली। कुणिक राजा भी आए। जिनपालित ने धर्मोपदेश सुनने के बाद दीक्षा ग्रहण कर ली। क्रमशः ग्यारह अग शास्त्रो का अध्ययन कर अन्त मे एक मासक्षमण तप कर शरीर त्यागा और सौधर्म कल्प में देव रूप में जन्म लिया। उसकी आयुष्य दो सागरोपम की बताई गई हैं। वहाँ से वह महा-विदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्धि प्राप्त करेगा।

CONCLUSION

59. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the Purnabhadra Chaitya in Champa city A delegation of citizens came to attend his discourse King Kunik also came Jinapalit accepted Diksha after listening to the discourse One after the other, he studied all the eleven canons and in the end he left his earthly body after a month long fast He reincarnated as a god in the Saudharm Kalp (dimension of gods) His life span there is said to be two Sagaropam (a superlative measure of time) From there he will be reborn in the Mahavideh area and get liberated

सूत्र ६० एवामेव समणाउसो ! जाव माणुस्सए कामभोगे णो पुणरवि आसाइ, से ण जाव वीइवइस्सइ, जहा वा से जिणपालिए।

सूत्र ६० इसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणो ! जो मनुष्य, धर्म मे दीक्षित होने के पश्चात काम भोगों की पुन. इच्छा नही करता वह जिनपालित की भॉति ससार समुद्र को पार करता है।

60. Long-lived Shramans! In the same way those of our ascetics who, after getting initiated, do not desire for carnal pleasures are liberated like Jinapalit

सूत्र ६१ एवं खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठ पण्णत्ते त्ति बेमि॥

सूत्र ६१ हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने ज्ञात-अध्ययन का यह अर्थ बताया है। मैने जैसा सुना है वैसा ही तुम से कहता हूँ।

61. Jambu! This is the text and the meaning of the ninth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm

॥ नवमं अज्झयणं समत्त ॥

॥ नवम अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE NINTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्म कथा की यह नवीं कथा इन्द्रिय-विषयों में लोलुपता के कारण कर्तव्यच्युत होने के भंयकर परिणाम को प्रस्तुत कर संयम मार्ग पर एकाग्र रहने की प्रेरणा देती है। दो वणिक् बधुओं की व्यावसायिक यात्रा के आरभ से ही मन की अनियन्त्रित उड़ान के फल प्रस्तुत होने लगते हैं। इन्द्रियाँ ठेलती हैं तो मन भागता है पर जब मन पर अकुश लगता है तब इन्द्रियाँ स्वयं ही नियन्त्रण मे आ जाती है। दो भाइयों के आचरण की तुलनात्मक मार्मिक प्रस्तुति इस कथा की प्रेरक शक्ति को बढ़ा देती है। कथा की रूपक शैली उपनयगाथा से स्पष्ट होती है।

CONCLUSION

This ninth story of Jnata Dharma Katha inspires us to remain resolute on the path of discipline by presenting the terrible consequences of neglecting our duty for indulgence in sensual pleasures Right from the commencement of their journey the two merchant brothers have to face the consequences of the flights of their imagination When the senses push, the mind runs around, but when mind is disciplined, the senses automatically follow suit. The comparison of the attitudes of two brothers enhances the strength of the inspiration offered by this story The allegorical style is revealed by the verses of the Message

उपनय गाथा

जह रयणदीवदेवी तह एत्थं अविरई महापावा।
जह लाहत्थी वणिया तह सुहकामा इहं जीवा॥१॥
जह तेहिं भीएहिं दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो।
संसारदुक्खभीया पासंति तहेव धम्मकहं॥२॥
जह तेण तेसिं कहिया देवी दुक्खाण कारणं घोरं।
तत्तो च्चिय नित्थारो सेलगजक्खाओ नन्नत्तो॥३॥
तह धम्मकहा भव्वाण साहए दिट्ठअविरइसहावो।
सयलदुहहेउभूया विसयाविरइ त्ति जीवाणं॥४॥

सत्ताण दुहत्ताणं सरणं चरणं जिणिंदपन्नत्तं।
आणंदरूवनिव्वाणसाहणं तह य देसेइ॥५॥
जह तेसिं तरियव्वो रुद्दसमुद्दो तहेव संसारो।
जह तेसि सगिहगमणं निव्वाणगमो तहा एत्थ॥६॥
जह सेलगपट्ठाओ भट्ठो देवीए मोहियमईओ।
सावयसहस्सपउरंमि सायरे पाविओ निहणं॥७॥
तह अविरईए नडिओ चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णे।
निवडइ असारसंसारसायरे दारुणसरूवे॥८॥
जह देवीए अक्खोहो पत्तो सट्ठाणजीवियसुहाइं।
तह चरणट्ठिओ साहू अक्खोहो जाइ निव्वाणं॥९॥

रत्नद्वीप की देवी के स्थान पर महापापमय अविरति समझनी चाहिए और लाभार्थी वणिको के स्थान पर सुख की कामना करने वाले जीव॥१॥

जैसे उन्होने (माकन्दी पुत्रो ने) आघात-मण्डल (सूली पर) मे एक पुरुष को देखा वैसे ही संसार के दु:खो से भयभीत लोग धर्मकथा कहने वाले को देखते है॥२॥

जैसे उसने उन्हें बताया कि देवी घोर दु.खो का कारण है और उससे निस्तार पाने का उपाय शैलक यक्ष के अतिरिक्त नही है॥३॥

वैसे ही अविरति के स्वभाव को समझने वाले उपदेशक भव्य जीवो को "इन्द्रियों के विषय सभी दु.खो के कारण हैं," ऐसा कह कर जीवो को उनसे विरत करते है॥४॥

और बताते हैं कि दु खो से पीडित प्राणियो के लिए जिनेन्द्र द्वारा प्ररूपित चारित्र ही शरण है, वही आनन्दरूप निर्वाण का साधन है॥५॥

जैसे वणिकों को सागर पार करना था वैसे ही भव्य जीवों को विशाल संसार सागर पार करना है। जैसे वणिकों को अपने घर पहुँचना था वैसे ही भव्य जीवो को मोक्ष प्राप्त करना है॥६॥

जैसे देवी द्वारा मोहित मति (जिनरक्षित) शैलक की पीठ से गिर कर सहस्रो हिंस्र जन्तुओ से भरे सागर में मृत्यु को प्राप्त हुआ॥७॥

वैसे ही अविरति से बाधा पाकर जो जीव चारित्र से भ्रष्ट हो जाता है वह दु:खरूपी हिंस्र जन्तुओ से व्याप्त भयंकर और अपार ससार सागर मे गिर पडता है॥८॥

जैसे देवी के प्रलोभनों से निर्लिप्त रहने वाला (जिनपालित) अपने घर पहुँच कर जीवन के सुखों को पा लेता है वैसे ही चारित्र में स्थिर और विषयो से निर्लिप्त साधु निर्वाण सुख को पा लेता है॥९॥

THE MESSAGE

The goddess of Ratnadveep is the great evil of attachment and the profit mongering merchants are the pleasure seeking beings. (1)

As the merchants saw the man on the gibbet the beings oppressed by the sorrows of the world see preachers (2)

As he told them that the goddess is the cause of all sorrows and there is no respite other than the help of Shailak Yaksha. (3)

Same way preachers, who know the consequences of attachment, inform the seekers that sensual pleasures are the source of all sorrows and inspire the seekers to get detached from them. (4)

They add that the code of conduct propagated by The Conqueror (Jina) is the only refuge for the oppressed, and that it is the means to attain the ultimate bliss, the state of Nirvana. (5)

As the merchants wanted to cross the ocean, the seekers want to cross the ocean of rebirths As the merchants wanted to reach their home, the seekers want to attain liberation or Moksha (6)

Just as the one infatuated with the goddess fell from the back of Shailak and embraced painful death in the ocean infested with thousands of violent creatures (7)

In the same way a being trapped by attachment falls from the path of right conduct and drowns in the endless ocean of rebirths infested with infinite sorrows (8)

Just as the one unaffected by the enticing goddess reaches his home and regains happiness, the ascetic firm in the codes of conduct and uninvolved in sensual pleasures achieves the blissful state of Nirvana. (9)

परिशिष्ट

काकदी–इस स्थान के विषय में दो मत हैं। अठारहवीं शताब्दी के जैन यात्रियों में से कुछ तो इसे क्षत्रियकुण्ड से पाँच कोस दूरी पर बताते हैं और कुछ अस्पष्ट रूप से इसे बिहार से पूर्व में लगभग ४0 मील की दूरी पर। एक अन्य यात्री दो काकंदी बताते हैं। एक तो क्षत्रियकुण्ड के निकट और दूसरी गोरखपुर से ५0 मील लगभग पूर्व मे। यात्रा दर्पण के अनुसार गोरखपुर के पास जो काकंदी है उसे ही तीर्थ मानना चाहिए। इसका नाम खुखंदा बताते हैं और यह नोनधार स्टेशन से डेढ़ मील पर है।

शकुन–भविष्य में शुभाशुभ होने के इंगित को शकुन कहते हैं। यह मूलत प्राकृतिक संकेतों से जुड़ी घटनाओं के रूप में आरम्भ हुआ और धीरे-धीरे विकसित होकर एक शास्त्र बन गया। पशु-पक्षियों आदि में नैसर्गिक रूप से

कुछ विशिष्ट ऐंद्रिक क्षमताएँ होती है जिनसे मनुष्य अछूता है। उन्हें इस क्षमता के कारण बहुत-सी घटनाओं का संकेत या पूर्वाभास मिलता है और उसे वे शरीर की विभिन्न क्रियाओं/चेष्टाओं से प्रकट करते हैं। शकुन शास्त्र के विकसित होने से ये सभी संकेत भी उसी मे सम्मिलित हो गये। साथ ही समय के साथ इसमें अनेक भ्रान्तियों तथा अंध-विश्वासों का भी समावेश हो गया। जो भी हो इस विषय का विशेष महत्त्व इसलिए रहा कि इसके आधार पर पूर्वाभास हो जाने से मनुष्य अशुभ से बचकर चलने का अवसर पा जाता है और शुभ के साथ चलने को तत्पर हो सकता है। शकुन किसी न किसी रूप में सारे ससार में विद्यमान रहा है–विशेष कर उस काल मे जब आवागमन आदि सामान्य क्रिया कलाप भी अत्यन्त दुरूह थे।

जैन और जैनेतर साहित्य मे तथा सम्पूर्ण लोक साहित्य में शकुन के सम्बन्ध मे स्थान-स्थान पर विशद चर्चाएँ उपलब्ध हैं। उदाहरण स्वरूप कुछ शुभ-अशुभ शकुन निम्न प्रकार हैं–

बहिर्गमन के समय-शुभ शकुन–घोड़ो का हिनहिनाना, नाचते मोर का कलरव, दाहिनी ओर हाथी का चिंघाडना, गधे का दाहिनी ओर मुड़कर रेकना, सुगधित हवा का मद-मद प्रवाहित होना, आदि। बर्हिगमन के समय अशुभ-शकुन–गदे वस्त्र धारण किये व्यक्ति का मिलना, सर पर लकडी का भारा लिए व्यक्ति का मिलना, शरीर पर तेल मले व्यक्ति का मिलना, विकलाग, जैसे वामन या कुब्ज, का मिलना आदि।

APPENDIX

Kakandi—There are two opinions about this place Some Jain travelers of the eighteenth century say that it is about ten miles away from Kshatriyakund Other travelers of the same period vaguely say that it is roughly 40 miles east of Bihar Other sources mention of two places bearing the same name One is said to be near Kshatriyakund and the other about 50 miles east of Gorakhpur According to Yatra Darpan, the Kakandi near Gorakhpur should be accepted as the pilgrimage center Its modern name is Khakhunda and it is one and a half miles away from Nonwar railway station

Shakun—omen—That which gives indication of good or bad happenings of the future is called omen (Shakun) It originated from the signs and indications preceding natural happenings, and gradually developed into a scripture or subject All animals are endowed with some unique capacities human beings lack With the help of this sixth sense, animals become aware of many happenings in advance, and they express these premonitions by certain gestures or activities As the subject of augury evolved, all these indication were included in it With passage of time a horde of misconceptions and superstitions also got included in this ever-expanding subject Leaving aside the question of authenticity, the subject became popular because man is curious about his future and when he gets an inkling of the future he gets a chance to try and avoid the unfavourable and go along the favourable This subject has always been popular throughout the world in some form or another especially during the period when even simple activities like covering distances were fogged with the unknown and unforeseen

Jain literature as well as other Indian literature, abounds in references to this subject and at many places examines it in great detail A few popular omens are—good omens at the time of moving out whinnying of horses, cooing of dancing pea-cock, trumpeting of elephant on the right, braying of donkey after turning towards its right, gentle blowing of fragrant wind, etc. Bad omens at the time of moving out—meeting a man wearing dirty clothes, meeting a person carrying a bundle of wood, meeting a person with oil rubbed all over his body, meeting a disfigured person like a dwarf or hunchback, etc

■■

दसवाँ अध्ययन : चन्द्रमा : आमुख

शीर्षक–चंदिम–चन्द्रमा–अन्तरिक्ष में रहा चन्द्रमा अपने क्रमिक विकास और ह्रास की नियमित श्रृंखला के कारण विकास और ह्रास के क्रम का एक अनूठा उदाहरण है। भगवान महावीर ने इस उदाहरण के माध्यम से आत्मिक गुणों के विकास और ह्रास को समझाया है।

कथासार–राजगृह में भगवान महावीर पधारे। गौतम स्वामी ने उनसे प्रश्न किया कि जीवो में गुणो की वृद्धि तथा हानि किस प्रकार होती है? भगवान ने उत्तर दिया कि जैसे पूर्णिमा के चाँद की अपेक्षा कृष्ण पक्ष का चाँद अपने तेज, प्रभा, छाया आदि गुणो से उत्तरोत्तर क्षीण होता जाता है और अन्त में अमावस्या के दिन इन सभी गुणों से हीन हो जाता है उसी प्रकार दीक्षा लेने के पश्चात् हीनता प्राप्त करने वाला साधु या साध्वी क्षमा, मृदुता, सरलता आदि गुणों से क्रमश हीन होता गुण-विहीन हो जाता है। दूसरी ओर शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा इसी प्रकार उत्तरोत्तर अपने तेज प्रभा आदि गुणों में वृद्धि पाता हुआ पूर्णिमा के दिन सम्पूर्ण बन जाता है उसी प्रकार जो साधु-साध्वी अपने क्षमा, मृदुता, ब्रह्मचर्य आदि गुणो मे वृद्धि करते हैं वे शनै शनै परिपूर्ण गुण सम्पन्न बन जाते है।

TENTH CHAPTER : THE MOON : INTRODUCTION

Title—Chandim—Chandrama—the moon The moon hanging in space with its perpetual cycles of progressive growth and decline is a unique example of the sequences of growth and decline Bhagavan Mahavir used this example to explain the growth and decline of the virtues of the soul

Gist of the story—Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Rajagriha Gautam Swami asked him how the virtues of a being grow and decline Bhagavan replied that just as during the dark fortnight of a month the moon gradually declines in its attributes like its whiteness, glow, etc , and at last on the dark night (moonless night) is devoid of all its attributes, the ascetic who starts to decline in ascetic virtues like clemency, beneficence, etc similarly goes on declining slowly and in the end is devoid of any virtue Also, during the bright fortnight the moon grows every day in these attributes and on the full moon night it is at its best Similarly, the ascetic who starts to progress in the prescribed virtues and continues to do so, at last acquires perfection

■■

दसमं अज्झयणं : चंदिम
दसवाँ अध्ययन : चन्द्रमा
TENTH CHAPTER : CHANDIM - THE MOON

सूत्र १ : जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव महावीरेणं णवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

सूत्र १ : जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भंते ! श्रमण भगवान महावीर ने नवम ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो दसवें ज्ञात-अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the sixth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सुधर्मा स्वामी का उत्तर

सूत्र २ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णामं राया होत्था। तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं गुणसीलए णामं चेइए होत्था।

सूत्र २ जम्बू ! काल के उस भाग में राजगृह नाम का एक नगर था, जहाँ श्रेणिक नाम का राजा राज्य करता था। नगर के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा में गुणशील नाम का एक चैत्य था।

SUDHARMA SWAMI NARRATED

2. Jambu! During that period of time there was a city named Rajagriha. King Shrenik ruled over that city Outside the city in the north-eastern direction there was a Chaitya named Gunasheel Chaitya.

सूत्र ३ : तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहं सुहेणं विहरमाणे, जेणेव गुणसीलए चेइए तेणेव समोसढे। परिसा निग्गया। सेणिओ वि राया निग्गओ। धम्मं सोच्चा परिसा पडिगया।

सूत्र ३ : उस समय में एक ग्राम से दूसरे ग्राम को जाते, अनुक्रम से विचरते हुए श्रमण भगवान महावीर गुणशील चैत्य में पधारे। श्रेणिक राजा सहित नगरवासियों की परिषद (समूह) भगवान का धर्मोपदेश सुनने निकली और सुनकर लौट गई।

3. During that period of time, going from one village to another, Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the Gunasheel Chaitya. A delegation of

citizens led by king Shrenik came to attend his discourse. They returned after the discourse.

सूत्र ४ : तए णं गोयमसामी समणं भगवं महावीरं एवं वयासी–कहं णं भंते ! जीवा वड्ढंति वा हायंति वा?

सूत्र ४ : इसके पश्चात गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से प्रश्न किया–"भंते ! जीव (आत्मा) किस प्रकार वृद्धि (निज के ज्ञानादि गुणों का विकास) को प्राप्त होता है और किस प्रकार हानि को ?"

4. After that, Gautam Swami put forth a question before Shraman Bhagavan Mahavir—"Bhante! How does a being grow and how does it decline?" (here growing and declining refer to virtues like knowledge)

भगवान द्वारा समाधान

सूत्र ५ : गोयमा ! से जहाणामए बहुलपक्खस्स पडिवयाचंदे पुण्णिमाचंदं पणिहाय हीणे, वण्णेणं; हीणे सोम्मयाए, हीणे निद्धयाए, हीणे कंतीए एवं दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेस्साए मंडलेणं,

तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवयं चद पणिहाय हीणतराए वण्णेण जाव मडलेणं,

तयाणंतरं च ण तइयाचदे बिइयाचंद पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव मडलेण,

एव खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे परिहायमाणे जाव अमावस्साचंदे चाउद्दसिचद पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेण।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पव्वइए समाणे हीणे खतीए एवं मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेण मद्दवेण सच्चेणं तवेण चियाए अकिंचणयाए बंभचेरवासेण, तयाणतरं च ण हीणे हीणतराए खतीए जाव हीणतराए बभचेरवासेणं, एवं खलु एएण कमेण परिहीयमाणे परिहीयमाणे णट्ठे खतीए जाव णट्ठे बंभचेरवासेण।

सूत्र ५ "गौतम ! जिस प्रकार कृष्णपक्ष की एकम (प्रतिपदा) का चन्द्र पूर्णिमा के चन्द्र की तुलना मे वर्ण (शुक्लता), सौम्यता, स्निग्धता, और कान्ति मे हीन होता है। उसी प्रकार वह दीप्ति (चमक), युक्ति (आकाश से सयोग), छाया, प्रभा, ओजस् (सामर्थ्य), लेश्या (किरण), और मण्डल (गोलाई) से क्षीण होता है।

"कृष्णपक्ष की द्वितीया का चन्द्रमा इन सभी गुणो मे एकम के चन्द्रमा से क्षीण होता है।

"इसके बाद तृतीया का चन्द्रमा दूज के चन्द्रमा से भी क्षीण होता है। इसी तरह आगे भी प्रतिदिन क्रमश हीन होता जाता है। अमावस्या का चन्द्रमा चतुर्दशी के चन्द्रमा से भी हीन होता है और उसके वर्ण आदि उपरोक्त सभी गुण नष्ट हो जाते है।

कृष्ण पक्ष

अमावस्या

प्रतिपदा

शुक्ल पक्ष
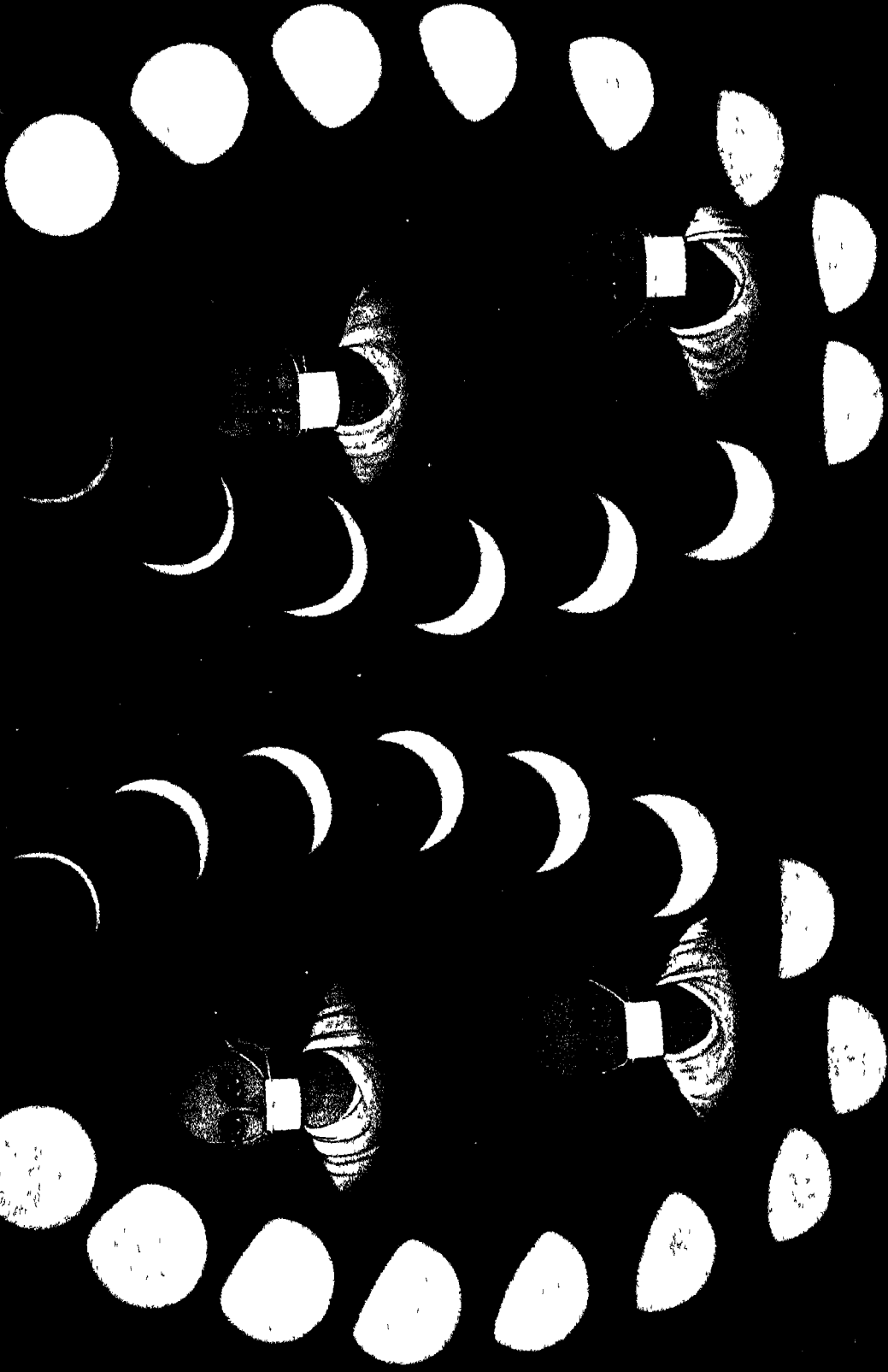
पूर्णिमा

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

चन्द्रमा का उपनय : गुण हानि-वृद्धि

चित्र : ३

१ जिस प्रकार कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा का चन्द्रमा पूर्णिमा के चन्द्रमा से कान्ति, दीप्ति, प्रभा-मडल आदि मे कुछ हीन होता है। द्वितीया का चन्द्रमा उससे कुछ अधिक हीन होता हुआ क्रमश घटता-घटता क्षीण, क्षीणतर दशा मे पहुँचते हुए अमावस्या के दिन वह प्रभा, कांति, दीप्ति, ज्योत्स्ना आदि सभी गुणो से नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार दीक्षित होने के पश्चात् जो साधु-साध्वी क्षमा, ऋजुता, आदि श्रमणधर्मो से हीन, हीनतर होता जाता है, वह एक दिन अमावस्या के चन्द्रमा के समान सर्वथा गुणहीन स्थिति को प्राप्त हो जाता है।

२ जिस प्रकार शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा का चन्द्रमा अमावस्या के चन्द्रमा की अपक्षा शुक्लता, कांति, प्रभा-मडल आदि म कुछ अधिक होता है और फिर द्वितीया, आदि को क्रमश उससे श्रेष्ठ स्थिति प्राप्त होता हुआ पूर्णिमा के दिन प्रभा, ज्योत्स्ना, आदि गुणो मे श्रेष्ठतम हो जाता है उसी प्रकार दीक्षित होने के पश्चात् जो साधु-साध्वी अपने क्षमा आदि श्रमणधर्मो मे वर्द्धमान रहता है वह एक दिन श्रेष्ठतम गुणो से परिपूर्ण बन जाता है। (दशम अध्ययन)

THE MOON : GROWTH AND DECLINE OF VIRTUES

ILLUSTRATION 3

1 During the dark fortnight of a month the moon gradually declines in its attributes like its whiteness, glow, etc , and at last on the darkest night (moonless night) it is devoid of all its attributes In the same way, the ascetic who starts to decline in ascetic virtues like clemency, beneficence, etc goes on declining slowly and in the end is devoid of any virtue

2 Also, during the bright fortnight the moon grows every day in these attributes and on the full moon night it is at its best In the same way the ascetic who starts to progress in the prescribed virtues, and continues to do so, at last acquires perfection **(CHAPTER - 10)**

"उसी प्रकार आयुष्मान् श्रमणों ! जो साधु या साध्वी दीक्षा लेने के बाद क्षमा, मुक्ति (निर्लोभ), आर्जव, मार्दव, लाघव, सत्य, तप, त्याग, अकिंचनता, ब्रह्मचर्य, आदि श्रमण-धर्मों से हीन होता है वह उक्त क्षमा आदि गुणो से भी हीन, हीनतर होता जाता है। क्रमशः उसके क्षमा, निर्लोभता आदि गुण नष्ट होते हैं और अन्ततः उसका ब्रह्मचर्य भी नष्ट हो जाता है।

MAHAVIR'S EXPLANATION

5. "Gautam! During the dark fortnight of a month the moon on the first night is less white, soft, soothing, and glowing as compared to the moon of the previous night (the full moon night) Similarly it is low in its intensity, contrast, shadow, brilliance, radiance, rays, and orb

"In all these properties the moon of the second night of the dark fortnight declines further as compared to the moon of the first night

"After this the moon of the third night of the dark fortnight is even more reduced as compared to the moon of the second night Similarly it goes on reducing gradually every day The moon on the dark night (moon-less night) is inferior even as compared with the moon of the fourteenth night of the dark fortnight and is devoid of all the above said properties.

"Similarly, O long living Shramans! The ascetic who after accepting Diksha starts to decline in any or all of the prescribed virtues of ascetics like clemency, beneficence, simplicity, humility, Laghav (extreme atrophy of ego and desire for possessions), truthfulness, asceticism, detachment, modesty, and Brahmacharya (absolute constancy of spiritual pursuit, also celibacy) goes on declining in the said virtues One after the other he continues to lose these virtues and in the end he loses his Brahmacharya also.

सूत्र ६ से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवयाचंदे अमावसाए चंदं पणिहाय अहिए वण्णेण जाव अहिए मडलेणं,

तयाणतरं च णं बिइयाचदे पडिवयाचद पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहियतराए मडलेण।

एव खलु एएण कमेणं परिवुड्ढेमाणे जाव पुण्णिमाचंदे चाउद्दसिं चंदं पणिहाय पडिपुण्ण वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं।

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे अहिए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं, तयाणंतरं च ण अहिययराए खंतीए जाव बंभचेरवासेणं। एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे परिवड्ढेमाणे जाव पडिपुण्णे बंभचेरवासेणं, एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा।

सूत्र ६ . "जैसे शुक्लपक्ष की एकम का चन्द्र अमावस्या के चन्द्र की तुलना में वर्ण से कान्ति, तथा दीप्ति यावत् मण्डल (पूर्व–सू ५ के समान) तक के सभी गुणो मे श्रेष्ठ होता है और प्रतिदिन क्रमश श्रेष्ठतर होता जाता है। अन्तत पूर्णिमा का चन्द्र चतुर्दशी के चन्द्र की अपेक्षा परिपूर्ण वर्णादि गुणो वाला होता है।

"उसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणो ! जो साधु-साध्वी दीक्षा लेने के बाद क्षमा से ब्रह्मचर्य तक के सभी गुणो (पूर्वसम–सू ५ के समान) मे निरन्तर वृद्धि करता है वह निश्चय ही इन सभी गुणो से परिपूर्ण हो जाता है।

"इस प्रकार जीव (आध्यात्मिक गुणो के विकास की दृष्टि से) वृद्धि को या हानि को प्राप्त होता है।"

6. During the bright fortnight of a month the moon on the first night is more white, soft, soothing, and glowing as compared to the moon of the previous night (the moon less night) Similarly it is higher in its intensity, contrast, shadow, brilliance, radiance, rays, and orb It goes on increasing gradually every day The moon on the bright night (full moon night) is better even as compared to the moon of the fourteenth night of the bright fortnight and is at its best in all the above said properties

" Similarly, O long living Shramans! The ascetic who starts to progress in any or all of the prescribed virtues of ascetics (as mentioned in para 5) goes on progressing in the said virtues One after the other he continues to gain perfection in these virtues and in the end he acquires perfection in all

This is how a being grows and how it declines

सूत्र ७ · एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महीवारेण दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ७ जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने दसवे ज्ञाता अध्ययन का यह अर्थ कहा है। जैसा मैने सुना है, वैसा ही कहता हूँ।

7. Jambu! This is the text and the meaning of the tenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm

॥ दसम अज्झयणं समत्त ॥

॥ दसवॉ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE TENTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाता सूत्र का यह दसवाँ अध्ययन कथा नहीं, एक सटीक उदाहरण है जिसके माध्यम से क्रमिक विकास और क्रमिक ह्रास का महत्त्व समझाया है साथ ही आत्मिक विकास के पथ पर गुणो की महत्ता को दिखाया है। साधना में शिथिलता साधक को निरन्तर ह्रास की ओर ले जाती है और साधना में दृढ़ता निरन्तर विकास की ओर। इस प्रक्रिया की क्रमबद्धता में गूढ़ संकेत यह है कि साधक शिथिलता को जिस स्तर पर भी पहचान ले अपनी दिशा को बदल सकता है।

CONCLUSION

This tenth chapter of Jnata Dharma Katha is not a story It is an appropriate example employed to explain the value of progressive growth and decline At the same time it also shows the importance of virtues on the path of spiritual uplift Laxity in practices pushes downhill and perseverance in practices helps going uphill The process is always gradual and this provides a hidden indication that the moment the practicer becomes aware of the direction of his movement he can try and change it toward the desired goal

उपनय गाथा

"जह चदो तह साहू राहुवरोहो जहा तह पमाओ।
वण्णाइगुणगणो जह तहा खमाई समणधम्मो॥१॥
पुण्णो वि पइदिण जह हायंतो सव्वहा ससी नस्से।
तह पुण्णचरित्तो वि हु कुसीलसंसग्गिमाईहिं॥२॥
जणियपमाओ साहू हायतो पइदिणं खमाईहिं।
जायइ नट्ठचरित्तो तत्तो दुक्खाइ पावेइ॥३॥
हीणगुणो वि हु होउं सुहगुरुजोगाइजणियसंवेगो।
पुण्णसरूवो जायइ विवड्ढमाणो ससहरो व्व॥४॥

चन्द्रमा को साधु समझे और प्रमाद को राहु-ग्रहण। वर्ण, कान्ति, आदि चन्द्रमा के गुणों के समान क्षमा आदि दस श्रमण धर्म है॥१॥

जैसे पूर्ण होने पर भी चन्द्रमा प्रतिदिन क्षीण होता होता सर्वथा लुप्त हो जाता है वैसे ही पूर्ण चारित्रवान साधु भी कुशीलो के संसर्ग से प्रमाद युक्त होने के कारणस्वरूप क्रमश उन गुणो से क्षीण होता होता चारित्रहीन हो जाता है, दु:खो को प्राप्त होता है॥२, ३॥

जैसे लुप्त चन्द्रमा प्रतिदिन विकास पाकर पूर्ण बन जाता है वैसे ही हीन गुणो वाला साधु भी सद्गुरु के संयोग से सवेग प्राप्त करता है और क्रमश विकास पाकर पूर्ण चारित्रवान बन जाता है॥४॥

THE MESSAGE

The moon is the ascetic and the eclipse is illusion and lethargy Such attributes as colour, brilliance, etc are the virtues of the ascetic, viz forgiveness, humility, etc (1)

As a full moon gradually declines and vanishes in the end, an ascetic, perfect in discipline, also gradually loses his virtues if he becomes lax under the influence of vices In the end he loses all his virtues and begets distress (2, 3)

As the dark moon grows everyday and turns into full moon, so an ascetic low in virtues starts progressing if, inspired by an able guru, he develops a spiritual craving, and in the end he attains perfection (4)

■■

ग्यारहवाँ अध्ययन : दावद्रव : आमुख

शीर्षक–दावदवे–दावद्रव–समुद्री हवाओं से शीघ्र प्रभावित होने वाला वृक्ष विशेष। पर्यावरण मे विभिन्न परिवर्तन वृक्षो पर विभिन्न प्रभाव डालते है। जैसे प्रत्येक व्यक्ति का नैसर्गिक विकास उसकी संरचना मे अन्तर्निहित बल के अनुरूप होता है वैसे ही प्रत्येक वृक्ष का विकास भी होता है। और इसी बल और विकास पर निर्भर करते हैं बाहरी प्रभावों के फल। कुछ वृक्ष इन प्रभावो को सह पाते है कुछ नही। प्रकृति मे उपलब्ध इस सटीक उदाहरण का उपयोग इस अध्ययन में साधक की सहनशीलता को समझाने के लिए किया गया है। साधक की आत्मोन्नति के मार्ग मे सहनशीलता एक आवश्यक और आधारभूत पाथेय है।

कथासार–राजगृह मे भगवान महावीर से गौतम स्वामी ने प्रश्न किया कि जीव आराधक तथा विराधक किस प्रकार बनता है? भगवान ने समझाया कि समुद्र के किनारे दावद्रव नाम के हरे-भरे वृक्ष होते है। जब द्वीप की ओर से पवन चलती है तब अधिकतर वृक्ष खिल उठते है किन्तु कुछ ऐसे भी होते है जो कुम्हला जाते है। उसी प्रकार कुछ साधु-साध्वी अपने सम्प्रदाय (गण) वालो के कटुवचन तो सहन कर लेते है किन्तु अन्य सम्प्रदाय वालो के कटुवचन सहन नही कर सकते। ऐसे साधक देश-विराधक होते है।

अनेक वृक्ष ऐसे होते हैं जो समुद्र की ओर से चलने वाली वायु मे कुम्हला जाते हैं पर कुछ ऐसे भी हैं जो खिल उठते है। उसी प्रकार से कुछ साधु अन्य सम्प्रदाय की कटूक्ति सहन कर लेते है पर अपने सम्प्रदाय (गण) की नही सह सकते। ऐसे साधक देश-आराधक होते हैं।

जब समुद्र तथा द्वीप दोनो ओर से पवन बहना बन्द हो जाता है तब सभी वृक्ष कुम्हला जाते है। उसी प्रकार किसी भी सम्प्रदाय या गण की कटूक्ति सहन नहीं कर पाने वाले साधु सर्वविराधक होते है।

जब द्वीप और समुद्र दोनो ओर से पवन बहती है तब सभी वृक्ष लहलहा उठते हैं। उसी प्रकार जो साधक किसी भी सम्प्रदाय की कटूक्ति सहन कर सकते हैं वे सर्व-आराधक होते हैं।

ELEVENTH CHAPTER : THE DAVADRAV : INTRODUCTION

Title—Davadave—Davadrav—a species of tree that is highly sensitive to the coastal winds Changes in environmental conditions have varying effects on trees As the natural growth of every individual human being is governed by the inherent strength of his constitution, the same is true for trees Some trees can tolerate the changes and others cannot This appropriate example from nature has been used to explain the tolerance of a spiritual practicer On the path of spiritual progress tolerance is a basic and essential element

Gist of the story—Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir how a being becomes an aspirer or decliner? Bhagavan explained that on the seashore there are lush green Davadrav trees When the wind blows from the island many of these trees remain unaffected but some wither Similarly ascetics who tolerate criticism by people of their own school but fail to do so in case of criticism by people of other schools are partial decliners

There are many trees that wither away when the wind blows from the sea but some remain unaffected Similarly, ascetics who tolerate the criticism by people of other schools but fail to do so in case of criticism by people of their own school are partial aspirers

When no wind blows either from the island or from the sea all the Davadrav trees wither Similarly, those ascetics who cannot tolerate any criticism by anyone are absolute decliners

When winds blow from all directions all the Davadrav trees remain healthy Similarly, ascetics who can tolerate any criticism by anyone are absolute aspirers

■■

एक्कारसमं अज्झयणं : दावदवे
ग्यारहवाँ अध्ययन : दावद्रव
ELEVENTH CHAPTER : DAVADAVE - THE DAVADRAV

सूत्र १ जइ णं भंते ! दसमस्स णायज्झयमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भन्ते ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने दसवे ज्ञाता अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो ग्यारहवें ज्ञात-अध्ययन का क्या अर्थ बताया है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the eleventh chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सुधर्मा स्वामी का उत्तर

सूत्र २ : एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णाम राया होत्था। तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरिच्छम दिसीभाए एत्थ ण गुणसीलए णामं चेइए होत्था।

सूत्र २ जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नाम का एक नगर था जहाँ श्रेणिक राजा राज्य करता था। नगर के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा मे गुणशील नाम का एक चैत्य था।

SUDHARMA SWAMI NARRATED

2. Jambu! During that period of time there was a city named Rajagriha. King Shrenik ruled over that city Out side the city in the north eastern direction there was a Chaitya named Gunasheel Chaitya

सूत्र ३ : तेणं कालेणं तेणं समएण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे जाव गुणसीलए णामं चेइए तेणेव समोसढे। राया निग्गओ, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया।

सूत्र ३ : काल के उस भाग मे एक ग्राम से दूसरे ग्राम को जाते, अनुक्रम से विचरते हुए श्रमण भगवान महावीर गुणशील चैत्य में पधारे। श्रेणिक राजा सहित नगरवासियों की परीषद धर्मोपदेश सुनने निकली और सुनकर लौट गई।

3. During that period of time, going from one village to another, Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the Gunasheel Chaitya A delegation of

citizens led by king Shrenik came to attend his discourse They returned after the discourse

आराधक-विराधक सम्बन्धी जिज्ञासा

सूत्र ४ : तए ण गोयमो समण भगवं महावीर एव वयासी-'कह ण भते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति?'

सूत्र ४ तब गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से प्रश्न किया-"भते ! जीव किस प्रकार आराधक और किस प्रकार विराधक होते है?"

CURIOSITY ABOUT ASPIRER AND DECLINERS

4. After that, Gautam Swami put forth a question before Shraman Bhagavan Mahavir —"Bhante! how does a being become an aspirer and how does it become a decliner?"

सूत्र ५ . गोयमा ! से जहाणामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता-किण्हा जाव निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

जया णं दीविच्चगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तदा ण बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुन्ना झोडा परिसडिय-पडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा चिट्ठंति।

सूत्र ५ "गौतम ! समुद्र के तट पर दावद्रव नामक वृक्ष होते है। वे बादलो के समूह जैसे घने और कृष्ण वर्ण के होते है। वे फल और पत्तो से भरपूर और अपनी हरियाली छटा से बडे मनोहारी और शोभनीय लगते है।

"जब जलकणो से स्निग्ध पुरवाई, पछाही, बयार या ऑधी द्वीप की दिशा से चलती है तब अनेक दावद्रव के वृक्ष तो अपने पत्तो समेत ज्यों के त्यो खडे रहते है। पर कुछएक वृक्ष टूट जाते है, कुछ के पत्ते सड जाते है और वे पीले पत्तो, फूलो और फलो के झड जाने से ठूठ जैसे मुरझाये खडे रहते है।

5. "Gautam! On the seashore there are trees of Davadrav (a species of trees, possibly rubber). They are thickly bunched and deep green like dark monsoon clouds. Rich with leaves and fruits, their lush green beauty is enchanting

"When the humid eastern wind, western wind, a breeze, or a gale blows from the direction of the island many of these Davadrav trees remain
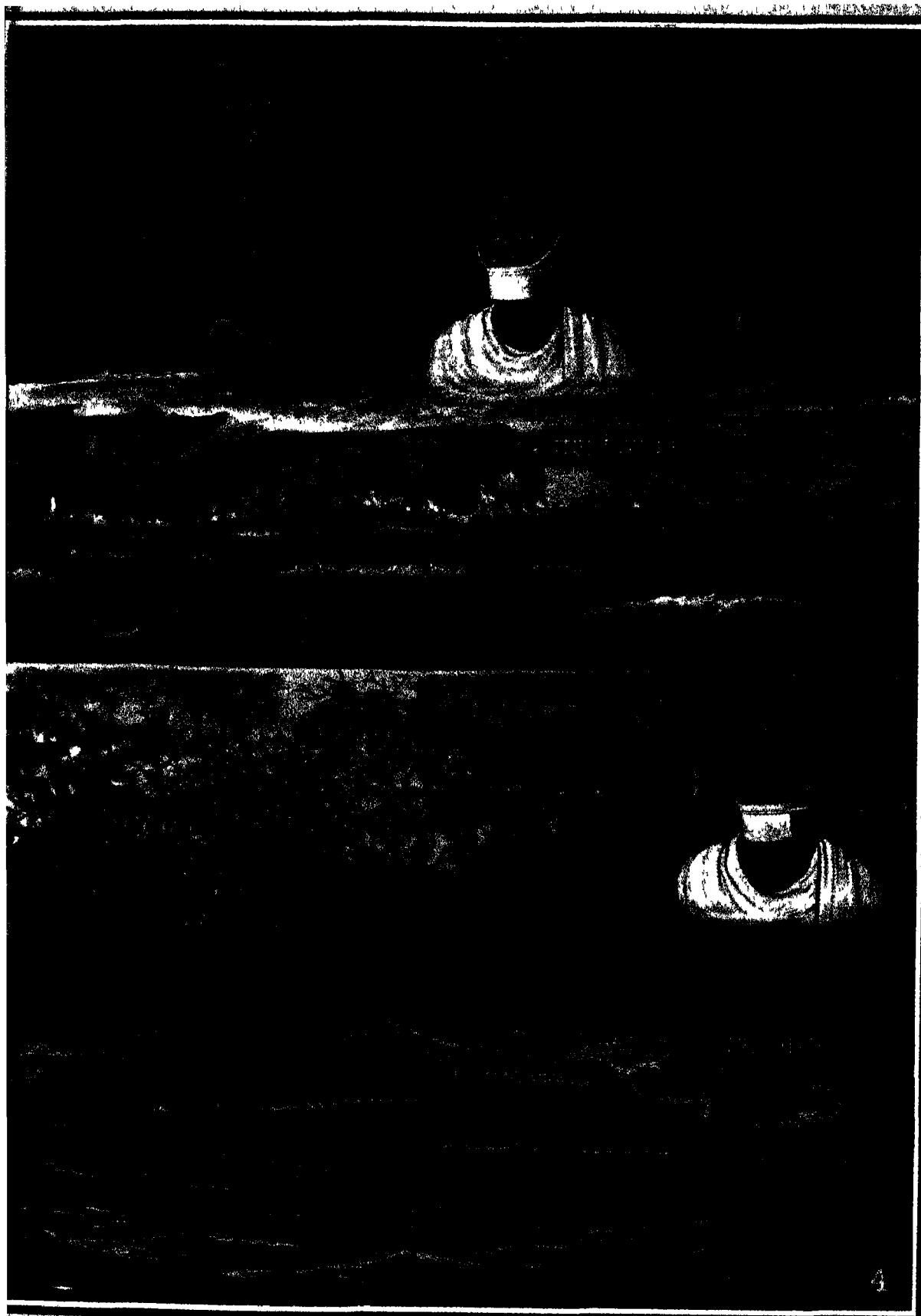
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दाव-द्रव वृक्ष का उपनय : देश आराधक-विराधक

चित्र : ४

१. जब द्वीप की तेज हवाएँ समुद्र की दिशा में चलती है, तो तट पर खड़े हुए दाव-द्रव नामक हरे-भरे कुछ वृक्ष तो गिर जाते है, कुछेक के फल-फूल पत्ते झड़ जाते है किन्तु अधिकतर वृक्ष फल-फूल सहित खड़े रहते है। उसी प्रकार जो श्रमण-श्रमणियाँ दीक्षित होने पर साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओ के कठोर प्रतिकूल दुर्वचनो को तो सह लेते है, किन्तु अन्यतीर्थिकों के दुर्वचनो को नही सह पाते। वे इस वृक्ष की भाँति देश-विराधक माने जाते है।

२. जब तेज हवाएँ समुद्र से द्वीप की तरफ चलती है तब बहुत-से वृक्ष टूट जाते है, फल-फूल रहित हो जाते है किन्तु कुछेक वृक्ष फल-फूल सहित शोभायुक्त बने रहते है। उसी प्रकार कुछ साधु-साध्वी अन्यतीर्थिको व गृहस्थो के दुर्वचन तो सह लेते है किन्तु स्व-तीर्थ साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविकाओ के प्रतिकूल वचन नही सह पाते। वे देश-आराधक कहे जाते है।

(ग्यारहवॉ अध्ययन)

DAVADRAV TREES : THE ASPIRERS AND DECLINERS

ILLUSTRATION 4

1. On the seashore there are lush green Davadrav trees. When the wind blows from the island many of these trees remain unaffected but some wither. In the same way the ascetics who tolerate criticism by people of their own school (Sadhus, Sadhvis, Shravaks, and Shravikas), but fail to do so in the case of criticism by people of other schools, are partial decliners.

2. There are many trees which wither away when the wind blows from the sea but some of these remain unaffected. In the same way, the ascetics who tolerate the criticism by people of other schools but fail to do so in case of criticism by people of their own school are partial aspirers.

(CHAPTER - 11)

unaffected. However, some of these trees fall down The leaves of some trees decay; they shed their yellow leaves, flowers and fruits and look like dried stumps.

देश-विराधक

सूत्र ६ : एवामेव समणाउसो ! जे अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाणं, बहूणं सावियाणं सम्मं सहइ जाव खमइ तितिक्खइ अहियासेइ, बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ, एस ण मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते समणाउसो !

सूत्र ६ "उसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणो ! जो साधु-साध्वी दीक्षा लेने के बाद अन्य अनेक साधु-साध्वियो तथा श्रावक-श्राविकाओं के प्रतिकूल वचनो को सम्यक् प्रकार से सहन करता है तथा सुनकर समभाव रखता है, किन्तु अन्यतीर्थिको आदि के दुर्वचनों को सम्यक् रूप से नहीं सह पाता, उनपर समभाव नहीं रखपाता ऐसे व्यक्ति को मैने देश-विराधक कहा है।

PARTIAL DECLINERS

6. "Similarly, Long-lived Shramans! those of our ascetics who, after getting initiated, fully tolerate the criticism by other ascetics and laity of our school and remain equanimous, but fail to do so in case of criticism by ascetics and laity of other schools I call partial decliners

देश-आराधक

सूत्र ७ · समणाउसो ! जया ण सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायति, तया ण बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा जाव मिलायमाणा मिलायमाणा चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया जाव उपसोभेमाणा चिट्ठंति।

सूत्र ७ · "जब जलकणो से स्निग्ध पुरवाई, पछाही, बयार या ऑधी समुद्र की दिशा से चलती है तथा अनेक दावद्रव के वृक्ष टूट जाते है, पत्ते सड जाते हैं और पीले पत्तो, फूलो और फलो के झड जाने से वे ठूंठ जैसे मुरझाए खडे रहते है। पर कुछ वृक्ष अपने फूल-पत्तों सहित शोभित बने रहते है।

PARTIAL ASPIRERS

7. "Long-lived Shramans! When the humid eastern wind, western wind, a breeze, or a gale blows from the direction of the sea many of these trees fall down The leaves of many trees decay; they shed their yellow leaves, flowers and fruits and, look like dried stumps However, some of these Davadrav trees remain un-effected

सूत्र ८ : एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे बहूण अण्णउत्थियाणं, बहूण गिहत्थाणं सम्मं सहइ, बहूणं समणाणं, बहूणं समणीणं, बहूणं सावयाणं, बहूणं सावियाण नो सम्मं सहइ, एस ण मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते।

सूत्र ८ : "उसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणो ! जो साधु-साध्वी दीक्षा लेने के बाद बहुत से अन्य तीर्थिको व गृहस्थो के प्रतिकूल वचनों को तो सहन करलेता है और बहुत से साधु-साध्वियो तथा श्रावक-श्राविकाओ के प्रतिकूल वचनो को नही सह पाता, ऐसे पुरुष को मैने देश-आराधक कहा है।

8. "Similarly, Long-lived Shramans! those of our ascetics who, after getting initiated, fully tolerate the criticism by ascetics and laity of other schools and remain equanimous, but fail to do so in case of criticism by other ascetics and laity of our school I call partial aspirers

सूत्र ९ : समणाउसो ! जया ण नो दीविच्चगा णो सामुद्दगा ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव महावाया वायति, तए ण सव्वे दावद्दवा रुक्खा झोडा जाव मिलायमाणा मिलायमाणा चिट्ठंति।

सूत्र ९ : "आयुष्मान् श्रमणो ! जब द्वीप की ओर या समुद्र की ओर किसी भी प्रकार की कोई भी वायु नही बहती, तब समस्त दावद्रव वृक्ष मुरझाये हुए जीर्ण सरीखे तथा ठूठ जैसे हो जाते है।

9. "Long-lived Shramans! When no wind of any type blows either towards the island or towards the sea all the Davadrav trees become drooped and look like old bare stumps

सर्व-विराधक

सूत्र १० : एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूणं सावियाणं बहूण अन्नउत्थियाण बहूण गिहत्थाण नो सम्म सहइ, एस ण मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते।

सूत्र १० : "उसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणो ! जो साधु-साध्वी दीक्षा लेने के बाद किसी के भी (विस्तार सूत्र ६ के समान) दुर्वचन को सहन नही करता उसे मैने सर्व विराधक कहा है।

ABSOLUTE DECLINERS

10. "Similarly, Long-lived Shramans! those of our ascetics who, after getting initiated, cannot tolerate any criticism by anyone I call absolute decliners

सूत्र ११ : समणाउसो ! जया ण दीविच्चगा वि सामुद्दगा वि ईसि पुरेवाया पच्छावाया जाव वायंति, तदा णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया जाव चिट्ठंति।

धर्म विराधक

धर्म आराधक

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दाव-द्रव वृक्ष का उपनय : सर्वविराधक—सर्व-आराधक

चित्र ५

१ जब द्वीप या समुद्र, किसी भी ओर से किसी प्रकार की वायु नहीं बहती है तब भी समस्त दाव द्रव वृक्ष मुर्झाये ठूँठ जैसे हो जाते है उसी प्रकार जो साधु-साध्वी किसी के भी दुर्वचन आदि सहन नही कर पाते वे अपने श्रमण गुणो से हीन होकर उस वृक्ष की भाँति सर्वविराधक कहलाते है।

२ जब द्वीप की ओर तथा समुद्र की ओर सभी प्रकार की वायु चलती है, तब भी सब वृक्ष अपने फल-फूल आदि से शोभित हरे-भरे रहते है। उसी प्रकार जो साधु-साध्वी स्व-तीर्थिक व अन्यतीर्थिक सभी के दुर्वचन आदि सह लेते है तथा अपने क्षमा आदि गुणो को धारण किये रहते है वे सर्वआराधक कहे जाते है।

(ग्यारहवॉ अध्ययन)

THE ABSOLUTE ASPIRERS AND THE ABSOLUTE DECLINERS

ILLUSTRATION 5

1 When no wind blows from either side all the Davadrav trees wither In the same way those ascetics who cannot tolerate any criticism by anyone are absolute decliners

2 When winds blow from all directions all the Davadrav trees remain healthy In the same way the ascetics who can tolerate any criticism by anyone are absolute aspirers

(CHAPTER - 11)

सूत्र ११ : "जब द्वीप की ओर तथा समुद्र की ओर सभी प्रकार की वायु चलती है तब सभी दावद्रव वृक्ष फलों-फूलों से शोभित रहते हैं।

11. "Long-lived Shramans! When all types of winds blow in all directions all the Davadrav trees remain healthy and loaded with flowers and fruits

सर्वाराधक

सूत्र १२ : एवामेव समणाउसो ! जे अम्हं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीण बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अन्नउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाण सम्मं सहइ, एस ण मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते समणाउसो !

एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति।

सूत्र १२ : "हे आयुष्मान् श्रमणो ! उसी प्रकार जो साधु-साध्वी दीक्षा लेने के उपरान्त साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका व अन्यतीर्थिको आदि सभी के दुर्वचनो को सहन करता है उस पुरुष को मैने सर्वाराधक कहा है।

"गौतम ! इस प्रकार जीव आराधक अथवा विराधक होते हैं।"

ABSOLUTE ASPIRERS

12. "Similarly, Long-lived Shramans! those of our ascetics who, after getting initiated, can tolerate any criticism by anyone I call absolute aspirers Gautam! This is how a being becomes an aspirer or a decliner"

सूत्र १३ : एव खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, त्ति बेमि।

सूत्र १३ : हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने ग्यारहवें ज्ञात अध्ययन का यही अर्थ कहा है। ऐसा ही मैंने सुना है, ऐसा ही मै कहता हूँ।

13. Jambu! This is the text and the meaning of the eleventh chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard and so I confirm

॥ एक्कारसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ ग्यारहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

|| END OF THE ELEVENTH CHAPTER ||

उपसंहार

ज्ञाताधर्म कथाग का यह ग्यारहवाँ अध्ययन भी कथा नही एक प्राकृतिक उदाहरण है जिसके माध्यम से सहिष्णुता और समता के महत्त्व को समझाया है। समता सहन करने की क्षमता पर निर्भर करती है और समता के बिना आत्मा का कालुष्य नही मिटता या कर्मों का क्षय नहीं होता। अत सहिष्णुता का साधना मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। देश (आशिक) आराधक, सर्व आराधक, देश विराधक, सर्व विराधक इन चार स्तरो के साथ सहनशीलता को और भी स्पष्ट कर दिया है।

CONCLUSION

This eleventh chapter of Jnata Dharma Katha is also not a story but an example from nature which has been used to explain the importance of tolerance and equanimity Equanimity depends on the capacity to tolerate and without equanimity the dirt within the soul cannot be cleansed or Karmas cannot be shed Thus tolerance plays a very important role in spiritual endeavour The degree of tolerance has also been spelled out by dividing it into four levels—partial aspirer, absolute aspirer, partial decliner, and absolute decliner

उपनय गाथा

जह दावद्दीवतरुणो एव साहू जहेह दीविच्चा।
वाया तह समणाइयसपक्खवयणाइ दुसहाइ॥१॥
जह सामुद्दयवाया तहऽण्णतित्थाइ कडुयवयणाइ।
कुसुमाइसपया जह सिवमग्गाराहणा तह उ॥२॥
जह कुसुमाइविणासो सिवमग्गविराहणा तहा नेया।
जह दीववायुजोगे बहु इड्ढ ईसि य अणिड्ढ॥३॥
तह साहम्मियवयणाण सहणमाराहणा भवे बहुया।
इयराणमसहणे पुण सिवमग्गविराहणा थोवा॥४॥
जह जलहिवायजोगे थेविड्ढ बहुयरा अणिड्ढओ।
तह परपक्खक्खमणे आराहणमीपि बहु इयर॥५॥

जह उभयवाउविरहे सव्वा तरुसंपया विणट्ठ त्ति।
अनिमित्तोभयमच्छररूवेण विराहण तह य॥६॥
जह उभयवायुजोगे सव्वसमिड्ढी वणस्स संजाया।
तह उभयवयणसहणे सिवमग्गाराहण पुण्णा॥७॥
ता पुण्णसमणधम्माराहणचित्तो सया महासत्तो।
सव्वेण वि कीरत सहेज्ज सव्व पि पडिकूलं॥८॥

जैसे दावद्रव जाति के वृक्ष हैं वैसे साधु को समझना चाहिए। द्वीप सम्बन्धी वायु के समान अपने पक्ष के श्रमणों के दुस्सह वचन समझने चाहिए॥१॥

जैसे समुद्री पवन है वैसे अन्य तीर्थिको (दूसरे मतावलम्बी) के कटु वचनो को समझना चाहिए। वृक्षो की पुष्प आदि सम्पत्ति मोक्ष मार्ग की आराधना के समान है॥२॥

इस सम्पत्ति का अभाव है मोक्ष मार्ग की विराधना। जैसे द्वीप सम्बन्धी वायु के सुप्रभाव से समृद्धि अधिक और असमृद्धि कम होती है॥३॥

वैसे ही साधर्मिको के दुर्वचनो को सहन करने से बहुत आराधना होती है किन्तु अन्य-धार्मिको के दुर्वचनो को सहन न करने से किचित् विराधना भी होती है॥४॥

जैसे सामुद्रिक वायु का संयोग मिलने पर किचित् समृद्धि और अधिक असमृद्धि होती है वैसे ही परपक्ष के वचन सहने से थोडी आराधना होती है और साधर्मिको के वचन न सहने से विराधना अधिक होती है॥५॥

जैसे दोनो प्रकार के पवन के अभाव मे पेडो की समस्त सम्पदा नष्ट हो जाती है वैसे ही बिना कारण दोनो के प्रति मत्सरता होने से सर्व-विराधना होती है॥६॥

जैसे दोनो प्रकार के पवन के योग से पेडो की समस्त सम्पदा फलती-फूलती है वैसे ही दोनों पक्षो के प्रति सहनशीलता रखने से सर्व-आराधना होती है॥७॥

अत जिसके मन मे श्रमण धर्म की पूर्ण आराधना करने की इच्छा है वह सभी के प्रतिकूल व्यवहार के प्रति सहनशील बना रहे॥८॥

THE MESSAGE

The Davadrav trees are the ascetics The wind blowing from the island is the criticism by the ascetics of the same school (1)

The wind blowing from the sea is the criticism by ascetics of other schools The richness of the trees, including flowers, is the intensity of spiritual endeavour targeted at liberation (2)

The absence of the richness of the trees is the decline in the intensity of spiritual endeavour As under the influence of the wind blowing from the island there is more enhancement and less decline in richness (3)

Similarly by tolerating criticism by people from the same school and not tolerating criticism by people from other schools there is more enhancement and less decline in the intensity of spiritual endeavour (4)

As under the influence of the wind blowing from the sea there is less enhancement and more decline in richness, in the same way by tolerating criticism by people from other schools and not tolerating criticism by people from the same school there is less enhancement and more decline in the intensity of spiritual endeavour (5)

As in the absence of wind from both the direction the richness of the trees is completely destroyed, similarly the presence of the feeling of jealousy for all for no apparent reason causes an absolute decline in the intensity of spiritual endeavour (6)

As in presence of wind from both directions the richness of the trees is fully enhanced, similarly tolerance for all causes absolute enhancement in the intensity of spiritual endeavour (7)

So, one desirous of absolutely sincere practice of the Shraman Dharma should have tolerance for any or all criticism and adverse behaviour (8)

■■

बारहवाँ अध्ययन : उदक ज्ञात : आमुख

शीर्षक–उदए–उदगे–उदक–पानी। प्रदूषण अथवा गुण परिवर्तन का सबसे व्यापक उदाहरण है पानी। इस उदाहरण के माध्यम से वस्तु की निरन्तर परिवर्तनशीलता को दर्शाकर इस अध्ययन में यह संकेत दिया है कि वस्तु को समझने-स्वीकारने से पूर्व उसके गुण-स्वभाव तथा परिवर्तन का सूक्ष्म निरीक्षण करना चाहिए। निरन्तर परिवर्तनशीलता को आत्मसात करना राग-द्वेष से बचने का प्रभावी उपाय है। एक जटिल विषय को खाई के जल जैसे व्यापक उदाहरण से सहज बोध-गम्य बना दिया है इस अध्ययन मे।

कथासार–चम्पानगरी मे राजा जितशत्रु राज्य करता था। उसके मत्री का नाम सुबुद्धि था और वह तत्त्वज्ञ श्रमणोपासक था। एक बार बहुत स्वादिष्ट भोजन करने के बाद राजा ने उस भोजन की बहुत प्रशंसा की। अन्य सभी उपस्थित जनो ने राजा का अनुमोदन किया किन्तु सुबुद्धि ने कहा कि इसमें उसे कोई आश्चर्यजनक बात नहीं लगी। समार मे सुन्दर लगती वस्तुएँ भी खराब हो जाती हैं और खराब लगने वाली वस्तुएँ भी अच्छी लगने लगती है, यह तो वस्तु का परिवर्तनशील स्वभाव है। राजा सुबुद्धि मत्री के इस व्यवहार से सतुष्ट नहीं हुआ।

चम्पानगरी के बाहर एक खाई थी जिसका जल अत्यन्त प्रदूषित तथा दुर्गन्धपूर्ण था। एक बार राजा उस दुर्गन्ध भरे पानी वाली खाई के पास से निकला। वह वहाँ से शीघ्र ही आगे बढ़ गया और तिलमिला कर उस गदे पानी की निदा करने लगा। इस बार भी अन्य सब ने राजा का अनुमोदन किया पर सुबुद्धि ने वही बात दोहराई। राजा सुबुद्धि के कथन से क्षुब्ध होकर बोला कि उसे यथार्थ के विषय मे मिथ्या प्रचार नही करना चाहिये।

सुबुद्धि ने मन ही मन सोचा कि किसी उपाय से राजा को जिन-प्रतिबोधित धर्म की बाते समझानी चाहिये। यह सोचकर उसने खाई से गदा पानी निकलवाकर साफ करके छनवाकर घड़ो मे भरवाया। सात दिन बाद उसे पुन नए घडो मे छनवाकर राख आदि मिलाकर रख दिया। इस प्रकार सात-सात दिन के अन्तर से सात बार शुद्ध करवाने से वह पानी पीने योग्य निर्मल बन गया। फिर उसे सुगध युक्त कर के राजा के जलसेवक को दिया और कहा कि भोजन के बाद राजा को यही जल परोसा जाय।

भोजन के पश्चात् जब राजा ने वह पानी पीया तो उसके स्वाद तथा सुगंध से वह आनन्दित हो गया। उसने सेवक से पूछा कि यह पानी कहाँ से आया? सेवक ने जब बताया कि सुबुद्धि मत्री ने भिजवाया है तो राजा ने सुबुद्धि को बुलाकर पूछा। सुबुद्धि ने बताया कि यह जल तो वही खाई का गन्दा पानी था। राजा को विश्वास नही हुआ और उसने मत्री द्वारा बताये तरीके से स्वय पानी शुद्ध करवाकर जाँच की। मत्री की बात सत्य सिद्ध होने पर उसे बुलवाकर जिन-धर्म का श्रवण किया। फिर राजा श्रमणोपासक बन गया। अन्तत उसने मंत्री सहित दीक्षा ग्रहण की और साधना कर मोक्ष प्राप्त किया।

TWELFTH CHAPTER : THE WATER : INTRODUCTION

Title—Udaye—Udage—Udak—water The most common example of pollution and the change of properties in nature is water Explaining the ever-changing nature of things with the help of this example, this story shows that before understanding and accepting a thing at its face value, its properties and possibilities of transformation should be minutely examined Accepting the ever-changing nature of things is an effective way of avoiding feelings of attachment and aversion This story has made a complex subject easy to understand with the help of a common example like water

Gist of the story—Jitshatru was the king of Champa His prime minister was Subuddhi He was a Shramanopasak having knowledge of the fundamentals One day after a sumptuous meal the king liberally praised the food Except for Subuddhi, all the guests present there agreed with the king Subuddhi said that there was nothing unusual about food Things that appear good turn bad, and vice versa Transformation is the basic nature of all things This behaviour of Subuddhi did not please the king

Outside the city there was a trench filled with stinking and polluted water One day King Jitshatru passed along that ditch with the stinking water He rushed away from there and cursed the dirty water This time, too all his companions agreed with him, but Subuddhi repeated his earlier statement King Jitshatru admonished Subuddhi saying that he should not spread such illusions about the reality

Subuddhi thought that he should somehow try to explain the teachings of the Jina to the king and make him accept the same He got some dirty water and filtered it into pitchers After a week he filtered it once again and ash was mixed in it This process of filtering and adding ash was repeated for seven weeks and the foul water turned pure He then added some perfumes and gave the water to the man in charge of the king's water-shed with instructions to serve only this water to the king

When the king drank that water he was extremely satisfied with its taste and smell The king asked the manager of the water-shed from where he got the water When he was informed that the water was sent by Subuddhi, the king called him and asked him the same question Subuddhi informed that the water was from the stinking ditch The king did not believe Subuddhi and got some more dirty water filtered and cleaned by the same process When Subuddhi was proved right the king called him and listened to the word of the Jina He then became a Shramanopasak At last he renounced the world along with his minister and indulged in spiritual practices to attain liberation

■■

बारसमं अज्झयणं : उदए
बारहवाँ अध्ययन : उदक ज्ञात
TWELFTH CHAPTER : UDAYE - THE WATER

सूत्र १ : जइ णं भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बारसमस्स णं नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र १ . जम्बू स्वामी ने पूछा- "भंते ! सिद्धि को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने ग्यारहवें ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो बारहवे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the twelfth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सुधर्मा स्वामी का उत्तर

सूत्र २ : एव खलु जंबू ! तेण कालेणं तेण समएणं चंपा णामं णयरी होत्था। पुण्णभद्द चेइए। तीसे ण चंपाए णयरीए जियसत्तु णाम राया होत्था। तस्स णं जियसत्तुस्स रन्नो धारिणी नाम देवी होत्था, अहीणा जाव सुरूवा। तस्स णं जियसत्तुस्स रन्नो पुत्ते धारिणीए अत्तए अदीणसत्तु णाम कुमारे जुवराया वि होत्था। सुबुद्धी अमच्चे जाव रज्जधुराचिंतए समणोवासए अहिगयजीवाजीवे।

सूत्र २ हे जम्बू ! काल के उस भाग मे चम्पा नाम की नगरी थी जहाँ पूर्णभद्र चैत्य था। चम्पा नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। उसके धारिणी नाम की रानी थी जो पचेन्द्रिय परिपूर्ण और सुन्दर थी। जितशत्रु राजा का पुत्र और धारिणी का आत्मज कुमार अदीनशत्रु वहाँ का युवराज था। राजा के मत्री का नाम सुबुद्धि था जो राज-काज का प्रभारी तथा राज्य का हित चिंतक था और जीव-अजीव आदि तत्त्वो का ज्ञाता श्रमणोपासक था।

SUDHARMA SWAMI NARRATED

2. Jambu! During that period of time there was a city named Champa outside which was a Chaitya named Purnabhadra. The name of the king of Champa was Jitshatru His ideally beautiful queen was Dharini The royal couple had a son named Adeenshatru who was the heir to the throne. The

prime minister of the king was named Subuddhi. He was loyal to the king and looked after all the affairs of the state. Subuddhi was a Shramanopasak having knowledge of the fundamentals like soul and matter.

सूत्र ३ : तीसे णं चंपाए णयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था, मेय-वसा-मंस-रुहिर-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-संछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं जाव फासेणं। से जहानामए अहिमडेइ वा गोमडेइ वा जाव मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिण-वावण्ण-दुरभिगंध किमिजालाउले, संसत्ते असुइ-वियग-बीभत्थ-दरिसणिज्जे, भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेण पण्णत्ते।

सूत्र ३ : चम्पा नगरी के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा में एक खाई थी जिसका पानी मेद, वसा, रक्त और पीव का भंड़ार था। वह मृत शरीरों से अटा पड़ा था और वर्ण, गध, रस और स्पर्श से घिनौना, अमनोज्ञ था। वह सडे, गले, कीडों से भरे और पशुओं द्वारा खाए गए मृत कलेवर जैसी दुर्गन्ध वाला था, मानो सर्प, गाय आदि जीवों की लाशे सड़कर दुर्गन्ध फैला रही हों। वह कृमियो तथा अन्य जीवो से भरा पड़ा था तथा अशुचि, विकृत और बीभत्स दिखाई देता था। क्या सचमुच वह इतना भयावह दिखता था? नहीं, वह जल तो इससे भी अधिक अनिष्ट बीभत्स दुर्गन्ध आदि वाला बताया गया है।

3. In the north eastern direction of the city there was a trench filled with grimy water polluted with marrow, fat, blood, and pus. Cadavers were heaped within this water body making it obnoxious to the senses of touch, smell, taste, and sight It was filled with a stench like that of a decomposed, decayed and vermin infested corpse as if the dead bodies of snake, cow, and other animals had decayed emitting a repulsive stench. Covered with crawling insects it appeared messy, foul, and revolting Was it really so repulsive? No, that water was obnoxious beyond describing

भोजन की प्रशंसा

सूत्र ४ : तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं राईसर जाव सत्थवाहपभिइहिं सद्धिं भोयणवेलाए सुहासणवरगए विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव विहरइ, जिमिय-भुत्तुत्तरागए जाव सुईभूए तंसि विपुलंसि असण जाव जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव पभिईए एव वयासी–

'अहो णं देवाणुप्पिया ! मणुण्णे असणं पाणं खाइमं साइमं वण्णेणं उववेए जाव फासेण उववेए अस्सायणिज्जे विस्सायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।'

सूत्र ४ : राजा जितशत्रु एक बार स्नान, बलिकर्म आदि से निवृत्त होकर हल्के, पर बहुमूल्य, आभूषण शरीर पर धारण कर अनेक राजाओं, राजकुमारों, सार्थवाहों (अ-१, सू. १९ के समान) आदि के साथ विपुल अशन, पान, खादिम और स्वादिम भोजन कर रहा था। भोजन पूरा होने के बाद हाथ मुँह धोकर पूर्णतया स्वच्छ हो उस भोजन के स्वाद से चकित हो वह उपस्थित लोगों से कहने लगा–

"अहो देवानुप्रियो ! यह भोजन जो हमने किया, वह उत्तम वर्णादि युक्त था और स्वाद ले लेकर खाने योग्य था। यह भोजन पुष्टिदायक, दीप्तिवर्धक (बल बढ़ाने वाला) दर्पवर्धक, मद-वर्धक, सर्व धातुवर्धक तथा देह तथा इन्द्रियों के लिए आनन्ददायक था।"

PRAISE OF THE FOOD

4. One day the king got ready after his bath and other daily chores and adorned himself with light but costly ornaments. He then joined numerous princes, kings, and other guests (details as in Ch 1 para 19) in a feast. After eating the sumptuous food and washing his hands and mouth, the king, impressed by the quality of the food, said to the guests —

"Beloved of gods! The food we ate was of best quality and worth enjoying. It was nourishing, invigorating, satisfying, intoxicating, and vitalizing It was blissful to all the five senses of the body"

सूत्र ५ : तए णं ते बहवे ईसर जाव सत्थवाहपभिइओ जियसत्तुं एवं वयासी–'तहेव णं सामी ! जं णं तुब्भे वदह। अहो ण इमे मणुण्णे असणं पाणं खाइमं साइमं वण्णेणं उववेए जाव पल्हायणिज्जे।'

सूत्र ५ राजा के इस कथन का वहाँ उपस्थित सभी सार्थवाह आदि उपस्थित अतिथियों ने एक स्वर से समर्थन किया–"स्वामिन्। आप जैसा कहते है, वह ठीक है। यह भोजन वास्तव में मनोज्ञ एव पुष्टिदायक आदि है।"

5. All the guests present there unanimously attested the king's statement,"What you say is true Sire! this food is indeed gourmet and nutritious (etc. as in para 4)"

सूत्र ६ : तए णं जितसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–'अहो णं सुबुद्धी ! इमे मणुण्णे असणं पाणं खाइमं साइमं जाव पल्हायणिज्जे।'

तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्सेयमट्ठं नो आढाइ, जाव तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र ६ : राजा जितशत्रु ने अपने मत्री सुबुद्धि को इंगित कर भोजन सम्बन्धी अपने विचार दोहराए–"हे सुबुद्धि ! यह भोजन उत्तम वर्ण, रस आदि से युक्त तथा इन्द्रिय एवं शरीर को आल्हादजनक था।" इस पर सुबुद्धि ने अपनी सहमति प्रकट नहीं की, वह मौन ही रहा।

6. King Jitshatru addressed his minister Subuddhi and repeated his opinion about the food, "Subuddhi! This food was exceptional in taste, nutritional value and other qualities and was exclusively enjoyable." Subuddhi did not attest to this opinion and remained silent.

वस्तु स्वभाव का कथन

सूत्र ७ : तए णं जियसत्तुणा सुबुद्धी दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे जियसत्तु रायं एवं वयासी–'नो खलु सामी ! अहं एयंसि मणुण्णंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि केइ विम्हए। एव खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पुग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति। सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति। सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति। सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति। सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति।

पओग-वीससापरिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता।'

सूत्र ७ : राजा जितशत्रु ने जब अपनी बात बार-बार दोहरायी तो सुबुद्धि ने राजा से कहा–"स्वामी ! मै इस स्वादिष्ट भोजन से तनिक भी विस्मित नही हूँ। हे स्वामी ! शुभ शब्द वाले पुद्‌गल अशुभ शब्द वाले पुद्‌गलों मे परिवर्तित हो जाते हैं और अशुभ शब्द वाले शुभ शब्द वालो मे। ठीक यही प्रकृति रूप, गध, रस और स्पर्श के पुद्‌गलो की है। अर्थात् शुभ रूप, शुभ गन्ध, शुभ रस वाले पुद्‌गल अशुभ, अनिष्ट, अप्रिय रूप, गध, रस व स्पर्श वाले पुद्‌गलो मे परिणत हो जाते है।

"हे स्वामी ! सभी प्रकार के पुद्‌गलो मे स्वभावत (विस्रसा तथा जीव की चेष्टा प्रयोग) के फलस्वरूप परिवर्तन होता ही रहता है।"

NATURE OF THINGS

7. When King Jitshatru repeated his views again and again Subuddhi said, "Sire! I am hardly impressed by this tasteful food Know sire! that molecules with good accoustic quality transform into molecules with bad accoustic quality, and vice versa Same is the nature of the molecules of form, smell, taste, and touch It means that the molecules with good form, good smell, good taste, and good touch are also transformed into molecules with bad, repulsive and obnoxious molecules of form, smell, taste, and touch

"Sire! Continued transformation, on their own or due to human interference is the basic nature of all molecules (matter)."
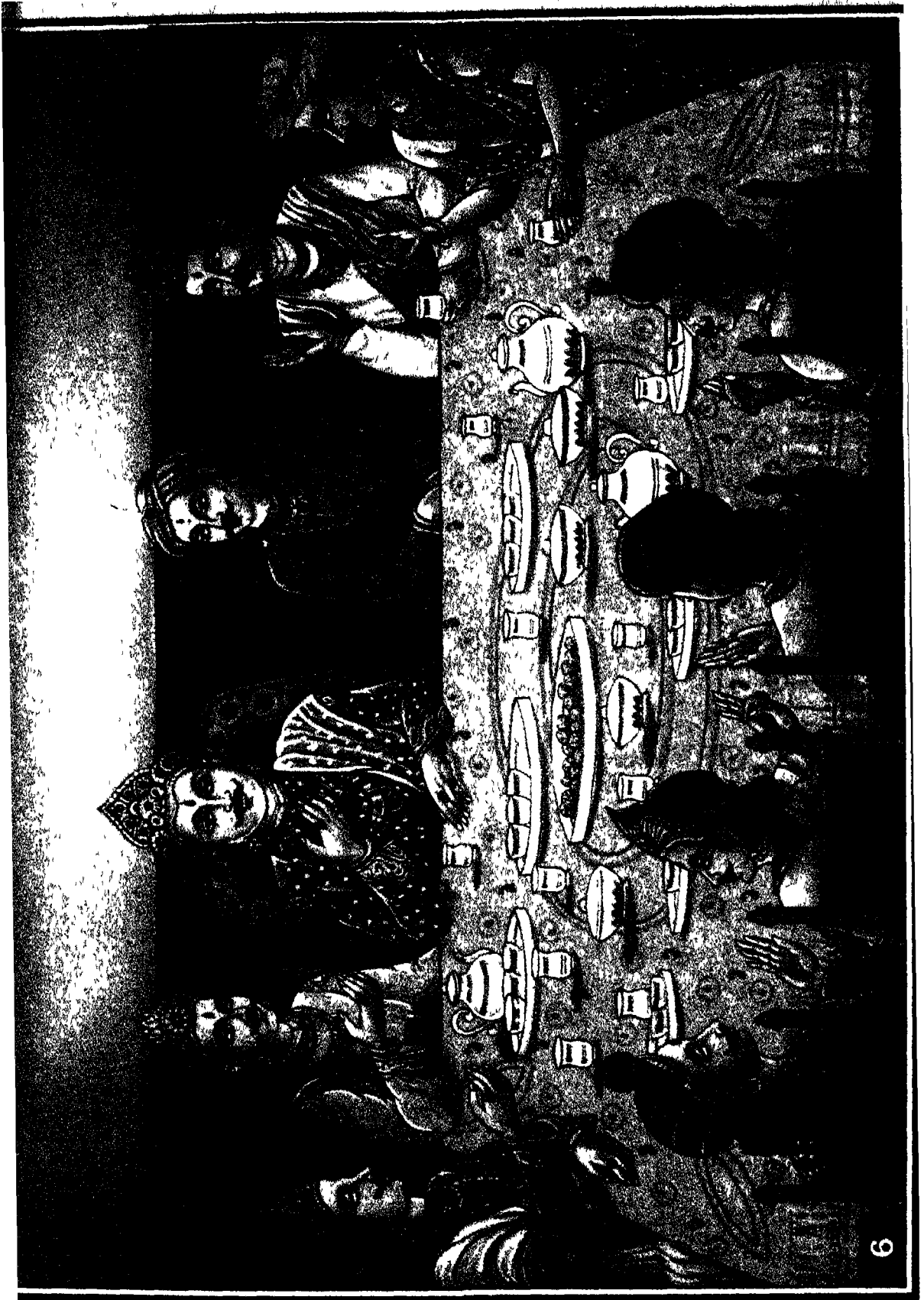
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

उदक-उपनय : स्वादिष्ट भोजन की प्रशंसा

चित्र ६

चम्पानगरी का जितशत्रु राजा एक वार मत्री, सार्थवाहो आदि के साथ भोजन कर रहा था। भोजन के पश्चात् राजा ने कहा–"अहा ! आज का भोजन कितना स्वादिष्ट और आनन्ददायक था?" सभी लोगो ने राजा के कथन की पुष्टि की, परन्तु सुबुद्धि मत्री मौन रहा। राजा ने पूछा–"क्यो मत्रिवर ! यह भोजन स्वादिष्ट है न?"

मत्री ने गभीरतापूर्वक उत्तर दिया–"महाराज ! पुद्गलो का स्वभाव ही ऐसा है शुभ पुद्गल अशुभ रूप मे व अशुभ पुद्गल शुभ रूप वर्ण-गध आदि मे परिवर्तित होते रहते है। इसमे राग-द्वेष का कोई कारण नही।"

(बारहवाँ अध्ययन)

PRAISE OF TASTY FOOD

ILLUSTRATION 6

Jitshatru, the king of Champa, one day, after a sumptuous meal with his princes, ministers, and merchants, liberally praised the food Except for Subuddhi, all the guests present there agreed with the king When the king asked for Subuddhi's opinion he said that there was nothing unusual about it Things that appear good turn bad and vice versa Transformation is the basic nature of all things Therefore it was hardly worth feeling happy or distressed about

(CHAPTER - 12)

सूत्र ८ : तए णं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र ८ : राजा जितशत्रु ने अमात्य सुबुद्धि के इस कथन का न तो आदर किया और न अनुमोदन। वह मौन ही रहा।

8. King Jitshatru neither accepted nor attested this statement of Subuddhi, he remained silent

खाई का दुर्गन्धित जल

सूत्र ९ : तए णं से जियसत्तू अण्णया कयाइ ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगर पह-आस-वाहणियाए निज्जायमाणे तस्स फरिहोदगस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ।

तए णं जियसत्तू राया तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जेण आसगं पिहेइ, एगंत अवक्कमइ, ते बहवे ईसर जाव पभिइओ एवं वयासी–'अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं गंधेणं रसेणं फासेणं। से जहानामए अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव गंधेण पण्णत्ते।'

सूत्र ९ : एक बार जितशत्रु राजा स्नानादि करके उत्तम घोडे पर सवार हो अपने अनेक सैनिको व सेवको के साथ घुडसवारी के लिए निकला। घूमते-घूमते वह उस खाई के निकट जा पहुँचा।

वहाँ उस खाई के गदे पानी से निकली अशुभ-गंध से घबराकर राजा ने अपने उत्तरीय वस्त्र से मुँह ढँक लिया। एक तरफ जा कर वह अपने साथ आये अन्य राजा, राजकुमार आदि से बोला–

"अहो देवानुप्रियो! इस खाई का पानी तो वर्ण, गन्ध, रस और स्पर्श से अशुभ है अमनोज्ञ है। यह तो सर्पादि की मृत देह से भी अधिक दुर्गन्धपूर्ण है।"

STINKING WATER

9. One day, after his bath (etc) King Jitshatru set out for horse riding with some of his personal staff and cavalry of guards. During his ride he came near the above detailed ditch

Hit by the acute repulsive stink emanating from the slimy water in the ditch he became sick and covered his nose with his shawl He rushed away from there and commented to the princes and other guests—"Beloved of gods! The water of this ditch is foul and repulsive in colour, smell, taste, and touch. Its stench is much more foul than that of animal carcasses "

सूत्र १० : तए णं ते बहवे राईसर जाव सत्थवाहपिभइओ एवं वयासी–तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे वयह, अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं गंधेणं रसेणं फासेणं, से जहानामए अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते।

सूत्र १० : तब राजा के साथियों ने एक स्वर में राजा के कथन का समर्थन किया–"स्वामी जैसा आप कहते हैं वैसा ही है। यह खाई का पानी अमनोज्ञ एवं अत्यन्त दुर्गन्धपूर्ण है।"

10. All his companions unanimously attested the kings statement, "What you say is true Sire! the water of this ditch is foul and repulsive (etc. as in para 9)"

सूत्र ११ : तए णं ते जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–'अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं से जहानामए अहिमडे इ वा जाव अमणामतराए चेव गंधेण पण्णत्ते।

तए णं सुबुद्धी अमच्चे जाव तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र ११ : जितशत्रु ने तब अमात्य सुबुद्धि से वही बात कही–"हे सुबुद्धि ! इस खाई का पानी वर्ण आदि से अमनोज्ञ, मृतसर्प की गंध से भी अधिक दुर्गन्ध युक्त है।

सुबुद्धि ने राजा की इस बात का अनुमोदन नही किया। वह चुप ही रहा।

11 Jitshatru repeated his statement to Subuddhi, "Subuddhi! The water of this ditch is foul and repulsive in colour, smell, taste, and touch Its stench is much more foul than that of animal carcasses"

Subuddhi did not attest to this opinion and remained silent

सूत्र १२ : तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्च दोच्चं पि तच्च पि एव वयासी–'अहो णं तं चेव।'

तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्च पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे एव वयासी–'नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदयंसि केइ विम्हए। एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति, तं चेव जाव पओग-वीससापरिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता।

सूत्र १२ : इस पर राजा ने वही बात दो तीन बार फिर कही–अहो सुबुद्धि ! यह पानी कितना अमनोज्ञ है एव दुर्गन्धयुक्त है। (सूत्र ९ के समान)

राजा के पुनः-पुन वही बात कहने पर सुबुद्धि ने कहा–"स्वामी! मुझे इस खाई के पानी के विषय में कोई भी आश्चर्य नही है। क्योंकि शुभ पुद्गल अशुभ पुद्गल रूप में परिणत हो जाते हैं और अशुभ पुद्गल शुभ रूप मे परिणत हो जाते हैं। मनुष्य के प्रयत्न से और स्वाभाविक रूप मे पुद्गलों मे यह परिवर्तन होता रहता है।" (विस्तार–पूर्व सू. ७ के समान)।

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

खाई का गन्दा पानी

चित्र ७

एक बार राजा जितशत्रु संध्या के समय सेवकों के साथ नगर के बाहर भ्रमण करने निकला। वहाँ वह गन्दे पानी के नाले (खाई) की तरफ चला गया। गन्दे पानी की दुर्गन्ध से सभी ने नाक-मुँह ढँक लिया। राजा ने कहा-"देखो, इस खाई का पानी कितना दुर्गन्धपूर्ण है?" सभी ने राजा की हाँ में हाँ मिलाई, किन्तु तत्त्वज्ञ मंत्री ने वही उत्तर दिया-"महाराज ! पुद्गलों का स्वभाव ही ऐसा है, इसमें राग-द्वेष नहीं करना चाहिए।"

(बारहवाँ अध्ययन)

THE DIRTY WATER OF THE DITCH

ILLUSTRATION : 7

One evening King Jitshatru set out for a ride outside the town along with his ministers and guards He passed along a ditch with stinking water The king and his retinue, all covered their faces with their shawls He rushed away from there and cursed that dirty water This time also all his companions agreed with him but Subuddhi repeated his earlier statement King Jitshatru was not happy with the minister's comment but he remained silent

(CHAPTER - 12)

12. King Jitshatru repeated his views again and again, "The water of this ditch is foul. . . . . (as para 9)."

When King Jitshatru repeated his views again and again Subuddhi said, "Sire! I am hardly disturbed by this foul water of the ditch. Know sire! that molecules with good qualities transform into molecules with bad qualities, and vice versa. Continued transformation, on their own or due to human interference is the basic nature of all molecules. (details as in para 7)."

सूत्र १३ : तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहुहिं य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिणिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि।

सूत्र १३ राजा जितशत्रु ने अमात्य सुबुद्धि से कहा–"देवानुप्रिय ! तुम असत् को सत् रूप में प्रकट करने का मिथ्या अभिनिवेश (दुराग्रह) करके स्वयं तथा दूसरों को भ्रम में मत डालो। अनभिज्ञ लोगों को ऐसी सीख मत दो।

13. King Jitshatru admonished Subuddhi, "Beloved of gods! you should refrain from trying to confuse yourself and others by perpetuating your dogma of presenting a nonexistent concept as existent. You should not spread such illusion among ignorant masses "

जल का शोधन

सूत्र १४ तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'अहो णं जितसत्तू संते तच्चे तहिए अवितहे सब्भूते जिणपण्णत्ते भावे णो उवलभइ, तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो सताण तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए।'

सूत्र १४ राजा की बात सुनकर सुबुद्धि को विचार आया–"अहो ! राजा जितशत्रु जिनेन्द्र द्वारा प्ररूपित सत् (विद्यमान) तत्त्व, तथ्य (वास्तविक), सत्य और प्रकट भावों से अनभिज्ञ है तथा अंगीकार नहीं करता। अच्छा होगा कि मैं उसे जिन प्ररूपित ऐसा तत्त्वज्ञान बताऊँ, सत्य का ज्ञान कराऊँ और उसे अंगीकार कराऊँ।"

WATER PURIFICATION

14. This rebuke from the king forced Subuddhi to reflect, "King Jitshatru is ignorant about the knowledge of existent fundamental reality, truth, and concepts as propagated by Jinendra and thus does not accept the same. I should somehow try to explain and make him accept the same."

सूत्र १५ : एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ नवए घडए पडए य पगेण्हइ, पगेण्हित्ता संझाकालसमयंसि पविरलमणुस्ससि निसंतपडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागए, उवागच्छित्ता तं परिहोदगं गेण्हावेइ, गेण्हावित्ता-नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिए करावेइ, करावित्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ, परिवसावित्ता दोच्चं पि नवएसु घडएसु गालावेइ, गालावित्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता सज्जक्खारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावित्ता लंछियमुद्दिए करावेइ, करावित्ता सत्तरतं परिवसावेइ, परिवसावित्ता तच्चं पि नवएसु घडएसु जाव सवसावेइ।

सूत्र १५ : ऐसे विचार मन मे आने पर सुबुद्धि अमात्य ने कुछ विश्वासपात्र जनों को साथ लेकर उस खाई के रास्ते मे पड़ती एक कुम्हार की दुकान से कुछ नये कोरे घडे खरीदे और कपड़ा खरीदा। इसके बाद सन्ध्या के समय, जब लोग अपने घरो मे विश्राम करने लगे थे, और मार्ग पर आवागमन कम हो गया था, वह उस खाई के पानी के निकट आया। खाई से पानी निकलवा कर उसे नये घडों मे छनवाया। घडो मे भरवा कर उन घडों के मुँह ढक कर मोहर लगवा दी। सात रात-दिन उन्हे वैसे ही रहने दिया। फिर उस पानी को नये घडो मे दुबारा छनवाया। घडो में भरकर उनमे ताजा राख डलवाई और बन्द करके फिर मोहर लगवादी। सात रात-दिन तक वैसे ही रखने के बाद तीसरी बार फिर वही क्रिया करवा कर फिर सात रात-दिन छोड दिया।

15. As soon as this idea came to him, Subuddhi took along some reliable servants and went to a potter's shop located on the way to that ditch and bought some fresh pitchers and a length of cloth In the evening, when most of the people had returned home and the road was almost deserted, he came at the edge of the ditch He got some dirty water collected and filtered it into the pitchers he had brought He got the pitchers sealed and left them like that for a week After a week he got the seals broken and filtered the water once again in new pitchers Fresh ash was mixed with the water and the pitchers were sealed After another week he got the same process repeated and left the pitchers like that for another week

सूत्र १६ : एव खलु एएण उवाएणं अतरा गलावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे, अतरा य विपरिवसावेमाणे विपरिवसावेमाणे सत्तसत्तराइंदिया विपरिवसावेइ।

तए णं से फरिहोदए सत्तमसत्तयसि परिणममाणसि उदयरयणे जाव यावि होत्था–अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फलिहवण्णाभे वण्णेणं उववेए, गधेणं उववेए, रसेण उववेए फासेणं उववेए, आसायणिज्जे जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जे।

सूत्र १६ : इस प्रणाली से बीच-बीच में छनवाकर, कोरे घडो में डलवाकर बार-बार सात दिन-रात वह पानी रखा जाता रहा।
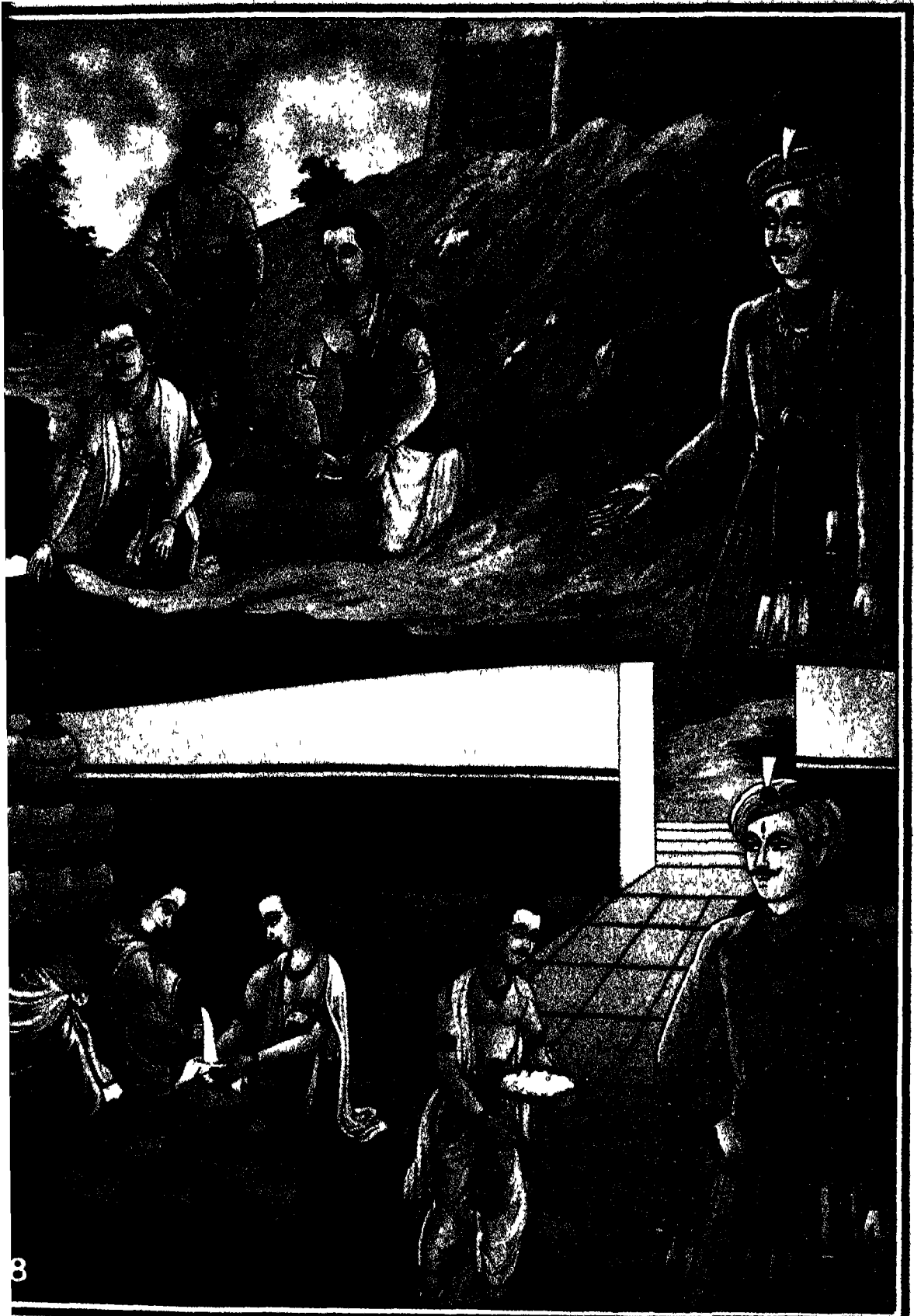
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

जलशोधन

चित्र ८

१ सुबुद्धि मत्री ने अपने सेवको से गदे नाले (खाई) का पानी मँगाया। उसे कपडो मे छान-छानकर घडो मे भरवाया।

२ फिर क्षार (राख) आदि शोधक तत्त्वो से पानी साफ कराया। पुन घडो म छनवाया। इस प्रकार बार-बार जलशोधन की लम्बी प्रक्रिया द्वारा उस पानी को स्वच्छ कर सुगन्धित पदार्थो से एकदम स्वादिष्ट व मनोज्ञ बना दिया।

(बारहवॉ अध्ययन)

WATER PURIFICATION

ILLUSTRATION : 8

1 Subuddhi sent his servants to the ditch and got some dirty water collected and filtered it into pitchers

2 After a week he got the water filtered once again and purifiers like ash were mixed in it This long process of purification was repeated and the foul water turned pure He than added some perfumes and made the water tasty and pleasant

(CHAPTER - 12)

इस प्रकार सात सप्ताह के बाद वह खाई का गंदला पानी उदकरत्न (श्रेष्ठ जल) बन गया। वह स्वच्छ, पथ्य, जात्य (उत्तम जाति का) और हल्का हो गया। वह स्फटिक मणि जैसा चमकीला, मन को भाने वाली सुगन्ध, रस, स्पर्श और स्वादयुक्त हो गया। सभी इन्द्रियों तथा देह को आनन्द देने वाला हो गया।

16. This process of filtering and adding ash was repeated again and again. After seven weeks the foul water turned pure. It became clean, potable, of good quality, and light It became crystal clear, and likeable in taste, touch and smell It became satisfying and pleasant to the body and the senses.

सूत्र १७ : तए णं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव से उदयरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसाएइ, आसाइत्ता तं उदयरयणं वण्णेणं उववेयं, गंधेणं उववेयं, रसेणं उववेयं, फासेणं उववेयं, आसायणिज्ज जाव सव्विंदियगायपल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ, संभारित्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'तुमं च णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि।

सूत्र १७ · तब सुबुद्धि अमात्य ने उस स्वच्छ जल के पास जा उसे हथेली में लेकर चखा। उसे मनोज्ञ वर्ण, गंध, रस आदि से युक्त पीने योग्य और शरीर व इन्द्रियों को सुखकारी जानकर प्रसन्न और सतुष्ट हुआ। फिर उसने उस जल को और स्वादिष्ट बनाने वाले द्रव्यों से उसे अधिक स्वादिष्ट और सुगंधित बनाया। राजा जितशत्रु के जल-गृह के कर्मचारी को बुलवाकर उससे कहा–"देवानुप्रिय ! तुम यह श्रेष्ठ जल ले जाओ और भोजन करते समय राजा जितशत्रु को पीने के लिए देना।"

17. Minister Subuddhi went near the pitchers, took a handful of water and tasted it He was contented to find it appealing to the senses, potable, and satisfying and pleasant to the body and the senses. He than got some additives mixed in that water to make it more tasty and fragrant After all this, he called the caretaker of the king's water-shed and instructed, "Beloved of gods! Take this refined water and when the king takes his meals serve him some of this water."

राजा का आश्चर्य

सूत्र १८. तए णं से पाणियघरए सुबुद्धिस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता तं उदयरयणं गिण्हाइ, गिण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ।

तए णं से जियसत्तू राया तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे जाव विहरइ।

जिमियभुत्तुत्तराए णं जाव परमसुइभूए तंसि उदयरयणे जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव एवं वयासी–'अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदयरयणे अच्छे जाव सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे।'

तए णं बहवे राईसर जाव एवं वयासी–'तहेव णं सामी ! जं णं तुब्भे वयह, जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे।'

सूत्र १८ : जलगृह के कर्मचारी ने सुबुद्धि की बात स्वीकार की और वह श्रेष्ठ जल ले जाकर राजा जितशत्रु को भोजन के समय परोसा।

तब जितशत्रु राजा ने श्रेष्ठ स्वादिष्ट भोजन करने के बाद हाथ-मुँह धोकर वह पानी पीया। पानी का स्वाद चखकर उसे आश्चर्य हुआ। उसने अपने निकट रहे राजा, राजकुमार आदि के सामने कहा–"हे देवानुप्रियो ! यह श्रेष्ठ जल स्वच्छ है। शरीर व इन्द्रियो को आल्हाददायक है।" (पूर्व सू. १६ के समान)

उपस्थित लोगो ने राजा की बात का एक स्वर मे अनुमोदन किया–"हाँ स्वामी, ऐसा ही है।"

KING'S SURPRISE

18. The water-shed manager accepted Subuddhi's instructions and accordingly carried away the pitchers filled with water When King Jitshatru arrived for his meals this same water was served to him

After his meals the king washed his hands and mouth and drank that water He was surprised at the heavenly taste of that water He conveyed to the guests around him, "Beloved of gods! This water is of the best quality It is satisfying and pleasant to the body and the senses (as para 16)

All those present unanimously attested the kings statement, "What you say is true Sire!"

सूत्र १९ : तए णं जियसत्तू राया पाणियघरियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'एस ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! उदयरयणे कओ आसाइए ?

तए णं पाणियघरिए जियसत्तु एवं वयासी–'एस णं सामी ! मए उदयरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसाइए।'

तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धि अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'अहो णं सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे, जेण तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदयरयणं न उवट्ठवेसि ?

तए णं देवाणुप्पिया ! उदयरयणे कओ उवलद्धे ?'

तए ण सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी–'एस णं सामी ! से फरिहोदए।'

तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी–'केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?'

तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी–'एवं खलु सामी ! तुम्हे तया मम एवमाइक्खमाणस्स एवं भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहह, तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'अहो णं जियसत्तू संते जाव भावे नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, तं सेयं खलु ममं जियसुत्तस्स रण्णो संताणं जाव सब्भूयाण जिणपन्नत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए। एवं संपेहेमि, संपेहित्ता तं चेव जाव पाणियघरियं सद्दावेमि, सद्दावित्ता एवं वदामि–'तुमं णं देवाणुप्पिया, उदगरयणं जियसत्तुस्स रन्नो भोयणवेलाए उवणेहि।' त एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए।'

सूत्र १९ : राजा ने जलगृह के कर्मचारी को बुलवाकर पूछा–"देवानुप्रिय ! तुमने यह श्रेष्ठ जल कहाँ से प्राप्त किया ?"

कर्मचारी ने उत्तर दिया–"स्वामी ! मैंने यह श्रेष्ठ जल सुबुद्धि अमात्य से प्राप्त किया है।"

राजा ने अमात्य सुबुद्धि को बुलाकर कहा–"अहो सुबुद्धि ! क्या बात है कि मैं तुम्हें अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ और अमणाम (मन के प्रतिकूल) लगता हूँ जिससे कि तुम भोजन के समय प्रतिदिन यह उत्तम जल मुझे नही भेजते ? देवानुप्रिय तुमने यह श्रेष्ठ जल कहाँ से पाया ?"

सुबुद्धि ने उत्तर दिया–"स्वामी ! यह उसी खाई का पानी है।"

जितशत्रु ने आश्चर्य के साथ कहा–"हे सुबुद्धि ! यह उस खाई का पानी कैसे हो सकता है ?"

तब सुबुद्धि ने उत्तर दिया–"स्वामी ! मैने उस समय आपसे पुद्‌गलो में होने वाले परिवर्तन / परिणमन की बात कही थी पर आपको मेरी बात पर विश्वास नही हुआ था। तब मेरे मन में अध्यवसाय, चिन्तन, विचार और मनोगत सकल्प उठा कि राजा जितशत्रु सत्, यथार्थ आदि भावों पर श्रद्धा, प्रतीति (विश्वास) और रुचि (उस विषय में दिलचस्पी) नहीं रखते अत. अच्छा हो कि मै उन्हे जिन प्ररूपित सत्, भूत भावो का रहस्य समझा कर पुद्‌गल मे होने वाले परिवर्तन / परिणमन को अगीकार कराऊँ। तदनुसार मैंने खाई के पानी को स्वच्छ कर तैयार किया और आपके जलगृह के कर्मचारी को बुलाकर वह पानी भोजन के समय आपको देने को कहा। अत यह वही खाई का पानी है।"

19. The king called the manager of the water-shed and asked, "Beloved of gods! Where did you get this pure water?"

"Sire! I got this water from minister Subuddhi "

The king called minister Subuddhi and said, "Subuddhi! What is the matter? Am I so disgusting, loathsome, ugly and repulsive to you that you do not send such satisfying pure water to me everyday when I take my meals? Beloved of gods! Where did you find this water?"

Subuddhi replied, "Sire! This water is from the same ditch."

King Jitshatru uttered in surprise, "How can this water be from that ditch?"

Subuddhi explained, "Sire! That day I told you about the molecular transformation, but you did not believe my statement. So I reflected and decided that as King Jitshatru does not have faith, belief, and interest in the knowledge of existent fundamental reality, truth, and concepts as propagated by Jinendra, I should somehow try to explain and make him accept the same. Accordingly I got the foul water of the ditch filtered and purified. Once it was done I instructed the water-shed manager of your palace to serve this water to you at the time of your meals. Thus, Sire! This water is from the same ditch."

जल-शोधन का प्रत्यक्ष प्रयोग

सूत्र २० : तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स ४ एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोयमाणे अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तब्भे देवाणुप्पिया ! अतरावणाओ नवघडए पडए य गेण्हह जाव उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ।' ते वि तहेव संभारेंति, संभारित्ता जियसत्तुस्स उवणेंति।

तए णं जियसत्तू राया तं उदगरयणं करतलंसि आसाएइ, आसायणिज्जं जाव सव्विदिय-गायपल्हायणिज्ज जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'सुबुद्धी ! एए णं तुमे सच्चा जाव सब्भूआ भावा कओ उवलद्धा ?'

तए णं सुबुद्धी जियसत्तूं एवं वयासी–'एए णं सामी ! मए सता जाव भावा जिणवयणाओ उवलद्धा।'

सूत्र २० : राजा जितशत्रु ने अमात्य की इस बात पर विश्वास नहीं किया, प्रतीति नहीं की। विश्वास, प्रतीति और रुचि नहीं होने के कारण उसने अपने निजी सेवको को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! जाओ और खाई के रास्ते मे पडने वाली कुम्हार की दुकान से नये घड़े तथा नया वस्त्र खरीदकर सुबुद्धि द्वारा बताई प्रणाली से खाई के जल को शुद्ध व स्वादिष्ट बनाओ।" सेवको ने राजाज्ञा का पालन किया और जल के शुद्ध व स्वादिष्ट होने पर राजा के पास ले आये।

राजा जितशत्रु ने वह श्रेष्ठ जल हथेली मे लिया और चखा। उसे स्वादिष्ट और आनन्ददायक पाकर राजा ने अमात्य सुबुद्धि को बुलाया और कहा–"सुबुद्धि तुमने ये सतादि भाव (वस्तु स्वभाव, पुद्गल परिवर्तन आदि का तत्त्वज्ञान) कहाँ से प्राप्त किया?"

सुबुद्धि ने उत्तर दिया–"स्वामी ! मुझे ये भाव जिनवचनों पर श्रद्धा से उपलब्ध हुए हैं।"
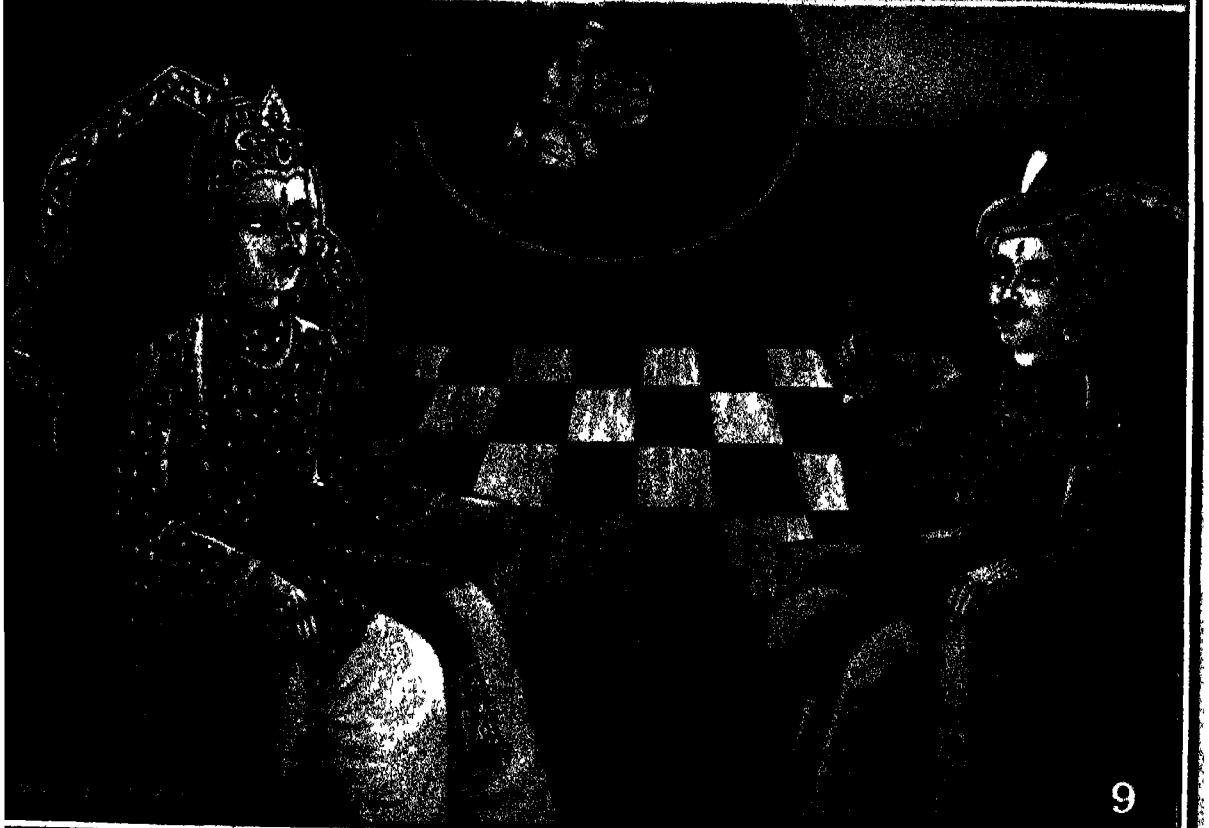
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

अशुद्ध जल श्रेष्ठ जल बना : पुद्गल परिणमन

चित्र ९

१. एक बार जब राजा भोजन कर रहा था तो मंत्री सुबुद्धि के सेवक ने वह सुगंधित जल परोसा। जल पीकर राजा ने पूछा–"इतना स्वादिष्ट, मधुर जल कहाँ से आया?" सेवक ने कहा–"सुबुद्धि मंत्री ने आपके लिये भेजा है।"

२. राजा ने मंत्री से पूछा–"इतना मधुर सुगंधित जल आपने कहाँ से मँगाया?" मंत्री ने उत्तर दिया–"यह उसी गंदे नाले का जल है?"

राजा के पूछने पर मंत्री ने जलशोधन की प्रक्रिया के विषय में विस्तारपूर्वक बताया। साथ ही मंत्री ने कहा–"अर्हत् दर्शन में यही कहा है–प्रत्येक पदार्थ का स्वभाव परिवर्तनशील है, अतः उनके शुभ-अशुभ परिणमन पर राग-द्वेष नहीं करना चाहिए।"

(बारहवाँ अध्ययन)

AN EXAMPLE OF THE TRANSFORMATION OF MATTER

ILLUSTRATION . 9

1. One day after his meals the king was served this purified water. When he drank that water he was surprised at the extremely satisfying taste and smell of the water. He asked the servant, "From where had he gotten the water?" He was informed that "the water was sent by minister Subuddhi."

2. The king asked him, "From where did you get such sweet water?" Subuddhi informed him that "the water was from that stinking ditch."

When the king gave him an enquiring look the minister explained in detail about the process of purification and added, "The Arhats have preached that transformation is the basic nature of all matter. Therefore attachment and aversion based on the appearance of things should be avoided."

(CHAPTER - 12)

DEMONSTRATION OF THE PROCESS

20. King Jitshatru did not believe a word of what Subuddhi said. Because of this lack of faith and belief he called his personal servants and instructed, "Beloved of gods! Go and buy pitchers and cloth from the shop on the road to the ditch and purify the water of that ditch by the process detailed by Subuddhi and make it potable." The servants did as told and when the water became pure and potable they brought it to the king.

The king took that water in his cupped palms and tasted When he found the water tasty and pleasant he called minister Subuddhi and said, "Subuddhi! From where did you acquire this knowledge of existent fundamental reality, truth, and other such concepts?"

Subuddhi replied, "Sire! I have acquired this knowledge due to my faith in the words of the Jina "

सूत्र २१ : तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी-'इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामेत्तए।'

तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्तं केवलिपन्नत्त चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तमाइक्खइ, जहा जीवा बज्झंति जाव पच अणुव्वयाइं।

सूत्र २१ . जितशत्रु ने सुबुद्धि से कहा-"देवानुप्रिय ! मै तुमसे जिनवचन (जिनभाषित तत्त्वज्ञान) सुनना चाहता हूँ।"

तब सुबुद्धि ने राजा जितशत्रु के सामने केवलज्ञानी द्वारा प्ररूपित चतुर्याम रूपी अद्भुत (अनूठे) धर्म का प्रवचन (विवेचन) दिया और बताया कि जीव कर्म-बन्धन कैसे करता है, पाँच अणुव्रत क्या हैं, आदि।

21. King Jitshatru said, "Beloved of gods! I want to hear from you about the words of the Jina "

Subuddhi then gave a discourse on the unique four faceted religion propagated by The Omniscient and explained how a being acquires the dust of karma, what are the five minor vows, and so on.

राजा श्रावक बना

सूत्र २२ : तए णं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ सुबुद्धिं अमच्च एवं वयासी-'सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, तं इच्छामि णं तव अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्त सिक्खावइयं जाव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।'

सूत्र २२ जितशत्रु राजा ने सुबुद्धि अमात्य का प्रवचन सुना व मन में धारण किया और प्रसन्न व संतुष्ट होकर बोला–"देवानुप्रिय ! मैं निर्ग्रन्थ भाषित धर्म पर श्रद्धा करने लगा हूँ। तुम जो कहते हो वह यथार्थ ही है। अतः मैं तुमसे पाँच अणुव्रत तथा सात शिक्षा व्रतों को ग्रहण करने की अभिलाषा करता हूँ।"

सुबुद्धि–"हे देवानुप्रिय ! जिसमे सुख मिले वही करो, उसमें (विलम्ब) बाधा मत दो।"

THE KING TURNS SHRAVAK

22. King Jitshatru attentively listened to the discourse of minister Subuddhi and absorbed its message He became happy and contented and said, "Beloved of gods! I now have faith on the word of the omniscient What you say is, indeed, true As such, now I desire to take the five minor and seven disciplinary vows under your guidance "

Subuddhi, "Beloved of gods! Do as you please without any delay "

सूत्र २३ : तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए पचाणुव्वइय जाव दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ। तए ण जियसत्तू समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे पडिलाभेमाणे विहरइ।

सूत्र २३ : राजा जितशत्रु ने अमात्य सुबुद्धि से पाँच अणुव्रत सहित बारह प्रकार का श्रावक धर्म अंगीकार किया। जितशत्रु श्रावक बन गया और जीव-अजीव आदि तत्त्वो का ज्ञाता हो गया। वह पौषध, श्रमण निर्ग्रन्थो को दानादि सुकृत करता हुआ जीवन बिताने लगा।

23. Under the guidance of Subuddhi, King Jitshatru accepted the said twelve vows of the Shravak Dharma He became a Shramanopasak with the knowledge of the fundamentals including soul and matter He started observing the partial-ascetic vow, serving ascetics, and doing other prescribed good deeds

सूत्र २४ : तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा जेणेव चंपा णयरी जेणेव पुण्णभद्दचेइए तेणेव समोसढे, जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ। सुबुद्धी धम्मं सोच्चा ज णवरं जियसत्तू आपुच्छामि जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया !

सूत्र २४ : काल के उस भाग मे चम्पानगरी के बाहर स्थित पूर्णभद्र चैत्य मे एक स्थविर मुनि पधारे। राजा जितशत्रु और अमात्य सुबुद्धि उनको वन्दना करने निकले। धर्मोपदेश सुनने के बाद सुबुद्धि ने स्थविरों से कहा–"मैं राजा जितशत्रु से आज्ञा ले लूँ तब दीक्षा लूँगा।" स्थविर मुनि ने उत्तर दिया–"जिसमें सुख मिले वही करो।"

24. During that period of time a great ascetic arrived in the Purnabhadra Chaitya outside Champa city. King Jitshatru and minister Subuddhi went to pay their homage to the ascetic. After the discourse Subuddhi said to the ascetic, "I would like to get initiated after seeking permission from King Jitshatru." The ascetic replied, "Do as you please without any delay."

सूत्र २५ : तए णं सुबुद्धी अमच्चे जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी–'एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए इच्छिय-पडिच्छिए तए णं अहं सामी ! संसारभउव्विग्गे, भीए जम्म-मरणाणं, इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे जाव पव्वइत्तए।'

तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी–अच्छामु ताव देवाणुप्पिया! कइवयाइं वासाइं जाव भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वइस्सामो।

सूत्र २५ : सुबुद्धि अमात्य राजा जितशत्रु के पास गया और बोला–"स्वामी ! मैंने स्थविर मुनि का उपदेश सुना है और उस धर्म (आचरण) की इच्छा-आकाक्षा मन में उत्पन्न हुई है। हे स्वामी ! मै इस अनन्त ससार तथा जन्म-मरण की निरन्तरता के भय से उद्विग्न हो उठा हूँ। आपकी आज्ञा प्राप्त कर मै स्थविरो के पास दीक्षा लेना चाहता हूँ।"

राजा जितशत्रु ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! अभी कुछ वर्षों तक और भोगमय जीवन बिताते रहो, उसके बाद हम दोनो ही साथ-साथ मुण्डित हो स्थविरों के पास दीक्षा ले लेंगे।

25. Minister Subuddhi went to King Jitshatru and said, "Sire! I have listened to the discourse of the great ascetic and now I desire to follow the path elaborated by him Sire! I am disturbed by the fear of the perpetuity of the cycles of rebirth in this world After getting permission from you I want to get initiated by the great ascetic into the order"

King Jitshatru replied, "Beloved of gods! Continue your mundane life for a few more years After that we both shall shave our heads and get initiated together."

वैराग्योदय तथा प्रव्रज्या

सूत्र २६ : तए णं सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ। तए णं तस्स जियसत्तुस्स रन्नो सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालसवासाइं वीइक्कंताइं।

तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, तए णं जियसत्तू धम्मं सोच्चा एव जं नवरं देवाणुप्पिया ! सुबुद्धिं आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठवेमि, तए णं तुब्भं जाव पव्वयामि। 'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

तए णं जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे (तेणेव) उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'एवं खलु मए थेराणं जाव पव्वज्जामि, तुमं णं किं करेसि ?'

तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी-'जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि।'

सूत्र २६ : सुबुद्धि ने राजा जितशत्रु की यह आज्ञा स्वीकार कर ली। धीरे-धीरे दोनों को मनुष्योचित भोगोपभोग सहित जीवन बिताते बारह वर्ष बीत गये।

काल के उस भाग में वहाँ पुनः स्थविर मुनियों का आगमन हुआ। धर्मोपदेश सुनकर राजा जितशत्रु ने प्रतिबोध पाया और उसने कहा-"देवानुप्रिय ! मैं अमात्य सुबुद्धि को दीक्षा के लिए आमन्त्रित करूँगा और अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देकर आपके पास दीक्षा लूँगा।"

स्थविर मुनि ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिय ! तुम्हे जिसमें सुख प्राप्त हो वही करो।"

जितशत्रु अपने घर लौटा और सुबुद्धि को बुलवा कर कहा-"मैंने स्थविर मुनि का उपदेश सुना है और दीक्षा की इच्छा रखता हूँ। तुम क्या करोगे ?" सुबुद्धि ने उत्तर दिया-"आपके अतिरिक्त मेरा कोई आधार नहीं है और फिर मै भी ससार के भय से उद्विग्न हूँ-अतः मै भी दीक्षा लूँगा।"

DETACHMENT AND INITIATION

26. Subuddhi accepted the proposal of King Jitshatru They both continued their normal mundane activities and, one after the other, twelve years passed

During that period of time once again the group of ascetics came After listening to the discourse king Jitshatru got inspired and said, "Beloved of gods! I shall invite minister Subuddhi to join me and get initiated This I will do after I crown my eldest son as the king "

The great ascetic replied, "Beloved of gods! Do as you please without any delay "

The king returned to his palace, called Subuddhi and said, "I have been to the discourse of the ascetic and want to get initiated What would you like to do?" Subuddhi replied, "I have no attachment besides you Also, I too am plagued by the fear of the cycles of rebirth As such, I would also like to get initiated."

सूत्र २७ : तं जइ णं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वयह, गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्त च कुडुंबे ठावेहि, ठावेत्ता सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए जाव पाउब्भवेह। तए णं सुबुद्धी अमच्चे सीयं जाव पाउब्भवइ।

तए णं जियसत्तू कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह।' जाव अभिसिंचंति, जाव पव्वइए।

सूत्र २७ : जितशत्रु ने कहा–"देवानुप्रिय ! तुम्हें दीक्षा लेनी है तो पहले घर जाकर अपने बडे पुत्र को कुटुम्ब का मुखिया बनाओ और फिर पालकी पर बैठ कर मेरे पास लौट आओ।" सुबुद्धि राजा के कथनानुसार कार्य सम्पन्न कर लौट आया।

जितशत्रु राजा ने सेवकों को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! कुमार अदीनशत्रु के राज्याभिषेक की तैयारी करो।" सेवकों ने राजाज्ञा का पालन किया। राजा ने कुमार का राज्याभिषेक कर सुबुद्धि के साथ दीक्षा ग्रहण कर ली।

27. The king said, "Beloved of gods! If you want to get initiated first go home and make your eldest son the head of the family After that, ride a palanquin and return to me" Subuddhi followed the instructions and returned as told

King Jitshatru called his staff and instructed, "Beloved of gods! Make all necessary arrangements for the coronation of Prince Adeenshatru." The servants did as told After the coronation King Jitshatru got initiated along with minister Subuddhi

सूत्र २८ : तए ण जियसत्तू एक्कारस अंगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाणि परियायं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सिद्धे.

तए ण सुबुद्धी एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि परियायं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए सिद्धे।

सूत्र २८ · दीक्षा के बाद मुनि जितशत्रु तथा मुनि सुबुद्धि ने ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और अनेक वर्षों तक मुनि जीवन बिताने के बाद एक महीने की सलेखना पालन कर सिद्धि प्राप्त की।

28. After the Diksha ascetics Jitshatru and Subuddhi studied the eleven canons and for many years followed the disciplined ascetic life In the end they observed the ultimate vow of one month duration and attained liberation

सूत्र २९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते, त्ति बेमि।

सूत्र २९ : हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने बारहवें ज्ञाता अध्ययन का यह अर्थ कहा है। मैने ऐसा ही सुना है, ऐसा ही मै कहता हूँ।

29. Jambu! This is the text and the meaning of the twelfth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm.

॥ बारसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ बारहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

|| END OF THE TWELFTH CHAPTER ||

उपसंहार

ज्ञाता धर्मकथासूत्र की यह बारहवीं कथा पदार्थ के वास्तविक रूप का दिग्दर्शन कराती है तथा उस प्रणाली से परिचय कराती है जिससे वह वास्तविक रूप समझा जा सके। दुर्गन्धपूर्ण तथा स्वच्छ जल का उदाहरण प्रस्तुत कर एकान्तिक दृष्टिकोण की तुलना में अनेकान्तिक दृष्टिकोण की महत्ता को पुष्ट किया है। इन सभी बातो से पदार्थ का परिवर्तनशील स्वभाव सहज ही समझ में आता है और परिवर्तनशील पदार्थ की एक स्थिति के प्रति मोह जनित आग्रह को त्यागने की भूमिका बनती है। राग-द्वेष पर विजय पाने की दिशा मे यह आवश्यक चरण इस कथा से गहन चिन्तन या चर्चा के बिना सुगमता से बोधगम्य बन पड़ा है।

CONCLUSION

This twelfth story of Jnata Dharma Katha reveals the true nature of matter and the process by which that can be understood. Giving the example of polluted and pure water the importance of relativity of truth as compared to the singularity of truth has been emphasized All this makes the ever-changing nature of matter very easy to understand This paves way for emerging out of the prejudice caused by fondness for a particular state or form of matter To understand this essential step towards victory over attachment and aversion has been made so very simple with the help of this story that there is hardly any need for profound discussion or contemplation

उपनय गाथा

मिच्छत्तमोहियमणा पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा।
फरिहोदगं वा गुणिणो हवंति वरगुरुपसायाओ ॥१॥

जिनका मन मिथ्यात्व के कारण मूढ़ बना हुआ है, जो पापो मे अत्यन्त लिप्त है और गुणों से शून्य है वे प्राणी भी श्रेष्ठ गुरु का प्रसाद पाकर गुणवान बन जाते हैं, जैसे खाई का गन्दा पानी शुद्ध व श्रेष्ठ जल बन गया॥१॥

THE MESSAGE

Even he whose mind is numbed by illusion, and who is deeply involved in sinful activities, and devoid of virtues, is made virtuous by the blessings of an accomplished Guru, in the same way the polluted water of the ditch was made pure and good quality water (1)

परिशिष्ट

चातुर्याम धर्म–चार महाव्रत वाला धर्म। भगवान पार्श्वनाथ के समय मे चातुर्याम धर्म प्रचारित था। इसके अतर्गत चार महाव्रत थे–अहिसा, सत्य, अस्तेय तथा अपरिग्रह। इसमे परिग्रह के त्याग मे स्त्री व परिवार का त्याग स्वाभाविक रूप से सम्मिलित है। भगवान महावीर ने अपरिग्रह मे रही ब्रह्मचर्य सम्बन्धी अस्पष्टता को दूर करने के लिए ब्रह्मचर्य को पृथक् कर महाव्रत के रूप मे स्थापित किया। वह पचयाम धर्म या पचमहाव्रत वाला धर्म कहलाया। माना जाता है कि प्रथम एव अन्तिम तीर्थकर के समय पच महाव्रत धर्म का प्रचलन रहता है।

APPENDIX

Chaturyam Dharma—The four-fold Dharma During the period of the influence of Bhagavan Parshvanath this four fold Dharma was popular In it were four great vows—Ahimsa, truth, non-stealing, and non-possession Here non-possession naturally included not possessing a wife and family In order to clear the ambiguity about celibacy, Bhagavan Mahavir separated it from non-possession and included it as an independent great vow This new form became known as Panchayam or five fold Dharma, or the Dharma with five great vows It is believed that this five fold Dharma is prevalent during the periods of influence of the first and the last Tirthankar of a time cycle

■■

तेरहवाँ अध्ययन : मंडुक्क-दर्दुरज्ञात : आमुख

शीर्षक-मंडुक्क-ददुरे-दर्दुर-मेंढक। मेढक जैसे अल्पायु वाले छोटे से प्राणी के माध्यम से इस कथा में सुविधाओं के प्रति आकर्षण और आसक्ति के कारण आत्मिक अधःपतन का कारण स्पष्ट किया है। साथ ही निर्मल हृदय से दिशा परिवर्तन कैसे अल्पकाल मे ही कल्याणकारी हो जाता है यह समझाया है। मेंढक का उदाहरण होने से इस अध्ययन का नाम ही मडुक्क-दद्दुरे प्रसिद्ध है।

कथासार-श्रमण भगवान महावीर एक बार राजगृह पधारे थे। उस समय दर्दुर नाम के देव ने आकर उनकी भक्तिपूर्वक दैविक समृद्धि सहित वन्दना/उपासना की थी। तब गौतम स्वामी ने प्रश्न किया कि उस देव को ऐसी ऋद्धि कैसे प्राप्त हुई ?

भगवान ने बताया कि राजगृह नगर मे नद मणियार नाम का एक धनी रहता था। भगवान के पास धर्म सुनकर वह श्रमणोपासक बन गया था। किन्तु कालान्तर में साधु समागम छूट जाने के कारण वह धीरे-धीरे धर्म विमुख हो मिथ्यात्वी बन गया। एक बार गर्मी के मौसम मे वह पौषधशाला मे तेले का व्रत कर रहा था। उस समय प्यास से पीडित होने के कारण उसके मन मे एक सुन्दर मनोहर बावडी बनवाने का सकल्प उठा। व्रत समाप्त होने पर वह राजा श्रेणिक के पास गया और उनसे आज्ञा प्राप्त कर नगर के बाहर एक उचित स्थान पर एक सुन्दर बावडी बनवाई और उसके चारों ओर विविध सुविधाओ सहित चार उद्यान भी बनवाए। इन सुविधाओं का आनन्द लेते अनेक नागरिक नद की प्रशसा करते और वह आनन्दित होता।

एक बार नद को महारोगो ने घेर लिया। अनेक उपचारो के बाद भी वह स्वस्थ नही हो सका और अन्त मे उस बावडी मे आसक्ति लिए मृत्यु को प्राप्त हुआ। मृत्यु के बाद वह उसी बावडी मे मेढक के रूप मे उत्पन्न हुआ। वहाँ स्नान करते नागरिकों के मुँह से नद मणियार की प्रशसा सुनते-सुनते उसे लगा कि ये बातें उसने पहले भी कभी सुनी हैं। एकाग्र होने पर उसे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो आया और पूर्व जन्म की सभी बाते याद आ गईं। उसे अहसास हुआ कि धर्म से विमुख हो जाने के कारण उसकी यह दशा हुई है। उसने तत्काल अपनी स्मृति के अनुरूप धर्म ग्रहण कर लिया और साथ ही बेले-बेले के तप का व्रत भी ले लिया।

उसी समय भगवान महावीर का राजगृह मे पुनरागमन हुआ। यह समाचार लोगो की चर्चा से जान नद मेढक भी भगवान के दर्शन करने के लिए बावडी से निकल राजमार्ग पर आ गया। वहाँ राजा श्रेणिक भी अपने प्रतिहारो सहित भगवान के दर्शन हेतु जा रहे थे। तभी नद मेढक पर एक घोडे की टाप पडी और उसकी आँते निकल आईं। अन्त समय निकट जान वह धीरे-धीरे एक ओर घिसट गया और वही भक्तिपूर्वक प्रभु का स्मरण करने लगा। अत समय में शुद्ध भावनाओ के कारण वह सौधर्म देवलोक मे ऋद्धि सम्पन्न दर्दुर देव के रूप में उत्पन्न हुआ। वहाँ से वह महाविदेह में जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करेगा।

THIRTEENTH CHAPTER : THE FROG : INTRODUCTION

Title—Mandukk—Daddure—Dardur—a frog With the example of a short lived creature like a frog this story sheds light on one of the causes of spiritual decline—the attraction for, and attachment to, mundane comforts The chapter gets its name from the example it uses-the frog

Gist of the story—Once Shraman Bhagavan Mahavir had come to Rajagriha At that time a god named Dardur had appeared before him with all his divine grandeur and paid his homage with devotion and reverence Gautam Swami then asked about how the god had earned all this divine grandeur?

Bhagavan said that a rich merchant named Nand Maniyar lived in Rajagriha After listening to the discourse of Shraman Bhagavan Mahavir he had become a Shramanopasak But later, due to lack of interaction with ascetics he slowly turned away from the religious life and lost his virtues Once during the summer season he was observing a three day fast in the Paushadhashala He suffered the pain of thirst and determined to construct a beautiful and attractive pond After concluding his fast he sought permission from King Shrenik and got a beautiful pond constructed at a suitable place outside the town On the four sides of this pond he also created four facilities with gardens for public utility. Many citizens, after enjoying these facilities and the pond, praised Nand who enjoyed and took pride in it

Once Nand was plagued by fatal diseases Even after all efforts at treatment he could not gain his health He died taking his infatuation for the pond with him He reincarnated as a frog in the very same pond There he heard the praise of Nand Maniyar from the citizens bathing in the pond and felt as if he had heard these words earlier also He concentrated to refresh his memory and this effort resulted in his acquiring Jatismaran Jnana He realized that abandoning the path of religion had brought him to his present repugnant state He immediately resolved to follow the religious path according to his refreshed memory and took a vow of a series of two day fasts

Shraman Bhagavan Mahavir once again arrived in Rajagriha Nand frog also heard about his arrival from people visiting the pond In order to behold the Tirthankar, Nand frog also came out of the pond and on to the highway At that time King Shrenik was also going with his guards to pay homage to Shraman Bhagavan Mahavir The frog was hit by the hoof of a horse and its entrails were exposed Realizing that its end was near the frog dragged itself on one side and started worship of Bhagavan Mahavir. As it breathed its last with purity of feelings and thoughts it reincarnated as a powerful god in the Saudharm dimension From there he will re-incarnate in the Mahavideh area and attain liberation

■■

तेरसमं अज्झयणं : मंडुक्क दद्दुरणायं

तेरहवाँ अध्ययन : मंडूक दर्दुरज्ञात

THIRTEENTH CHAPTER : MANDUKK DADDURE - THE FROG

सूत्र १ : जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?

सूत्र १ : जम्बू स्वामी ने पूछा–"भन्ते जब श्रमण भगवान महावीर ने बारहवे ज्ञाता अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है, तब तेरहवे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the thirteenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं णयरे होत्था। तत्थ णं रायगिहे णयरे सेणिए णाम राया होत्था। तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं गुणसिलए नामं चेइए होत्था।

सूत्र २ : सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–हे जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नाम का एक नगर था, जहाँ श्रेणिक राजा का राज्य था। राजगृह के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा मे गुणशील नाम का एक चैत्य था।

2. Jambu! During that period of time there was a city named Rajagriha King Shrenik ruled over that city Outside the city in the north-eastern direction there was a Chaitya named Gunasheel Chaitya

सूत्र ३ : तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे चउदसहिं समणसाहस्सीहिं जाव सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे, सुहंसुहेण विहरमाणे जेणेव रायगिहे णयरे, जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव समोसढे। अहापडिरूवं उग्गहं गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। परिसा निग्गया।

सूत्र ३ : काल के उस भाग में श्रमण भगवान महावीर चौदह हजार साधुओं आदि सहित एक गाँव से दूसरे गाँव मे अनुक्रम से विचरते, सुखपूर्वक विहार करते हुए राजगृह के गुणशील चैत्य मे पधारे। यथायोग्य स्थान की याचना कर वे संयम और तप के अभ्यास मे सलग्न हो समय बिताने लगे। उनके वन्दनादि के लिए नागरिकों की परिषद् निकली।

3. During that period of time, going from one village to another comfortably, Shraman Bhagavan Mahavir with fourteen thousand ascetic
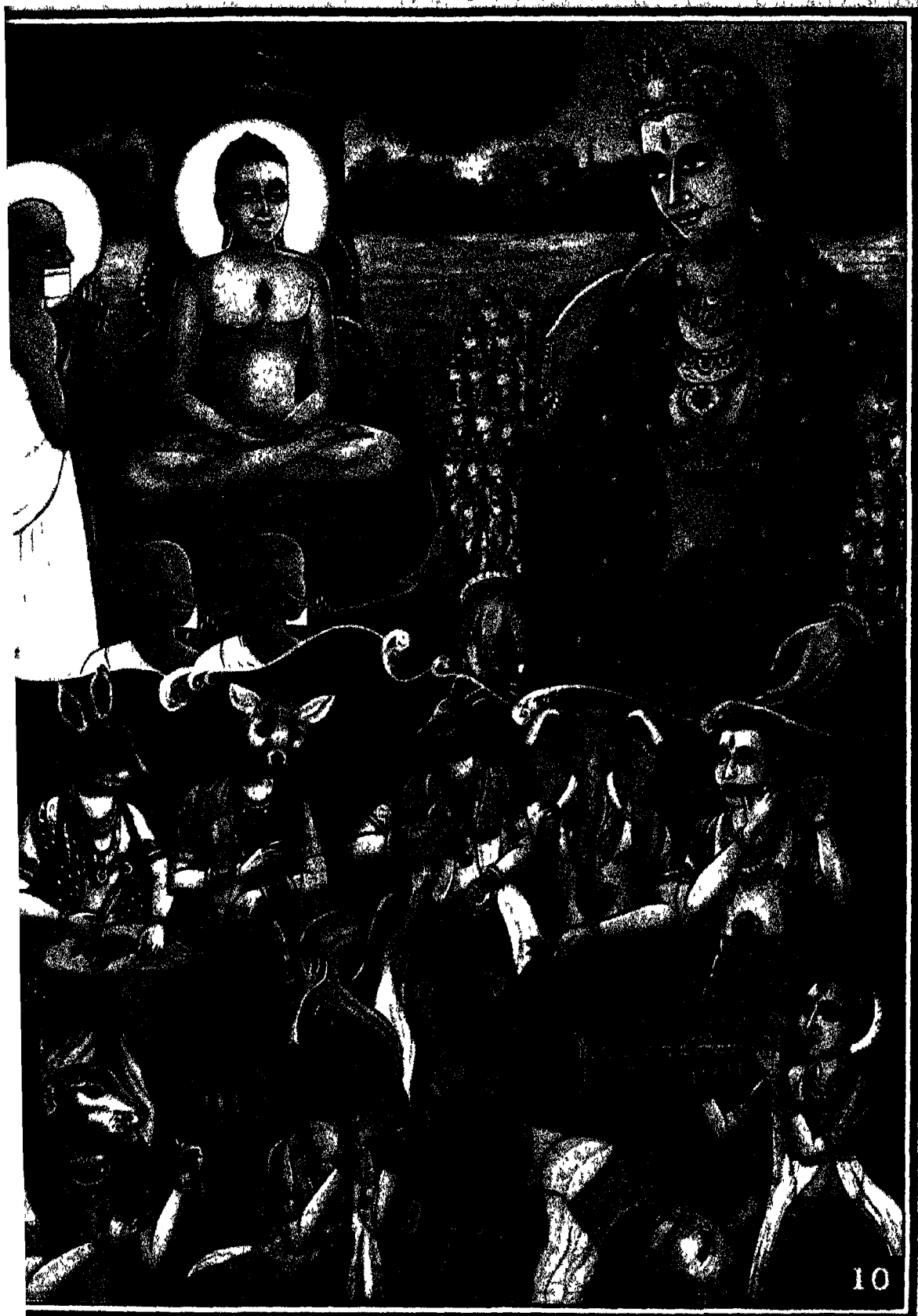
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दर्दुरदेव का ऋद्धि-प्रदर्शन

चित्र १0

एक बार भगवान महावीर राजगृह के गुणशीलक उद्यान में पधारे। तब सौधर्मकल्प के दर्दुर नामक देव ने भगवान की वन्दना करके अपनी अद्भुत ऋद्धि का प्रदर्शन किया। जैसे--दाहिनी भुजा पसारकर एक साथ सुसज्जित एक सौ आठ देवकुमार प्रकट किये। फिर बायीं भुजा पसारी तो उससे सुसज्जित १०८ देव कुमारियाँ निकलीं। फिर ईहामृग, कुंजर-वृषभ शशक आदि विविध रूपधारी ४९ प्रकार के वाद्य वादकों की विकुर्वणा की और नाना प्रकार की मुद्राएँ बनाकर अद्भुत विचित्र नाट्यकला का प्रदर्शन किया।

गणधर गौतम स्वामी द्वारा पूछने पर भगवान ने दर्दुरदेव का पूर्वभव वृत्तान्त सुनाया।

(तेरहवाँ अध्ययन)

DISPLAY OF THE GRANDEUR OF GOD DARDUR

ILLUSTRATION . 10

Once Shraman Bhagavan Mahavir had come to Rajagriha At that time a god named Dardur belonging to Saudharmakalp appeared before him with all his divine grandeur to pay him homage After doing this he displayed his astonishing divine powers before Bhagavan Mahavir He extended his right arm and 108 divine male dancers materialized He extended his left arm and 108 divine female dancers materialized Then he created 49 musicians in the forms of Ihamrig, bull, rabbit, etc with a variety of musical instruments

All these gave a spell-binding dance performance

(CHAPTER - 13)

disciples and others arrived in the Gunasheel Chaitya Formally asking for a place of stay, he commenced his practices of inner discipline and penance A delegation of citizens came to attend his discourse.

देव का आगमन

सूत्र ४ : तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं अग्गमहिसीहिं, तिहिं परिसाहिं एवं जहा सूरियाभो जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणो विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विपुलेण ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे जाव नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए जहा सूरियाभे।

सूत्र ४ . काल के उस भाग में सौधर्मकल्प मे दर्दुरावतसक, विमान की सुधर्मा सभा में दर्दुर नामक सिहासन पर दर्दुर नामक देव अपने चार हजार सामानिक देवों, चार मुख्य रानियों और तीन प्रकार की परिषदो के साथ सूर्याभ देव के समान दिव्य भोगोपभोगों का आनन्द लेता हुआ समय व्यतीत कर रहा था। उसने अपने विपुल अवधिज्ञान से जंबूद्वीप को देखा और फिर राजगृह नगर के गुणशील उद्यान मे भगवान महावीर को देखा। वह अपने परिवार सहित भगवान के पास आया और सूर्याभ देव के समान नृत्यादि का प्रदर्शन कर वापस लौट गया।[1]

ARRIVAL OF DEV

4. During that period of time a god named Dardur was sitting on a throne named Dardur in the Sudharma assembly of the Darduravatansak space vehicle in the Saudharm Kalp (a dimension of gods) Surrounded by four thousand vehicle-based gods, four queens, and three types of assemblies he was enjoying the divine pleasures like the Suryaabh god (for the details about the Suryaabh god and his activities see Raipaseniya Sutra) With his all-enveloping Avadhi Jnana he first saw the Jambu continent and then Shraman Bhagavan Mahavir in the Gunasheel Chaitya in Rajagriha city He descended and came near Shraman Bhagavan Mahavir He performed divine dance and other acts like the Suryaabh god and returned back

गौतम स्वामी की जिज्ञासा

सूत्र ५ : 'भंते' त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'अहो णं भंते ! दद्दुरे देवे महिड्ढिए महज्जुइए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे,

---

१ विस्तृत वर्णन के लिए देखिए, रायपसेणियसूत्र मे सूर्याभवर्णन।

दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे कहिं गया? कहिं अणुपविट्ठा?'

'गोयमा ! सरीरं गया, सरीरं अणुपविट्ठा कूडागारदिट्ठंतो।'

सूत्र ५ : गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर को यथाविधि वन्दना नमस्कार करके पूछा– "भंते ! दर्दुर देव महान ऋद्धि, महान द्युति, महान् बल, महान् यश, महान् सुख तथा महान् प्रभाव के स्वामी हैं। तो हे भते ! उनकी वह समस्त दिव्य देवऋद्धि कहाँ चली गई ? कहाँ समा गई ?"

"गौतम ! वह देवऋद्धि शरीर मे गई, शरीर में समा गई, कूटागार के दृष्टान्त के समान।"[1]

GAUTAM SWAMI'S QUERY

5. After the formal obeisance to Shraman Bhagavan Mahavir Gautam Swami asked, "Bhante! The Dardur god has great wealth, great splendour, great power, great fame, great happiness, and great influence at his command Then where did all these divine virtues go? Where did they vanish?"

"Gautam! All the divine virtues went in his body, vanished into his body like the incident of Kutagar (camouflaged building) "

सूत्र ६ : दद्दुरेण भते ! देवेण सा दिव्वा देविड्ढी किण्णा लद्धा जाव अभिसमन्नागया?

सूत्र ६ : "भते ! दर्दुर देव ने वह दिव्य देवऋद्धि किस प्रकार प्राप्त की ? वह कैसे उसके समक्ष आई ?"

6. "Bhante! How did Dardur god acquire those virtues? How did he come across them?"

सूत्र ७ : 'एवं खलु गोयमा ! इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहेवासे रायगिहे नामं नयरे होत्था, गुणसीलए चेइए, तस्स णं रायगिहस्स सेणिए नामं राया होत्था। तत्थ णं रायगिहे णदे णामं मणियारसेट्ठी परिवसइ। अड्ढे दित्ते जाव अपरिभूए।'

सूत्र ७ : गौतम ! इस जबूद्वीप के भरतक्षेत्र मे राजगृह नाम का नगर था जहाँ गुणशील नाम का चैत्य था और श्रेणिक राजा का राज्य था। वहाँ नन्द नाम का एक मणिकार (स्वर्ण आभूषण बनाने वाला) सेठ रहता था। वह तेजस्वी और समृद्धि आदि मे किसी से पराभूत होने वाला नहीं था।

7. Jambu! In the Bharat area of the Jambu continent there was a city named Rajagriha King Shrenik ruled over that city Outside the city in the

१. कूटागार के लिए अध्याय के अंत मे परिशिष्ट देखें

north-eastern direction there was a Chaitya named Gunasheel Chaitya. In the city lived an ornament manufacturer named Nand Manikaar He was illustrious and second to none in affluence

सूत्र ८ : तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा समोसढे, परिसा निग्गया, सेणिए वि राया निग्गए। तए णंदे से णं मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए पायचारेणं जाव पज्जुवासइ, णदे धम्मं सोच्चा समणोवासए जाए। तए णं अहं रायगिहाओ पडिणिक्खंते बहिया जणवय-विहारं विहरामि।

सूत्र ८ · हे गौतम ! काल के उस भाग में मैं गुणशील चैत्य में आया। वहाँ श्रेणिक राजा सहित नागिरको की परिषद् प्रवचन सुनने निकली। यह सूचना मिलने पर नन्द मणिकार स्नानादि से निवृत्त हो पैदल चलकर आया और उपासना करने लगा। उपदेश सुनकर नन्द श्रमणोपासक बन गया। फिर मैं राजगृह से प्रस्थान कर बाहरी जनपदो मे विहार करने लगा।

8. Gautam! During that period of time I came to the Gunasheel Chaitya. A delegation of citizens lead by king Shrenik came to attend my discourse. On getting this news Nand Manikaar also took his bath, got ready, walked to the religious assembly, and commenced my worship After the discourse he became a Shramanopasak Later I left Rajagriha and resumed my itinerant life

सूत्र ९ : तए ण से णदे मणियारसेट्ठी अन्नया कयाई असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं परिहायमाणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहि परिवड्ढमाणेहिं परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने जाए यावि होत्था।

सूत्र ९ नन्द मणिकार को उसके बाद साधुओ के दर्शनो का अवसर प्राप्त नहीं हुआ। इससे उपासना और उपदेश का अभाव हो गया और धीरे-धीरे उपदेश सुनने की इच्छा भी समाप्त हो गई। फलस्वरूप उसके भीतर रहे सम्यक्त्व के गुण धीरे-धीरे क्षीण हो गये और मिथ्यात्व बढ़ने लगा। अन्तत वह पूर्ण मिथ्यात्वी हो गया।

9. After that Nand Manikaar did not get any opportunity to meet ascetics. This resulted in lack of worship as well as attending discourses. Slowly the desire for the same also dulled Consequently righteousness started fading and falsehood started becoming prominent At last he became completely fallacious

नन्द की कामना

सूत्र १० : तए णं णदे मणियारसेट्ठी अन्नया गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, परिगेण्हित्ता पोसहसालाए जाव विहरइ।

तए णं णंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-'धन्ना णं ते जाव ईसरपभियओ जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरणीओ जाव सरसरपंतियाओ जत्थ ण बहुजणो ण्हाइ य पियइ य पाणियं च संवहति। तं सेयं खलु ममं कल्लं पाउप्पभायाए सेणिय रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए वेभारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढगरोइयंसि भूमिभागंसि नदं पोक्खरिणि खणावेत्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ।

सूत्र १0 . एक बार गर्मी के मौसम में ज्येष्ठ महीने मे नन्द मणिकार सेठ ने अष्टम भक्त-तेले का तप किया और पौषधशाला मे जाकर नियमपूर्वक रहा।

जब तीन दिन के उपवास का तप पूर्ण होने को था तब भूख और प्यास की पीडा से क्षुब्ध उसके मन मे विचार उठा-"वे राजकुमार, श्रेष्ठी आदि धन्य हैं जिनके पास राजगृह नगर के बाहर अनेक बावडियॉ, पुष्करणियॉ, सरोवरो की पक्तियाँ आदि है, जिनमें अनेक लोग स्नान करते है, जल पीते है और जल भरकर ले जाते हैं। मै भी कल प्रात.काल श्रेणिक राजा की आज्ञा लेकर राजगृह नगर के बाहर उत्तरपूर्व दिशा मे वैभार पर्वत के निकट वास्तु शास्त्र के जानकारो की सम्मति के अनुसार नंदा पुष्करिणी खुदवाऊँ तो अच्छा होगा।"

NAND'S WISH

10. Once durıng the month of Jyeshth ın the summer season Nand Manıkaar observed a three day fast as part of a penance and went to lıve as a partıal ascetıc ın the Paushadh Shala (abode meant for ascetıcs)

On the thırd day when the practıce was ın ıts last lap he was tormented by thırst and hunger and thought, "Blessed are those prınces, merchants, and others who own many ponds, pools, streams and other such places where people take theır bath, drınk water, and collect water to take home. It would be commendable for me ıf tomorrow mornıng I also seek permıssıon from kıng Shrenık and dıg a lake ın the north eastern dırectıon of Rajagrıha near the Vıbhargirı mountaın under the guıdance of able archıtects "

सूत्र ११ एवं सपेहित्ता कल्ल पाउप्पभायाए जाव पोसहं पारेइ, पारित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्तणाइ जाव सपरिवुडे महत्थ जाव पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव पाहुडं उवट्ठवेइ, उवट्ठवित्ता एव वयासी-'इच्छामि ण सामी ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे रायगिहस्स बहिया जाव खणावेत्तए।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया।'

सूत्र ११ : दूसरे दिन सूर्योदय के बाद उसने पौषध पारा (यथाविधि संपूर्ण किया) और स्नान, बलिकर्म आदि कर मित्रों व स्वजनों को साथ लेकर राजा के योग्य बहुमूल्य उपहारों सहित श्रेणिक राजा के पास गया। राजा को उपहार भेट कर उसने निवेदन किया-"स्वामी ! आपकी अनुमति प्राप्त कर मै राजगृह नगर के बाहर एक पुष्करिणी खुदवाना चाहता हूँ।"

राजा ने उत्तर दिया-"जिसमें तुम्हे सुख मिले वह करो।"

11. Next morning he ritually concluded his penance and, after taking his bath and getting ready, made arrangements to visit the king. He took along some of his friends and relatives, collected some rich gifts suitable for the king and came to the palace After offering the gifts he submitted, "Sire! If you grant me permission I want to construct a large pool outside the city."

The king replied, "Do as you please "

पुष्करिणी निर्माण

सूत्र १२ : तए ण णंदे सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णो समाणए हट्ठ-तुट्ठ रायगिहं मज्झंमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढयरोइयंसि भूमिभागंसि णंदं पोक्खरिणिं खणाविउं पयत्ते यावि होत्था।

तए णं सा णदा पोक्खरिणी अणुपुव्वेण खणमाणा खणमाणा पोक्खरिणी जाया यावि होत्था चाउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजाय-वप्पसीयलजला, संछण्णपत्त-विस-मुणाला बहुप्पल-पउम-कुमुद-नलिणी-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पफुल्लकेसरोववेय परिहत्थ-भमत-मत्तछप्पय-अणेग-सउणगण-मिहुण-वियरिय-सद्दुन्नइय-महुर-सरनाइया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

सूत्र १२ : श्रेणिक राजा से आज्ञा प्राप्तकर नन्द मणिकार प्रसन्न व संतुष्ट हुआ। राजगृह नगर के मध्य से होता हुआ वास्तुकारों द्वारा चुने स्थल पर आया और पुष्करिणी की खुदाई का काम आरम्भ करवा दिया।

धीरे-धीरे नंदा नाम की वह पुष्करिणी क्रमानुसार समचतुष्कोण अथवा वर्गाकार हो गई। उसके चारों ओर परकोटा बन गया। वह शीतल जल से भर गई। उसका जल पत्तों, तंतुओं और मृणालों से आच्छादित हो गया। विकसित उत्पल, कमल, पद्म (सूर्य विकासी), कुमुद (चन्द्र विकासी), नलिनी, सुभग, सौगधिक, पुण्डरीक (श्वेत कमल), महापुण्डरीक, शतपत्र और सहस्रपत्र आदि अनेक जाति के कमल-पुष्पों तथा उनकी केसर से वह शोभित हो गई। परिहत्थ नाम के जल-जन्तुओं, उड़ते हुए मदमत्त भँवरों और अनेक पक्षी-युगलों के उच्च व मधुर स्वर से वह गूँजने लगी। वह पुष्करिणी सबके चित्त को प्रसन्न करने वाली दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हो गई।

CONSTRUCTION OF THE POOL

12. Nand Manikaar was pleased and contented to get permission from the king Passing through the city he went to the location selected by the architects and launched the project

With passage of time the large pool that was named Nand took a square shape A boundary wall was erected around it It was filled with cool water The water surface got covered with leaves, creepers and plankton Numerous species of lotus and their pollen enhanced its beauty, some of the species being—Utpal, Kamal, Padma, Kumud, Nalini, Subhag, Saugandhik, Pundareek, Mahapundareek, Shatpatra, and Sahasrapatra It was filled with echoes of loud but appealing sounds of Parihatth (a marine animal), flying bumble-bees, and a variety of birds That pool became enchanting, pleasant, exquisite, and ideal for all

सूत्र १३ . तए णं से णदे मणियारसेट्ठी णदाए पोक्खरिणीए चउद्दिसि चत्तारि वणसंडं रोवावेइ। तए ण ते वणसंडा अणुपुव्वेण सारक्खिज्जमाणा य संगोविज्जमाणा य सवड्ढियमाणा य वणसंडा जाया-किण्हा जाव निकुरंबभूया पत्तिया पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

सूत्र १३ : नन्द मणिकार ने इसके बाद नदा पुष्करिणी के चारो ओर चार वनखण्ड (बगीचे) लगवाये। उनकी भली प्रकार सुरक्षा, सँभाल तथा सवृद्धि के प्रबन्ध करने से वे वनखण्ड सघन हो गये। वे पत्तों, फूलो आदि से अत्यन्त शोभायमान हो गये।

13. Once this was done Nand Manikaar planted four gardens on all the four sides of the Nanda pool With adequate protection, care, and nurturing, these gardens became lush green With abundant foliage, flowers, etc they became very beautiful

चित्र-सभा

सूत्र १४ तए णं ते मणियारसेट्ठी पुरच्छिमिल्ले वणसंडे एग मह चित्तसभ कारावेइ, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं पासादीय अभिरूव पडिरूव। तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य जाव सुक्किल्लाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्तकम्माणि य लिप्पकम्माणि य गंथिम-वेढिम-पूरिम-सघाइमाइ उवदसिज्जमाणाइं उवदंसिज्जमाणाइ चिट्ठंति।

सूत्र १४ : नन्द मणिकार ने पूर्व दिशा वाले वनखण्ड मे एक विशाल चित्रसभा बनवाई। उसमे सैंकड़ो खम्भे थे और वह प्रसन्नतादायक, दर्शनीय आदि (सू १२ के समान) थी। उसमे अनेक कृष्ण, नील, रक्त, शुक्ल आदि रगो से पुती-काठ की सजावट, वस्त्रों की सजावट, चित्रों की सजावट,
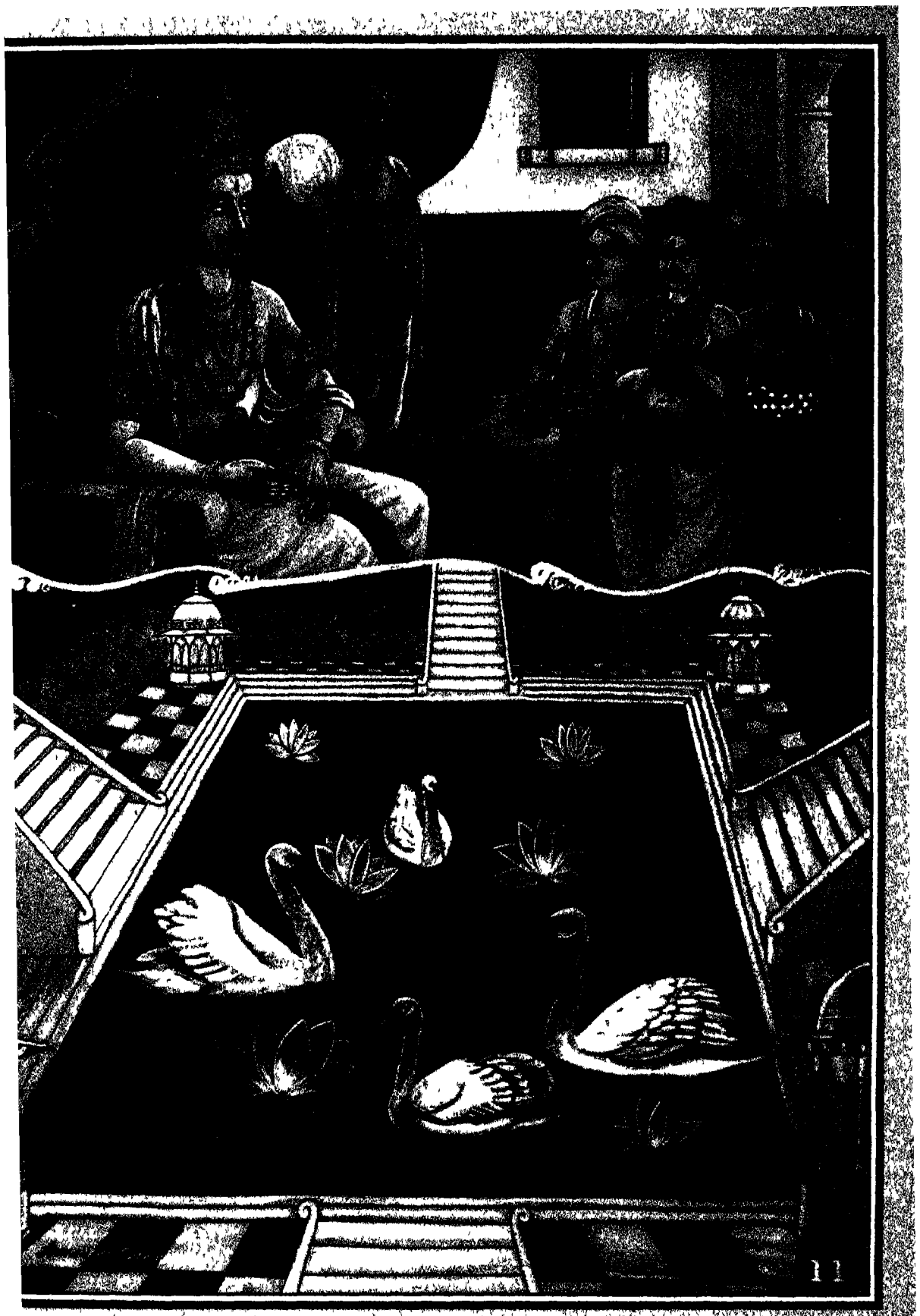
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

नन्दन मणिकार द्वारा पुष्करिणी निर्माण

चित्र ११

१ राजगृह निवासी नन्दन मणिकार के मन मे एक बार एक सुन्दर पुष्करिणी (बावडी) बनाने का संकल्प उठा। विविध प्रकार के उपहार लेकर नन्दन राजा श्रेणिक की सभा मे उपस्थित हुआ और कहा-"महाराज ! मुझे नगर मे एक सुन्दर पुष्करिणी बनाने की अनुमति प्रदान करे।"

२ राजा की अनुमति मिलने पर नन्दन ने एक अतीव विशाल समचतुष्कोण पुष्करिणी बनवाई। पुष्करिणी के चारो कोनो पर चार सुन्दर वनखण्ड बनवाये। जैसे-पूर्व दिशा के वनखण्ड मे चित्रसभा दक्षिण दिशा के वनखण्ड मे विशाल भोजनशाला, पश्चिम दिशा मे चिकित्साशाला और उत्तर दिशा मे अलंकारशाला। सैकडो, हजारो नागरिक व यात्री वहाँ आकर ठहरते थे।

(तेरहवाँ अध्ययन)

THE CONSTRUCTION OF A POOL BY NAND MANIKAR

ILLUSTRATION . 11

1 A rich merchant named Nand Maniyar lived in Rajagriha One day he desired to construct a beautiful and attractive pool He went with rich gifts and sought permission from King Shrenik, 'Sire! Please grant me permission to construct a beautiful pool outside the town "

2 After getting permission from the king Nand got a beautiful square pond constructed On the four sides of this pond he also created four gardens with facilities an art gallery in the east, a restaurant in the south a hospital in the west, and a beauty parlour in the north Thousands of citizens and travellers came and enjoyed all facilities

(CHAPTER - 13)

मिट्टी की सजावट, गुंथाई की सजावट, फूलों के गुच्छों की सजावट, धातु-प्रतिमाओं की सजावट तथा मिश्रित सजावट वाली कलाकृतियाँ थी। यह सब कलाकृतियों इतनी मनोरम थीं कि लोग उन्हें एक दूसरे को दिखा-दिखा कर चर्चा कर रहे थे।

HALL OF ENTERTAINMENT

14. Nand Manıkaar constructed a large recreatıon facilıty ın the eastern garden. It had hundreds of pıllars and was pleasıng, attractıve, exquısıte, and ıdeal It was richly decorated wıth works of art ın wood, cloth, canvas, clay, thread, flowers, metal, and composıte mediums using full spectrum of colours These pıeces of art were so attractıve that the vısitors poınted at them and talked about them

सूत्र १५ · तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणीयाणि य अत्थुयपच्चत्थुयाइं चिट्ठंति। तत्थ णं बहवे नडा य णट्टा य जाव दिन्नभइभत्तवेयणा तालायरकम्मं करेमाणा विहरंति। रायगिहविणिग्गओ एत्थ बहू जणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसणसयणेसु संन्निसन्नो सतुयट्टोय सुणमाणो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ।

सूत्र १५ · वहाँ पर बैठने सोने के लिए बहुत से आसन और शैय्याएँ सदा बिछे रहते थे। वहाँ अनेक नट-नर्तक विदूषक, गायक आदि कलाकार आजीविका, (भोजन) भत्ता और वेतन पर नियु.. थे। वे अपनी कलाओ का प्रदर्शन कर दर्शको का मनोरजन किया करते थे। राजगृह से बाहर सैर के लिए निकले अनेक लोग वहाँ पर आकर आसन और शैय्या ग्रहण कर कथा-वार्त्ता सुनते थे और नाटक आदि देखते थे। वे सब वहाँ की शोभा का आनन्द लेते हुए अपना मनोरंजन करते थे।

15. There was an elaborate seatıng arrangement wıth chaırs and beds for relaxıng A wıde range of performıng artısts lıke gymnasts, dancers, clowns, sıngers, etc were appoınted on remuneratıon, food, or salary These artısts entertaıned the vısitors all the tıme wıth theır performances People going out of Rajagrıha for excursıon came here, chose comfortable seats, and enjoyed these performances The exquısıte beauty of that place added to theır entertaınment.

सूत्र १६ · तए णं णदे मणियारसेट्ठी दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं कारावेइ, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव पडिरूवं। तत्थ ण बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा विपुलं असणं-पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेंति, बहूणं समण-माहण-अतिहि-वणीमगाणं परिभाएमाणा परिभाएमाणा विहरंति।

सूत्र १६ नन्द मणिकार ने दक्षिण दिशा वाले उद्यान (वनखण्ड) में एक विशाल भोजनशाला बनवाई। उसमे भी सैकडो खम्भे थे और वह सुन्दर प्रसन्नतादायक आदि थी। वहाँ भी अनेक कर्मचारी आजीविका भत्ता, वेतन आदि पर रखे गये थे। वे विपुल अशन-पानादि सामग्री पकाते थे और अनेक श्रमणो, ब्राह्मणो, अतिथियों, दरिद्रो और भिखारियों को देते रहते थे।

16. In the southern garden Nand Manikaar constructed a large restaurant This also had hundreds of pillars and was pleasing, attractive, exquisite, and ideal There too, a wide range of workers were employed They cooked large quantities of savoury food and served it to numerous Shramans, Brahmans, guests and even the destitute and beggars

चिकित्साशाला

सूत्र १७ . तए ण णंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तेगिच्छियसाल कारेइ, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव पडिरूवं। तत्थ ण बहवे वेज्जा य, वेज्जपुत्ता य, जाणुया य, जाणुय-पुत्ता य, कुसला य कुसलपुत्ता य, दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूण वाहियाणं, गिलाणाण य, रोगियाण य, दुब्बलाण य, तेइच्छं करेमाणा विहरंति। अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तेसि बहूण वाहियाण य रोगियाण य, गिलाणाण य, दुब्बलाण य ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं पडियारकम्म करेमाणा विहरंति।

सूत्र १७ पश्चिम दिशा के वनखण्ड मे नन्द मणिकार ने एक विशाल चिकित्साशाला बनवाई। उसका निर्माण भी पूर्व दो की भाँति सुन्दर हुआ था। (सू १४)। यहाँ अनेक चिकित्सक वेतनादि पर नियुक्त किये गये थे–यथा–वैद्य, वैद्यपुत्र (आयुर्वेद स्नातक), ज्ञायक, ज्ञायकपुत्र (स्व-अनुभव के आधार पर चिकित्सा करने वाले), तथा कुशल, कुशलपुत्र (अपने तर्क के आधार पर चिकित्सा करने वाले)। वे अनेक चित्त-भ्रमित, पाण्डु रोगी तथा दुर्बल व्यक्तियो की चिकित्सा करते रहते थे। चिकित्साशाला मे अन्य अनेक कर्मचारी भी रखे गये थे जो रोगियो के लिए औषध, भेषज, भोजन, पानी आदि की व्यवस्था कर उनकी सुश्रूषा किया करते थे।

THE HOSPITAL

17. Nand Manikaar constructed a large hospital in the western garden This was also as beautifully constructed as the other two (as para 14) Many healers were appointed in this hospital, these included senior and junior Vaidyas (qualified Ayurvedic doctors), senior and junior Jnayaks (those who learned and practiced the art of healing through their own experience), and senior and junior Kushals (those who practiced the art of healing purely on the basis of logical deductions) They treated many a patient including mentally sick, anaemic and weak patients There were other nursing,

cleaning and cooking staff as well as pharmacists, chemists and other helpers employed in the hospital to look after all the needs of the patients

सूत्र १८ : तए णं णंदे मणियारसेट्ठी उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं कारेइ, अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव पडिरूवं। तत्थ णं बहवे अलंकारियपुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं समणाण य, अणाहाण य, गिलाणाण य, रोगियाण य, दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा करेमाणा विहरंति।

सूत्र १८ ' अन्त में नन्द मणिकार ने उत्तर दिशा के वनखण्ड में एक विशाल अलंकार (शरीर की शोभा बढ़ाने का कार्य, आज की भाषा में ब्यूटीपार्लर) सभा बनवाई। इसका निर्माण भी पूर्व वर्णित रूप से हुआ था (सू. १४)। उसमें अनेक अलकारिक पुरुष (शरीर का शृंगार आदि कार्य करने वाले) वेतनादि पर नियुक्त किये गये थे। वे सभी प्रकार के रोगी, दुर्बल, अनाथ आदि अतिथियों का अलकारकर्म करते थे।

18. In the end, Nand Manikaar constructed a huge beauty parlour in the northern garden This was also beautifully constructed as the earlier ones. Many expert beauticians were employed there They provided all the required services to the guests, patients, as well as the poor and needy ones.

सूत्र १९ तए णं तीए णंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य, अणाहा य, पंथिया य, पहिया य, करोडिया य, कारिया य, तणाहारा य, पत्ताहारा य, कट्ठाहारा य अप्पेगइया ण्हायंति, अप्पेगइया पाणियं पियंति, अप्पेगइया पाणियं संवहंति, अप्पेगइया विसज्जियसेय-जल्ल-मल्ल-परिस्सम-निद्द-खुप्पिवासा सुहसुहेणं विहरंति।

रायगिहविणिग्गओ वि जत्थ बहुजणो, किं ते? जलरमण-विविह-मज्जण-कयलि-लयाघरय-कुसुमसत्थरय--अणेगसउणगण-रुयरिभितसंकुलेसु सुहंसुहेण अभिरममाणो अभिरममाणो विहरइ।

सूत्र १९ नदा पुष्करिणी में अनेक सनाथ, अनाथ, पथिक, पाथिक, कोरटिका (कावड उठाने वाले), घसियारे, पत्ते उठाने वाले, लकड़हारे आदि आते थे। उनमें से कुछ स्नान करते, कुछ पानी पीते और कुछ पानी भर कर ले जाते थे। कोई शरीर का पसीना, मल, जल्ल, थकान, नीद, भूख, प्यास आदि का निवारण करते थे।

क्या राजगृह से आये लोग भी नदा पुष्करिणी का उपयोग करते थे? हाँ, वे वहाँ जल में रमण करते थे, विविध प्रकार के स्नान करते थे; कदलीगृहों, लतागृहों, पुष्पशय्या आदि का आनन्द लेते थे; अनेक प्रकार के पक्षियों के मधुर स्वरो से गूँजती उस पुष्करिणी तथा चारों वनखण्डों में क्रीड़ा करते घूमते थे।

19. Many employed, unemployed, passersby, travellers, water carriers, grass cutters, leaf pickers, wood-cutters, and others came to the Nanda lake

Some of them took their bath, others drank water and carried it home Many of them relieved and cleaned themselves, and satisfied their needs of rest, sleep, hunger and thirst

Did the people of Rajagriha also use the Nanda lake? Yes, they also came and enjoyed the water sports, took a variety of baths, entertained themselves using resting places covered with foliage and creepers and provided with flower beds They entertained themselves moving around that beautiful pool filled with melodious twittering of a variety of birds, and the facilities available in the four gardens

सूत्र २० : तए ण णंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य, पीयमाणो य, पाणियं च संवहमाणो य अन्नमन्न एवं वयासी–'धण्णे ण देवाणुप्पिया ! णदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे जाव ! जम्मजीवियफले, जस्स ण इमेयारूवा णंदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव सव्व, चउसु वि वणसडेसु जाव रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्नो य सतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ, त धन्ने कयत्थे कयपुन्ने, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नदस्स मणियारस्स।'

तए ण रायगिहे संघाडग जाव बहुजणो अन्नमन्नस्स एयमाइक्खइ–धण्णे ण देवाणुप्पिया! णदे मणियारे सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेण विहरइ।

तए णं णंदे मणियारे बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे धाराहयकलबग पिव समूससिय-रोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ।

सूत्र २० · नंदा पुष्करिणी में स्नान करते, पानी पीते और जल भरकर ले जाते अनेक लोग परस्पर बाते करते थे–"हे देवानुप्रिय ! नन्द मणिकार सेठ धन्य है, कृतार्थ है। उसका जीवन सफल है जिसने यह चौकोर और मनोहर नंदा पुष्करिणी और उसके चारो ओर के सुन्दर उद्यान बनाये हैं। राजगृह से बाहर निकले अनेक लोग इस स्थान का लाभ उठाते है (वर्णन पूर्व सम)। अत नन्द मणिकार का मनुष्यजन्म तथा जीवन सराहनीय है सफल है।"

राजगृह नगर के भीतर शृंगाटक (तिराहे) आदि विभिन्न स्थानों पर भी लोग यही चर्चा करते थे।

लोगो के मुँह से अपनी ऐसी प्रशसा सुनकर नन्द मणिकार प्रसन्न व सतुष्ट हुआ। वर्षा से भीगे कदम्ब पुष्प के समान उसका रोम-रोम विकसित हो उठा। वह साताजनित परम सुख का अनुभव करने लगा।

20. These visitors of the Nanda pool while indulging in various activities like washing, drinking, and carrying water chatted, "Beloved of gods! Blessed is the merchant Nand Manikaar His life is purposeful and successful that he

12
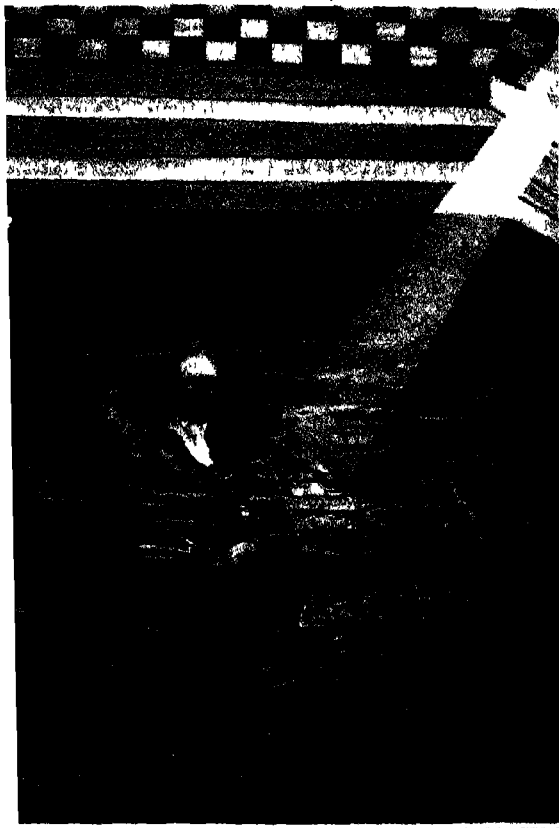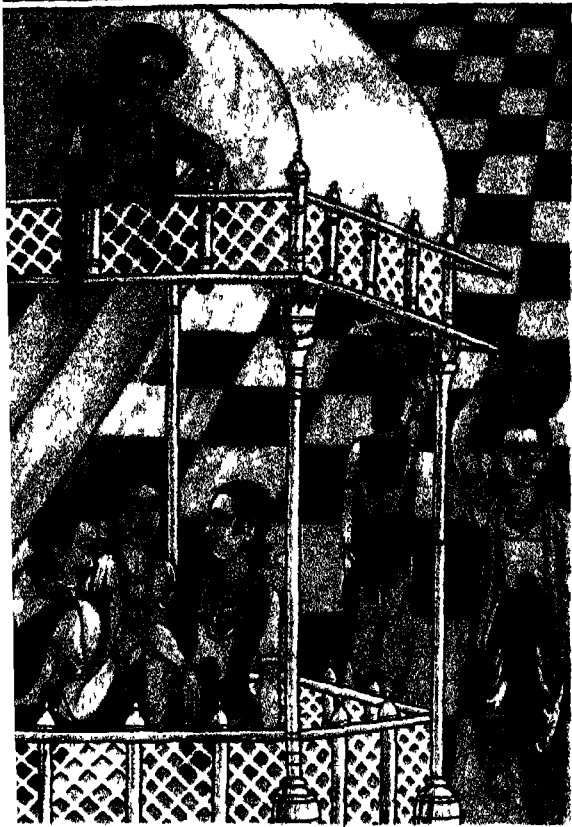
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

आसक्ति का फल : मेंढक जन्म

चित्र : १२

१ नन्द मणिकार अपने भवन के ऊपरी कक्ष मे बैठा लोगो के मुँह से जब अपनी बावडी व खुद की प्रशसा सुनता तो बहुत आनन्दित हो उठता।

२ एक बार नन्द मणिकार बीमार हुआ और धीरे-धीरे वह सोलह महारोगो से ग्रस्त हो गया। उसके मन मे अपनी बनाई पुष्करिणी के प्रति बहुत गहरी आसक्ति थी।

३ इसी आसक्ति के वश हुआ प्राण त्यागकर वह उसी पुष्करिणी मे एक मेढकी के गर्भ मे मेंढक रूप में जन्म लेता है।

४ वहाँ पर आने-जाने वाले लोगो के मुँह से नन्द मणिकार की प्रशसा सुनता है। प्रशसा सुनते हुए उसे अपना पूर्व-जन्म याद आता है। पर एक बार कुछ लोग पुष्करिणी के किनारे बैठे बतिया रहे थे-"आज नगर मे भगवान महावीर पधार रहे है चलो हम उनके दर्शन कर प्रवचन सुनेगे।" नन्द जीव मेढक ने लोगो की यह बात सुनी तो वह भी भगवान महावीर की वन्दना करने के लिए निकल पड़ा। (तरहवाँ अध्ययन)

THE FRUITS OF ATTACHMENT : THE BIRTH AS A FROG

ILLUSTRATION . 12

1 Nand Manikar is sitting in an upper floor chamber in his house with a number of guests and enjoying the praise of the pool and himself

2 Nand is plagued by sixteen terrible diseases He dies taking his infatuation for the pond with him

3 As the result of this extreme attachment he reincarnates as a frog in the very same pond

4 There he hears the praise of Nand from the citizens bathing in the pond and concentrates to refresh his memory This effort results in his acquiring Jatismaran Jnana He immediately resolves to follow the religious path One day some people sitting at the edge of the pool were saying, "Bhagavan Mahavir is in the town, let us go behold him and listen to his discourse " Nand frog heard this and came out of the pond on the highway and proceeded toward the congregation

(CHAPTER - 13)

has constructed this square and beautiful Nanda pool with four gardens around it People coming out of Rajagriha avail of the facilities provided here (as already detailed). Thus the life and deeds of Nand Manikaar are commendable."

People in every nook and corner of the city also talked on the same topic

Nand Manikaar was happy and contented to hear all this praise. Like a rain drenched Kadamb flower, every single pore of his body became ecstatic with joy He experienced the intense pleasure derived out of the contentment

नन्द की रुग्णता

सूत्र २१ : तए ण तस्स नदस्स मणियारसेट्ठिस्स अन्नया कयाई सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा–

सासे[१] कासे[२] जरे[३] दाहे[४], कुच्छिसूले[५] भगंदरे[६]।

अरिसा[७] अजीरए[८] दिट्ठि[९]–मुद्धसूले[१०] अकारए[११] ॥१॥

अच्छिवेयणा[१२] कन्नवेयणा[१३] कंडू[१४] दओदरे[१५] कोढे[१६]।

तए णं से णंदे मणियारसेट्ठी इमेहिं सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे सिंघाडग जाव महापहपहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! णदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीगंसि सोलस रोगायका पाउब्भूया, तं जहा–सासे य जाव कोढे।

तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! वेज्जो वा वेज्जपुत्तो वा जाणुओ वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नदस्स मणियारस्स तेसि च सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामेत्तए, तस्स णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे विउल अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसणं घोसेह। घोसित्ता जाव पच्चप्पिणह।' ते वि तहेव पच्चप्पिणंति।

सूत्र २१ कुछ समय पश्चात् एक बार नंद मणिकार सेठ के शरीर में सोलह प्रकार के रोगो की पीड़ा उत्पन्न हुई। वे रोग इस प्रकार हैं–(१) श्वास, (२) कास-खासी, (३) ज्वर, (४) दाह-जलन, (५) कुक्षिशूल- काख का शूल, (६) भगंदर, (७) अर्श-बवासीर, (८) अजीर्ण, (९) दृष्टि-शूल, (१०) मात्रक शूल-सरदर्द, (११) भोजन मे अरुचि, (१२) आँखों की वेदना, (१३) कानों की वेदना, (१४) कंडू–खाज, (१५) दकोदर- जलोदर, और (१६) कोढ।

नंद मणिकार सेठ इन सोलह रोगों से पीड़ित होने पर अपने सेवकों को बुलाकर बोला–"हे देवानुप्रियो, तुम राजगृह नगर के चौराहों, राजमार्गों आदि पर यह उद्घोषणा करो–

–'हे देवानुप्रियो ! नन्द मणिकार के शरीर में सोलह रोग-आतंक एवं उनकी पीड़ा उत्पन्न हुए हैं। जो कोई वैद्य या वैद्य पुत्र आदि (पूर्वसम, सूत्र १७ के समान) उन सोलह रोग-आतंक में से एक का भी शमन कर देगा नन्द मणिकार उसे विपुल धन-सम्पत्ति प्रदान करेगा।' यह घोषणा अनेक बार करो, और वापस लौटकर मुझे सूचना दो।'' सेवको ने इस आज्ञा का पालन कर उसे सूचना दी।

AILMENT OF NAND

21. After some time Nand Manikaar came down with sixteen different ailments. They were—(1) asthma, (2) bronchitis, (3) fever, (4) burning sensation, (5) infection in armpits, (6) fistula of the anus, (7) bleeding piles, (8) indigestion, (9) Glaucoma, (10) headache, (11) lack of appetite, (12) pain in the eyes, (13) pain in the ears, (14) eczema, (15) dropsy, and (16) leprosy

When he suffered from these ailments he called his servants and instructed, "Beloved of gods! Go and make this announcement at every corner, road, etc in the city—

'O Beloved of gods! Nand Manikaar is suffering from the pain of sixteen different ailments Any Vaidya, (etc as detailed in para 17) who is able to cure even one of these diseases will be amply and richly rewarded by him '

Make this announcement many times and report back to me " The servants did as told and reported back

सूत्र २२ : तए ण रायगिहे णयरे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा णिसम्म बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाव कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहिं सएहिं गेहेहिंतो निक्खमति, निक्खमित्ता रायगिहं मज्झमज्झेण जेणेव णंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता णदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरं पासंति, तेसिं रोगायंकाणं नियाण पुच्छति, णदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि य अवण्हाणेहि य अणुवासणेहि य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य सिरावेढेहि य तप्पणाहि य पुढट वाएहि य छल्लीहि य वल्लीहि य मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसमित्तए। नो चेव ण संचाएंति उवसामेत्तए।

सूत्र २२ · यह घोषणा सुन-समझकर राजगृह नगर के अनेक चिकित्सक (वैद्यादि–सू. १७ के समान) अपने साथ उपकरणो की पेटी, धार देने की शिला, औषधि की गोलियाँ, औषधियाँ और भेषज आदि अपने साथ ले अपने घरों से निकले। नगर के बीच होते हुए वे नन्द के घर आए।

उन्होंने नंद के शरीर की जाँच की और नंद से रोग के निदान हेतु प्रश्न किये। फिर अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों से एक-एक कर सभी ने रोगों की चिकित्सा करने का प्रयत्न किया। वे चिकित्सा पद्धतियाँ हैं-(१) उद्वलन (लेप विशेष), (२) उद्वर्तन (उबटन), (३) स्नेहपान (औषधियुक्त घी, तेल आदि पिलाना), (४) वमन, (५) विरेचन, (६) स्वेदन (पसीना निकालना), (७) अवदहन (गर्म धातु से दागना), (८) अपस्नान (औषधियुक्त जल से स्नान करना), (९) अनुवासना (अपान मार्ग द्वारा यंत्र की सहायता से तैलादि पहुँचाना), (१०) वस्तिकर्म (वस्ति द्वारा मल त्याग करवाना), (११) निरूह (औषधियुक्त तेल द्वारा विस्वेदन करवाना), (१२) शिरावेध (नस द्वारा विकृत रक्त निकालना, (१३) तक्षण (चमड़ी छीलना), (१४) प्रवक्षण (चमड़ी काटना), (१५) शिरावेष्ट (नस पर औषधियुक्त कपडा बाँधना), (१६) तर्पण (चिकना पदार्थ चुपडना), (१७) पुटपाक (आग में पकाई औषधियों का सेवन), (१८) विभिन्न वनस्पतियों से (छाल, बेल, मूल, कद, फूल, बीज, घास आदि), तथा (१९) विभिन्न औषधियों से (गोली, औषधि, भेषज आदि) द्वारा।

इन सब प्रयत्नो से वे किसी एक रोग का भी उपचार नहीं कर सके।

22 Hearing and understanding this announcement many healers (as detailed in para 17) collected their instrument boxes, honing stones, pills and other medicines, and other accessories and left their homes. They passed through the streets of Rajagriha and came to the residence of Nand Manikaar They thoroughly examined and questioned the patient. After diagnosis they selected different methods and regimens of treatment and tried to cure the ailments one by one The methods and processes employed were —

(1) Udvalan or application of medicinal pastes, (2) Udvartan or rubbing with medicinal pastes, (3) Snehapan or giving medicated oils, (4) Vaman or emesis, (5) Virechan or purgation, (6) Swedan or perspiring, (7) Avadahan or cauterizing with hot metal, (8) Apasnan or washing with medicated water, (9) Anuvasana or enema of medicated oils, (10) Vastikarma or common enema, (11) Niruha or to cause sweating by applying medicated oil, (12) Shiravedh or bleeding toxic blood by cutting nerve-end, (13) Takshan or scraping of the epidermis, (14) Pravakshan or cutting of the epidermis, (15) Shiraveshta or dressing of the nerve-end, (16) Tarpan or pouring of medicated oils, (17) Putpaak or use of cooked medicines, (18) use of medicines and other accessories of vegetable origin, and (19) use of other medicines

However, in spite of all these methods of treatment they could not cure even one single ailment.

नन्द मणिकार की मृत्यु तथा पुनर्जन्म

सूत्र २३ : तए णं ते बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामेत्तए ताहे संता तंता जाव परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया।

तए णं णंदे तेहिं सोलसेहिं रोगायकेहिं अभिभूए समाणे नंदा पोक्खरिणीए मुच्छिए तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए, बद्धपएसिए अट्टदुहट्टवसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिसि दद्दुरत्ताए उववन्ने।

तए णं णंदे दद्दुरे गब्भाओ विणिम्मुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे विन्नायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे अभिरममाणे विहरइ।

सूत्र २३ : वे सभी चिकित्सक, वैद्य, वैद्यपुत्र आदि अपने परिश्रम से थक गये तथा एक भी रोग ठीक नहीं कर सकने की असफलता से खिन्न और उदास हो अपने-अपने घर लौट गए।

नन्द मणिकार अपने रोगो से अभिभूत–पीड़ित हो नन्दा पुष्करिणी के प्रति अत्यधिक आसक्ति वाला हो गया। अत्यधिक आसक्ति के कारण उसने तिर्यंच योनि की आयुष्य व भव का बन्धन किया। आर्त्तध्यानपूर्वक मृत्यु प्राप्त कर उसी नन्दा पुष्करिणी मे रही एक मेंढकी की कोख में मेढक के रूप में उसका गर्भाधान हुआ।

नन्द मेढक ने यथा समय जन्म लिया, धीरे-धीरे बाल्यावस्था से मुक्त हो ज्ञानवान युवावस्था को प्राप्त हुआ और नन्दा पुष्करिणी मे क्रीडा करता जीवन व्यतीत करने लगा।

DEATH AND REBIRTH OF NAND MANIKAAR

23. After all this hard work all the doctors got tired and left thoroughly disappointed and dejected

While suffering the agony of all these ailments Nand Manikaar's attachment for Nanda pool increased The intensity of this attitude of extreme attachment became instrumental in his acquiring the Tiryanch Ayushya and Bhava karma (the karma responsible for a life and life-span as a lower animal) He died with melancholic attitude during his last moments, and his soul descended into the womb of a she-frog in the Nanda pool.

In due course Nand frog was born and crossing the age of infancy it became a fully grown frog It spent all its time playing around in the Nanda pool

सूत्र २४ : तए णं णंदाए पोक्खरिणीए बहू जणे ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं संवहमाणो य अन्नमन्नस्स एवं आइक्खइ–"धन्ने णं देवाणुप्पिया ! णंदे मणियारे जस्स णं

इमेयारूवा णंदा पुक्खरिणी चाउक्कोणा जाव पडिरूवा, जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभसयसन्निविट्ठा तहेव चत्तारि सहाओ जाव जम्मजीविअफले।"

सूत्र २४ : नन्दा पुष्करिणी में अनेक लोग स्नानादि करते, पानी पीते, पानी भरकर ले जाते हुए नन्द मणिकार की प्रशंसा किया करते थे और पुष्करिणी बनाने के लिए बार-बार उसे धन्यवाद देते थे। (विस्तार पूर्व--सू. २० के समान)

24. Many visitors of the Nanda pool while indulging in various activities like washing, drinking, and carrying water used to praise Nand Manikaar and thank him for constructing the complex (details as para 20)

सूत्र २५ : तए णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खण अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था-"से कहिं मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे णिसतपुव्वे" त्ति कट्टु सुभेण परिणामेणं जाव जाइसरणे समुप्पन्ने, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ।

सूत्र २५ अनेक लोगो के मुखो से इस प्रकार प्रशसा सुन उस मेंढक को लगा जैसे उसने ये शब्द पहले भी सुने है। इन विचारो के साथ शुभ परिणामो के कारण वह गहन विचारणा में डूबा और उसे जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। पूर्व जन्म की सभी घटनाएँ पूरी तरह याद हो आईं।

25. Hearing these words of praise from so many people the frog felt as if it had heard all this earlier also Inspired by these thoughts and the consequent purity of attitude, it went into a state of deep contemplation that led to its acquiring Jatismaran Jnana (the knowledge of the earlier births) and it remembered the incidents from its earlier birth

पुन श्रावकधर्म स्वीकार

सूत्र २६ · तए णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जेत्था-"एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नगरे णदे णामं मणियारे अड्ढे। तेणं कालेण तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे, तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए जाव पडिवन्ने। तए णं अहं अन्नया कयाई असाहुदंसणेण य जाव मिच्छत्तं विप्पडिवन्ने। तए णं अहं अन्नया कयाई गिम्हकालसमयंसि जाव उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। एवं जहेव चिंता आपुच्छणा नंदा पुक्खरिणी वणसंडा सहाओ तं चेव सव्वं जाव नंदाए पुक्खरिणीए दद्दुरत्ताए उववन्ने।

तं अहो ! णं अहं अहन्ने अपुन्ने अकयपुन्ने निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे, तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवन्नाइं पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए।"

सूत्र २६ : जातिस्मरण ज्ञान होने से उस मेंढक के मन में विचार आया-"मैं इसी राजगृह नगर में नन्द नाम का मणिकार सेठ था। काल के उस भाग में श्रमण भगवान महावीर का आगमन हुआ

और मैंने उनके पास पाँच अणुव्रत तथा सात शिक्षाव्रत युक्त श्रावक धर्म अंगीकार किया। किन्तु साधुओं का सान्निध्य न होने से धीरे-धीरे मैं सम्यक्त्व से पतित हो मिथ्यात्वी बन गया।"

"गर्मी में तेले के व्रत के समय मुझे पुष्करिणी खुदवाने का विचार आया और राजाज्ञा से मैंने वनखण्डों और सभाओं सहित नन्दा पुष्करिणी बनवाई। मृत्यु पश्चात्, पुष्करिणी के प्रति आसक्ति के कारण, मैं यहीं मेंढक के रूप मे उत्पन्न हुआ। अत· मैं अधन्य हूँ, पुण्यहीन हूँ, अकृतपुण्य हूँ। मैं निर्ग्रन्थ वचन से भ्रष्ट होते-होते पूर्ण भ्रष्ट हो गया। अब मेरे लिये यही हितकर होगा कि एक बार फिर वे पाँच अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत मै स्वय अंगीकार करके तदनुसार जीवन बिताऊँ।"

A SHRAVAK AGAIN

26. Once it acquired the Jatismaran Jnana it thought, "I was the merchant Nand Manikaar and lived in Rajagriha. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir came and I became a Shramanopasak But later I did not get any opportunity to meet ascetics and consequently my righteousness faded and I became misguided

"During a summer season while observing a three day fast I thought of constructing a pool and after seeking permission from the king I got the Nanda pool constructed. After my death I was born as a frog due to my extreme attachment for this pool Thus I am a wretched, ill fated, and virtueless individual I have fallen from my grace and lost my faith in the word of the omniscient Now it would be good for me if I once again take the five minor vows and seven disciplinary vows and spend the rest of my life observing them

सूत्र २७ : एवं संपेहेइ, सपेहित्ता पुव्वपडिवन्नाइ पंचाणुव्वयाइ सत्तसिक्खावयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता इमेयारूवे अभिग्गहं अभिगिण्हइ-"कप्पइ मे जावज्जीवं छट्ठं छट्ठेण अणिक्खित्तेण अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए। छट्ठस्स वि य ण पारणगंसि कप्पइ मे णदाए पोक्खरिणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएण उम्मद्दणालोलियाहि य वित्ति कप्पेमाणस्स विहरित्तए।" इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ जावज्जीवाए छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ।

सूत्र २७ : यह विचार आने पर उसने बारह व्रतो को पुन. अगीकार किया और साथ ही यह अभिग्रह धारण किया-"आज से जीवन पर्यन्त मै बेल-बेले की तपस्या से आत्मा को भावित करते हुए ही जीवन बिताऊँगा। बेले के पारणे मे भी नन्दा पुष्करिणी के तट भाग के प्रासुक जल द्वारा स्नान कर मनुष्यों द्वारा उतारे गए मैल के इधर-उधर गिरे टुकडों मात्र से अपना काम चलाऊँगा।" ऐसा निश्चय कर वह तदनुसार तपस्या करता हुआ जीवन बिताने लगा।

27. Once he got the idea he immediately took the twelve vows and also resolved, "Starting from today I shall purify my soul by doing the penance of

a two day fast followed by a day of eating and so on throughout the rest of my life. Also, on the day of eating I shall take only the fallen crumbles of slime shed by human beings who take bath with the clean water of this pool on its shore." And it commenced the penance and the disciplined life immediately after the resolve

सूत्र २८ : तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसीलए चेइए समोसढे। परिसा णिग्गया। तए णं णंदाए पुक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं संवहमाणो य अन्नमन्नं एवमाइक्खइ–जाव समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसीलए चेइए समोसढे। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो जाव पज्जुवासामो, एयं मे इहभवे परभवे य हियाए जाव आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

सूत्र २८ : हे गौतम ! काल के उस भाग मे मैं गुणशील चैत्य में आया और परिषद निकली। उस समय नन्दा पुष्करिणी मे स्नानादि करते लोग परस्पर बाते करने लगे–"श्रमण भगवान महावीर का समवसरण गुणशील चैत्य में है अत हे देवानुप्रिय ! हम चलकर उनकी वन्दना-उपासना करे। यह हमारे वर्तमान और भविष्य के लिए श्रेयस्कर होगा।"

28. Gautam! During that period of time I arrived in the Gunasheel Chaitya and a delegation of citizens came there The citizens taking bath in the Nanda pool talked among themselves, "Shraman Bhagavan Mahavir is giving discourses in the Gunasheel Chaitya So Beloved of gods! we should go their and pay our homage This would be beneficial for us in the present as well as future."

मेंढक का वन्दनार्थ प्रस्थान

सूत्र २९ : तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जेत्था–"एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, तं गच्छामि णं वंदामि" जाव एवं संपेहेइ, संपेहित्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ सणियं सणियं उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए दद्दुरगईए वीइवयमाणे वीइवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र २९ : अनेक लोगो से यह समाचार सुन और समझकर उस मेंढक के मन मे विचार, चिन्तन, अभिलाषा और मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ–"श्रमण भगवान महावीर यहाँ पधारे हैं, निश्चय ही मैं भी जाऊँ और भगवान की वन्दनादि करूँ।" यह विचार आने पर वह धीरे-धीरे नन्दा पुष्करिणी से बाहर निकला, राजमार्ग पर आया और अपनी तेज चाल से चलता हुआ मेरे पास आने लगा।

FROG MOVES TO PAY HOMAGE

29. When the frog heard about this from many a people it thought, contemplated, desired and resolved, "Shraman Bhagavan Mahavir has arrived in the town I should also go and pay my homage " It slowly came out of the Nanda pool, reached the highway, and moved in leaps and bounds in the direction of my camp

सूत्र ३० : इमं च णं सेणिए राया भंभसारे ण्हाए कायकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेण सेयवरचामरेहि य उद्धुव्वमाणेहि महया हय-गय-रह-भड-चडगर-कलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ। तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेण आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अतनिग्घाइए कए यावि होत्था।

सूत्र ३० : इधर राजा (भंभासार बिम्बसार) श्रेणिक स्नानादि कृत्यो से निवृत्त हो वस्त्रालकारो से विभूषित हुआ और श्रेष्ठ हाथी पर सवार हुआ। कोरट के फूलो की माला वाले छत्र तथा सफेद चामरों से शोभित हो घोड़े, हाथी, रथ और महारथियो सहित अपनी चतुरगिणी सेना से घिरा वह मेरी चरण-वन्दना हेतु शीघ्रता से चला आ रहा था। तब वह मेढक श्रेणिक राजा के एक तरुण चंचल घोडे की बाईं टॉंग से कुचला गया और उसकी ऑंते बाहर निकल आई।

30. On the other side, King Shrenik Bimbasar got ready after his bath etc and rode his best elephant Surrounded by his four pronged army of elephants, horses, chariots and foot soldiers and with all his regalia he was also coming for my obeisance at a fast speed on the same highway It so happened that the little frog was trampled under the hoof of a horse of the kings guards and its entrails came out

सूत्र ३१ : तए णं से दद्दुरे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसकार-परक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहिय तिक्खुत्तो सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी–

नमोऽत्थु णं अरहंताण भगवंताणं जाव सपत्ताण, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स मम धम्मायरियस्स जाव संपाविउकामस्स। पुव्वि पि य ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए, त इयाणि पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवाय पच्चक्खामि, जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि, जावज्जीवं सव्वं असणं पाणं खाइमं साइमं पच्चक्खामि जावज्जीव जं पि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव मा, फुसतु एयं पि णं चरिमेहिं ऊसासेहिं 'वोसिरामि' त्ति कट्टु।
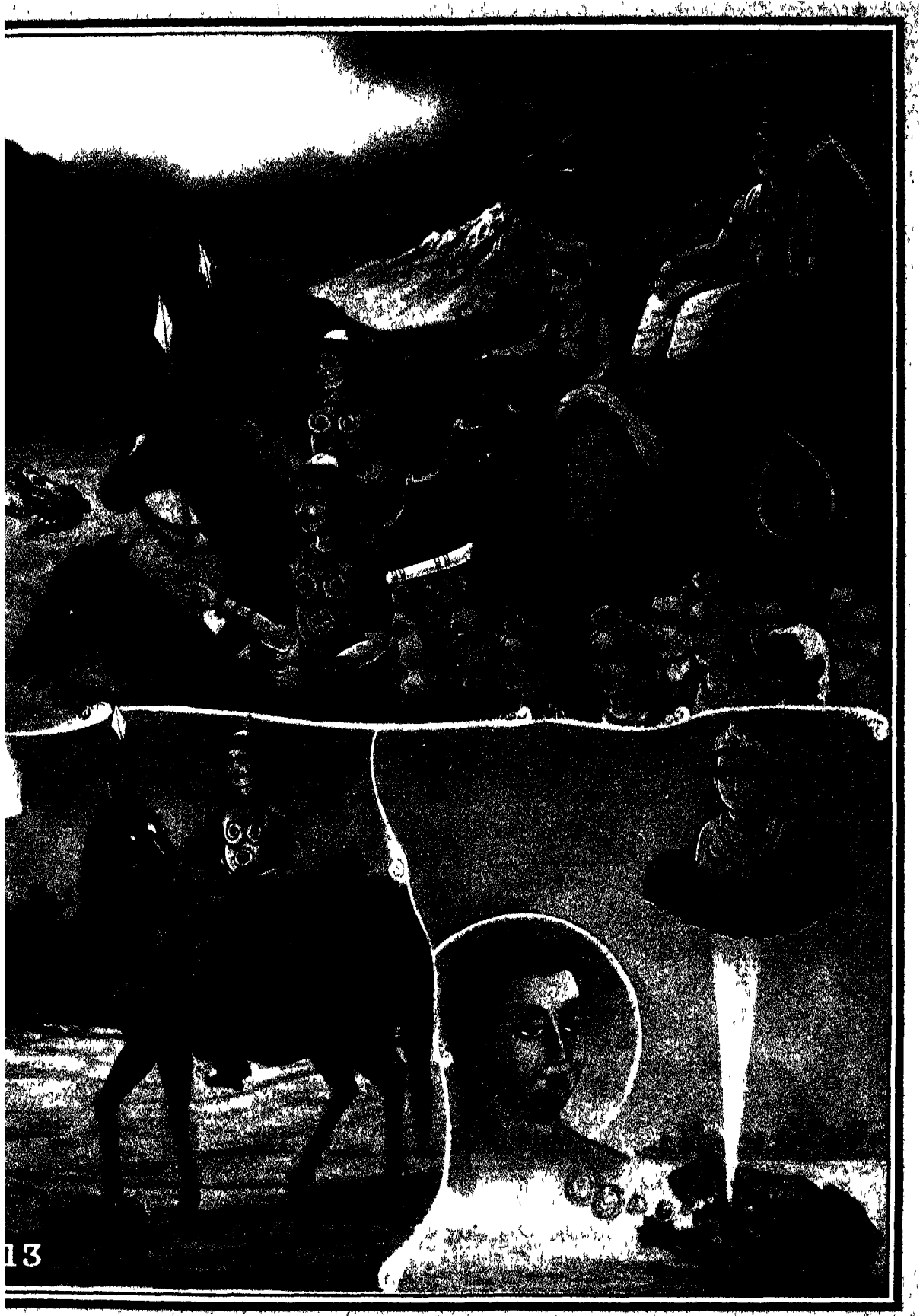
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

मेंढक का भव-उद्धार

चित्र : १३

१ नन्द जीव मेढक भगवान महावीर की वन्दना करने राजमार्ग पर फुदक-फुदककर चलता जा रहा है। उसी समय राजा श्रेणिक भी उसी रास्ते से भगवान की वन्दना करने जा रहा है।

२ एक सैनिक के घोडे की टाप अचानक मेढक पर गिरती है। नन्हा-सा मेढक कुचल जाता है, आँते बाहर निकल आती है। मेंढक राजमार्ग के एक किनारे चला आता है और सोचता है—अब मै शक्तिहीन हो गया हूँ। भगवान के समवसरण तक नही पहुँच सकता।

३ मेढक वही से अत्यन्त भक्तिभाव के साथ भगवान को भाव-वन्दना करता है।

४ अत्यन्त शुद्ध भावपूर्वक शरीर त्यागकर वह नन्द मेढक सौधर्मकल्प के दर्दुरान्तक विमान में ऋद्धिशाली देव बनता है। (तेरहवॉ अध्ययन)

LIBERATION OF THE FROG

ILLUSTRATION · 13

1 Nand frog proceeds hopping on the highway on his way to pay homage to Bhagavan Mahavir At that time King Shrenik is also proceeding with his guards to pay homage to Bhagavan Mahavir

2 Suddenly the frog is hit by the hoof of a guard's horse and its entrails are exposed It drags itself to one side and thinks that it has not enough energy left to reach the Samavasaran

3 From that very spot it starts worship of Bhagavan Mahavir with all devotion After that it reviews its conduct and atones for misdeeds and accepts the five great vows as well as the ultimate vow of fasting till death

4 Because it breathed its last with purity of feelings and thoughts he reincarnated as a powerful god in the Saudharm dimension He comes to pay homage and display his grandeur before Bhagavan Mahavir (illustration - 10)

(CHAPTER - 13)

सूत्र ३१ : कुचले जाने से वह मेंढक शक्तिहीन, निर्बल, निर्वीय और पौरुषविहीन हो गया। यह समझकर कि अब उसमे जीवन धारण की शक्ति नही रही, वह एक ओर चला गया। वहाँ दोनों हाथ जोड़कर तीन बार मस्तक पर फिराकर ललाट पर लगाये और बोला–"अरिहंतों को, भगवन्तों को नमस्कार हो ... (शकेन्द्र स्तुति के समान)। मेरे धर्मगुरु धर्माचार्य, मोक्ष-प्राप्ति के लिए अभिमुख श्रमण भगवान महावीर स्वामी को नमस्कार हो। मैंने पहले भी श्रमण भगवान महावीर के पास स्थूल अहिंसादि पाँच अणुव्रत स्वीकार किए थे। अब मैं उन्हीं भगवान के निकट (साक्षी भाव से) सम्पूर्ण अहिंसादि पाँच महाव्रत स्वीकार करता हूँ। जीवन पर्यंत समस्त अशनादि आहार का त्याग करता हूँ। जिस शरीर के लिए सदा कामना की कि इसे रोगादि स्पर्श न करें उस इष्ट व कान्त शरीर का मोह भी अन्तिम साँस तक त्यागता हूँ।"

31. On being trampled the frog lost its energy, strength, power, and valour Realizing that the life force was fast ebbing out, it dragged itself to one side It joined its front paws, moving them in a circle near its head three times and touching its forehead it uttered, "I bow and convey my reverence to the Arhats, Bhagavants, . (the Shakra panegyric) My reverence also to my preceptor, Shraman Bhagavan Mahavir Earlier I took the five minor vows before him, and now I take the five great vows in his name, in his spiritual presence I resolve to abandon intake of any and all food till the last breath of my life I also abandon the fondness for the loved and treasured mundane body of which I always wished that no ailment may touch it "

देवपर्याय में जन्म

सूत्र ३२ : तए णं से दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा जाव सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववन्ने। एव खलु गोयमा ! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता जाव अभिसमन्नागया।

सूत्र ३२ : उसके बाद यथासमय वह मेढक मृत्यु को प्राप्त हो सौधर्मकल्प मे दर्दुरावतसक नाम के विमान की उपपात सभा में दर्दुर देव के रूप में उत्पन्न हुआ। हे गौतम ! दर्दुर देव ने वह दिव्य देवर्धि लब्धि इस प्रकार पूर्ण रूप से प्राप्त की है।

REBIRTH AS GOD

32. In due course the frog breathed its last and was reincarnated as Dardur god in the Upapata assembly of the Darduravatansak space vehicle in the Saudharm Kalp (a dimension of gods) Gautam! This is how the Dardur god acquired all his divine virtues and powers

सूत्र ३३ : दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता। से णं दद्दुरे देवे आउक्खएणं भवक्खएणं, ठिइक्खएणं, अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, जाव अंतं करिहिइ।

सूत्र ३३ गौतम स्वामी–"भंते दर्दुर देव की उस देवलोक मे कितनी स्थिति है?"

भगवान महावीर ने कहा–"गौतम ! उसकी देवलोक स्थिति चार पल्योपम कही गई है। उसके बाद यह दर्दुर देव आयु, भव और स्थिति के क्षय होने पर तत्काल च्यवन कर महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त हो समस्त दु खो का अन्त करेगा।"

33. "Bhante! What is the divine life-span of Dardur god?"

"Gautam! It is said that his divine life-span will be four Palyopam (a superlative count of time) After that, on the termination of the divine life-span, life, and form, it will descend and take birth in the Mahavideh area and be enlightened, end all sorrows, and be liberated "

सूत्र ३४ : एव खलु समणेण भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, त्ति बेमि।

सूत्र ३४ : जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने तेरहवे ज्ञात अध्ययन का यह अर्थ कहा है। मैने जैसा सुना है वैसा ही कहता हूँ।

34. Jambu! This is the text and the meaning of the thirteenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm

॥ तेरसम अज्झयण समत्त ॥

॥ तेरहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE THIRTEENTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्म कथा की इस तेरहवीं कथा मे सुविधाओं में आसक्ति के परिणाम स्वरूप अध.पतन और आत्मालोचना द्वारा संयम की पुनर्स्थापना को एक सहज बोधगम्य उदाहरण द्वारा प्रस्तुत किया है। राग व मोह हर स्थिति में पथ भ्रष्ट करता है चाहे उससे प्रेरित क्रियाकलाप जनोपयोगी ही क्यों न हो। अत. जन सेवा के कार्य स्वानुकम्पा से नहीं परानुकम्पा से प्रेरित होने चाहिए। आत्मालोचना वह प्रहरी है जो पग-पग पर ऐसे सूक्ष्म अटकाव से रोकता है और सम्यक् मार्ग को अपनाने को प्रेरित करता है। सुसाधु समागम इस आत्मालोचना को पुष्ट करता है।

CONCLUSION

This thirteenth story of the Jnata Dharma Katha presents the downfall caused by attachment to comforts and the regaining of self discipline through critical self-review This is done with the help of a simple and easy to grasp example Attachment and fondness always lead one astray from the spiritual path whether or not the inspired activity is humanitarian. And so any humanitarian activity should be inspired by the desire to benefit others and not oneself Self criticism acts as a guard that clears such subtle hurdles at every step and helps maintain the right direction on the spiritual path Interaction with accomplished ascetics helps this practice of self criticism

उपनय गाथा

सम्पन्नगुणो वि जिओ सुसाहुसंसग्गिवजिओ पायं।
पावइ गुणपरिहाणिं दद्दुरजीवो व्व मणियारो॥१॥
तित्थयर वंदणत्थं चलिओ भावेण पावए सग्गं।
जह दद्दुर देवेणं, पत्तं वेमाणियसुरत्तं॥२॥

गुण सम्पन्न होने पर भी कभी-कभी सुसाधु के सम्पर्क का अभाव होने पर आत्मा गुणों की हानि को प्राप्त होता है जैसे नन्द मणिकार का जीव मेढक के रूप में उत्पन्न हुआ॥१॥

तीर्थंकर वन्दना हेतु प्रस्थान करने वाला प्राणी भक्ति भावना के कारण स्वर्ग प्राप्त करता है (चाहे वह दर्शन कर पावे या नहीं) जैसे मेंढक मात्र भावना प्रबल होने के कारण वैमानिक देव भव प्राप्त कर सका॥२॥

THE MESSAGE

A virtuous one, too, loses virtues in the absence of continued interaction with accomplished ascetics, in same way that the being that was Nand Manikaar was born a frog (1)

The being who proceeds to pay homage to the Tirthankar attains Moksha due to the depth of his devotion (whether or not he is actually able to behold the Lord), in same way that the frog was born a god because of the intensity of his feeling of devotion only (2)

परिशिष्ट

अणुपविट्ठा–समा गई। दर्दुर देव ने अपनी ऋद्धि का जो प्रदर्शन किया उसके अन्तर्गत अपनी दैविक शक्ति से अनेक नर्तकों, नर्तकियो, वादकों आदि को प्रकट करना भी सम्मिलित है। प्रदर्शन समाप्त होते ही ये सभी अनायास ही अदृश्य हो जाते हैं अत सामान्य व्यक्ति को लगता है कि वे सभी कही समा गये है। जिसे समझाने के लिए कूटागार का दृष्टान्त दिया है।

कूटागार–एक ग्राम मे एक पर्वताकार विशाल भवन था। वह बहुत दृढ़ व सुरक्षित था तथा उसकी सरचना ऐसी थी कि भीतर सभी सुविधाये होते हुए भी बाहर से यह जान पाना असम्भव था कि उसके भीतर कौन है–क्या है। उसके भीतर प्रवेश पाना या उसकी थाह पाना कठिन था। एक बार जब एक प्रचण्ड तूफान आया तो सुरक्षा हेतु गाँव के सभी लोग उसमे प्रवेश कर गये। उस समय वह क्षेत्र ऐसा हो गया मानो जनशून्य क्षेत्र मे कोई पर्वत खडा हो। इसी प्रकार देव की प्रकट ऋद्धि उसके शरीर मे यो समा गई जैसे उस कूटागार मे ग्राम का जनसमूह।

रोगातक–आतक स्वरूप रोग या तीव्र वेदनादायक रोग जिनका उपचार कठिन साध्य हो। यहाँ सोलह रोगो का नाम दिया है। इसी प्रकार अन्य अंग शास्त्रो मे भी रोगो की सूची उपलब्ध है। आचाराग सूत्र में भी सोलह रोगों की सूची है–कण्ठमाल, कुष्ट, क्षय, अपस्मार, अक्षी रोग, जड़ता, हीनागता, कुबडापन, उदर रोग, गजापन, शरीर-शून्यता, भस्मक रोग, रीढ़ की बाद, श्लीपद तथा मधुमेह। ज्ञातासूत्र की तुलना में यह सूची अधिक प्रामाणिक लगती है क्योकि उसमे कुछ रोग विभिन्न नाम से दो बार आ गये हैं तथा कुछ रोग सामान्य रोग हैं।

APPENDIX

Anupavitha—Vanished into During his devotional demonstration Dardur god made a number of dancers and musicians materialize through his divine powers When the demonstration ended they all instantaneously vanished This is astonishing for the common man, and so the question

Kutagar—A camouflaged house In a village there was a large house made in the shape of a hill It was extremely strong and of such a design that although it had all the facilities and provisions it was also impossible to know from outside that who or what was within It was difficult to enter Once during a storm all the villagers took shelter in it At that time it looked just like a hill in an uninhabited land This has been used as a metaphor to convey the idea that all the power displayed by the god vanished into the body of the god, just as the population of the village vanished into the Kutagar

Rogatank—Grave ailment, an ailment that causes great pain and is difficult to treat Sixteen diseases have been listed here Similar lists are also given in other scriptures The list from Acharang is—Kanth-maal (goitre), Kusht (leprosy), Kshaya (tuberculosis), Apasmar (epilepsy), Akshi Rog (eye diseases), Jadata (dementia), Heenangata (dwarfism), Kubadapan (hunched back), Udar Rog (gastrointestinal diseases), Ganjapan (balding), Sharir Shunyata (paralysis), Bhasmak Rog (hyperphagia or over eating), Reedh ki Baank (spondylosis), Shleepad (elephantiasis), and Madhumeh (diabetes) As compared to the list in Jnata Sutra this appears to be more authentic because in the former some of the diseases have been mentioned twice and some others are simple ailments

■■

चौदहवाँ अध्ययन : तेतलिपुत्र : आमुख

शीर्षक–तेयली–तेतली–नाम विशेष। सद्गुण होने पर भी सुख-सुविधाएँ मनुष्य को लुभाए रखती है और वह आत्मोत्थान की राह पर अग्रसर होने का मानस नहीं बना पाता। भव्यात्मा में यह आवरण बड़ा झीना होता है और दु:ख की मार उसे तोड़ कर उसका मार्ग प्रशस्त कर देती है। पूर्वोपार्जित सत्कर्म इस दिशा परिवर्तन के निमित्त बनते हैं। तेतली पुत्र अमात्य की यह रोचक कथा इस दिशा परिवर्तन को प्रभावी रूप से प्रकट करती है।

कथासार–तेतलीपुर नगर में राजा कनकरथ का राज्य था। तेतलिपुत्र उनके अमात्य थे। राजा कनकरथ की अपने राज्यादि पर इतनी आसक्ति थी कि वह अपने पुत्रो के जन्म लेते ही उनके अग-भग कर देता था जिससे वे राज-सिंहासन के योग्य न हो सके। रानी पद्मावती ने इस बात से चिन्तित हो अमात्य तेतलीपुत्र से मिलकर योजना बनाई। तेतलीपुत्र की पत्नी थी पोट्टिला। एक बार राजा और अमात्य पत्नियॉ दोनो ने एक साथ प्रसव किया। रानी के पुत्र हुआ और पोट्टिला के मृत पुत्री। अमात्य ने पूर्व योजनानुसार गुप्त रूप से रानी के पुत्र को अपनी मृत पुत्री से बदल दिया और राजकुमार का लालन-पालन करने लगा।

कुछ समय बाद तेतली पुत्र का अपनी पत्नी के प्रति प्रेम समाप्त हो गया। पोट्टिला श्रमणियो के ससर्ग मे आई और उसे वैराग्य हो आया। जब उसने तेतलीपुत्र से आज्ञा मॉगी तो उसने इस शर्त पर आज्ञा दी कि अपनी तपस्या के फलस्वरूप पोट्टिला देवयोनि मे उत्पन्न हो तो वहॉ से आकर उसे सद्धर्म का प्रतिबोध दे। पोट्टिला ने दीक्षा ली और दीर्घ तपस्या के बाद देह त्याग देव रूप मे जन्मी।

इधर कनकरथ राजा की मृत्यु के पश्चात् सभी मत्रियो ने तेतलीपुत्र से राज्यारूढ होने योग्य व्यक्ति बताने का आग्रह किया। अमात्य ने कनकरथ के पुत्र कनकध्वज को प्रकट किया और उसके जन्मादि की कथा सुनाई। कनकध्वज राजा बना तो उसकी माँ पद्मावती ने अमात्य तेतलीपुत्र का आभार प्रकट करने हेतु उन्हे यथोचित सम्मान देने के लिए अपने पुत्र से आग्रह किया।

तेतली पुत्र अमात्य सम्पूर्ण राज्य सम्मान सहित सुखी जीवन बिताने लगा। पोट्टिल देव ने कई बार प्रयत्न किया पर तेतलीपुत्र को धर्म के मार्ग की प्रेरणा नही दे सका। अन्तत उसने निश्चय किया कि दु ख की मार के बिना तेतलीपुत्र की ऑखे नही खुलेगी। उसने राजा को अमात्य से विमुख कर दिया। तेतलीपुत्र को जब राजा से वांछित आदर सत्कार नहीं मिला तो उसका मन दु ख से भर गया। उसने कई बार आत्महत्या का प्रयास किया पर विफल हो गया। तब देव ने प्रकट हो उसे प्रतिबोध दिया। तेतलीपुत्र को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ और उसने जाना कि पूर्व भव मे वह पुडरीकिनी नगरी का महापद्म नामक राजा था। दीक्षा लेकर, चौदह पूर्वो का अध्ययन कर वह देवलोक मे जन्मा था और वहॉ से फिर तेतलीपुत्र के रूप मे। उसे अपना पूर्व भव मे अर्जित ज्ञान स्मरण हो आया और उसने स्वय ही दीक्षा ग्रहण कर ली। ध्यान-साधना कर केवलज्ञान प्राप्त कर लिया और अन्तत मोक्ष मे गया।

FOURTEENTH CHAPTER : TETALIPUTRA : INTRODUCTION

Title—Teyali-Tetali-a name Even if he is virtuous, mundane pleasures and conveniences can entrap man and make it impossible for him to make up his mind to step on the path of spiritual upliftment In the case of a righteous person this veil is very thin Just a blow of sorrow is enough to destroy it and pave his way The pious Karmas from the past become the means of this change of direction The absorbing story of minister Tetaliputra effectively reveals this process of change of direction.

Gist of the story—King Kanakrath was the ruler of Tetalipur Tetaliputra was his minister The king was so possessive of his kingdom and wealth that he used to mutilate his sons as soon as they were born so that none of them could claim his throne Queen Padmavati was worried With the help of minister Tetaliputra she made a plan Pottila was the wife of Tetaliputra Once both the ladies, the queen and the minister's wife, gave birth at the same time The queen gave birth to a son and the minister's wife to a dead girl As per the plan the minister secretly exchanged the king's son with his dead daughter He took the prince under his care

After some time Pottila lost the favour and love of her husband She came in contact with Shramanis and became detached from the mundane life When she sought permission to become a Shramani from Tetaliputra he consented with the condition that, if she reincarnated as a god as a result of her penance, she would return to him and preach the righteous path Pottila got initiated and after prolonged penance reincarnated as a god

When King Kanak-rath died, all his ministers approached Tetaliputra to suggest a suitable heir to the throne The minister presented Prince Kanakdhvaj and related the story of his birth and bringing up When Kanakdhvaj ascended the throne his mother asked him to give due respect and honour to Tetaliputra as a gesture of returning his obligation

Tetaliputra led a happy and contented life with all state honours Time and again God Pottil tried his best to inspire the minister to accept the spiritual path but in vain At last he decided that Tetaliputra could not be awakened without the blow of sorrow He made the king apathetic towards the minister When Tetaliputra did not get the usual and due honour and respect from the king he was overwhelmed with sorrow He tried to commit suicide many a time but failed Then the god appeared and showed him the right path Tetaliputra acquired Jati-smaran Jnana and remembered that in his earlier birth he was Mahapadma, the king of Pundarikini city He had become an ascetic and acquired the knowledge of the fourteen sublime canons After death he had reincarnated as a god and from there as Tetaliputra He remembered all the knowledge he had acquired during his earlier incarnation and got initiated himself After long spiritual practices he attained omniscience and at last liberation

■■

चोद्दसमं अज्झयणं : तेयलिपुत्ते
चौदहवाँ अध्ययन : तेतलिपुत्र
FOURTEENTH CHAPTER : TEYALIPUTTE - TETALIPUTRA

सूत्र १ : जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पन्नत्ते ?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–भंते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने तेरहवें ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है, तो चौदहवे ज्ञात अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the fourteenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ : 'एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरे णामं णयरे होत्था। तस्स ण तेयलिपुरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ ण पमयवणे णामं उज्जाणे होत्था।

तत्थ णं तेयलिपुरे णयरे कणगरहे णामं राया होत्था। तस्स ण कणगरहस्स रण्णो पउमावई णामं देवी होत्था। तस्स णं कणगरहस्स रण्णो तेयलिपुत्ते णामं अमच्चे होत्था साम-दड-भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नयविहिण्णू।

सूत्र २ . सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–हे जम्बू ! काल के उस भाग मे तेतलीपुर नाम का एक नगर था। नगर के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा मे प्रमदवन नाम का एक उद्यान था।

उस नगर के राजा का नाम कनकरथ था और रानी का नाम पद्मावती देवी। कनकरथ राजा के अमात्य का नाम तेतलिपुत्र था और वह साम, दाम, दण्ड व भेद नीति के प्रयोग मे निष्णात था।

2. Sudharma Swami replied—Jambu! During that period of time there was a city named Tetalipur Outside the city in the north-eastern direction there was a garden named Pramadvan

The name of the king of that city was Kanak-rath and that of the queen was Padmavati The king had a minister named Tetaliputra who was an expert in all the four branches of political strategy—conciliation, graft, punishment, and clandestine activity

सूत्र ३ . तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं भद्दा नामं भारिया होत्था। तस्स ण कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा।

सूत्र ३ : तेतलीपुर में एक स्वर्णकार था जिसका नाम मूषिकारदारक था। वह बड़ा धनवान और सामर्थ्यवान था। स्वर्णकार की पत्नी का नाम भद्रा था। भद्रा की कोख से जन्मी स्वर्णकार की पुत्री का नाम पोट्टिला था। रूप, यौवन, लावण्य और देहयष्टि में वह श्रेष्ठ थी।

3. In Tetalipur lived a goldsmith named Mushikardarak He was very wealthy and resourceful. The name of his wife was Bhadra. The couple had a daughter named Pottila She was extremely beautiful, youthful, and charming and had a perfect figure

सूत्र ४ : तए ण पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालकारविभूसिया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी कीलमाणी विहरइ।

इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरआसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेणं वीईवयइ।

सूत्र ४ एक बार पोट्टिला स्नानादि कर, वस्त्राभूषण पहनकर, दासी-वृन्द से घिरी भवन की छत पर सोने की गेद से खेल रही थी।

तभी अमात्य तेतलिपुत्र श्रेष्ठ अश्व पर सवार हो अनेक अगरक्षकों के साथ घुड़सवारी को निकला। वह मूषिकारदारक स्वर्णकार के घर के पास से गुजरा।

4. One day, after taking her bath and getting dressed, Pottila was playing with a golden ball with her maid servants

Just then, minister Tetaliputra set out for a ride on the back of a graceful horse accompanied by his bodyguards He passed along the house of the goldsmith

तेतलिपुत्र का प्रस्ताव

सूत्र ५ : तए ण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगगिहस्स अदूरसामतेणं वीईवयमाणे वीईवयमाणे पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिदूसएणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किंनामधेज्जा वा ?"

तए णं कोडुंबियपुरिसे तेयलिपुत्तं एवं वयासी–"एस णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूआ, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा।"

सूत्र ५ : वहाँ से गुजरते समय उसने गेद खेलती पोट्टिला को देखा और उसके रूप, यौवन आदि पर मोहित हो गया। उसने अपने सेवको को पास बुलाकर पूछा–"देवानुप्रियो ! यह किसकी लड़की है और इसका नाम क्या है?"

सेवकों ने उत्तर दिया–"स्वामी ! यह मूषिकारदारक सुनार की पुत्री है और भद्रा की आत्मजा है। इसका नाम पोट्टिला है और यह रूपादि मे श्रेष्ठ है।"

PROPOSAL OF TETALIPUTRA

5. When he was passing from there he saw Pottila playing with her ball and was attracted by her beauty, youth, charm, and figure He called his servants and asked, "Beloved of gods! Whose daughter is she? and what is her name?"

The servants replied, "Sire! She is the daughter of goldsmith Mushikardarak and his wife Bhadra and her name is Pottila She is extremely beautiful (etc)"

सूत्र ६ . तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहिणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिस सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारगस्स धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारियं मम भारियत्ताए वरेह।"

तए णं ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु 'एव सामी !' तह त्ति आणाए विणएणं वयण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तेयलियस्स अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया। तए ण कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण उवनिमतेइ, उवनिमतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी–"संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयण ?"

सूत्र ६ : घुड़सवारी से वापस लौटने पर तेतलिपुत्र ने बाहर का काम करने वाले सेवको से बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग जाकर मूषिकारदारक की पुत्री पोट्टिला से मेरी मँगनी तय करो।"

सेवको ने प्रसन्नचित्त हो यथाविधि हाथ जोड़ विनयपूर्वक आज्ञा स्वीकार की और तेतलिपुत्र के घर से निकलकर मूषिकारदारक के घर पहुँचे। सुनार इन लोगो को आते देख प्रसन्न हुआ और उसने आसन से खडा हो आगे बढ़ उनका स्वागत कर उन्हें आसन ग्रहण करने को कहा। जब वे आसनों पर बैठ विश्राम कर स्वस्थचित्त हुए तो मूषिकारदारक ने पूछा–"देवानुप्रियो ! कहिये, आपके आने का क्या प्रयोजन है?"

6. When he returned from the ride Tetaliputra called the members of his staff who worked as messengers and instructed, "Beloved of gods! Go and arrange for my betrothal with Pottila the daughter of Mushikardarak."

The messengers formally joined their palms, humbly and happily accepted the order, and went to the residence of Mushikardarak. The goldsmith was pleased to see them coming, got up from his seat, greeted them and offered them seats. When the messengers took there seats and made themselves comfortable Mushikardarak asked, "Beloved of gods! Tell me what brings you here?"

सूत्र ७ : तए ण ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायस्स मूसियारदारयस्स एवं वयासी-"अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइ णं जाणसि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुक्कं ?"

सूत्र ७ अमात्य के सेवको ने सुनार से कहा-"देवानुप्रिय ! हम आपकी पुत्री पोट्टिला का हाथ तेतलिपुत्र के लिए मॉगने को आए है। देवानुप्रिय ! यदि आप समझते है कि यह सम्बन्ध उचित है, प्राप्य तथा वांछित है, प्रशसनीय है और सयोग योग्य है तो तेतलिपुत्र को पोट्टिला प्रदान करने की अनुमति दे। यदि आपकी अनुमति है तो बतावे कि इसके लिए क्या शुल्क वाछित है?"

7. The messengers of the minister said, "Beloved of gods! We have come to ask for the hand of your daughter Pottila in marriage for our master minister Tetaliputra Beloved of gods! If you feel that the match is seemly, appropriate, desirable, commendable and worth a union, please give your consent to marry Pottila to Tetaliputra If you agree to our proposal please tell us the desired dowry?"

सूत्र ८ : तए ण कलाए मूसियारदारए ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी-"एस चेव ण देवाणुप्पिया ! मम सुक्के ज णं तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करेइ।" ते अब्भिंतर-ठाणिज्जे पुरिसे विपुलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एयमट्ठं निवेयंति।

सूत्र ८ : मूषिकारदारक ने उत्तर दिया-"देवानुप्रियो ! तेतलिपुत्र मेरी पुत्री का हाथ माँगकर मुझ पर जो अनुग्रह कर रहे हैं, मेरे लिए वही शुल्क है।" फिर उसने आगन्तुक लोगों का विपुल आहार, पुष्प, वस्त्र, गंध, माला और वस्त्रालंकार से सत्कार-सम्मान किया और उन्हें विदा किया।

वे लोग स्वर्णकार के घर से निकल अमात्य के घर आए और तेतलिपुत्र से यह सब समाचार कहे।

8. Mushikardarak replied, "Beloved of gods! By asking the hand of my daughter the minister has bestowed honour on me and, that is more than enough as dowry" And he sent them away after offering them food and honouring them with flowers, apparels, perfumes, garlands, and ornaments

The messengers returned to Tetaliputra and informed him in details about the acceptance of the proposal

विवाह

सूत्र ९ : तए ण कलाए मूसियारदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहि-नक्खत्त-मुहुत्तसि पोट्टिल दारिय ण्हाय सव्वालंकारविभूसिय सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता मित्तणाइसपरिवुडे साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेयलिपुत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ।

सूत्र ९ : मूषिकारदारक सुनार ने शुभ तिथि और मुहूर्त मे अपनी पुत्री पोट्टिला को यथाविधि तैयार कराया और पालकी मे बैठाकर मित्रो और स्वजनो सहित अपने पूरे वैभव से नगर के बीच होता हुआ तेतलिपुत्र के घर पहुँचा। वहाँ स्वय अपनी पुत्री पोट्टिला का तेतलिपुत्र को कन्यादान कर दिया।

THE MARRIAGE

9. On an auspicious date and at an auspicious moment Mushikardarak got his daughter ready and dressed as a bride Displaying all his wealth and glory and accompanied by all his friends and relatives, he took her in a palanquin to the residence of Tetaliputra There he gave away his daughter to Tetaliputra in marriage

सूत्र १० . तए ण तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करेइ, करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परिजणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र १० : तेतलिपुत्र ने पोट्टिला को अपनी पत्नी के रूप मे आई देखा और उसके साथ पट्ट पर बैठा। सोने-चाँदी के कलशो में भरे पानी से स्नान किया और अग्नि में होम किया। तत्पश्चात् अपनी पत्नी पोट्टिला के मित्र, स्वजन, सम्बन्धी आदि को भोजनादि से सत्कार सम्मान कर विदा किया (पूर्व सू. ८ के समान)।
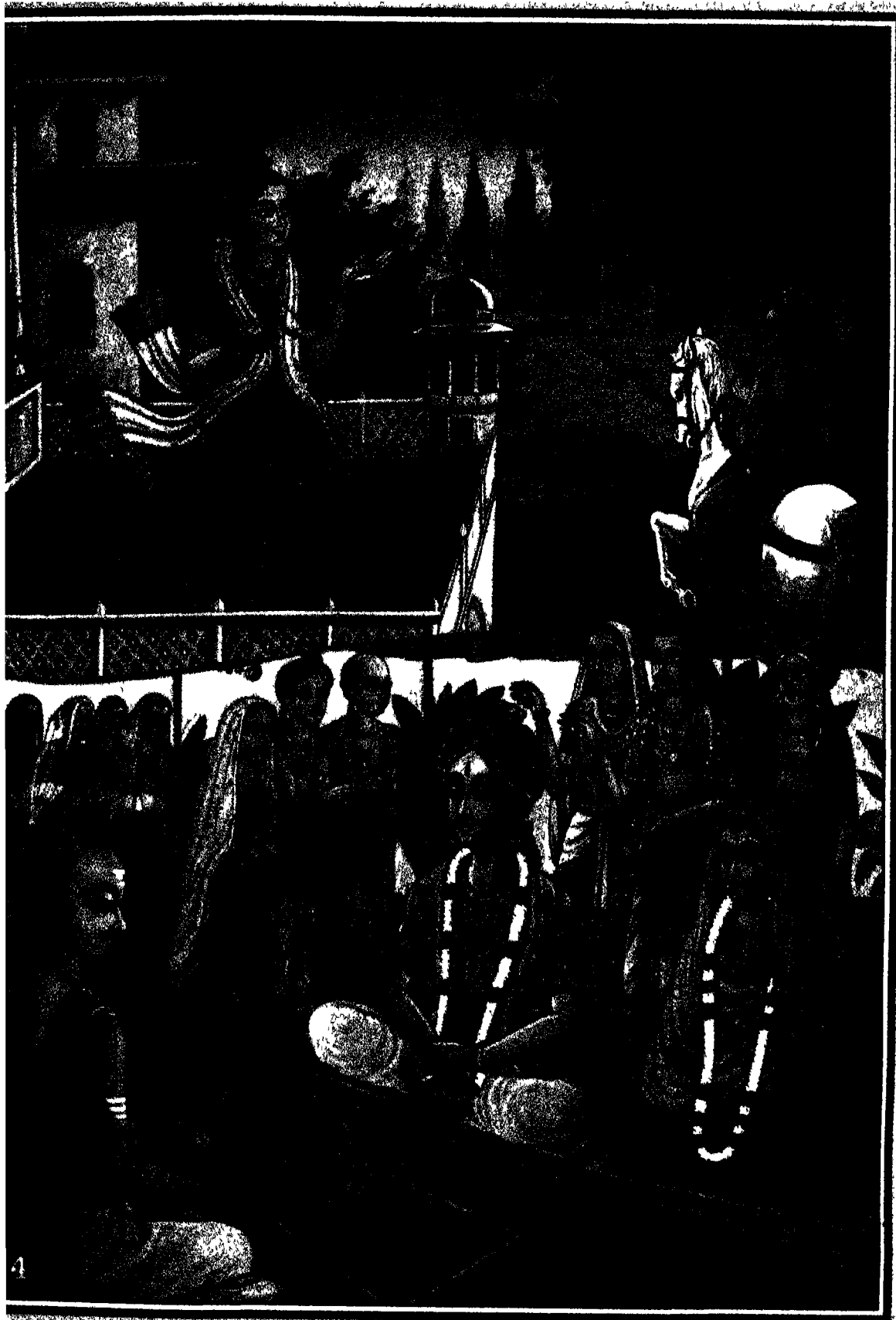
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

पोट्टिला के साथ तेतलीपुत्र का पाणिग्रहण

चित्र १४

१ तेतलीपुर के राजा कनकरथ का अमात्य (मंत्री) था तेतलीपुत्र। पोट्टिला वहाँ के मूषिकारदारक नामक धनाढ्य सुनार की कन्या थी। पोट्टिला एक बार अपने महल की छत पर खडी खेल रही थी कि घोडे पर चढे तेतलीपुत्र की उस पर नजर पडी। पोट्टिला को देखते ही वह उस पर मुग्ध हो गया।

२ फिर तेतलीपुत्र पता लगाकर उसके पिता के घर पहुँचा। स्वर्णकार ने खूब धूमधाम से तेतलीपुत्र अमात्य के साथ पोट्टिला का विवाह कर दिया।

(चौदहवाँ अध्ययन)

THE MARRIAGE OF POTTILA AND TETALIPUTRA

ILLUSTRATION : 14

1 Tetaliputra was the minister of King Kanakrath of Tetalipur Pottila was the daughter of a rich goldsmith named Mushikardarak Once when Tetaliputra was passing along the house of the goldsmith he saw Pottila playing on the roof and was entranced by her beauty

2 After making enquiries he arrived at the goldsmith's house and expressed the desire to marry Pottila Mushikardarak agreed and married his daughter to Tetaliputra with all glitter and glory as well as plenty of dowry

(CHAPTER - 14)

10. When Tetaliputra saw Pottila as a bride he sat on a platform with her and performed the marriage rituals by anointing himself with water poured from gold and silver urns and putting offerings into the sacred fire After the marriage ceremony he liberally offered food and gifts to the guests from the brides side and bade them farewell. (details as para 8)

सूत्र ११ : तए णं से तेयलिपुत्ते, पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरइ।

सूत्र ११ : तेतलिपुत्र अपनी भार्या पोट्टिला के प्रति अनुरक्त और आसक्त हो मानवोचित भोग भोगता हुआ जीवन बिताने लगा।

11. Tetaliputra then commenced his married life with Pottila, showering all love and care on her and enjoying all mundane pleasures with her

सूत्र १२ : तए ण से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, पुत्ते वियंगेइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण हत्थंगुट्ठाए छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कन्नसक्कुलीए वि नासापुडाइं फालेइ, अगमंगाइं वियंगेइ।

सूत्र १२ : राजा कनकरथ अपने राज्य, राष्ट्र, सेना, वाहन, कोष, कोठार, अन्तःपुर आदि में अत्यन्त आसक्त, लोलुप और लालसामय था। इस कारण वह अपने पुत्रो को विकलांग कर देता था। किसी के हाथ की अगुलियॉ तो किसी के हाथ का अगूठा, किसी के पैर की अंगुलियाँ तो किसी के पैर का अगूठा और किसी के कान की झिल्ली तो किसी की नाक कटवा देता था। इस प्रकार उसने अपने सभी पुत्रों को विकलाग कर दिया था।

12. King Kanak-rath was excessively possessive, covetous, and rapacious about his kingdom, state, army, conveyance, treasury, store, harem, etc ; so much so that he made it a habit to disfigure his sons (a disfigured person being traditionally considered unfit to be a king) He got their fingers or toes amputated, or cut out ear-lobes, or disfigured the nose Thus, one way or the other he had disfigured all his sons

रानी की योजना

सूत्र १३ : तए णं तीसे पउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-"एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ जाव अंगमंगाइं वियंगेइ, तं जइ अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव

सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए" त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेह, तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि, तए णं तुमे कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेण सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि, तए णं से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते तव य मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ।" तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए।

सूत्र १३ रानी पद्मावती देवी को एक बार मध्य रात्रि के समय विचार आया–"राजा कनकरथ अपनी राज्यासक्ति के कारण सभी पुत्रो को विकलाग कर देता है। अत यदि मेरे अब कोई पुत्र उत्पन्न हो तो अच्छा यह होगा कि मै उसका पालन-पोषण राजा से छुपाकर करूँ।" यह सोचकर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया और कहा–

"हे देवानुप्रिय ! राजा कनकरथ अपनी राज्यासक्ति के कारण अपने पुत्रो को विकलाग बना देता है, इस कारण यदि अब मै किसी पुत्र को जन्म दूँ तो राजा से छुपाकर ही उसका सरक्षण, सगोपन और सवर्धन करना। इसके फलस्वरूप वह बालक जब युवा होगा तो हमारा पालन-पोषण करेगा।" अमात्य ने रानी के इस प्रस्ताव को स्वीकार किया और लौट गया।

THE QUEEN'S PLAN

13. One day, around midnight queen Padmavati thought, "Because of his covetous attitude King Kanak-rath disfigures all our sons So, if I give birth to a son in the future it would be good to bring him up covertly" Later she called minister Tetaliputra and said —

"Beloved of gods! Because of his covetous attitude King Kanak-rath disfigures all our sons So, If I give birth to a son in future I would like you to keep, protect, and bring him up covertly So that when he becomes young he will look after us" The minister accepted the queen's proposal and returned home

सूत्र १४ : तए ण पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गब्भं गेण्हंति, सममेव गब्भ परिवहंति, सममेव गब्भ परिवड्ढंति। तए णं सा पउमावई देवी नवण्ह मासाण पडिपुण्णाणं जाव पियदंसयणं सुरूवं दारगं पयाया।

ज रयणिं च णं पउमावई देवी दारयं पयाया तं रयणिं च पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं पडिपुणाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया।

सूत्र १४ : रानी पद्मावती तथा अमात्य-पत्नी पोट्टिला ने एक ही समय में गर्भधारण, गर्भवहन और गर्भवृद्धि की। नौ महीने के बाद पद्मावती देवी ने प्रिय और सुन्दर पुत्र को जन्म दिया।

जिस रात रानी ने पुत्र को जन्म दिया उसी रात अमात्य-पत्नी ने एक मरी हुई बालिका को जन्म दिया।

14. After some time Queen Padmavati and the minister's wife, Pottila, conceived, carried, and cared for the fetus at and during the same time. After nine months Queen Padmavati gave birth to a beautiful and lovely son.

The day the queen gave birth to a son the minister's wife gave birth to a dead girl.

सूत्र १५ . तए ण सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"गच्छह णं तुमे अम्मो ! तेयलिपुत्तगिहे, तेयलिपुत्तं रहस्सियं चेव सद्दावेह।"

तए णं सा अम्मधाई तह त्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिपुत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी–"एव खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ।"

सूत्र १५ पद्मावती देवी ने अपनी धायमाता को बुलाया और कहा–"माँ ! तुम गुप्त रूप से तेतलिपुत्र के घर जाओ और उन्हे बुला लाओ।"

धायमाता ने 'बहुत अच्छा' कहकर रानी का आदेश स्वीकार किया और अन्तःपुर के पिछले द्वार से निकलकर तेतलिपुत्र के घर पहुँची। तेतलिपुत्र को यथाविधि हाथ जोड अभिवादन कर उसने कहा–"हे देवानुप्रिय ! आपको पद्मावती देवी ने बुलावा भेजा है।"

15. Queen Padmavati called her mid-wife and said, "Mother! Go to the house of Tetaliputra stealthily and ask him to come here "

The mid-wife accepted the queen's order and coming out of the back door of the palace went to the residence of Tetaliputra After due greetings she said, "Beloved of gods! The queen has summoned you "

अदला-बदली

सूत्र १६ : तए णं तेयलिपुत्ते अम्मधाईए अंतियं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं रहस्सियं चेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी–"संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं।"

सूत्र १६ : तेतलिपुत्र धायमाता की बात सुन-समझकर प्रसन्न हुए और धायमाता के साथ अपने घर से निकल चुपके से रानी के अन्तःपुर के पिछले द्वार से महल के भीतर आए। पद्मावती देवी

के पास जाकर हाथ जोड़ यथाविधि अभिवादन कर बोले-"देवानुप्रिये ! आज्ञा दीजिये मुझे क्या करना है।"

THE EXCHANGE

16. Tetaliputra was pleased to hear and understand the message the mid-wife had brought He left his house and accompanied the mid-wife to the queen's palace furtively through the back door He went to Queen Padmavati and after due greetings asked, "Beloved of gods! Tell me what I have to do?"

सूत्र १७ : तए णं पउमावई देवी तेयलिपुत्तं एवं वयासी-"एव खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारग पयाया, त तुम णं देवाणुप्पिया ! त दारग गिण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ, त्ति कट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ।

तए णं तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओं दारग गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवदारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे, जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं एव वयासी-

सूत्र १७ : पद्मावती देवी ने कहा-"तुम जानते ही हो कि महाराज कनकरथ अपने पुत्रो को विकलांग बना देते है। हे देवानुप्रिय ! मैने एक पुत्र को जन्म दिया है। तुम इस बालक का दायित्व सँभालो। यह बालक हमारा पालक-पोषक बनेगा।" रानी ने शिशु को तेतलिपुत्र के हाथो मे दे दिया।

तेतलिपुत्र ने बालक को लिया और अपने उत्तरीय से ढँक लिया। फिर वह गुप्त रूप से अन्तःपुर के पिछले द्वार से निकलकर अपने घर लौट आया। पोट्टिला के पास जाकर बोला-

17. Queen Padmavati replied, "You are already aware that King Kanakrath disfigures all our sons Beloved of gods! I have given birth to a son You take charge of him When he grows up he will become our mentor" With these words the queen handed over the new born to Tetaliputra

Tetaliputra covered the infant with his shawl and stealthily returned to his residence the way he came He went to Pottila and said—

सूत्र १८ : "एव खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए, तेण तुम देवाणुप्पिया ! इमं दारग कणगरहस्स रहस्सिययं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य, सगोवेहि य, संवड्ढेहि य। तए णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ, त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, पोट्टिलाए पासाओ त विणिहाय-मावन्निय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए।
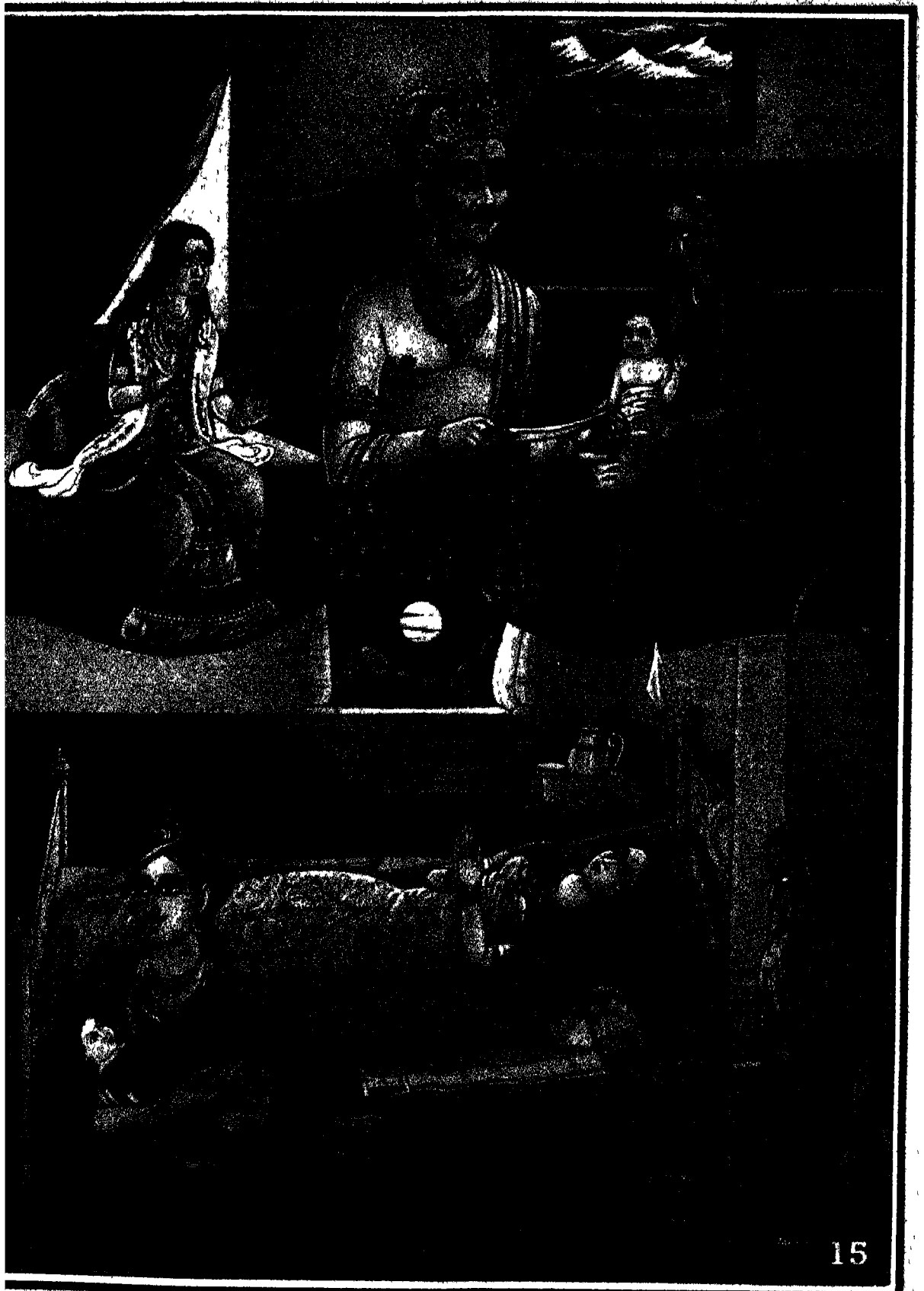
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

पुत्रघातक पिता

चित्र १५

१ राजा कनकरथ के मन मे राज्य सत्ता के प्रति अत्यधिक आसक्ति थी। इस कारण वह पुत्र के जन्म लेते ही छुरी आदि से अगुली काटकर उसे विकलाग कर डालता। रानी पद्मावती अपने सामने जन्म लेते ही पुत्रो को यो विकलाग किया जाता देखकर विलख-विलख कर रोने लग जाती।

एक बार पद्मावती ने मत्री तेतलीपुत्र को अपनी व्यथा बताई। और इस बार की सन्तान की रक्षा करने का वचन लिया।

२ जब रानी ने पुत्र को जन्म दिया उसी समय पोट्टिला ने एक मृत कन्या को जन्म दिया। मत्री जन्म लेते शिशु को छुपाकर अपने घर ले जाता है। और पोट्टिला की मृत कन्या को लाकर रानी के पास सुला देता है। (चौदहवॉ अध्ययन)

THE FATHER WHO MUTILATES HIS SONS

ILLUSTRATION 15

1 King Kanak-rath was so possessive of his kingdom and wealth that he used to mutilate his sons as soon as they were born so that none of them could claim his throne Queen Padmavati cried and became sad seeing this dastardly act again and again But the avaricious king did not change his attitude

The queen expressed her feelings to minister Tetaliputra and made him promise to somehow save his next son from being mutilated

2 After some time, by chance the queen and the minister's wife gave birth at the same time The queen gave birth to a son and the minister's wife to a dead girl As per the plan the minister secretly exchanged the king's son with his dead daughter He took the prince under his care and thus saved the heir to the throne (CHAPTER - 14)

सूत्र १८ : "देवानुप्रिये ! राजा कनकरथ राज्यासक्ति के कारण अपने पुत्रों को अपग कर देता है (पूर्वसम)। यह बालक राजा का पुत्र और रानी पद्मावती का आत्मज है। इस कारण हे देवानुप्रिये ! इस बालक का लालन-पालन राजा से छुपाकर करना है। यही बालक बड़ा होकर तुम्हारा, मेरा और रानी पद्मावती का जीवन-आधार बनेगा।" इन शब्दों के साथ तेतलिपुत्र ने उस नवजात शिशु को पोट्टिला के पास रख दिया और उसके पास से उसकी मृत कन्या को उठा लिया। मृत बालिका को उत्तरीय से ढक वह अन्तःपुर के पिछले छोटे से द्वार से प्रवेश कर पद्मावती देवी के पास पहुँचा। मरी हुई लडकी को रानी के पास रखकर वह वापस लौट आया।

18. "Because of his covetous attitude King Kanak-rath disfigures all his sons This new born is the son of King Kanak-rath and Queen Padmavati. That is why, Beloved of gods! we have to take his care and bring him up without allowing the king to know This infant is going to be your, mine, and the queen's mentor when he grows up " With these words Tetaliputra placed the infant near Pottila and picked up her dead daughter Covering it with his shawl he took the body stealthily into the palace, placed it near the queen and returned back

सूत्र १९ तए ण तीसे पउमावईए अंगपडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नियं च दारियं पयायं पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी–"एव खलु सामी ! पउमावई देवी मइल्लियं दारियं पयाया।"

सूत्र १९ : रानी की परिचारिकाओ ने रानी और उसके पास पडी मृत कन्या को देखा और राजा कनकरथ के पास जा अभिवादन कर बोली–"स्वामी ! पद्मावती देवी ने मृत कन्या को जन्म दिया है।"

19. When the maid servants of the queen saw the dead infant lying near the queen they rushed to King Kanak-rath and informed him, "Sire! Queen Padmavati has given birth to a dead daughter "

सूत्र २० . तए णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ, कालेणं विगयसोए जाए।

सूत्र २० : राजा कनकरथ ने मृत कन्या का परम्परानुसार अन्तिम संस्कार किया और कुछ समय के बाद शोकमुक्त हो सामान्य जीवन बिताने लगा।

20. King Kanak-rath performed the traditional last rites of the infant. With passage of time the pangs of sorrow dulled and he resumed his normal life

सूत्र २१ . तए णं तेयलिपुत्ते कल्ले कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"खिप्पामेव चारगसोधनं करेह जाव ठिइवडियं दसदेवसियं करेह कारवेह य, एयमाणत्तियं

पच्चप्पिणह।" जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए, तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव अलं भोगसमत्थे जाए।

सूत्र २१ : दूसरे दिन तेतलिपुत्र ने सेवको को बुलाकर कहा–"हे देवानुप्रियो ! जल्दी से जाकर कारागार से बंदियों को मुक्त करो और दस दिन का पुत्र-जन्मोत्सव आयोजित करो। ये सभी कार्य सम्पन्न करके मुझे सूचित करो।" बालक ने राजा कनकरथ के राज्य मे जन्म लिया अत: उसका नाम कनकध्वज रखा गया। वह क्रमश: विकसित होकर युवा हो गया।

21. Next morning Tetaliputra called his servants and instructed, "Beloved of gods! Go to the prison and get the prisoners released and also make arrangements for a ten day long birth ceremony Do all this and report back to me." (details as in Ch 1) As the boy was born under the reign of King Kanak-rath he was named Kanak-dhvaj Years passed and he became a young man

विमुख तेतलिपुत्र

सूत्र २२ : तए ण सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था, णेच्छइ य तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोत्तमवि सवणयाए, किं पुण दरिसण वा परिभोग वा ?

तए णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–"एव खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्वि इट्ठा आसि, इयाणि अणिट्ठा जाया, नेच्छइ य तेयलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा।" ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ।

सूत्र २२ : कालान्तर मे पोट्टिला तेतलिपुत्र को अप्रिय हो गई। तेतलिपुत्र उसके नाम से भी चिढ़ने लगा था तो देखने और छूने की तो बात ही क्या ?

एक बार मध्य रात्रि के समय पोट्टिला के मन मे विचार उठा–"तेतलिपुत्र को मैं कभी प्रिय थी, पर आज अप्रिय हो गई हूँ। वे मेरा नाम ही सुनना नही चाहते तो दाम्पत्य जीवन के भोगोपभोग का प्रश्न ही नही उठता।" और सकल्प-विकल्प मे उलझकर पोट्टिला चिन्तामग्न हो गई।

APATHY OF TETALIPUTRA

22. Later some time, Pottila lost her charm in the eyes of Tetaliputra He got irritated just by the mention of her name, to say nothing of seeing or touching her

One day around midnight Pottila thought, "There was a time when Tetaliputra loved me, but now I have lost his favour When he does not want to hear my name how can I expect a normal marital life and pleasures" These thoughts lead to a dejected and depressed state

सूत्र २३ : तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-"मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा, तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं समणमाहण जाव अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि।"

तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव उवक्खडावेइ, उवक्खाडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहरइ।

सूत्र २३ · भग्न हृदया पोट्टिला को चिन्तामग्न देखा तो तेतलिपुत्र ने उससे कहा-"देवानुप्रिये ! मन को दु:खी मत करो। तुम मेरी भोजनशाला में विपुल आहार सामग्री तैयार करवाकर अनेक श्रमण, ब्राह्मण, अतिथि तथा याचकों को दान दिया-दिलाया करो और सुख से जीवन व्यतीत किया करो।"

तेतलिपुत्र के इस कथन से पोट्टिला प्रसन्न और सतुष्ट हुई। वह अपने पति की बात स्वीकार कर उसी के अनुसार आहारदान देने-दिलाने लगी और सुख से जीवन बिताने लगी।

23. When Tetaliputra saw her in this sad condition he said, "Beloved of gods! Don't get dejected You can get large quantities of food cooked in my kitchen and distribute it to numerous Shramans, Brahmans, guests and beggars Doing such charity you can spend your time happily."

This pleased Pottila Accepting the advice of her husband she started distributing food and enjoying the charitable act

सूत्र २४ · तेण कालेण तेण समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणीओ जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणीओ विहरंति।

सूत्र २४ · काल के उस भाग मे ईर्यासमिति आदि सभी नियमों का पालन करने वाली, गुप्त-ब्रह्मचारिणी, बहुश्रुत और विशाल शिष्य परिवार वाली सुव्रता नाम की साध्वी एक स्थान से दूसरे स्थान को विहार करती तेतलिपुर नगर मे पधारी। वहाँ यथोचित अवग्रह आदि ग्रहणकर उपाश्रय में ठहरी और संयम तथा तप की साधना में आत्मलीन हो रहने लगी।

24. During that period of time a Sadhvi (female ascetic) named Suvrata, moving from one village to another, arrived in Tetalipur town She was an strict adherent of the ascetic disciplines including the discipline of movement and celibacy She was well read and had a large family of disciples. She

stayed with her disciples at a suitable place and commenced her spiritual activities

पोट्टिला का अनुरोध

सूत्र २५ : तए ण तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव अडमाणीओ तेयलिपुत्तस्स गिह अणुपविट्ठाओ। तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता एव वयासी–

"एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा अप्पिया, अकता अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दसण वा परिभोगं वा ? तं तुब्भे ण अज्जाओ बहुनायाओ, बहुसिक्खियाओ, बहुपढियाओ, बहूणि गामागर जाव आहिंडह, राईसर जाव गिहाइ अणुपविसह, तं अत्थि याइं भे अज्जाओ ? केइ कहिंचि चुन्नजोगे वा, मतजोगे वा, कम्मणजोए वा, हियउड्डावणे वा, काउड्डावणे वा, आभिओगिए वा, वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा, मूले कदे छल्ली वल्ली सिलिया वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे जेणाह तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा भवेज्जामि।

सूत्र २५ · सुव्रता आर्या के एक सघाडे ने प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय और दूसरे प्रहर मे ध्यान किया। तीसरे प्रहर मे भिक्षादि के लिए निकली और भ्रमण करती हुई साध्वियाँ तेतलिपुत्र के घर मे आईं। पोट्टिला उन्हें आते देख प्रसन्न और सन्तुष्ट हुई, अपने आसन से उठ उन्हे वदन-नमस्कार किया और यथेष्ट आहार सामग्री बहरायी। इसके बाद वह बोली–

"हे आर्याओ ! पहले मै तेतलिपुत्र की इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ और मणाम (मनभावन) थी किन्तु अब अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ और अमणाम हो गई हूँ। तेतलिपुत्र मेरा नाम भी सुनना नही चाहते, देखना और परिभोग करना तो दूर की बात है। हे आर्याओ ! आप तो बहुत विद्वान् हैं, शिक्षित है, अनुभवी है, अनेक नगर-ग्राम मे भ्रमण कर चुकी है, अनेक राजाओ, युवराजों आदि के घरो मे जा चुकी है। अत आपके पास यदि कोई चूर्ण-योग, मत्र-योग, कामण-योग, मन हरने का उपाय, शरीर को आकर्षित करने का उपाय, पराभूत करने का उपाय, वशीकरण का प्रयोग, मनमोहक हेतु अभिषेक, मत्रित भभूत का प्रयोग अथवा सेल, कंद, छाल, बेल, घास, गोली, औषध या भेषज की जानकारी हो तो बतावे ताकि मै फिर से तेतलिपुत्र की प्रिय हो सकूँ।"

POTTILA SEEKS HELP

25. During the first quarter of the day (three hours) Arya Suvrata did her studies, during the second one she did her meditation, and during the third

one she set out to beg alms with her group and arrived at the residence of Tetaliputra Pottila was pleased when she saw them coming. She got up from her seat, duly greeted them and offered them ample food After this she said—

Aryas! Earlier I was cherished, lovely, adored, charming, and beloved wife of Tetaliputra. But now in his eyes I have become opposite of that When he does not want to hear my name, looking at me and enjoying my body are beyond expectation Aryas! You are learned, experienced and scholarly, you have visited many towns and villages, and palaces and mansions of kings, princes and others As such, if you have any knowledge of some concoction of powders, combination of Mantras, process of sorcery, method of bewitching, inspiring physical attraction, ritual of exorcising, method of hypnotizing, process of anointing to cause a spell, use of magical ash made potent by incantation, or use of medicines and drugs like thorns, roots, bark, creeper, grass, pill, or mixture, please tell me so that I may once again gain favour and love of Tetaliputra "

सूत्र २६ तए ण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि कन्ने ठाइंति, ठाइत्ता पोट्टिल एव वयासी–"अम्हे ण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबभचारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारं कन्नेहि वि निसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा ? अम्हे णं तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्म परिकहिज्जामो।"

सूत्र २६ · पोट्टिला के इस कथन पर साध्वियो ने अपने दोनो कान बन्द कर लिये और कहा–"देवानुप्रिये ! हम निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ है, गुप्त ब्रह्मचारिणी है, अत ऐसी बातें हमारे कानो में पडना भी हमे नही कल्पता। इस विषय का उपदेश देना अथवा ऐसा आचरण करना हमारे लिए कैसे संभव हो सकता है? हॉ, देवानुप्रिये ! हम तुम्हे केवली द्वारा प्ररूपित अद्‌भुत धर्म का उपदेश भली प्रकार से अवश्य दे सकती है।"

26. At this outburst from Pottila the Sadhvi-s closed their ears with their palms and said, "Beloved of gods! we are Nirgranth Shramanis (Jain female ascetics) and we are strictly celibate; as such, it is sinful for us even to hear such talk How could it be possible for us to indulge in activities like preaching on the subject? However, we can certainly preach the unique religion propagated by The Omniscient "

सूत्र २७ : तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी–"इच्छामि णं अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए।" तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं

परिकहेंति। तए णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठा एवं वयासी–"सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव सत्त सिक्खावइयं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए।"

अहासुहं देवाणुप्पिए !

सूत्र २७ : पोट्टिला ने उत्तर दिया–"हे आर्याओ ! मै आपसे केवली प्ररूपित धर्म सुनना चाहती हूँ।" इस पर उन साध्वियों ने पोट्टिला को उस अद्भुत धर्म का उपदेश दिया। पोट्टिला धर्मोपदेश सुन-समझकर प्रसन्न व सतुष्ट होकर बोली–"आर्याओ ! मै निर्ग्रन्थ के प्रवचन पर श्रद्धा करती हूँ। जैसा आपने कहा वह वैसा ही है। इसलिए मै आपके निकट अणुव्रत और सात शिक्षाव्रत वाले श्रावकधर्म को अंगीकार करना चाहती हूँ।"

आर्याओं ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिये ! जिसमे सुख मिले वह करो।"

27. Pottila said, "Aryas! I would certainly like to hear the religion propagated by The Omniscient" And the Sadhvis gave a discourse on the unique religion On listening and understanding the discourse Pottila became happy and contented She said, "Aryas! I have faith in the word of The Omniscient, what you have said is true As such, I would like to get initiated into the Shravak Dharma (your order for laity) that includes the five minor vows and seven disciplinary vows"

The Aryas said, "Do as you please"

श्राविका पोट्टिला

सूत्र २८ · तए ण सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पचाणुव्वइय जाव धम्म पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव समणे निग्गथे पासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कबल-पायपुछणेण ओसह-भेसज्जेण पाडिहारिएणं पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणी विहरइ।

सूत्र २८ · पोट्टिला ने उन आर्याओ से पॉच अणुव्रतादियुक्त धर्म अगीकार किया और वन्दना-नमस्कार कर उन्हें विदा किया।

अब पोट्टिला श्रमणोपासिका हो गई और निर्ग्रन्थ श्रमणो को वांछित वस्तुएँ प्रदान करती जीवन व्यतीत करने लगी। (वांछित वस्तुएँ–उचित तथा स्वीकार करने योग्य अशन, पान, खादिम, स्वादिम, आहार, वस्त्र, पात्र, कम्बल, पाँवपोंछ, औषध, भेषज तथा वापस करने योग्य पीढा, पाट, शय्या, उपाश्रय और संस्तारक का बिछावन आदि।)

SHRAVIKA POTTILA

28. Pottıla took the prescribed vows and sent the Aryas away with due ceremony

Now Pottıla became a Shramanopasıka and started spending her days donating various things needed by the ascetics (these things include — consumables like food, apparel, utensils, rugs, towels, medicines, and other such things and returnable durables like seat, bench, bed, abode, and bed made of hay, and other such things suitable and prescribed for an ascetic.)

सूत्र २९ · तए णं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–"एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि, इयाणि अणिट्ठा ५ जाया जाव परिभोगं वा, तं सेय खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए।" एवं सपेहेइ। संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–"एव खलु देवाणुप्पिया ! मए सुव्वयाण अज्जाण अंतिए धम्मे निसंते जाव से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि ण तुब्भेहि अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए।"

सूत्र २९ कुछ समय बाद एक बार अर्ध-रात्रि के समय जब पोट्टिला पारिवारिक चिन्ताओं में डूबी जाग रही थी, उसके मन मे विचार उठा–"पहले मै तेतलिपुत्र को प्रिय थी · · (पूर्व–सू २५ के समान)। किन्तु अब अप्रिय अनिष्ट लगने लगी हूँ। अत अच्छा होगा कि मै सुव्रता आर्या के पास दीक्षा ग्रहण कर लूँ।" दूसरे दिन प्रात काल वह तेतलिपुत्र के पास गई और यथाविधि अभिनन्दन करके बोली–"देवानुप्रिय ! मैने सुव्रता आर्या से धर्म सुना है। वह धर्म मुझे इष्ट, अतीव इष्ट और रुचिकर लगा है अत आपसे आज्ञा पाकर मै दीक्षा लेना चाहती हूँ।"

29. A few days later once again around midnight when Pottıla was awake and worrying about some domestic problem she thought, "There was a time when Tetalıputra loved me, but now I have lost hıs favour (as para 25) As such, ıt would be best for me to get Diksha and become an ascetıc " Next mornıng she approached Tetalıputra and after greetıngs asked hım, "Beloved of gods! I have lıstened to the dıscourse of Suvrata Arya and found ıt to be very much desırable I want to accept Diksha after gettıng your permissıon "

तेतलिपुत्र की शर्त

सूत्र ३० : तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिल एव वयासी–"एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मुंडा भवित्ता पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए ! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि, तो हं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं णं संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि।"

तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ।

सूत्र ३० · तेतलिपुत्र ने पोट्टिला से कहा–"देवानुप्रिये ! तुम मुंडन कराके दीक्षा लोगी और अपने अन्त समय देह त्याग कर किसी देवलोक मे जन्म लोगी। यदि तुम वचन दो कि उस देवलोक से आकर मुझे केवली प्रदत्त धर्म का प्रतिबोध दोगी तो मैं तुम्हे अनुमति देता हूँ अन्यथा नही।"

पोट्टिला ने तेतलिपुत्र का यह अनुरोध स्वीकार कर लिया।

TETALIPUTRA'S CONDITION

30. Tetaliputra replied, "Beloved of gods! You will get your head shaved and become an ascetic In the end when you breath your last you shall reincarnate in some dimension of gods If you promise me that as god you will come to me and show me the path shown by The Omniscient then, and then only I will give you permission

Pottila accepted Tetaliputra's request

सूत्र ३१ . तए णं तेयलिपुत्ते विपुलं असण पाणं खाइम साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतित्ता जाव संमाणेइ, संमाणित्ता पोट्टिलं ण्हाय जाव पुरिसहस्सवाहणीयं सीय दुरुहित्ता मित्तणाइ जाव परिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेतलिपुरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

"एव खलु देवाणुप्पिए ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा, एस ण संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए। पडिच्छतु णं देवाणुप्पिए ! सिस्सिणिभिक्ख दलयामि।"

"अहासुहं मा पडिबंधं करेह।"

सूत्र ३१ · तेतलिपुत्र ने प्रचुर अशनादि आहार सामग्री बनवाई और मित्रादि को निमत्रण दिया। अतिथियों का यथोचित आदर-सत्कार किया और पोट्टिला को स्नानादि करवा तैयार करवाया। फिर हजार पुरुषों के उठाने योग्य पालकी पर पोट्टिला को सवार करा मित्रादि को साथ ले समस्त वैभव सहित गाजे-बाजे के साथ वह तेतलिपुर के बीच होता हुआ सुव्रता साध्वी के पास पहुँचा। उन्हे यथाविधि वन्दना-नमस्कार कर तेतलिपुत्र बोला–"देवानुप्रिये ! मेरी यह पोट्टिला भार्या मुझे प्रिय है। यह संसार के भय से उद्विग्न हो गई है और दीक्षा लेना चाहिती है। अत हे देवानुप्रिये ! मैं आपको शिष्य-भिक्षा देता हूँ, इसे स्वीकार कीजिये।"

साध्वी ने उत्तर दिया–"जिसमें सुख मिले वह अविलम्ब करो।"

31. Tetaliputra made arrangements for a great feast and delicious and savory dishes were prepared He invited all his relatives and friends. After

the feast, he honoured the guests with suitable gifts. He got Pottila ready after bath (etc.). Taking her in a Purisasahassa palanquin, displaying all his wealth and grandeur, and accompanied by all the guests he passed through the streets of Tetalipur with all fan fare and arrived at the place where Arya Suvrata was staying. After offering his obeisance to the Arya he said, "Beloved of gods! This is Pottila, my wife. I love and cherish her. She has become fearful of the mundane life and desires to accept Diksha As such, Beloved of gods! I make a disciple-donation to you. Please accept "

The Sadhvi replied, "Do as you please "

सूत्र ३२ : तए णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठा उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-"आलित्ते ण भंते ! लोए" एवं जहा देवाणंदा, जाव एक्कारस अंगाइं, बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणेण छेइत्ता, आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना।

सूत्र ३२ . सुव्रता आर्या के इस कथन पर पोट्टिला प्रसन्न और सतुष्ट हुई। उत्तर-पूर्व दिशा में जाकर उसने स्वय ही अपने आभूषण, माला व अलकार उतार दिए और अपने हाथों से पंचमुष्टि लोच किया। ये सब कार्य सपन्न कर वह सुव्रता आर्या के पास लौटी और वन्दनादि के पश्चात् बोली-"हे भगवती ! यह संसार चारो ओर से जल रहा है .. .. ..।" (दीक्षा का विस्तृत वर्णन भगवतीसूत्र मे वर्णित देवानन्दा की दीक्षा के समान है)। दीक्षा के बाद पोट्टिला ने ग्यारह अंगों का अध्ययन किया और अनेक वर्षों तक चारित्र का पालन किया। अन्तत· एक माह की संलेखना कर कृशकाय हो, साठ भक्त अनशन कर, प्रतिक्रमण व आलोचना कर समाधिमरण द्वारा शरीर त्याग पोट्टिला ने देवलोक मे देवरूप में जन्म लिया।

32. Pottila was pleased to hear this She went in the north-eastern direction, put off her ornaments, garlands and other embellishments and pulled out her hair (Panchmushti Loach). After completing these formalities she returned to Arya Suvrata and after obeisance said, "Bhagavati! This world is burning fiercely in the fire of aging and death. . . . ." Pleading thus she got initiated (detailed description of the initiation is same as that of Devananda in Bhagavati Sutra) With the passage of time she acquired the knowledge of the eleven canons and lived a long and disciplined ascetic life. In the end she took the ultimate vow of one month duration She became

emaciated and after meditation and a last critical review of her life she embraced a meditator's death and reincarnated as a god

कनकरथ का देहान्त

सूत्र ३३ : तए णं से कणगरहे राया अन्नया कयाई कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तए णं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता अन्नमन्नं एव वयासी-"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था, अम्हे ण देवाणुप्पिया ! रायाहीणा, रायाहिट्ठिया, रायाहीणकज्जा, अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। तं सेयं खलु अम्हं तेयलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए" त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एवं वयासी-

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए। त जइ णं देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, त णं तुमं अम्हं दलाहि, जा णं अम्हे महया रायाभिसेएणं अभिसिचामो।"

सूत्र ३३ : इधर कालान्तर मे राजा कनकरथ का देहावसान हो गया। राजाओ तथा राजकुमारो आदि प्रतिष्ठितजनों ने यथाविधि उसका अन्तिम सस्कार किया। तत्पश्चात् उन लोगो ने परस्पर विचार किया-"देवानुप्रियो ! राजा कनकरथ ने अपनी राज्यासक्ति के कारण अपने पुत्रो को विकलांग कर दिया है। हम सब तो राजा के आधीन रहे है, राजा के अधिष्ठित होकर रहने और कार्य करने वाले हैं पर अमात्य तेतलिपुत्र सदा सभी भूमिकाओ मे राजा कनकरथ के विश्वासपात्र, परामर्शदाता और कार्य-संचालक रहे है। अत हमे उनसे योग्य शासक की याचना करनी चाहिये।" इस विचार पर सहमत हो वे सभी तेतलिपुत्र के पास आए और बोले-

"देवानुप्रिय ! आप सभी कामो मे राजा कनकरथ के परम विश्वास पात्र एव राज्य के हित चिंतक रहे हैं अत· हमने विमर्श कर आपसे योग्य शासक की याचना करने का निर्णय लिया है। अतः यदि कोई कुमार राज लक्षणो से युक्त और राज्याभिषेक के योग्य हो तो हमें बतावे जिससे हम उसका उपयुक्त समारोह सहित राज्याभिषेक करे।"

KANAK-RATH PASSES AWAY

33. Some years later King Kanak-rath died Kings, princes and other prominent people performed his last rites After that they conferred, "Beloved of gods! Because of his covetous attitude King Kanak-rath disfigured all his sons. We have always remained as subjects of the king and worked under his guidance only. But minister Tetaliputra has always been

his confidante, advisor, and administrator on his behalf in all matters. As such, we should request him to provide an able ruler." Deciding thus, they all came to Tetaliputra and said —

"Beloved of gods! After due deliberations we have decided to request you to provide an able ruler If you know of some prince having virtues desired of a king, please tell us so that we may arrange for a grand coronation ceremony."

सूत्र ३४ : तए णं तेयलिपुत्ते तेसिं ईसरपभिईणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसरपभिईणं उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी–

"एस णं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते, पउमावईए देवीए अत्तए, कणगज्झए कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने। मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए। एयं णं तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह।" सव्वं च तेसिं उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ।

तए णं ते ईसरपभिइओ कणगज्झयं कुमारं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति।

सूत्र ३४ . तेतलिपुत्र ने उन प्रतिष्ठित जनो का अनुरोध स्वीकार किया और कुमार कनकध्वज को वस्त्रालंकार से विभूषित कर उनके सामने लाकर कहा–

"देवानुप्रियो ! यह कनकरथ राजा का पुत्र और रानी पद्मावती का आत्मज कुमार कनकध्वज है। यह राज्य कलाओ से युक्त और अभिषेक योग्य है। मैने कनकरथ राजा से गुप्त रखकर इसका लालन-पालन किया है। आप लोग इसका पूर्ण समारोह के साथ राज्याभिषेक करें।" यह कहकर उन्होंने कुमार के जन्म और लालन-पालन का समग्र वृत्तान्त कह सुनाया।

34. Tetaliputra accepted the request of those prominent citizens and after due preparations presented prince Kanak-dhvaj before them. He said—

"Beloved of gods! This is prince Kanak-dhvaj. He is the son of late king Kanak-rath and Queen Padmavati He is endowed with all the virtues a king should have and thus he may be crowned I brought him up keeping it a secret from king Kanak-rath You may crown him with all due ceremonies." And Tetaliputra narrated in details all the incidents of the life of the prince

सूत्र ३५ : तए ण ते ईसरपभिइओ कणगज्झयं कुमारं महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तए णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे, वण्णओ, जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ।

तए णं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–"एस णं पुत्ता ! तव (पिता कणग रहे राया) रज्जे य जाव अंतेउरे य तुमं च तेयलिपुत्तस्स पहावेणं, तं तुमं णं

तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्माणेहि, इंतं अब्भुट्ठेहि ठियं पज्जुवासाहि, वच्चंतं पडिसंसाहेहि, अद्धासणेणं उवनिमंतेहि, भोगं च से अणुवड्ढेहि।

सूत्र ३५ : वहाँ उपस्थित राजकुमार आदि प्रतिष्ठित जनो ने कुमार कनकध्वज का अपार वैभवयुक्त राज्याभिषेक किया, कनकध्वज राजा बन गया (राजा का वर्णन औपपातिकसूत्र के अनुसार है) और राज्य का सचालन करता जीवन व्यतीत करने लगा।

इस अवसर पर पद्मावती देवी ने राजा कनकध्वज को बुलाकर कहा–"पुत्र ! (यद्यपि तुम्हारे पिता कनकरथ राजा थे) किन्तु तुम्हें यह राज्य व अत पुर तेतलिपुत्र की कृपा से प्राप्त हुए है। अत· तुम अमात्य तेतलिपुत्र को अपना हितैषी जान उनका आदर करना, सत्कार करना और सम्मान करना। उनके आने पर खडे होकर आवभगत और उपासना करना। वे जाने लगे तो उनके साथ जाकर विदा करना। वे बोले तो उनके कथन की सराहना करना। उन्हें अपने साथ आसन प्रदान करना और उनकी सम्पन्नता मे वृद्धि करना।

35. All those present there arranged for a grand coronation ceremony and Kanak-dhvaj became the king (details as per Aupapatik Sutra) He commenced his life dispensing all his duties as a ruler On this occasion Queen Padmavati called the new king and said, "Son! You have got this palace and the kingdom by the grace of Tetaliputra As such, you should pay all due regards, respect and honour to him considering him to be your well wisher When he comes, you should stand and greet him with due respect When he leaves, you should accompany him to the gate When he speaks, you should commend his statement In protocol you should offer him a seat besides your own and above all, you should enhance his financial status

सूत्र ३६ तए ण से कणगज्झए पउमावईए देवीए तह त्ति पडिसुणेइ, जाव भोगं च से वड्ढेइ।

सूत्र ३६ · कनकध्वज ने पद्मावती देवी की आज्ञा को शिरोधार्य किया और अमात्य तेतलिपुत्र को सभी सुविधाएँ व अधिकार प्रदान कर दिये।

36. Kanak-dhvaj accepted the instructions of Queen Padmavati with due regards and extended all the facilities and powers as told

सूत्र ३७ · तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-२ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्ते संबुज्झइ। तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–"एव खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ, जाव भोगं च संवड्ढेइ तए णं से तेयलिपुत्ते अभिक्खणं अभिक्खणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, तं सेयं खलु कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ।

सूत्र ३७ : उधर पोट्टिल देव ने तेतलीपुत्र को बारंबार केवली प्रदत्त धर्म का प्रतिबोध दिया किन्तु तेतलिपुत्र को बोध जाग्रत नहीं हुआ। पोट्टिल देव के मन में विचार आया-"राजा कनकध्वज अमात्य का आदर, सत्कार आदि (पूर्व-सूत्र ३५ के समान) करता है। इसी कारण बार-बार प्रतिबोध देने पर भी तेतलिपुत्र पर कोई प्रभाव नही होता। अतः उचित होगा कि कनकध्वज को अमात्य के विरुद्ध कर दिया जाय।" यह विचार आने पर देव ने राजा को तेतलिपुत्र से विमुख कर दिया।

37. Meanwhile the god Pottil descended time after time and preached the word of The Omniscient but Tetaliputra failed to see the light At last god Pottil decided, "King Kanak-dhvaj gives all due regards and facilities to Tetaliputra (as detailed in para 35) That is the reason that there is hardly any effect of repeated preaching on him. So it is required that Kanak-dhvaj be turned against the minister" And he immediately implemented his idea

राजा की उदासीनता

सूत्र ३८ . तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ३८ दूसरे दिन स्नानादि सभी नित्य कर्मों से निवृत्त हो श्रेष्ठ अश्व पर सवार हो अनेक लोगो से घिरा तेतलिपुत्र अमात्य अपने घर से कनकध्वज राजा के पास जाने के लिए निकला।

KING'S APATHY

38. Next day getting ready after his bath Tetaliputra set out to visit the king He was riding a horse and was surrounded by many people.

सूत्र ३९ · तए णं तेयलिपुत्तं अमच्च से जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभिइओ पासंति, ते तहेव आढायंति, परिजाणंति अब्भुट्ठेंति, अब्भुट्ठित्ता अंजलिपरिग्गहं करेंति, करित्ता इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा संलवेमाणा य पुरतो य पिट्ठतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति।

सूत्र ३९ : राह मे जो भी राजा राजकुमारादि प्रतिष्ठित व्यक्ति अमात्य तेतलिपुत्र को देखते वे सदा की भाँति उनका आदर करते और हितैषीजन खड़े हो हाथ जोड़ते और इष्ट, कान्त आदि वचनों से बार-बार अभिवादन करते। ये लोग अमात्य के आगे-पीछे, अगल-बगल में साथ-साथ चलने लगे।

39. On the way many kings, princes, and other prominent people met Tetaliputra and, as usual, paid him due regards. His well wishers stood up

and greeted him with joined palms and sweet and courteous words. Many of them joined him moving at his front, back or flanks

सूत्र ४० : तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ। तए णं कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ।

तए णं तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ। तओ य णं कणगज्झए राया अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ।

तए णं तेयलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव सजायभए एवं वयासी-"रुट्ठे णं मम कणगज्झए राया, हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए णं कणगज्झए राया। तं ण णज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारेहि" त्ति कट्टु भीए तत्थे य जाव सणियं सणियं पच्चोसक्केइ, पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखंधं दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ४० तेतलिपुत्र अमात्य कनकध्वज राजा के निकट पहुँचा। राजा ने उन्हे आते देखा किन्तु उनका आदर नहीं किया, हितैषी जान खडा भी नही हुआ अपितु मुँह फेरकर बैठा रहा।

तेतलिपुत्र ने जब राजा को हाथ जोडे तब भी वह उनका अनादर करते हुए विमुख होकर बैठा रहा।

राजा को अपने विरुद्ध हुआ जानकर तेतलिपुत्र के मन में बहुत भय उत्पन्न हुआ। उन्होंने मन ही मन कहा-"राजा कनकध्वज मुझसे रूठ गए है, मेरे प्रति हीन हो गए हैं और मेरे विषय मे बुरा सोचने लगे हैं। न जाने वे मुझे किस बुरी मौत मार देगे।" इन विचारो से उनके मन में डर और त्रास उत्पन्न हुआ और वे घबराकर धीरे-धीरे वहॉ से सरक गए। अपने अश्व पर सवार हो नगर के बीच होते हुए अपने घर की दिशा मे चले।

40. Tetaliputra came to king Kanak-dhvaj The king saw him coming but he neither greeted him with usual respect nor stood up to honour him, he in fact turned away from him When Tetaliputra joined his palms and greeted the king he did not respond, conveying his feeling of apathy and neglect for the minister

Tetaliputra observed this cold treatment meted out by the king and got fearful He thought, "King Kanak-dhvaj is annoyed with me He has gone against me and started thinking bad about me In this state of mind he may deal some drastic punishment to me " These thoughts added to his fear and apprehension and he silently fled from there. He rode his horse and through the town started for his home.

सूत्र ४१ : तए णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव पासंति ते तहा नो आढायंति, नो परियाणंति, नो अब्भुट्ठेंति, नो अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति, नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति।

तए णं तेयलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ। जा वि य से बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा–दासे इ वा, पेसे इ वा, भाइल्लए इ वा, सा वि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ। जा वि य से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, तं जहा–पिया इ वा माया इ वा जाव भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा सुण्हा इ वा, सा वि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ।

सूत्र ४१ : मार्ग में जाते हुए अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने तेतलिपुत्र को देखा पर उन्होंने अमात्य का आदर नहीं किया, जैसे उन्हें पहचाना नहीं, न खड़े हुए, न हाथ जोड़े और न ही मधुर वाणी में अभिवादन किया। वे उनके साथ-साथ उनके आगे-पीछे भी नहीं चले।

तेतलिपुत्र अपने घर पहुँचे। वहाँ भी बाहर की बैठक मे रहने वाले दास, प्रेष्य, भागीदार आदि ने भी उनका आदर आदि नही किया? इसी प्रकार उनकी भीतरी बैठक में रहने वाले माता, पिता, भाई, बहन, पत्नी, पुत्र, पुत्रवधू आदि ने भी उनका आदर सत्कार नही किया।

41. On the way many kings, princes, and other prominent people saw Tetaliputra but did not recognize him, pay him due regards, stand and greet him with joined palms and sweet and courteous words. None of them joined him and moved at his front, back or flanks

Tetaliputra reached his residence There also, in the outer section his slaves, servants, partners etc. did not greet him with usual regard. He got the same treatment in the inner section of his house by his parents, brothers, sisters, wife, son, daughter-in-law, and others

आत्मघात का प्रयत्न

सूत्र ४२ : तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे, जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि णिसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी–"एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भिंतरिया परिसा नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए, त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संकमइ।

तए णं से तेयलिपुत्ते नीलुप्पल जाव गवल-गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं खंधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला।

तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता रुक्खं दुरूहइ, दुरूहित्ता पासं रुक्खे बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना।

तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालयसिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए।

तए णं से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए।

सूत्र ४२ · तेतलिपुत्र अपने कमरे मे आकर शय्या पर बैठा और विचार करने लगा–"मैं अपने घर से निकल राजा के पास गया और उसने मेरा सत्कार नही किया। लौटते समय राह मे भी किसी ने आदर नहीं किया और घर मे भी भीतर-बाहर किसी ने मेरा यथोचित आदर-सत्कार नही किया। ऐसी स्थिति मे अपना जीवन त्याग देना ही उचित है।" इस मनोदशा मे उसने अपने मुँह मे तालपुट विष (तीव्र मारक विष) डाला किन्तु उसका कोई प्रभाव नहीं हुआ।

फिर उसने नीलकमल आदि (अ ९, सू १७) जैसी तलवार से अपने कधे पर प्रहार किया किन्तु उसकी धार कुठित हो गई।

तत्पश्चात् तेतलिपुत्र अशोकवाटिका मे गया और अपने गले मे रस्सी से फदा कसा। वृक्ष पर चढ़कर रस्सी के खुले छोर को डाल से बाँधा और स्वय नीचे कूद पडा। पर उसे फॉसी नही लगी, वह रस्सी टूट गई।

इसी प्रकार तेतलिपुत्र ने अपने गले मे बडी-सी शिला बॉधी और गहरी और अथाह जलराशि में कूद पड़ा। पर वह डूबा नही वह जलराशि छिछली हो गई।

अंत में उसने घास के सूखे ढेर मे आग लगाई और उसमे कूद पडा। पर वह आग भी बुझ गई।

SUICIDE ATTEMPT

42. Tetaliputra went into his room, sat down on the bed and started brooding, "I left my house and went to the king and he did not give me due regard On the way back as well as at home I got the same apathetic treatment from everyone Under these circumstances it is best for me to end my life" In this depressed state, he put the Taalput poison (an extremely strong and deadly poison) in his mouth but nothing happened

After this he took his blue (as in Ch 9 para 17) sword and hit at the base of his neck but its sharp edge became blunt

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

बुरे समय में मृत्यु भी साथ नहीं देती

चित्र : १६

राज-सन्मान से आसक्त हुआ तेतलीपुत्र धीरे-धीरे धर्मध्यान से भी विमुख हो गया। पोट्टिला देवी ने उसे धर्म मे अनुरक्त करने की बहुत बार प्रेरणा दी, परन्तु वह धर्मानुरागी नहीं बना। तब देवी ने राजा के मन मे मंत्री के प्रति घृणा पैदा कर दी। राजा के द्वारा घोर अपमान होने पर दु खी निराश तेतलीपुत्र जीवन का अन्त करने का प्रयास करता है–

१ मत्री ने तालपुट विष का भक्षण किया, किन्तु विष का कोई प्रभाव नही हुआ।

२ मरने के लिए गर्दन पर तलवार का प्रहार किया, किन्तु तलवार की धार कुण्ठित हो गई।

३ गले मे फाँसी का फदा लगाकर वृक्ष से लटका, परन्तु रस्सी टूट गई।

४ गले मे पत्थर की शिला बाँधकर अथाह जलराशि मे छलांग लगाई, परन्तु वह नही डूबा।

५ अन्त मे सूखे घास के ढेर म आग लगाकर उसमे कूद पडा तो आग ही बुझ गई।

इस प्रकार आत्महत्या के सभी प्रयत्न व्यर्थ हो गये। (चौदहवाँ अध्ययन)

FOR THE UNLUCKY, EVEN THE DEATH-WISH MISFIRES

ILLUSTRATION · 16

Entrapped in state honour and comforts Tetaliputra slowly drifted away from all religious activities Time and again Goddess Pottila tried her best to inspire the minister to accept the spiritual path but in vain At last she made the king hateful towards the minister When Tetaliputra was insulted by the king he was overwhelmed with sorrow He repeatedly tried to commit suicide

1 Minister Tetaliputra took poison but the poison did not kill him

2 He hit himself with the blue sword but it became blunt

3 He tried to hang himself from a tree but the rope broke apart

4 He tied a rock to himself and jumped in deep water but the waters became shallow

5 He built a fire by collecting heaps of dry twigs and jumped in it, but the fire was extinguished

Thus all his attempts at suicide failed **(CHAPTER · 14)**

Tetaliputra now went into the Ashok garden He took a rope, made a noose at one end, and put it around his neck He climbed a tall tree and tied the other end of the rope to a strong branch He then jumped from the tree but the noose around his neck did not tighten, instead the rope broke apart.

Similarly Tetaliputra tried to kill himself by tying a heavy rock around his neck and jumping into a deep lake. But the lake became shallow and he did not drown.

At last he collected a pile of dry twigs and leaves and ignited a fire. He jumped into it but instead of turning him to ashes the fire extinguished itself.

सूत्र ४३ : तए ण से तेयलिपुत्ते एवं वयासी–"सद्धेयं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयति, सद्धेयं खलु भो समणा माहणा वयंति, अहं एगो असद्धेयं वयामि, एवं खलु

अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते, को मेदं सद्दहिस्सइ ?

सह मित्तेहिं अमित्ते, को मेद सद्दहिस्सइ ?

एव अत्थेण दारेण जासेहिं परिजणेणं।

एव खलु तेयलिपुत्तेण अमच्चेण कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तालपुडगे विसं आसगंसि पक्खित्ते, से वि य णो संकमइ, को मेदं सद्दहिस्सइ ?

तेयलिपुत्ते नीलुप्पल जाव खंधंसि ओहरिए, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, को मेद सद्दहिस्सइ ?

तेयलिपुत्तेणं पासग गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना, को मेदं सद्दहिस्सइ ?

तेयलिपुत्तेणं महासिलयं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि अप्पा मुक्के तत्थ वि य ण थाहे जाए, को मेदं सद्दहिस्सइ ?

तेयलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडे अग्गी विज्झाए, को मेदं सद्दहिस्सइ ?

ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ।

सूत्र ४३ : तेतलिपुत्र मन ही मन सोचने लगा–"श्रमण श्रद्धा योग्य वचन बोलते है, ब्राह्मण श्रद्धा योग्य वचन बोलते हैं, श्रमण और ब्राह्मण सभी श्रद्धा योग्य वचन बोलते हैं। एक मै ही हूँ जो अश्रद्धा योग्य (अविश्वसनीय) वचन बोलता हूँ।

मैं पुत्रों सहित होने पर भी पुत्रहीन हूँ, कौन इस कथन का विश्वास करेगा ?

मैं मित्रों सहित होने पर भी मित्रहीन हूँ, कौन विश्वास करेगा ?

वैसे ही मेरे धन, स्त्री, दास और परिवार रहित होने की बात पर कौन विश्वास करेगा ?

और भी, राजा कनकध्वज द्वारा अपमानित अमात्य तेतलिपुत्र ने अपने मुख में विष डाला पर विष प्रभावहीन हो गया, कौन विश्वास करेगा इस पर?

कौन विश्वास करेगा कि तेतलिपुत्र ने नीली तलवार से अपने पर प्रहार किया पर उसकी धार कुंठित हो गई?

कौन विश्वास करेगा कि तेतलिपुत्र ने गले मे फाँसी लगाई पर रस्सी टूट गई?

कौन विश्वास करेगा कि तेतलिपुत्र शिला बॉधकर अथाह जल मे कूदा पर वह जल छिछला हो गया?

कौन विश्वास करेग कि तेतलिपुत्र आग मे कूदा पर वह बुझ गई?

ऐसी हताश मनोदशा मे हथेली पर ठोडि टिकाए तेतलिपुत्र आर्त्तध्यान मे डूब गया।

43. Tetaliputra thought, "What the Shramans utter is authentic, what the Brahmans utter is also authentic, what all the Shramans and Brahmans utter is authentic But only in my case it is so, that whatever I utter is unauthentic

Even having a son I am without a son Who will believe this statement of mine?

Even having friends I am friendless Who will believe this statement of mine?

Similarly, who will believe this statement of mine that I am without wealth, wife, servants, and family?

Also, who will believe that after being insulted by the king, minister Tetaliputra took poison but the poison did not kill him?

Who will believe that Tetaliputra hit himself with the blue sword but it became blunt?

Who will believe that Tetaliputra tried to hang himself but the rope broke apart?

Who will believe that Tetaliputra tied a rock and jumped in deep waters and the waters became shallow?

Who will believe that Tetaliputra jumped in fire and the fire was extinguished?

In this depressed condition Tetaliputra rested his chin on his palms and started brooding.

सूत्र ४४ : तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता तेयलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी-"हं भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए, पिट्ठओ हत्थिभयं, दुहओ अचक्खुपासे, मज्झे सराणि वरिसंति, गामे पलत्ते, रन्ने झियाइ, रन्ने पलित्ते गामे झियाइ, आउसो तेयलिपुत्ता ! कओ वयामी ?"

सूत्र ४४ : उसी समय पोट्टिल देव ने विक्रिया द्वारा पोट्टिला का रूप धारण किया और तेतलिपुत्र के निकट उपस्थित होकर कहा-"हे तेतलिपुत्र ! आगे खाई है और पीछे हाथी का भय। दोनों पार्श्व में ऐसा अंधकार है कि आँखो को कुछ दिखाई नहीं देता। बीच में वाणों की वर्षा हो रही है। गाँव में आग लगी है तो जगल धधक रहा है और जगल में आग लगी है तो गाँव धधक रहा है। आयुष्मान तेतलिपुत्र ! ऐसे मे हम कहाँ जाएँ ? किसकी शरण मे ?"

44. Just at that moment god Pottil took the form of Pottila and materialized there The god said, "Tetaliputra! You are caught between the fire and a frying pan In the center there is a rain of arrows and all sides are pitch dark There is a forest fire and the village is also in flames. Long lived Tetaliputra! Under such conditions where should one go? Where should one take refuge?"

पोट्टिल देव द्वारा प्रेरणा

सूत्र ४५ . तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलं देवं एवं वयासी-"भीयस्स खलु भो पव्वज्जा सरणं, उक्कंठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणं किच्चं, परं अभिओजितुकामस्स सहायकिच्चं, खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ।"

सूत्र ४५ · तेतलिपुत्र ने पोट्टिल देव को उत्तर दिया-अहो ! ऐसे पूर्ण भयभीत व्यक्ति के लिए दीक्षा ही एकमात्र आश्रय है। जैसे उत्कठित के लिए स्वदेश, भूखे के लिए अन्न, प्यासे को पानी, रोगी को औषध, मायावी को रहस्य, अभियुक्त को विश्वास उत्पन्न करना, क्लान्त को वाहन गमन, जलयात्री को जलपोत और शत्रु का पराभव करने वाले को सहयोग आलम्बनस्वरूप है। किन्तु क्षमावान, संयमी और जितेन्द्रिय को इनमे से एक की भी आवश्यकता नहीं होती।"

INSPIRATION BY GOD POTTIL

45. Tetaliputra replied, "Oh! For a person in such panicky situation the only refuge is Diksha As his motherland is the source of solace for a homesick so is food for hungry, water for thirsty, medicine for sick, mystery for trickster, inspiring faith for an accused, conveyance for a tired, ship to a sea farer, and support of a mighty warrior for one desirous of

defeating an enemy But one who is forgiving, disciplined, and Jitendriya (one who has complete control over the senses) has no need of even a single one of these "

सूत्र ४६ : तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी–"सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणाहि त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

सूत्र ४६ : पोट्टिल देव ने अमात्य तेतलिपुत्र से कहा–"हे तेतलिपुत्र ! तुम्हारा कहना ठीक है। किन्तु इस बात को तुम गहराई से समझ आचरण में उतारो।" देव ने दो-तीन बार यह बात दोहराई और अपने स्थान को लौट गया।

46. God Pottil said to Tetaliputra, "Your statement is absolutely correct. But you should profoundly ponder it, understand it and adopt it in your conduct " The god repeated this two or three times and then returned to his abode

सूत्र ४७ · तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाइसरणे समुप्पन्ने। तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने–"एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावतीविजए पोडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था। तए णं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे उववन्ने।

सूत्र ४७ · यह सुनकर शुभ परिणाम उत्पन्न होने से तेतलिपुत्र को जातिस्मरण ज्ञान प्राप्त हुआ। उसके मन में विचार उत्पन्न हुआ–"मैं जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र की पुष्कलावती विजय की राजधानी पुण्डरीकिणी नगरी में महापद्म नाम का राजा था। मैने स्थविर मुनि के पास मुण्डित होकर दीक्षा ली थी। फिर चौदह पूर्वों का अध्ययन करके, अनेक वर्षों तक श्रमण जीवन बिताकर अन्त में एक मास की संलेखना करके शरीर त्याग किया था और महाशुक्रकल्प मे देव रूप मे जन्म लिया था।

47. This urging by the god inspired Tetaliputra and with purifying attitude he acquired the Jatismaran Jnana He remembered, "I was King Mahapadma of Pundarikini city, the capital of Pushkalavati Vijaya in Mahavideh area in the Jambu continent I had shaved my head and got initiated by a great ascetic After studying the fourteen sublime canons and leading a long disciplined ascetic life I had taken the ultimate vow of one month duration After death I reincarnated as a god in the Mahashukra-kalp
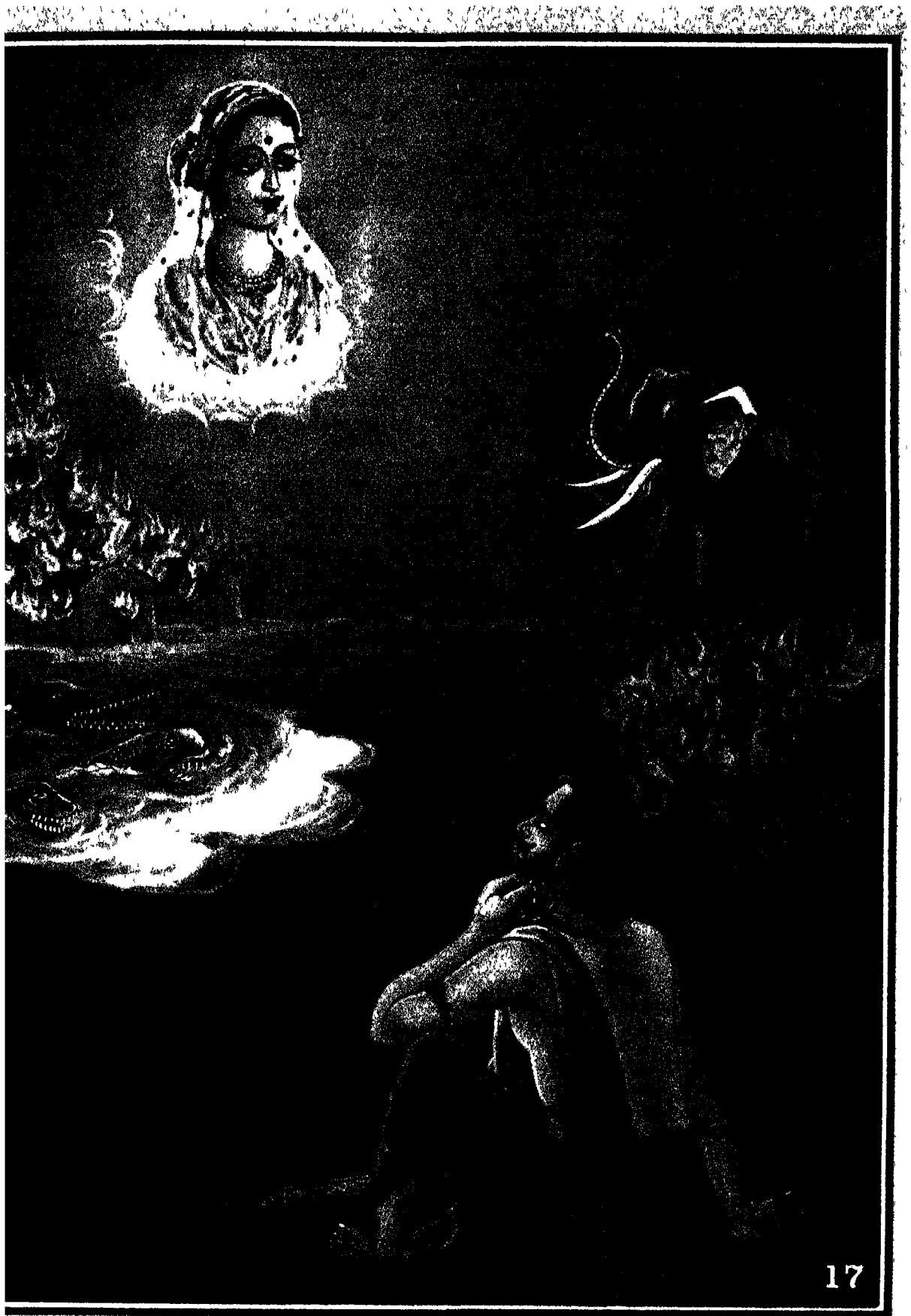
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

धर्म ही एकमात्र सहारा है

चित्र : १७

आत्महत्या के सब प्रयत्न निष्फल होने पर हताश तेतलीपुत्र आर्त्तध्यान मे डूबा बैठा है। तभी पोट्टिला देवी ने अपना मूल रूप धारणकर आकाश मे उपस्थित होकर करुण स्वर मे पुकारा–"हे तेतलीपुत्र ! आगे खाई है, जिसमे मुँह फाडे मगरमच्छ बैठे है। पीछे मदोन्मत्त हाथी खडा है। दोनो तरफ आग लगी है, जगल धधक रहा है। ऐसे मे हम कहाँ जाये ? किसकी शरण लेवे ?"

पुकार सुनकर तेतलीपुत्र ऊपर आकाश की ओर देखता है–"यह करुण दृश्य देखकर उसके अन्तर्मन से आवाज उठती है–ऐसे भयाक्रात व्यक्ति के लिए धर्म ही एक आधार है, आश्रय है। सहारा है, शरण है।"

आकाश स्थित पोट्टिला कहती है–"तुम्हारा कथन सत्य है तेतलीपुत्र ! अपने विचार को स्वय के जीवन मे उतारो, इस पर आचरण करो।" (चौदहवॉ अध्ययन)

RELIGION IS THE ONLY HOPE

ILLUSTRATION : 17

Tetaliputra is sitting dejected when all his attempts at suicide failed Just at that moment the goddess took the form of Pottila and appeared in the sky In a sympathetic voice she said, "Tetaliputra! There is a river and crocodiles with open mouths wait there In the center there is a rain of arrows and the only route to escape is blocked by a mad elephant There is a forest fire and the village is also in flames Under such conditions where should one go? Where should one take refuge?"

Reacting to this call Tetaliputra looks up and the compassion of the goddess inspires him to utter—"Oh! For a person in such a hopeless situation the only refuge is Diksha As food to the hungry and medicine to the sick are the only refuge, so is the Jin-Dharm to the sad and fearful "

Goddess Pottila said, "Your statement is absolutely correct But you should profoundly ponder it, understand it and adopt it in your conduct Only then will all your sorrows end " **(CHAPTER - 14)**

केवलज्ञान-प्राप्ति

सूत्र ४८ : "तए णं अहं ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए। तं सेयं खलु मम पुव्वुद्दिट्ठाइं महव्वयाइं सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए" एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सयमेव महव्वयाइं आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं।

तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव पसत्थेणं अज्झवसाएणं लेस्साहिं विसुज्झमाणीहि तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने।

सूत्र ४८ : "देवलोक की आयुष्य पूर्ण हो जाने पर मैं वहाँ से च्यवन कर यहाँ तेतलिपुर में तेतलि अमात्य की भद्रा नामक पत्नी के पुत्र के रूप मे उत्पन्न हुआ। अतः मेरे लिए यह अच्छा होगा कि पूर्व-जन्म मे किए महाव्रतो को स्वय ही अगीकार कर जीवन व्यतीत करूँ।" इस प्रकार विचार कर तेतलिपुत्र ने स्वय ही महाव्रत अंगीकार कर लिया। फिर वे प्रमदवन उद्यान मे जा एक श्रेष्ठ अशोक वृक्ष के नीचे शिला पर बैठ गए। वहाँ विचारमग्न हुए और पूर्व-जन्म में अध्ययन किये चौदह पूर्व उन्हें अपने आप याद हो आए।

फिर शुभ परिणाम आदि के प्रभाव से अवगत तेतलिपुत्र के आवरणीय कर्मों का क्षय और उपशम हो गया। उन्होने कर्मरज का नाश करके अपूर्वकरण स्तर मे प्रवेश किया और चार घातिकर्मो का नाश कर उत्तम केवलज्ञान और दर्शन प्राप्त कर लिये।

ATTAINING KEVAL JNANA

48. "After completing the life-span in the dimension of gods I reincarnated as the son of minister Tetali and his wife Bhadra in this city of Tetalipur. As such, it would be good for me to take the five great vows as I had done during my earlier birth and lead a disciplined ascetic life " And Tetaliputra on his own took the great vows After that he went to the Pramadvan garden and sat down on a rock under an Ashok tree He started his meditation and remembered the fourteen sublime canons that he had studied during his earlier birth.

As a result of continuously purifying attitude (etc.) he suppressed and then shed the veiling Karmas. Consequently he attained the unprecedented state of Apurvakaran (the eighth level of purity of soul described as

Gunasthan) and then after shedding the four vitiating karmas he acquired the supreme Keval Jnana, and Keval Darshan (state of omniscience)

सूत्र ४९ : तए णं तेतलिपुरे नगरे अहासंनिहिएहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निव्वाए, दिव्वे गीय-गंधव्वनिनाए कए यावि होत्था।

सूत्र ४९ · इस अवसर पर तेतलिपुर के निकट रहे वाणव्यन्तर देव-देवियो ने देव दुंदुभियाँ बजाईं, पॉच रग के फूलो की वर्षा की और दिव्य गधर्व गीतों का निनाद किया।

49. On this occasion the Vanavyantar gods (a class of demigods) sounded divine drums, showered multi-coloured flowers and sang divine songs

सूत्र ५० . तए ण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी–"एवं खलु तेयलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए, तं गच्छामि ण तेयलिपुत्तं अणगारं वदामि नमंसामि, वदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो भुज्जो खामेमि।" एवं सपेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे, जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्त अणगारं वदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं च विणएणं भुज्जो भुज्जो खामेइ, नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ।

सूत्र ५० ' राजा कनकध्वज ने जब यह समाचार सुना तो उसके मन मे विचार उठा, "अमात्य तेतलिपुत्र ने मेरे द्वारा अपमानित किए जाने पर मुण्डित हो दीक्षा ली है। अत मुझे जाकर तेतलिपुत्र अनगार की यथाविधि वन्दना करनी चाहिये और अपनी भूल के लिए विनयपूर्वक बार-बार क्षमा याचना करनी चाहिए।" यह विचार आने पर राजा ने स्नानादि से निवृत्त हो अपनी सेना साथ ली और प्रमदवन उद्यान मे तेतलिपुत्र अनगार के पास आया। अनगार तेतलिपुत्र को यथाविधि वन्दना की और विनयपूर्वक क्षमा याचना की। फिर वह उनके सामने बैठ उपासना करने लगा।

50. When king Kanak-dhvaj came to know of this he thought, "Tetaliputra has become ascetic after being insulted by me As such, I should go, pay my homage, and seek his forgiveness with all humility again and again " He got ready and with all his regalia came to ascetic Tetaliputra in the Pramadvan garden After obeisance he humbly begged pardon and sat down to worship

सूत्र ५१ तए ण से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ।

तए णं कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म पंचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय सावगधम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे।

तए णं तेयलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे।

सूत्र ५१ : तेतलिपुत्र अनगार ने कनकध्वज राजा और वहाँ उपस्थित विशाल जन परिषद् को धर्म का उपदेश दिया।

राजा कनकध्वज ने धर्मोपदेश सुन-समझकर पाँच अणुव्रत और सात शिक्षा व्रत सहित श्रावकधर्म स्वीकार किया और जीव-अजीवादि तत्त्वों का ज्ञाता श्रमणोपासक बन गया।

अनेक वर्षों तक केवली अवस्था मे रहकर तेतलिपुत्र सिद्ध हो गए।

51. Ascetic Tetaliputra gave his religious discourse to the large assemblage including king Kanak-dhvaj.

King Kanak-dhvaj, after hearing and understanding the preaching accepted the five minor vows and seven disciplinary vows to became a Shramanopasak having knowledge of fundamentals like soul and matter

After spending many years in the state of a Kevali (omniscient) Tetaliputra became a Siddh (the state of the liberated)

सूत्र ५२ : एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ५२ : हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने चौदहवे ज्ञात अध्ययन का यही अर्थ कहा है। मैने जैसा सुना वैसा ही कहा है।

52. Jambu! This is the text and the meaning of the fourteenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard and so I confirm

॥ चोद्दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ चौदहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF THE FOURTEENTH CHAPTER ॥

उपसंहार

ज्ञाताधर्म कथासूत्र की यह चौदहवीं कथा सन्मार्ग की अभिलाषा और सन्मार्ग पर चलने के बीच बाधा स्वरूप प्रमाद को दर्शाती है। साथ ही प्रेरक निमित्ति का महत्त्व समझाती है। गुणवान होने पर भी, आंतरिक अभिलाषा होने पर भी सुख सुविधा में डूबे रहने का प्रमाद टूटता नहीं जब तक कि दुःख और निराशा का गहरा प्रहार प्रमाद के जाल को तोड़ नही देता और यथार्थ के दर्शन नही करा देता। और इस प्रहार का सर्जक होता है वह प्रेरक निमित्ति। एक बार प्रमाद टूटा कि राह प्रशस्त हुई।

CONCLUSION

This fourteenth story of Jnata Dharma Katha affirms that Pramaad (illusion and inaction) is the hurdle between the desire for and indulgence in spiritual endeavor At the same time it also explains the importance of the inspiring cause In spite of being virtuous and having spiritual inclinations the Pramaad of mundane comforts and pleasures does not break as long as the blow of sorrow and disappointment does not clear the fog and reveal the reality This blow is given by the inspiring cause The moment the fog is cleared the right path becomes visible

उपनय गाथा

"जाव न दुक्खं पत्ता माणब्भसं न पाणिणो पायं।
ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलीसुउ व्व॥१॥"

प्राय ऐसा होता है कि मनुष्य को जब तक दु ख प्राप्त नही होता या मान मर्दन नही होता तब तक वह भावपूर्वक धर्म का ग्रहण नही करता जैसे आमात्य तेतली पुत्र॥१॥

THE MESSAGE

It often happens that as long as man is not confronted by sorrow or his ego is not shattered he does not sincerely accept Dharma, as was the case with minister Tetaliputra (1)

परिशिष्ट

अपूर्वकरण–आत्मोत्थान के पथ पर वह स्थिति जहाँ आत्मा इतनी निर्मल हो जाती है कि साधक को आत्म-साक्षात आत्म-संवेदन होता है। ऐसा इससे पूर्व कभी नहीं हुआ था इस कारण इस स्थिति को अपूर्वकरण का नाम दिया है। जैन दर्शन में क्रमबद्ध आत्मोत्थान की भूमिका को गुणस्थान नामक चौदह स्तरो से परिभाषित किया है। अपूर्वकरण आठवा गुणस्थान है। इस स्तर पर पहुँचने के पश्चात् कर्म क्षय की गति तीव्र हो जाती है। पूर्ण निर्मलता का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।

APPENDIX

Apoorvakaran—Facing the unprecedented On the spiritual path this is the state when the soul attains so much purity that the practicer sees his soul or has the vision or realization of the soul entity As it is a unique experience this state is known as Apoorvakaran In Jain philosophy progressive uplift has been defined as fourteen steps or levels named Gunasthan Apoorvakaran is the eighth Gunasthan When one ttains this state the speed of the shedding of Karmas increases and the gateway to absolute purity is revealed

■■

पन्द्रहवाँ अध्ययन : नंदीफल : आमुख

शीर्षक–णंदिफले–नंदीफल–फल विशेष। नन्दी नामक यह एक विषैला वृक्ष है तथा इसे प्रतीक बनाकर बाह्य-आकर्षण के प्रभाव से विवेकहीन बन जाने के मारक प्रभाव को प्रकट किया गया है। सुखों के आकर्षण में छुपे दुःख रूप विष की चेतावनी सद्समागम से मिलती है। पर जो विवेक खो कर चेतावनी भूल जाते हैं वे दुर्गति को प्राप्त होते हैं और जो अपना विवेक नही खोते वे आगे सद्गति की ओर बढ़ जाते है।

कथासार–चम्पानगरी का धन्य सार्थवाह व्यापार हेतु अहिच्छत्रा नगरी जाने का सकल्प करता है। अपने साथ वह सभी समर्थ-असमर्थ लोगो को चलने का आमत्रण देता है और सब के सुख-सुविधा का भार स्वय ले लेता है। मार्ग मे वह सभी को चेतावनी देता है कि आगे नंदीफल नामक वृक्षों से भरा जगल आएगा। ये वृक्ष बहुत छायादार और सुन्दर फूलो तथा स्वादिष्ट फलों से लदे होने के कारण लुभावने दिखते हैं किन्तु इनकी छाया तथा फल-फूल सभी विषैले हैं। अत कोई न तो इनके नीचे-विश्राम ले और न फल तोड कर खाए। सभी अन्य वृक्षो का उपयोग करें। जब सार्थ वहाँ पहुँचा तो धन्य ने पुन अपनी चेतावनी दोहराई।

इस चेतावनी के बावजूद बहुत से लोग उन वृक्षों से आकर्षित हो चेतावनी को भूल गये और छाया में जा बैठे तथा फल तोड़कर खा लिए। वे सभी लोग पहले तो बडे आनन्दित हुए पर फिर विष के प्रभाव से मर गये। जिन लोगो ने अपने पर नियन्त्रण रखा वे इन वृक्षो से दूर अन्य वृक्षो की छाया मे ही रहे। वे सभी आरम्भ में तो कष्ट पाते रहे पर फिर सन्तुष्ट हुए और प्राण रक्षा कर सके।

धन्य अपने सार्थ सहित अहिच्छत्रा पहुँचा और वहाँ व्यापारादि कर पुन चपा लौट आया। कालान्तर मे दीक्षा ली और सयममय जीवन बिता देवलोक में जन्म लिया। वहाँ से महाविदेह मे जन्म लेगा और मोक्ष प्राप्त करेगा।

FIFTEENTH CHAPTER : THE NANDI-FRUIT : INTRODUCTION

Title—Nandiphale—Nandiphal—a fruit Nandi is a toxic tree Using it as a metaphor, the fatal results of becoming irrational under the influence of mundane illusive attractions have been explained The warning about the poison of sorrow camouflaged by pleasures is given by sagacious persons Those who are devoid of reason and do not give heed suffer the grave consequences Those who remain rational progress upward

Gist of the story—Dhanya merchant of Champanagari plans to go to Ahicchatra city for business He invites all and sundry, rich and poor, to accompany him, accepting the responsibility of their needs and conveniences during the journey On the way he warns everyone accompanying him about the forest of Nandi trees to be crossed These trees appear inviting due to their lush green foliage, beautiful flowers and tasty fruits But the fruits and leaves and even the shade of these trees are toxic So, no one should rest under their shade or eat their fruits Everyone should use other trees for their needs When the caravan reached these trees he once again repeated the warning

In spite of the warning many people were attracted by the trees They forgot the warning, took rest under these trees and consumed the fruits All these persons were happy to start with, but later died of the poison Those who could discipline themselves kept their distance from the trees. They were distressed in the beginning, but in the end were contented and safe

Dhanya reached Ahicchatra with his caravan and after conducting his business returned to Champa In later part of his life he got initiated and lived a disciplined spiritual life He reincarnated as a god and will attain liberation after taking birth in the Mahavideh area

■■

पण्णरसमं अज्झयणं : णंदी-फले
पन्द्रहवाँ अध्ययन : नंदीफल
FIFTEENTH CHAPTER : NANDIPHALE - THE NANDI-FRUIT

सूत्र १ : 'जइ णं भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पन्नरसमस्स णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पन्नत्ते?'

सूत्र १ : जम्बू स्वामी ने पूछा- "भंते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने चौदहवें ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो उन्होने पन्द्रहवे ज्ञात अध्ययन का क्या अर्थ कहा है।

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the fifteenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सुधर्मा स्वामी का उत्तर

सूत्र २ : एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेण समएण चंपा णामं नयरी होत्था। पुन्नभद्दे नामं चेइए। जियसत्तू नामं राया होत्था। तत्थ ण चपाए नयरीए धन्ने नाम सत्थवाहे होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए।

सूत्र २ : "जम्बू ! काल के उस भाग मे चम्पा नाम की एक नगरी थी। उसके बाहर पूर्णभद्र नाम का एक चैत्य था। वहा जितशत्रु नाम का राजा राज्य करता था और धन्य नाम का एक सम्पन्न व समर्थ सार्थवाह रहता था।

SUDHARMA SWAMI NARRATED

2. Jambu! During that period of time there was a city named Champa King Jitshatru ruled over that city Outside the city in the north-eastern direction there was a Chaitya named Purnabhadra Chaitya A wealthy and resourceful merchant named Dhanya lived in the city

सूत्र ३ : तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा, वन्नओ। तत्थ ण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था, महया वन्नओ।

सूत्र ३ : उस चम्पा नगरी से उत्तर-पूर्व दिशा मे अहिच्छत्रा नाम की एक धन-धान्यादि से

परिपूर्ण नगरी थी। वहा कनककेतु नाम के एक राजा का राज्य था, जो महा हिमवंत पर्वत के समान ऐश्वर्यशाली था। (औपपातिक सूत्र के अनुसार)।

3. In the north-eastern direction of Champa there was a rich town named Ahicchatra King Kanak-ketu of that city was as illustrious as the great Himalayas (as in Aupapatik Sutra)

धन्य सार्थवाह की घोषणा

सूत्र ४ : तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नगरिं वाणिज्जाए गमित्तए' एवं संपेहेइ, संपेहित्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च चउव्विहं भंड गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडीसागडं सज्जेइ, सज्जित्ता सगडीसागडं भरेइ, भरित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

सूत्र ४ एक बार मध्यरात्रि के समय धन्य सार्थवाह के मन में एक आकांक्षा, चिन्ता, इच्छा, अभिलाषा या विचार उत्पन्न हुआ–"मुझे बहुत-सा माल लेकर व्यापार के लिए अहिच्छत्रा नगरी जाना लाभदायक होगा।" दूसरे दिन उसने अपने इस विचार के अनुसार गणिम, धरिम, मेय तथा परिच्छेद्य (अ ९ सू. ८ के समान) चारो प्रकार का माल क्रय किया और गाड़ियों में भरा। तत्पश्चात् उसने अपने सेवकों को बुलाकर कहा–

ANNOUNCEMENT BY DHANYA

4. Once around midnight, Dhanya merchant had an idea, "It would be profitable for me to collect a wide range of merchandise and proceed to Ahicchatra for trading." Accordingly he purchased enough stocks of the four categories of goods (Ganim or the goods that are sold in numbers, Dharim or the goods that are sold by weight, Meya or the goods that are sold by measurement, and Paricched or the goods that are sold in pieces) and filled many carts After this he called his servants and said —

सूत्र ५ : 'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वयह–एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विपुले पणियं आदाय इच्छइ अहिच्छत्तं नगरिं वाणिज्जाए गमित्तए। तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा, चीरिए वा, चम्मखण्डिए वा, भिच्छुंडे वा, पंडुरंगे वा, गोयमे वा, गोवईए वा, गिहिधम्मे वा, गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढ-सावग-रत्तपड-निग्गंथप्पभिई पासंडत्थे वा गिहत्थे वा, तस्स णं धण्णेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ, अणुवाहणस्स

उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडिय दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतरा वि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ, सुहंसुहेण य णं अहिच्छत्तं संपावेइ।'

त्ति कट्टु दोच्चं पि तच्चं पि घोसेह, घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।'

सूत्र ५ : "देवानुप्रियो ! तुम जाओ और चम्पा नगरी के सभी चौराहो, राजमार्गो आदि स्थानों पर इस प्रकार घोषणा करो–

'हे देवानुप्रियो ! धन्य सार्थवाह प्रचुर माल लेकर व्यापार के लिए अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता है। अतः जो भी व्यक्ति, चाहे वह चरक (चरक भिक्षु), चीरक (चिथडे पहनने वाला), चर्मखंडिक (चमड़े के टुकडे पहनने वाला), भिक्षांड (भिक्षाजीवी), पाडुरक (शैव भिक्षु), गौतम (बैल के खेल दिखाने वाला), गोव्रती (गाय के अनुरूप कार्य करने का व्रती), गृहिधर्मा (गृहस्थ आश्रम को श्रेष्ठ माननेवाला), अविरुद्ध (विनय का पालन करनेवाला), विरुद्ध (अक्रियावादी), वृद्ध (तापस), श्रावक (ब्राह्मण), रक्तपट (परिव्राजक), निर्ग्रन्थ आदि व्रत पालन करनेवाले हो अथवा सामान्य गृहस्थ हों, धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहे उसका स्वागत है। जिसके पास छतरी नहीं होगी उसे धन्य सार्थवाह छतरी दिलाएगा। जिसके पास जूता नहीं हो उसे जूते, कमंडल विहीन को कमंडल, भोजन विहीन को भोजन, पथ्य समाप्त होने पर पथ्य दिलवायेगा। और जो गिर जायेगा, क्षीण हो जायेगा अथवा रुग्ण हो जायेगा उसकी सहायता करेगा। इस प्रकार वह सबको सुख-पूर्वक अहिच्छत्रा नगरी तक पहुँचायेगा।'

"यह घोषणा दो-तीन बार करो और लौटकर मुझे सूचना दो।"

5. "Beloved of gods! Go and make this announcement at all the crossings, highways, etc of Champa city—

'Beloved of gods! Dhanya merchant plans to go to Ahicchatra city with a large stock of merchandise for trading. So anyone who desires to go with him is welcome He may be a Charak (a class of mendicants), Cheerak (a beggar who wears rags), Charmakhandik (a beggar who wears leather pieces), Bhikshand (beggar), Pandurank (a Shaivite mendicant), Gautam (ox trainer and performer), Gauvrati (one who moulds his life like that of a cow), Grihidharma (one who considers the normal house-holder's life as the best), Aviruddha (theist), Viruddha (atheist), Vriddha (hermit), Shravak (Brahman), Raktapat (ochre wearing Parivrajak), Nirgranth (Jain ascetic), and others following some austere discipline or those who are normal house-holders Dhanya merchant will provide umbrellas to those who do not have one Similarly he will provide shoes, utensils, food, and other allowances to those who do not have these He will help all those who fall

sick, become weak, or tumble Thus he will take them to Ahicchatra with all convenience.'

"Repeat this announcement two three times and report back to me "

सूत्र ६ : तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव एवं व्रयासी-हंदि! सुणंतु भगवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र ६ · सेवकों ने आज्ञानुसार-"हे चम्पा नगरी निवासीजनों, सुनो"-आदि (सूत्र ५ के समान) घोषणा कर दी और लौटकर धन्य सार्थवाह को सूचित किया।

6. The servants did as told and reported back to Dhanya merchant.

सूत्र ७ : तए णं से कोडुंबियघोसणं सुच्चा चंपाए णयरीए बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति। तए ण धण्णे तेसि चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस छत्तं दलयइ जाव पत्थयणं दलयइ एवं वयासी-'गच्छह णं देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा चिट्ठह।'

सूत्र ७ · यह घोषणा सुनकर चम्पा नगरी के अनेक चरक आदि व्यक्ति (पूर्व सूत्र ५ समान) धन्य सार्थवाह के पास आये। धन्य ने उन्हें आवश्यकतानुसार सामग्री दिलवाई (सू. ५ के समान)। और कहा- "देवानुप्रियो ! तुम लोग चम्पा नगरी के बाहर उद्यान मे जाकर मेरी प्रतीक्षा करो।

7. On hearing this announcement a crowd of people (as mentioned in para 5) came to Dhanya merchant who provided them with all what they required, and said, "Beloved of gods! Go and wait for me at the garden outside Champa "

सूत्र ८ : तए णं चरगा य जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति।

तए णं धण्णे सत्थवाहे सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्त-नाइ आमंतेइ, आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसागडं जोयावेइ, जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे वसमाणे सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ, मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ, करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-

सूत्र ८. वे सभी चरक गृहस्थ आदि लोग धन्य सार्थवाह का आदेश सुन उद्यान में पहुँचकर प्रतीक्षा करने लगे।

धन्य सार्थवाह ने शुभ तिथि, करण और नक्षत्र देख प्रचुर भोजन सामग्री बनवाई और अपने मित्रों तथा स्वजनों को आमंत्रित किया। उन्हें भोजन कराकर उनसे यात्रा की अनुमति ली। गाड़ियाँ

जुतवाईं और फिर चम्पा नगरी से बाहर निकला। अपनी इस यात्रा में वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर पड़ाव डालता था। सुख सुविधाजनक रात्रिवास के बाद प्रातःकाल का भोजन कर पुनः यात्रारम्भ करता था। इस प्रकार यात्रा करता हुआ अंग देश को पार कर वह सीमा पर पहुँचा। गाडियाँ खोल पड़ाव डाला और सेवकों को बुलाकर कहा–

8. All these people went to the garden outside Champa, as instructed by Dhanya merchant, and waited for him

Dhanya merchant got the goods loaded in the carts He then looked for an auspicious conjunction of planets, time, and moment He invited his friends and relatives on a feast and sought their permission for the proposed voyage After these formalities he commenced his voyage During this voyage he traveled a convenient distance and then camped After a comfortable night's stay and breakfast the next morning he again resumed his travels In this manner he crossed Anga state and reached the border. After making the camp he called his servants and said—

उपयोगी चेतावनी

सूत्र ९ : 'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेससि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एवं वदह–

एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झ-देसभाए बहवे णंदिफला नामं रुक्खा पन्नत्ता–किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति, मणुण्णा वन्नेणं, मणुण्णा गंधेणं, मणुण्णा रसेणं, मणुण्णा फासेणं, मणुण्णा छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसि नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, ततो पच्छा परिणममाणा परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति। तं मा णं देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए वा वीसमउ। मा ण से ऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जस्सइ। तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह, त्ति घोसणं घोसेह।

जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र ९. "देवानुप्रियो ! तुम हमारे सार्थ के पड़ाव में जाकर ऊँचे शब्दो मे बार-बार यह घोषणा करो–

'हे देवानुप्रियो ! आगे आने वाली अटवी बहुत लम्बी है और उसमें मनुष्यों का आना-जाना नहीं होता है। अटवी के मध्य भाग में नंदीफल नाम के वृक्ष हैं। वे सघन हरे रंग के हैं और पत्तों, फूलों, फलों से लदे भरपूर शोभा लिए खड़े हैं। उनके रूप-रंग-रस-गंध और छाया मनोहारी हैं। परन्तु हे देवानुप्रियो ! जो भी उन नंदीफल वृक्षो के मूल, कंद, छाल, पत्ते, फूल, फल, बीज या हरित को खाएगा अथवा उनकी छाया में बैठेगा, उसे उस समय तो अच्छा लगेगा पर बाद मे उनका प्रभाव पडने पर वह अकाल मृत्यु को प्राप्त करेगा। अतएव हे देवानुप्रियो ! कोई भी उन नंदीफल वृक्षों के मूल आदि किसी भी अंग का सेवन न करें और न उनकी छाया में विश्राम करें, जिससे अकाल ही किसी के जीवन का नाश न हो। हे देवानुप्रियो ! तुम लोग किसी भी अन्य वृक्ष के मूलादि को खा सकते हो, उसकी छाया में विश्राम कर सकते हो।'

"इस प्रकार घोषणा करके मुझे सूचना दो।"

THE WARNING

9. "Beloved of gods! Go to the group camp of our caravan and announce many times in loud voice—

'Beloved of gods! The wilderness ahead is very large and it is seldom visited by man. In the central part of this wilderness there are trees named Nandiphal. They are green, beautiful and rich with leaves, flowers, and fruits. Their form, colour, taste, smell and shade are inviting. But, beloved of gods! Whoever eats the stock, root, bark, leaf, flower, fruit, seed, or any other part of these trees and even sits in their shade will feel pleasant for some time but later when its effect starts he will embrace sudden death. So, O beloved of gods! no one should eat the stock, root, or any other part of these trees or even sit in their shade lest he lose his life. Beloved of gods! You can eat the stock, root, or any other part of any other tree or even sit in its shade.'

"After the announcement report back to me."

सूत्र १० तए णं धण्णे सत्थवाहे सगडीसागडं जोएइ, जोइत्ता जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाण अदूरसामंते सत्थनिवेसं करेइ, करित्ता दोच्च पि तच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाण एवं वयह–'एए णं देवाणुप्पिया ! ते णंदिफला किण्हा जाव मणुण्णा छायाए, तं जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा पुप्फाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा फलाणि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति; तं, मा णं तुब्भे जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले जीवियाओ ववरोविस्संति। अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमह त्ति कट्टु घोसणं पच्चप्पिणंति।

सूत्र १० : धन्य सार्थवाह ने पुनः गाड़ियाँ जुतवाईं और यात्रा करता हुआ नंदीफल वृक्षों के क्षेत्र में पहुँचा। उसने उन वृक्षों से कुछ दूर पड़ाव डाला और सेवकों को बुलाकर दो-तीन बार यह घोषणा करने को कहा–"हे देवानुप्रियो ! ये ही वे नंदीफल वृक्ष हैं जिनके विषय में पहले बताया था। (सू. ९ के समान) अतः इनके किसी भी अंग मूल-फल बीज आदि का सेवन मत करना क्योंकि वह अकाल मृत्यु देने वाला है। कहीं ऐसा न हो कि इनका सेवन कर जीवन का नाश कर लो इसलिए इनसे दूर रहकर ही विश्राम करना। हाँ ! अन्य वृक्षों की छाया में विश्राम कर सकते हो, उनका सेवन भी कर सकते हो।"

सेवकों ने इसी प्रकार घोषणा कर उसे सूचित किया।

10. Dhanya merchant broke camp and resumed the journey After some time he reached the area of the Nandiphal trees He made camp a little distance from these trees and again called his servants He asked them to announce emphatically—"Beloved of gods! These are the Nandiphal trees about which you were told As such no one should eat the stock, root, or any other part of these trees or even sit in their shade lest he lose his life You can eat the stock, root, or any other part of any other tree or even sit in its shade." The servants made the announcement and reported back

श्रद्धावान : अश्रद्धावान

सूत्र ११ : तत्थं णं अत्थेगइया पुरिसा धन्नस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरं दूरेण परिहरमाणा अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति तेसि णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा सुहरूवत्ताए भुज्जो भुज्जो परिणमंति।

सूत्र ११ . सार्थ के कुछ व्यक्तियो को धन्य सार्थवाह की बात पर श्रद्धा, प्रतीति (विश्वास) व रुचि, (दिलचस्पी) हुई। वे तदनुसार उन नदीफलो से दूर ही रहते हुए अन्य वृक्षों के मूलादि का सेवन करने और उनकी छाया मे ही विश्राम करने लगे। उन्हें तात्कालिक आनन्द तो प्राप्त नही हुआ, परन्तु जैसे-जैसे समय बीतता गया, वैसे वैसे उन्हें सुख, तृप्ति व आनन्द का अनुभव होता गया।

BELIEVERS : NON-BELIEVERS

11. Some of the members of the caravan had faith, confidence, and interest in what Dhanya merchant had conveyed to them Accordingly they kept away from those trees; they ate fruits etc. from, and rested in the shade of other trees. They did not have much enjoyment in the beginning but as time passed they experienced pleasure, contentment and joy
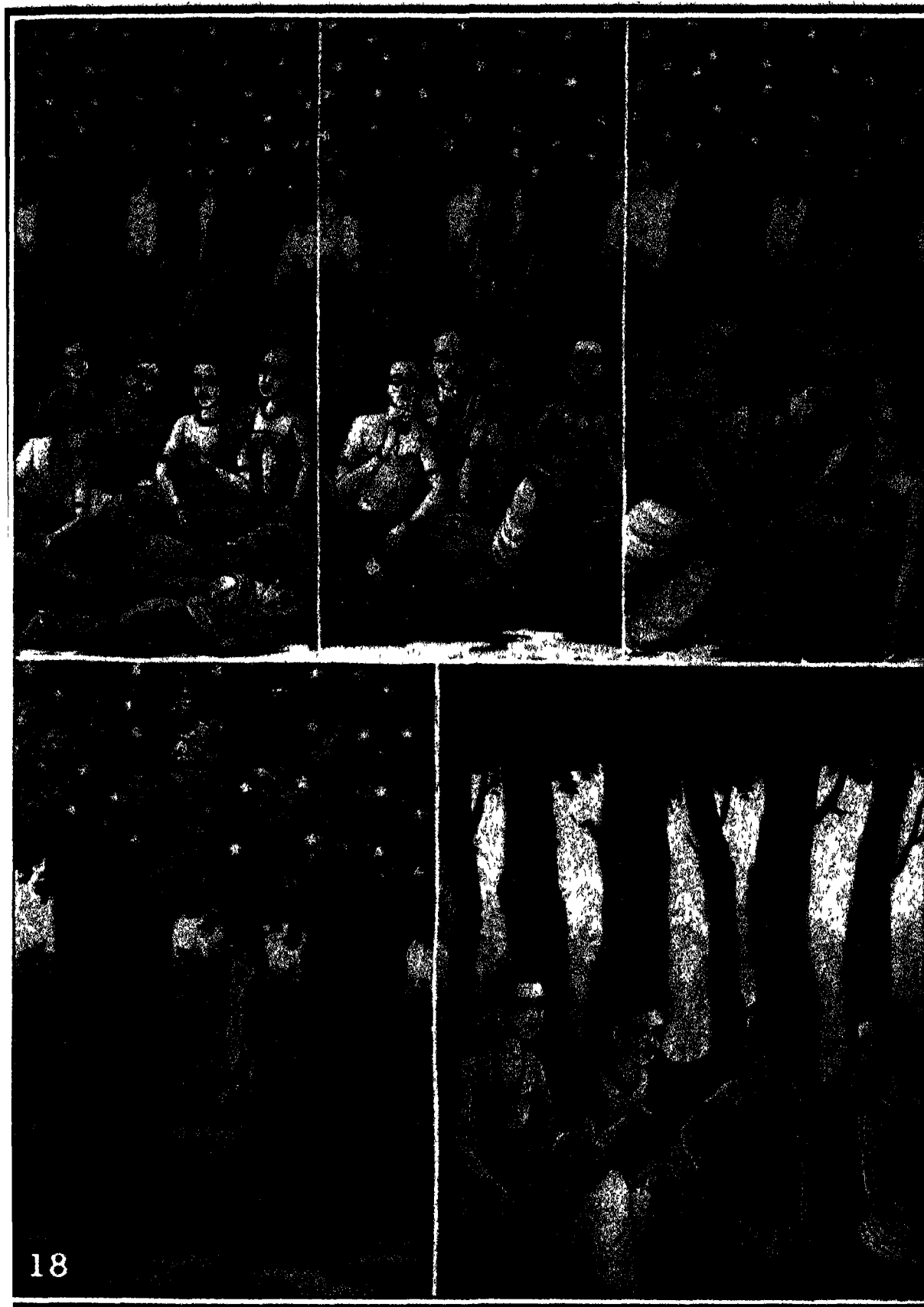
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

नन्दीफल : भोग एवं त्याग का फल

चित्र : १८

चम्पानगरी निवासी धन्य सार्थवाह बहुत-से लोगो को साथ लेकर व्यापार के लिए अहिच्छत्रा नगरी की तरफ जा रहा था। मार्ग मे एक विकट वन आ गया। सार्थवाह ने यात्रियों को सावधान करते हुए कहा-"आगे नन्दीफल नाम के विषैले वृक्षो का वन आ रहा है। अत सभी सावधान रहे यह फल खाना तो दूर, इनकी छाया से भी बचते रहे।"

१ बहुत-से यात्रियो ने सेठ की घोषणा पर विश्वास नही किया। जो नन्दी-वृक्षो की शीतल छाया मे बैठे, वे मूर्च्छित हो गये, जिन्होने फूल सूँघे, फल चखे, वे मर गये।

२ किन्तु बहुत-से समझदार लोगो ने सेठ के कथन पर विश्वास करके इन वृक्षो की छाया स ही दूर हटकर अन्य कम छाया वाले वृक्षो के पास विश्राम किया, वे जीवित भी रहे, किसी तरह की हानि नही हुई।

(पन्द्रहवाँ अध्ययन)

THE FRUITS OF ATTACHMENT AND DETACHMENT

ILLUSTRATION : 18

Dhanya merchant of Champanagari was going with many people to Ahicchatra city for business On the way there was a dense forest Dhanya warned everyone in his caravan, "We are approaching a forest of Nandi trees The fruits and leaves and even the shade of these trees are toxic Therefore no one should rest under their shade or eat their fruits "

1 Many people did not give heed to the warning and took rest under the trees and consumed the fruits Those who rested under the trees became unconscious, and those who consumed the fruits or inhaled the aroma of the flowers died

2 Many others who were wise enough to give heed to the warning kept their distance from these trees They rested under other trees They did not come to any harm and lived to continue their journey

(CHAPTER - 15)

सूत्र १२ : एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावयाणं सावियाणं अच्चणिज्जे भवइ, परलोए वि य नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ जहा व ते पुरिसा।

सूत्र १२ : इसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणों ! हमारा जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थिनी पाँच इन्द्रियो सम्बन्धी कामभोगों में आसक्त अनुरक्त नहीं होता वह इसी भव में अनेक श्रमण-श्रमणी तथा श्रावक-श्रविकाओं का पूजनीय होता है और परलोक में भी दुःख नहीं पाता। वह क्रमशः संसार सागर को पार कर जाता है।

12. Long-lived Shramans! This is how those of our ascetics who, after getting initiated, do not indulge in and get infatuated with the lusty pleasures of their five sense organs, become the objects of reverence of many ascetics as well as the laity during this life. Besides this they also do not suffer miseries in the next life and are gradually liberated.

सूत्र १३ : तत्थ णं जे से अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, धन्नस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा जेणेव ते णंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसिं णं आवाए भद्दए भवइ, ततो पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति।

सूत्र १३ : सार्थ में रहे जिन व्यक्तियों को धन्य सार्थवाह की बात पर श्रद्धा, प्रतीति व रुचि नहीं हुई वे उन नंदीफल वृक्षो के निकट गये। उन्होंने उन वृक्षो के मूलादि का भक्षण किया और उनकी छाया में विश्राम भी किया। उन्होने तात्कालिक आनन्द तो प्राप्त किया, किन्तु क्रमशः वृक्षों के दुष्प्रभाव के प्रभावी होने पर उन्हें जीवन से हाथ धोना पड़ा अर्थात् प्राणों से रहित होना पड़ा।

13. Some members of the caravan did not have faith, confidence, and interest in what Dhanya merchant had conveyed to them all. Accordingly they went near the Nandiphal trees and ate fruits etc from and rested in the shade of those trees They did enjoy all this in the beginning but as time passed the toxicity of those trees started taking effect and in the end they lost their lives

सूत्र १४ . एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व ते पुरिसा।

सूत्र १४ : इसी प्रकार हे आयुष्मान् श्रमणो ! हमारा जो निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थिनी पाँच इन्द्रियों के विषय भोग में आसक्त होता है वह उन पुरुषों की तरह दुःख भोगता हुआ संसार चक्र में भ्रमण करता रहता है।

14. Long-lived Shramans! This is how those of our ascetics who, after getting initiated, indulge in and get infatuated with the lusty pleasures of

their five sense organs, suffer misery and are caught in the cycles of rebirth indefinitely

धन्य का अहिच्छत्रा पहुँचना

सूत्र १५ : तए णं से धण्णे सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ, करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ।

तए ण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ महग्घ महरिहं रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहि सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्त नयरिं मज्झंमज्झेण अणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थं पाहुड उवणेइ।

सूत्र १५ · यथा समय धन्य सार्थवाह ने गाडियॉ जुतवाईं और अहिच्छत्रा नगरी को प्रस्थान किया। वहाँ पहुँच नगरी के बाहर के प्रधान उद्यान मे पडाव डाला और गाडियाँ खुलवा दी।

तत्पश्चात् राजा को भेट करने योग्य बहुमूल्य उपहार और अनेक व्यक्तियो को साथ ले वह अहिच्छत्रा नगरी के बीच होता हुआ राजा कनककेतु के पास गया। दोनो हाथ जोड उसने यथाविधि राजा का अभिनन्दन किया और वे बहुमूल्य उपहार राजा के सामने रख दिये।

DHANYA REACHES AHICCHATRA

15. As usual Dhanya merchant broke camp and resumed his journey When he reached Ahicchatra city he made camp in the main garden outside the city

He selected valuable and suitable gifts for the king and entered the town with a large group of people Arriving at the court of King Kanak-ketu he greeted the king and placed the gifts before him

सूत्र १६ तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठे धण्णस्स सत्थवाहस्स त महत्थं जाव पाहुड पडिच्छइ। पडिच्छित्ता धण्णं सत्थवाह सक्कारेइ संमाणेइ सक्कारित्ता समाणित्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ। भडविणिमयं करेइ, करित्ता पडिभंड गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-णाइअभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुजमाणे विहरइ।

सूत्र १६ · राजा कनककेतु ने प्रसन्न और संतुष्ट हो धन्य सार्थवाह के बहुमूल्य उपहार स्वीकार किए और उसका सत्कार-सम्मान किया। साथ ही उसे शुल्क मुक्त कर विदा किया। धन्य ने अपने माल की बिक्री की और नया माल खरीद कर सुखपूर्वक चम्पा नगरी लौट आया। अपने मित्रो और स्वजनों से मिला और सुखपूर्वक जीवन बिताने लगा।

16 King Kanak-ketu happily accepted the costly gifts and duly honoured Dhanya merchant He also exempted Dhanya from any levies In due course Dhanya merchant sold all his merchandise, bought new stocks, and happily

returned to Champa He met his relatives and friends and resumed his normal happy life.

धन्य की प्रव्रज्या

सूत्र १७ . तेणं कालेणं तेणं समएण थेरागमणं। धण्णे सत्थवाहे विणिग्गए, धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए। एक्कारस सामाइमाइयाइं अंगाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता सट्ठिभत्ताइं अणसणाइं छेदित्ता अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने। से ण देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अंतं करेहिति।

सूत्र १७ · काल के उस भाग मे एक स्थविर मुनि का आगमन हुआ। धन्य सार्थवाह उन्हे वन्दना करने के लिए गया। धर्मोपदेश सुनकर उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र को परिवार का उत्तरदायित्व सौपा और स्वयं दीक्षा ले ली। सामायिक सहित ग्यारह अगों का अध्ययन किया और अनेक वर्षों तक सयम का पालन कर एक मास की सलेखना तथा साठ भक्त अनशन कर देह त्यागी। फिर देवलोक मे जन्म लिया। देवलोक की आयु पूर्ण कर वह वहां से च्यवन कर महाविदेह में जन्म लेकर सिद्धि प्राप्त करेगा और दु खों का अन्त करेगा।

INITIATION OF DHANYA

17. During that period of time a senior ascetic arrived in Champa Dhanya merchant went to offer his obeisance After listening to the discourse, Dhanya merchant handed over the responsibility of the family to his eldest son and got initiated He acquired the knowledge of the eleven canons and lived a long and disciplined ascetic life In the end, he took the ultimate vow of one month duration He embraced a meditators death and reincarnated as a god After completing his life-span as a god he will reincarnate in the Mahavideh area and ending all miseries achieve liberation

सूत्र १८ : एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र १८ हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञात अध्ययन का यह अर्थ कहा है। मैने जैसा सुना वैसा ही कहा है।

18. Jambu! This is the text and the meaning of the fifteenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir. So I have heard and so I confirm

|| पण्णरसमं अज्झयणं समत्तं ||

|| पन्द्रहवाँ अध्ययन समाप्त ||

|| END OF THE FIFTEENTH CHAPTER ||

उपसंहार

ज्ञाता धर्म कथा की यह पन्द्रहवीं कथा इंद्रियों के विषयों में अनायास आकर्षित होकर वर्जित कार्यों में संलग्न हो जाने के दुष्परिणाम को स्पष्ट करती है। नन्दीफल वृक्षों के आकर्षक किन्तु विषैले वातावरण के उदाहरण से साधना में भटकाव के प्रति सावधान रहने के महत्व को समझाया गया है।

अन्य कथाओं के समान इस कथा मे भी सामाजिक जीवन के एक विशिष्ट पहलू का वर्णन किया है। सामर्थ्यवान व्यक्ति अपनी विकास यात्रा में समाज के अकिंचन श्रेणी में आने वाले सामान्य व्यक्तियो को भी सम्मिलित करता था और उन्हें बंधु भाव के साथ सब सुविधाएँ उपलब्ध कराता था। सामाजिक उत्तरदायित्व की यह शिक्षा कथा में सहज ही सम्मिलित हो गई है।

CONCLUSION

This fifteenth story of Jnata Dharma Katha explains the fearsome consequences of indulging in prohibited activities under the influence of attraction for carnal pleasures Giving the example of Nandiphal trees that are attractive but toxic, it explains the importance of taking precaution against faltering in spiritual practices

Just as the other chapters include valuable information about the then-prevailing social conditions this story also details a specific facet A man with resources invites impoverished members of the society to join him in his journey towards progress With a feeling of fraternity he provides everything needed to those who join This lesson of social responsibility has been included as a natural part of the story

उपनय गाथा

चंपा इव मणुयगई, धणो व्व भयवं जिणोदएक्करसो।
अहिच्छत्तानयरिसमं इह निव्वाणं मुणेयव्वं॥१॥
घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं।
चरगाइणो व्व इत्थं सिवसुहकामा जिया बहवे॥२॥

नंदिफलाइ व्व इइं सिवपह–पडिवण्णगाण विसया उ।
तब्भक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहि संसारो॥३॥
तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा।
परमाणंद–निबंधण-सिवपुरगमणं मुणेयव्वं॥४॥

चम्पा नगरी के समान मनुष्यगति, धन्य सार्थवाह के समान एकान्त दयालु भगवान् तीर्थंकर और अहिच्छत्रा नगरी के समान निर्वाण समझना चाहिए॥१॥

धन्य सार्थवाह की घोषणा के समान तीर्थंकर भगवान की मोक्षमार्ग की अनमोल देशना और चरक आदि के समान मुक्ति-सुख की कामना करने वाले प्राणी जानना चाहिए॥२॥

मोक्षमार्ग को अंगीकार करने वालो के लिए इन्द्रियों के विषय (विषमय फलदाता) नंदीफल के समान है। जैसे नंदीफलो के भक्षण करने से मरण प्राप्त हुआ, उसी प्रकार इन्द्रियविषयों के सेवन से ससार मे जन्म-मरण जानना चाहिए॥३॥

नन्दीफलों के नही सेवन करने से जैसे इष्ट पुर (अहिछत्रा नगरी) की प्राप्ति कही गई, उसी प्रकार विषयो के परित्याग से निर्वाण-नगर की प्राप्ति होती है, जो परमानन्द का कारण है॥४॥

THE MESSAGE

Champa city is the human state, Dhanya merchant is the absolutely compassionate Tirthankar, and Ahicchatra city is Nirvana (1)

The announcement by Dhanya merchant is the unique discourse about the path of purification by the Tirthankar The destitute like Charak are the beings seeking the bliss of liberation (2)

For those who tread the path of liberation, carnal pleasures are like the Nandiphal trees As the consumption of Nandi fruits led to death, indulgence in carnal pleasures leads to the unending cycles of rebirth. (3)

As avoiding these toxic fruits helped in reaching the destination (Ahicchatra), avoiding indulgence in carnal pleasures helps in reaching Nirvana city (the state of liberation), the source of ultimate bliss (4)

परिशिष्ट

अहच्छित्रा नगर–इस प्राचीन नगर का उल्लेख तो कई ग्रन्थों में है किन्तु आज की स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाई है। जैनयात्रियो के अनुसार आगरा से ईशानकोण मे स्थित कुरुजागल प्रदेश मे स्थित है यह नगर। अन्य यात्री इसे मेवात क्षेत्र में बताते हैं। जिनप्रभसूरि के तीर्थकल्प के अनुसार यह कुरुजांगल प्रदेश की प्राचीन शखावली नामक नगरी थी जो भगवान पार्श्वनाथ के कमठ उपसर्ग के पश्चात् अहिच्छत्रा नाम से प्रसिद्ध हो गई। ह्युएनत्सेग के यात्रा वर्णनो मे भी इसकी चर्चा है। महाभारत मे भी इसका उल्लेख है। हेमचद्रसूरि ने इसका अन्य नाम प्रत्यग्रथ बताया है।

चरक–एक प्रकार के त्रिदण्डी परिव्राजक जो कछोटा (कच्छा या लगोट) पहनते थे तथा यूथ बध (समूह रूप) रहते थे। ये खाद्य वस्तुओं का प्रथम भाग भिक्षा मे लेते थे।

चीरिक–रास्ते में पड़े कपडे (चिथड़े) उठाकर पहनने वाले एक प्रकार के सन्यासी।

चर्मखंडिक–चमड़े के वस्त्र तथा उपकरण उपयोग मे लाने वाले सन्यासी।

भिक्षाण्ड–केवल भिक्षा से निर्वाह करने वाले। अन्यो द्वारा लाई भिक्षा पर निर्वाह करने वाले। बौद्ध भिक्षु।

पाण्डुरंग–शिव-भक्त, शरीर पर भभूत लपेटने वाले सन्यासी, गोशालक के अनुयायी साधु (निशीथ चूर्णि), गाय के दही, दूध, घी आदि को मास समझकर ये नही खाते थे। (उद्योतनसूरि)।

गौतम–बैल के साथ उसकी क्रीड़ा दिखाकर भिक्षा ग्रहण करने वाले।

गोव्रती–गाय की सेवा करते हुए उसके अनुरूप कार्य करने का व्रत रखने वाले–अर्थात् जव गाय बैठे तो वे बैठें, जब गाय खावे तो वे खावे आदि। गौचर्यानुगामी।

गृहिधर्मी–गृहस्थ धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ मानने वाले तथा सदा वैसा ही चिन्तन करने वाले।

अविरुद्ध–विनयवादी, प्राणिमात्र का विनय करने वाले।

विरुद्ध–अक्रियावादी, ये परलोक नही मानते तथा सभी मतो का खण्डन करते है।

वृद्ध–वृद्धावस्था मे सन्यास लेने वाले, ऋषभदेव के समय के वे श्रावक जो कालान्तर मे ब्राह्मण हो गए। वे पुरातन होने के कारण आदिलिंगी अथवा वृद्ध कहे जाते थे।

श्रावक–धर्मशास्त्र सुनने वाले ब्राह्मण।

रक्तपट–लाल वस्त्रधारी परिव्राजक।

APPENDIX

Ahicchatra city—This ancient town finds mention in many scriptures but its present location remains uncertain According to Jain pilgrims it is located in the Kuru-Jangal area north-east of Agra Other travellers believe it to be the Mewat area According to the Tirthakalp of Jinprabhsuri it was earlier known as Shankhavali city in the Kuru-Jangal area, but after Kamath's famous affliction to Bhagavan Parshvanath it became popular as Ahicchatra It finds mention in the travelogues of Huentseng as well as the Mahabharat According to Hemchandrasuri it was also known as Pratyagarth

Charak—Mendicants carrying Trident and wearing special garb like shorts, who moved in group They accepted only the first portion of meals as alms

Cheerak—Mendicants who dressed in rags thrown away on the road

Charmakhandak—Mendicants who used pieces of leather to make their dresses and other equipments

Bhikshand—Mendicants living on alms specially collected by others for them Also Buddhist monks

Pandurang—Devotees of Shiva, mendicants who covered their body with ash, ascetic followers of Goshalak (Nisheeth Churni), mendicants who did not consume milk products, considering them to be like meat (Udyotan Suri)

Gautam—Those who collected alms after showing tricks performed by trained oxen

Govrati—Mendicants who took care of cows as well as followed a vow to imitate the activities of a cow They would sit, stand, eat, etc when the cow did so

Grihidharmi—Those who considered the duties of a householder to be the highest code of conduct

Aviruddha—Those who considered humility and humble behaviour towards all living beings as their religion

Viruddha—Those who did not believe in life after death and opposed every other school of thought

Vriddha—Those who renounced the world in their old age, Shravaks belonging to the period of Rishabhdev who later turned Brahmans These were called Adilingi or Vriddha (old) because of their ancient lineage

Shravak—The Brahmans who listened the scriptures recited

Raktapat—A type of red clad mendicants

■■

सोलहवाँ अध्ययन : अमरकंका : आमुख

शीर्षक–अवरकका (दोवती)–अमरकका (द्रौपदी)–नाम विशेष। अमरकंका एक नगरी का नाम है तथा द्रौपदी एक महिला का। श्रीकृष्ण वासुदेव की बहन तथा पाँच पाडवो की पत्नी द्रौपदी चरित्र नायिका है अत इस अध्ययन का अपर नाम द्रौपदी है। द्रौपदी का अपहरण कर उसे अमरकका नाम की नगरी में ले जाया गया था अत इस अध्ययन का नाम अमरकंका है। इस अपेक्षाकृत विशाल कथा में अनेक उदाहरण हैं जिनके आधार पर कई महत्त्वपूर्ण भावों को प्रकट किया गया है। भय और स्वार्थवश मनुष्य बिना सोचे समझे ऐसे अकार्य कर बैठता है जो उसके अध पतन का कारण बनते है। सुविधाओं में लिप्त रहकर गुरु आज्ञा का पालन नहीं करता। दैहिक आकर्षण से आकाक्षाओ को मन में बसा लेता है। आत्मिक विकास की राह मे ऐसी अनेक बाधाओं–उनके प्रभावो तथा उनसे मुक्ति की बाते इस रोचक कथा मे समझाई गई हैं।

कथासार–चम्पानगरी मे तीन ब्राह्मण अपनी पत्नियो सहित रहते थे। ये सभी अनुक्रम से प्रतिदिन एक भाई के घर भोजन करते थे। एक दिन एक भाई की स्त्री नागश्री के यहाँ सब भोजन करने वाले थे। उसने प्रचुर भोजन सामग्री बनवाई तथा एक तुम्बे की खूब मसालेदार सब्जी स्वयं अपने हाथ से बनायी। चखने पर मालूम पडा वह तुम्बा खारा (कडवा) था। नागश्री ने वह सब्जी तो उठाकर रख दी और एक अन्य मीठे तुम्बे की सब्जी बना दी। सब लोगों ने पेट भर भोजन किया।

उस समय धर्मघोष नामक आचार्य अपने शिष्य समुदाय सहित चम्पानगरी में आये हुये थे। उनके एक शिष्य धर्मरुचि अपने मासखमण के पारणे के लिए उस दिन भिक्षा हेतु निकले। नागश्री ने उन्हे सहज-अवकर (कूडा डालने की उकरडी) जान उनके पात्र मे वह कड़वी सब्जी ऊंडेल दी। धर्मरुचि ने लौटकर प्राप्त भिक्षान्न अपने गुरु को दिखाया। गुरु ने पहचान लिया कि वह सब्जी विषैली है अत उन्होने धर्मरुचि से कहा कि वह सब्जी उचित स्थान देखकर वहाँ परठ दे और पुन अन्य भिक्षा लेकर आवे। धर्मरुचि ने उचित स्थान देख वहाँ एक बूँद सब्जी डाली। उस एक बूँद पर अनेक चींटियाँ आ गईं और वह सब्जी चखते ही तत्काल मर गईं। धर्मरुचि ने विचार किया कि जब एक बूँद से इतने जीव मर गये तो सारी सब्जी डाल देने से तो असख्य जीवों का हनन हो जायेगा। यह सोच उसने सारी सब्जी स्वय ही अपने उदर में डाल ली और उसकी तत्काल मृत्यु हो गई। यह समाचार धीरे-धीरे फैल गया और सभी नागश्री पर थू-थू करने लगे। उसके परिवार वालो ने भी उसे धिक्कार कर घर से निकाल दिया। उसे कोई आश्रय नहीं मिला और वह दु ख भोगती हुई मर गई। अनेक जन्मो तक उसने नरक की यातना भोगी।

अन्ततः वह चम्पानगरी में ही सागरदत्त नाम के वणिक के घर सुकुमालिका के रूप में जन्मी। उसका विवाह सागर नाम के श्रेष्ठि पुत्र से हुआ। किन्तु उसके शरीर का स्पर्श ही अग्नि ज्वाला जैसा दुःखदायी होने के कारण वह उसे छोड़ भागा। उसके पिता ने एक भिखारी से उसका पुनर्विवाह कर दिया। भिखारी भी उसका स्पर्श नहीं कर सका और वह भी उसे छोड़ भागा। फिर उसने दीक्षा ले ली और उग्र तपस्या करने लगी। पर उसके मन की वासना ज्यों की त्यों बनी रही। एक बार गुरु आज्ञा के विरुद्ध वह उद्यान में तपस्यारत थी। तब एक गणिका को पाँच व्यक्तियो के साथ भोग विलास करते देख उसके मन में संकल्प उठा कि इस तपस्या का कोई फल होता हो तो उसे भी इसी प्रकार भोग विलास का आनन्द मिले। इस प्रकार निदान कर लिया। उसकी साधना में धीरे-धीरे शिथिलता बढ़ने लगी। अन्तत मृत्यु प्राप्त कर वह पांचाल नरेश द्रुपद की पुत्री द्रौपदी के रूप में जन्मी।

द्रौपदी युवा हुई तो उसके पिता ने स्वयंवर रचा, जहाँ देश के सभी शूरवीर राजाओं को बुलाया गया। द्रौपदी ने पॉच पाण्डवों को एक स्थान पर बैठे देख पूर्वजन्म के संकल्प से प्रेरित हो उन पाँचो का वरण कर लिया। हस्तिनापुर मे राजा पाण्डु के महल में एक बार नारद मुनि का आगमन हुआ। द्रौपदी ने नारद को असयत मानकर उनका आदर सत्कार नहीं किया। नारद ने क्षुब्ध हो धातकीखड मे अमरकका नगरी के राजा पद्मनाभ को उकसाया। पद्मनाभ ने अपने एक मित्र देव की सहायता से द्रौपदी का अपहरण करवा लिया। द्रौपदी वहाँ राजा से अपने छुटकारे की अपेक्षा मे छह मास का समय मॉग तपस्यारत हो गई।

इधर पाण्डु राजा को द्रौपदी की कोई खोज नहीं मिली तो उन्होने कृष्ण वासुदेव से सहायता माँगी। कृष्ण वासुदेव पाण्डवो सहित अमरकंका पहुँचे और पद्मनाभ को ललकारा। युद्ध हुआ और पाण्डव पराजित हो गए। फिर कृष्ण ने अपनी शक्ति से पद्मनाभ को हरा दिया और द्रौपदी को छुडाकर पाण्डवों को सौप दिया।

लौटते समय पाण्डवो ने कृष्ण की शक्ति परीक्षा लेने के हेतु गंगा नदी पार कर नाव छुपा दी। कृष्ण ने अपने रथ को हाथ मे उठा तैरकर नदी पार की। उन्हे जब यह ज्ञात हुआ कि यह कार्य पाण्डवो ने उनकी शक्ति की परीक्षा हेतु किया था तो उन्होंने क्रुद्ध हो पाण्डवो को देश निकाला दे दिया।

पाण्डु राजा को यह पता चला तो उन्होने कुन्ती को कृष्ण के पास भेजा। तब कृष्ण ने कहा कि दक्षिण समुद्र के तट पर पाण्डव एक नया नगर–पाण्डु-मथुरा बसाकर रह सकते हैं। पाण्डव वहाँ रहने लगे। कालान्तर मे उन्होने द्रौपदी सहित दीक्षा ले ली और शत्रुंजय पर्वत पर जा कर मोक्ष प्राप्त किया। द्रौपदी ने भी स्वाध्याय व तपस्या द्वारा कर्मों को क्षीण किया और मरकर देवलोक मे जन्मी। वहाँ से महाविदेह मे जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करेगी।

SIXTEENTH CHAPTER : AMARKANKA : INTRODUCTION

Title—Avarkanka (Dovati)—Amarkanka (Draupadi)—names Amarkanka is the name of a city and Draupadi that of a woman Draupadi, the sister of Shri Krishna Vasudev and the wife of the five Pandavs is the central character in this story and so the alternative name of this chapter Draupadi was abducted and brought to the city of Amarkanka and so the name of this chapter In this comparatively long story many important subjects have been explained with the help of various examples Pushed by fear and selfishness, man behaves irrationally and indulges in many deplorable activities that cause his downfall Enslaved by comforts and conveniences he goes against the advice of his guru The attractions of carnal pleasures inspire perverted ambitions Various hurdles on the spiritual path and ways to overcome have been discussed in this gripping tale

Gist of the story—In Champa city lived three Brahmans with their wives They assembled for food at one or another brother's house in turn each day One day they were to eat at the house of the brother whose wife was Nagshri She had ample food cooked for the occasion and also herself cooked a curry of gourd enriched with plenty of spices When she tasted this curry she found that the gourd she used was bitter Nagshri put that curry aside and cooked afresh using a sweet gourd All the members of the family ate their fill

During the same period Acharya Dharmaghosh was staying in Champa city with his disciples One of his disciples, Dharmaruchi, went out to collect alms for breaking his one month fast Nagshri poured all the bitter curry into his pot considering it to be a waste-basket Dharmaruchi, on his return, showed his begging to his Guru who immediately knew that the curry was bitter and toxic He asked Dharmaruchi to throw it away at a proper place and go out to beg again Dharmaruchi went out and found a suitable spot and poured just a drop of the curry At once numerous ants swarmed and the moment they consumed that small quantity of toxic curry they died on the spot Dharmaruchi thought that when just one drop killed so many beings the pot full of curry would kill infinite beings He himself consumed the pot full of that toxic curry and died on the spot The news of his death spread like wildfire and every one started cursing Nagshri The members of her family also insulted her and threw her out of the house In absence of any refuge she roamed around and died suffering For numerous births she suffered the agony of hell

At last she was born as Sukumalikà, the daughter of merchant Sagardatt in Champa city She was married to Sagar, the son of another merchant As her touch was as painful as that of fire her husband abandoned her the very first night Her father once again married her to a beggar, but he also could not tolerate her touch and ran away In the end she turned into an ascetic and started harsh penance But her inner lust remained as it was. One day she was doing some penance in a garden against the order of her guru She saw a courtesan enjoying carnal pleasures with five men and was inspired to imagine that, if there was any benefit of the harsh penance she was doing, she wished to enjoy such pleasure during her next birth She turned this wish into an ambition Gradually she became lax in her discipline After her death she reincarnated as Draupadi, the daughter of King Drupad of Panchal

When Draupadi reached marriageable age her father organized a Svayamvar so that she could select a suitable match on her own He invited brave and glorious kings from all over the country When Draupadi saw five Pandav brothers sitting in a group she was inspired by her ambition from her last birth and she chose all the five brothers as her husbands Once the sage Narad visited King Pandu's palace in Hastinapur Considering Narad to be an indisciplined sage Draupadi did not extend him due courtesy and honour Narad was peeved and went and instigated King Padmanabh of Amarkanka city in Dhatkikhand continent the evil deed With the help of a friendly god Padmanabh abducted Draupadi In hope of liberation Draupadi managed to get a reprieve for six months from Padmanabh and started doing penance

In the meantime when king Pandu could not find Draupadi in spite of all his efforts he sought help from Krishna Vasudev Krishna took the Pandavs along to Amarkanka and challenged King Padmanabh Pandavs were defeated by Padmanabh in the ensuing battle Finally Krishna himself used his powers and defeated Padmanabh He got Draupadi released and brought her to the Pandavs

On the way back the Pandavs hid the boat on the bank of the Ganges to test Krishna's powers Krishna lifted his chariot in one hand and swam across the great river When he came to know about the mischief of Pandavs he got angry and ordered the exile of Pandavs.

When Pandu came to know of this he sent Kunti to pacify Krishna Krishna relented slightly and asked Pandavs to found a new town—Pandu Mathura—and live there The Pandavs did accordingly In a later part of their lives, the Pandavs and Draupadi became ascetics The Pandavs went to Shatrunjaya mountain and achieved liberation Draupadi also engaged in study and penance to shed Karmas After her death she reincarnated as a god and will attain liberation after reincarnating in Mahavideh area

■■

सोलसमं अज्झयणं : अवरकंका
सोलहवाँ अध्ययन : अमरकंका
SIXTEENTH CHAPTER : AVARKANKA - AMARKANKA

सूत्र १ : जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भंते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र १ जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया-भंते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो सोलहवे ज्ञात अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ कहा है ?

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the sixteenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा णाम णयरी होत्था। तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तर पुरच्छिमे दिसीभाए सुभूमिभागे णामं उज्जाणे होत्था।

सूत्र २ : सुधर्मास्वामी ने समाधान दिया-हे जम्बू ! काल के उस भाग मे चम्पा नाम की नगरी थी जिसके बाहर उत्तर-पूर्व दिशा में सुभूमि भाग नामक उद्यान था।

2. Sudharma Swami narrated—Jambu! During that period of time there was a town named Champa Outside the town in the north-eastern direction there was a garden named Subhumibhag

सूत्र ३ तत्थ णं चपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, त जहा-सोमे, सोमदत्ते, सोमभूई, अड्ढा जाव रिउव्वेय सुपरिनिट्ठिया।

तेसि ण माहणाणं तो भारियाओ होत्था, त जहा-नागसिरी, भूयसिरी, जक्खसिरी। सुकुमाल-पाणिपायाओ जाव तेसि ण माहणाण इट्ठाओ, विपुले माणुस्सए .कामभोगे पच्चणुभवमाणीओ विहरंति।

सूत्र ३ उस चम्पा नगरी मे सोम, सोमदत्त और सोमभूति नाम के तीन ब्राह्मण भाई रहते थे। वे धनाढ्य थे और ऋगृवेद आदि वेद शास्त्र तथा अन्य ब्राह्मण ग्रथों के पारगत विद्वान् भी थे।

उन तीनों भाइयो की पत्नियो के नाम थे-नागश्री, भूतश्री और यक्षश्री। वे सुन्दर और सुकुमार थी तथा अपने पतियो को प्रिय थी। मनुष्योचित कामभोग भोगती वे अपना सुखमय जीवन व्यतीत करती थी।

3. In Champa lived three Brahman brothers named Som, Somdatt, and Sombhuti They were rich as well as scholars of Vedas and other Brahman scriptures.

The names of the wives of these brothers were Naagshri, Bhootshri, and Yajnashri respectively. They were beautiful and delicate and were loved by their respective husbands. They led a happy life enjoying all human pleasures.

सूत्र ४ : तए णं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ सहियाणं समुवागयाणं, जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विपुले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं परिभाएउं, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेउं उवक्खडेउं परिभुंजेमाणाणं विहरित्तए।

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता परिभुंजेमाणा विहरंति।

सूत्र ४ : एक बार जब वे तीनो भाई साथ बैठे तो उनके बीच इसप्रकार बातचीत हुई–"देवानुप्रियो ! हमारे पास प्रचुर धन-वैभव आदि विद्यमान है जो सात पीढ़ियों तक देने, भोगने और बाँटने के लिये यथेष्ट है। अतः हे देवानुप्रियो ! हम लोगों के लिए नित्य बारी-बारी से एक-दूसरे के घर बहुत-सी भोजन सामग्री बनवाकर एक साथ बैठकर खाना अच्छा होगा।"

तीनों बंधु इस बात पर सहमत हो गये और दूसरे दिन से ही वे एक दूसरे के घरों में भोजन आदि सामग्री बनवाकर साथ-साथ भोजन करने लगे।

4. One day when the three brothers were sitting together they talked, "Beloved of gods! We have great wealth and grandeur, enough to last seven generations of use as well as distribution So we should prepare rich food and enjoy it together each day in turn at one brother's residence."

All three agreed to the plan and started acting on it the very next day

कटु तुंबे का शाक

सूत्र ५ : तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था। तए णं सा नागसिरी विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ, उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहूसंभार-संजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ, एगं बिंदुयं करयलंसि आसाइए, तं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी–'धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए, जीए णं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए सुबहुदव्वक्खए नेहक्खए य कए।

सूत्र ५ : एक दिन जब नागश्री ब्राह्मणी की बारी आई तो उसने प्रचुर भोजन सामग्री बनवाई। साथ ही उसने एक बड़े से रस भरे तुबे की बहुत से मसाले भरकर तेल में छौंककर सब्जी तैयार की। उसने इस सब्जी के रस की एक बूँद हथेली में लेकर चखी तो पता लगा कि वह खारी, कड़वी, अखाद्य और विष जैसी है। यह समझते ही वह मन ही मन अपने आपको धिक्कारने लगी– "धिक्कार है मुझ अधन्या, पुण्यहीना, भाग्यहीना, अति अभागिनी निंबोली जैसी अनादरणीय नागश्री को जिसने यह रसदार कड़वे तुबे की अनेक मसाले और तेल भरी सब्जी तैयार की। इसके लिए ढेर सारा सामान बिगाडा और तेल का सत्यानाश कर डाला।

CURRY OF THE BITTER GOURD

5. One day, on her turn, Naagshri got elaborate meals cooked in large quantity She also cooked herself curry of a large juicy gourd using liberal quantities of spices and oil When she took a drop of this curry in her palm and tasted it she found that it was bitter, pungent, and repugnant like poison Realizing her mistake she cursed herself, "Curse me, the worthless, virtueless, ill-fated, unlucky, and as hateful as the bitter margosa-berry, who has cooked this bitter gourd using lots of spices and oil I have wasted a lot of time and material including plenty of oil

सूत्र ६ : तं जइ णं मम जाउयाओ जाणिस्संति, तो ण मम खिंसिस्सति, त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणंति, ताव मम सेयं एय सालइय तित्तालाउं बहुसंभारनेहकड एगते गोवेत्तए, अन्नं सालइअ महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए। एवं संपेहेइ, सपेहित्ता त सालइय जाव गोवेइ, अन्नं सालइयं महुरालाउय उवक्खडेइ।

सूत्र ६ "यदि मेरी देवरानियाँ यह सब जानेगी तो मेरी निन्दा करेगी। इससे पूर्व कि वे जान पाएँ, यही उचित होगा कि इस तुबे की सब्जी को कही छुपा दिया जाय और दूसरे मीठे तुंबे की सब्जी इसी प्रकार तेल-मसाले भरकर पका ली जाय।" यह सोचकर नागश्री ने कडुआ तुबा छुपा दिया और नए मीठे तुबे की सब्जी पका ली।

6. "If my Devaranis (wives of younger brothers of the husband) come to know of it they will criticize me It would be better if I hide this bitter curry and cook afresh, using a sweet gourd and employing the same recipe, before they come to know of it" And she hid the bitter curry and cooked afresh

सूत्र ७ : उवक्खडेत्ता तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाण तं विपुलं असणं पाणं खाइम साइमं परिवेसइ। तए णं ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था। तए णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असण पाणं खाइम साइमं आहारेंति, आहारित्ता जेणेव सयाइं गेहाइ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ।

सूत्र ७ · यथासमय वे ब्राह्मण बंधु स्नानकर सुखासन पर बैठे। उन्हें यथेष्ट भोजन परोसा गया। भोजन के बाद आचमन कर स्वच्छ हो, हाथ-मुँह पोंछकर वे अपने-अपने काम में लग गये। तत्पश्चात् स्नानादि कर वस्त्राभूषण पहन विभूषित हुई ब्राह्मणियों ने भी पेट भर भोजन किया और अपने-अपने घर लौटकर अपने कार्यों में जुट गईं।

7. At the usual hour the Brahman brothers sat down to eat, after taking their bath. They were served liberal quantities of various dishes. After meals they washed their hands and mouths and resumed their normal routine. After that, the ladies also took bath, got dressed up and ate their fill. They dispersed and resumed their normal activities

स्थविर-आगमन

सूत्र ८ : तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा णामं नयरी, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरंति। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया।

सूत्र ८ · काल के इस भाग मे धर्मघोष नाम के स्थविर अपने विशाल शिष्य परिवार के साथ चम्पा नगरी के सुभूमि भाग उद्यान मे पधारे। उचित उपाश्रय की याचना कर वहा ठहरे। परिषद निकली और धर्मोपदेश सुन लौट गई।

ARRIVAL OF THE ASCETIC

8. During that period of time the great ascetic Sthavir Dharmaghosh arrived, with a large family of his disciples, in the Subhumibhag garden outside Champa city He stayed there after seeking a suitable place A delegation of citizens came and after his discourse returned back.

सूत्र ९ · तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नामं अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ। तए णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, करित्ता बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेरं आपुच्छइ, जाव चंपाए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे।

सूत्र ९ धर्मघोष स्थविर के एक शिष्य थे धर्मरुचि अनगार। वे उदार-उग्र तपस्वी थे और तेजोलेश्या के धारक भी। वे एक-एक मास का तप करते रहते थे। उस दिन उनके मासखमण के पारणे का दिन था। उन्होने पहली पौरुषी में स्वाध्याय किया फिर क्रमश· ध्यानादि किये (विस्तृत विवरण गौतम स्वामी के समान)। तीसरे प्रहर में उन्होंने पात्रों का प्रतिलेखन किया और पात्र लेकर धर्मघोष स्थविर से आज्ञा प्राप्त कर भिक्षाटन के लिए निकले। चम्पानगरी के उच्च, नीच व मध्यम कुलों में घूमते हुए वे नागश्री ब्राह्मणी के घर में आए।

9. Sthavır Dharmaghosh had a dıscıple named ascetıc Dharmaruchı He ındulged in great and rıgorous penances and possessed the fire-power, Tejoleshya He observed the penance of month long fast frequently It was the day of breakıng a month long fast Durıng the first quarter of the day he medıtated and after that contınued hıs daıly routıne of studıes etc (as Gautam Swamı dıd) Durıng the thırd quarter of the day he cleaned hıs beggıng bowls Wıth hıs bowls he went to Sthavır Dharmaghosh and after seekıng hıs permıssıon went out to collect alms Goıng from one house to other of the rıch, mıddle class, and lower class cıtızens of Champa he arrıved at the house of Naagshrı

कटु तुंबे का दान

सूत्र १० · तए ण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाण पासइ, पासित्ता तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुसभारसजुत्त णेहावगाढ निसिरणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्तकडुय च बहुनेह धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ।

सूत्र १० नागश्री ने जब धर्मरुचि अनगार को आते देखा तो उस कडुए-खराब तुबे के साग से छुटकारा पाने का अवसर जान वह प्रसन्न हुई। खडी होकर रसोई मे गई और सारी की सारी कडुवी सब्जी लाकर अनगार के पात्र मे डाल दी।

GIVING AWAY THE BITTER GOURD

10 When Naagshrı saw Ascetıc Dharmaruchı approachıng she was pleased to find the opportunıty to get rıd of the bıtter gourd curry She fetched the curry from the kıtchen and poured ıt ınto the ascetıc's bowl

सूत्र ११ तए ण से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता चपाए नगरीए मज्झमज्झेण पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते इरियावहियं पडिक्कमइ, अन्नपाण पडिलेहेइ अन्नपाण करयलंसि पडिदसेइ।

सूत्र ११ 'मेरे लिए यह आहार पर्याप्त है' यह जानकर धर्मरुचि अनगार नागश्री के घर से निकलकर चम्पानगरी मे होते हुए सुभूमिभाग उद्यान मे लौटे। वहाँ पहुँचकर धर्मघोष स्थविर के निकट ईर्यापथ का प्रतिक्रमण किया और अन्न-पानी का प्रतिलेखन कर गुरु को दिखलाया।

11 "Thıs much food ıs enough for me," thınkıng thus Ascetıc Dharmaruchı came out of the house of Naagshrı and crossıng the town returned to Subhumıbhag garden He went to Sthavır Dharmaghosh, dıd the rıtual

review of his movement (Iryapathic Pratikraman), arranged the food he had brought and showed it to his guru

सूत्र १२ : तए णं ते धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स नेहावगाढस्स गंधेण अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ, तित्तगं खार-कडुयं अखज्जं अभोज्ज विसभूय जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एव वयासी-'जइ ण तुमं देवाणुप्पिया ! एयं सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, त मा ण तुमं देवाणुप्पिया ! इम सालइय जाव आहारेसि, मा ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। त गच्छ ण तुमं देवाणुप्पिया ! इम सालइय एगतमणावाए अचित्ते थडिले परिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्न फासुय एसणिज्ज असण पाणं खाइमं साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि।'

सूत्र १२ धर्मघोष स्थविर उस शाक में से निकलती गध से उद्विग्न और विचलित हो गए। उसमे से एक बूँद हथेली मे लेकर चखा। उस सब्जी को तीखी, खारी, कडुवी और विष के समान अखाद्य जानकर वे बोले-"देवानुप्रिय ! यदि तुम यह तुवे की सब्जी खाओगे तो तुम्हारी अकाल मृत्यु हो जायेगी। अत तुम यह सब्जी मत खाना, ऐसा न हो कि तुम खा लो और तुम्हारे प्राणो का असमय ही अन्त हो जाए। हे देवानुप्रिय ! तुम जाओ और किसी एकान्त, आवागमन रहित, उचित एव अचित्त भूमि (जहा जीव हिसा की सभावना न हो) मे सावधानी पूर्वक परठ दो (डाल दो) और पुन दूसरा प्रासुक और एषणीय आहार ग्रहण करो और वही खाओ।"

12 Sthavir Dharmaghosh was disturbed by the repulsive smell emanating from the curry He took a drop and tasted it Realizing that it was hot, pungent, bitter, and repugnant like poison, he said, "Beloved of gods! If you eat this gourd curry you will die instantly As such you should not eat this curry Beloved of gods! Go, search for an isolated, unfrequented, proper and life-less spot (where there are no insects, vegetation or other form of life), where there is no chance of destruction of life, and carefully pour out this curry Collect other suitable food and eat that only"

स्वशरीर में प्रवेश

सूत्र १३ तए ण से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेण एव वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्लं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एग बिदुग गहेइ गहित्ता थंडिलंसि निसिरइ।

सूत्र १३ : धर्मघोष स्थविर की यह बात सुनकर धर्मरुचि अनगार वहाँ से निकले और सुभूमि भाग उद्यान से कुछ दूर एक अचित्त (जीव रहित) स्थान को देख-भाल कर साग की एक बूँद वहाँ डाली।

POURING INTO HIS OWN BODY

13. Getting these instructions from Sthavir Dharmaghosh, ascetic Dharmaruchi came out of the garden and selected a suitable spot in the vicinity of the garden He then poured just a drop of the curry and watched.

सूत्र १४ : तए णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं बहूणि पिपीलिगा सहस्साणि पाइब्भूयाइं। जा जहा य णं पिपीलिगा आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ।

तए णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पिज्जत्था-'जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइ पिपीलिगा सहस्साइं ववरोविज्जंति, तं जई णं अहं एयं सालइयं थंडिल्लंसि सव्वं निसिरामि, तए णं बहूणं पाणाण भूआणं जीवाणं सत्ताण वहकारण भविस्सइ। तं सेय खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउ' त्ति कट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता मुहपोत्तियं पडिलेहइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, पमज्जिता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ।

सूत्र १४ · उस कडवे साग की गंध से आकर्षित हो हजारो चींटियाँ वहाँ आ गईं। जिस-जिस चींटी ने वह साग खाया वह तत्काल वहीं मर गई।

यह देख धर्मरुचि अनगार के मन मे विचार आया-'जब इस साग की एक बूँद डालने से हज़ारों चींटियॉ मर गईं तो मैं यदि यह पूरा का पूरा साग इस भूमि पर डाल दूँगा तो अनेको प्राणियो, भूतों, जीवों व सत्वो के नाश का कारण उपस्थित हो जायेगा। अत· अच्छा यही होगा कि यह साग मैं स्वय ही खा जाऊँ। ऐसा करने से इसका प्रभाव मेरे शरीर पर होकर ही समाप्त हो जायेगा।'' ऐसा विचार कर अनगार ने मुँहपत्ती की प्रतिलेखना की और फिर मस्तक सहित पूरे शरीर का परिमार्जन किया। तत्पश्चात् वह कटु सब्जी बिना स्वाद लिए ही, जिस प्रकार सांप सीधा बिल में प्रवेश कर जाता है उसी प्रकार, निगल कर सीधे शरीर के कोठे-उदर में डाल दी।

14. Attracted by the smell of the bitter curry thousands of ants swarmed in. Whichever ant consumed that curry died on the spot

When Ascetic Dharmaruchi saw all this he thought, "When just a drop of this curry caused death of thousands of ants, if I throw away all this curry on the ground it would cause death of infinite number of living beings and life forms. It would be better if I myself eat all this curry All its toxic effect will end after harming my body alone" And the ascetic did the ritual of inspecting the Muhapatti (the mouth-covering handkerchief used by Jain ascetics for various rituals) and cleaning of the body from head to feet After this he gulped all the curry without even tasting it, exactly as a snake quickly slithers into its hole

20

चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

दुर्भावों से दिया : कटु फल पाया

चित्र २०

चम्पानगरी निवासी सोम, सोमदत्त एव सोमभूति नाम के तीनो भाइयो को जब यह पता चला कि नागश्री (सोम की पत्नी) ने मासखमण तपस्वी धर्मरुचि अणगार को जहरीले तुम्ब का आहार दे दिया जिस कारण तपस्वी अकाल मे ही काल धर्म को प्राप्त हो गये तब उन्होंने नागश्री की बहुत कठोर वचनो स ताडना, तर्जना व भर्त्सना की तथा उसे धक्के देकर घर से बाहर निकाल दिया।

नागश्री विक्षिप्त जैसी होकर चम्पानगरी के चौराहा, तिराहा आदि पर भटकती है। उसके डरावने विकराल रूप को देखकर कुत्ते भौंकते रहते, लोग अगुली दिखाकर कहते-"यह वही दुष्ट दुर्भागिनी पापात्मा है, जिसने तपस्वी अणगार को जहरीला तुम्बा बहराया।" वह गली-गली मे टुकड मॉगती भटकती हुई अनेक महारोगो का शिकार हो गयी। (सोलहवाँ अध्ययन)

AS YOU SOW SO SHALL YOU REAP

ILLUSTRATION . 20

When the Brahman brothers Som, Somdatt and Sombhuti came to know that Som's wife Naagshri gave the bitter and toxic gourd curry to ascetic Dharmaruchi for breaking his one month long fast, thus causing his untimely death, they became very angry They insulted, deplored, and rejected her And at last cursing and shouting they kicked her out of their house

Exiled from home, Naagshri drifted to various crossings, (etc) of Champa city Seeing her terrifying appearance dogs barked after her People on the streets pointed at her, "This is that evil woman who gave the poisonous gourd to a noble soul and caused his death " Drifting from one place to another and living on leftovers thrown outside houses she caught numerous terrible diseases **(CHAPTER - 16)**

यह परिचय चित्र नम्बर १९ का समझें। THIS EXPLANATION IS FOR ILLUSTRATION NO 19

सूत्र १५ : तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा।

सूत्र १५ : तुबे का वह साग खाते ही धर्मरुचि के शरीर में मुहूर्त भर में ही उसका प्रभाव व्याप्त हो गया। उनके शरीर मे उत्कट और दुस्सह वेदना उत्पन्न हो गई।

15. Within moments of consuming, the toxic effect of the curry spread throughout his body. He started suffering intolerable agony

सूत्र १६ : तए णं धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कार-परक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु आयारभंडग एगंते ठवेइ, ठवित्ता थंडिल्लं पडिलेहइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारगं संथारेइ संथारित्ता दब्भसथारगं दुरूहइ दुरूहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

नमोऽत्थु ण अरहंताणं जाव सपत्ताणं, 'नमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्वि पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिं पि णं अहं तेसि चेव भगवंताणं अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जावजीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए।

सूत्र १६ क्रमश धर्मरुचि अनगार अस्थिर, बलहीन, वीर्यरहित (उठने बैठने की शक्ति रहित), पौरुषहीन तथा पराक्रमहीन हो गए। अब यह शरीर धारण नही किया जा सकता–यह जानकर उन्होने अपने आहार के पात्र एक ओर रख दिए। फिर बैठने के स्थान को साफ कर घास का आसन बिछाया और उस पर पूर्वाभिमुख होकर पर्यंकासन में बैठ गए। दोनो हाथ जोड़ मस्तक के निकट घुमा अजलिबद्ध कर बोले–

"अरिहंतो एव सिद्धो आदि को मेरा नमस्कार हो। मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक धर्मघोष स्थविर को नमस्कार हो। मैने पहले भी धर्मघोष स्थविर के पास प्राणातिपात विरमण आदि पाँच महाव्रत धारण किये थे। इस समय भी उन्हीं भगवतो की साक्षी में मैं पुनः वे ही व्रत धारण करता हूँ। साथ ही शेष जीवन पर्यन्त अर्थात् अन्तिम सास तक अपने इस शरीर का भी परित्याग करता हूँ।" इस प्रकार उच्चारण कर उन्होंने आलोचना और प्रतिक्रमण कर समाधि मृत्यु का वरण कर लिया।

16. Slowly Ascetic Dharmaruchi became infirm, weak, feeble, wasted and emaciated. Realizing that the end was near he placed his begging bowls on one side. He wiped the ground clean, spread his grass-mattress and sat down in the Paryankasan (a yogic posture) Joining his palms and raising them to his forehead he uttered—

"I bow and convey my reverence to the worthy ones (Arhats), the supreme ones (Bhagavans), (the panegyric by the king of gods or the Shakrastav) My reverence also to my preceptor, Sthavir Dharmaghosh Earlier, before Sthavir Dharmaghosh, I took the five great vows including refraining from hurting life Now I once again take the same vows in the name of those Arihants I also take an oath to remain detached from my body till my last breath " Saying thus, and after doing the last critical review (Alochana Pratikraman), he took the ultimate vow and embraced the meditative death

गुरु की चिन्ता

सूत्र १७ तए ण ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिर गय जाणित्ता समणे निग्गथे सद्दावेति सद्दावित्ता एव वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स मासखमणपारणगसि सालाइयम्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरावेइ, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेह।'

सूत्र १७ उधर स्थविर धर्मघोष ने यह जानकर कि धर्मरुचि अनगार को गये बहुत देर हो गई है अन्य निर्ग्रन्थ श्रमणो को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार को मासखमण के पारणे मे कडुवा तुबे का साग मिला था। वे उसे उचित स्थान पर उचित रीति से परठने के लिए गए थे। उन्हे गये बहुत समय बीत गया है अत तुम जाओ और चारो ओर उनकी खोज करो।"

ANXIETY OF THE GURU

17. On the other hand, when Sthavir Dharmaghosh realized that an unusually long time had passed since ascetic Dharmaruchi had left, he called other ascetics and said, 'Ascetic Dharmaruchi had got bitter gourd curry for breaking his fast He had gone to throw it away at some proper place A long time has passed since he went As such, you should go and search for him "

सूत्र १८ तए ण ते समणा निग्गथा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाण थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थडिल्ले तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासति, पासित्ता 'हा हा ! अहो अकज्ज' मिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग करेति, करित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स आयारभडग गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी–

एवं खलु अम्हे तुब्भं अतियाओ पडिनिक्खमाणो पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणा जेणेव थडिल्ले

तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता जाव इहं हव्वमागया। तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे, इमे से आयारभंडए।"

सूत्र १८ . तब वे श्रमण अपने गुरु का आदेश स्वीकार कर वहाँ से निकले और चारो ओर धर्मरुचि अनगार को ढूढते हुए उस स्थान पर आए जहाँ वह स्थडिल भूमि थी। वे क्या देखते है कि धर्मरुचि अनगार का निश्चेष्ट, निष्प्राण और निर्जीव शरीर वहाँ पड़ा हुआ है। उनके मुँह से सहसा निकल पडा–"हा ! हा ! अहो अकार्य हो गया !" और तब उन्होने धर्मरुचि मुनि के परिनिर्वाण सम्बन्धी कायोत्सर्ग किया, उनके पात्रादि उठाये और लौटकर धर्मघोष स्थविर के पास पहुँचे। गमनागमन का प्रतिक्रमण करके बोले–

"आपका आदेश पाकर हम यहाँ से निकले और सुभूमिभाग उद्यान के चारो ओर खोजते-खोजते स्थडिल भूमि तक गये। भते ! धर्मरुचि अनगार कालधर्म को प्राप्त हो गये है यह जानकर हम यथाशीघ्र लौट आये है। ये उनके पात्रादि है।"

18. The ascetics accepted the order of their guru and set out in search of ascetic Dharmaruchi When at last they arrived at that spot they saw that the breathless, lifeless, dead body of ascetic Dharmaruchi was lying there Taken aback they uttered, "Oh! What a tragedy!" Regaining their composure they performed the ritual post death meditation, collected the bowls, etc and returned to Sthavir Dharmaghosh After the ritual movement review (Gamanagaman Pratikraman) they said —

"According to your instructions we went out and searched all around the Subhumibhag garden We reached the forlorn spot suitable for throwing waste Bhante! We saw that ascetic Dharmaruchi had breathed his last We immediately returned back These are his belongings "

सूत्र १९ तए ण ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति, गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेति, सद्दावित्ता एव वयासी–'एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुई नामं अणगारे पगइ भद्दए जाव विणीए मासमासेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तए णं सा नागसिरी माहणी जाव निसिरइ।

सूत्र १९ · तत्पश्चात् स्थविर धर्मघोष ने पूर्वश्रुत का उपयोग लगाया–ध्यान किया, और श्रमण-श्रमणियो को बुलाकर कहा–"हे आर्यो ! निश्चय ही मेरा शिष्य धर्मरुचि नामक अनगार स्वभाव से भद्र व विनीत था। वह मासखमण की तपस्या कर रहा था। पारणे हेतु भिक्षा के लिए वह नागश्री ब्राह्मणी के घर गया। ब्राह्मणी ने विष जैसी कडुवी तुबे की सब्जी उसके पात्र में उंडेल दी।

(धर्मरुचि अनगार ने उसे अपने लिए पर्याप्त आहार समझा। इत्यादि स्थविर धर्मघोष ने मृत्यु के भय से मुक्त हो वह भोजन खाने आदि की पूरी घटना सुना दी।)

19. Sthavir Dharmaghosh used his knowledge of the scriptures and meditated. After that he called all his disciples and said, "Aryas! Indeed my disciple ascetic Dharmaruchi was sober and humble He was observing a month long fast To collect alms for breakfast he went to the house of Brahmani Naagshri She poured the bitter and toxic gourd curry in his bowl (and Sthavir Dharmaghosh narrated the whole story in detail)

सूत्र २० : से णं धम्मरुइ अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोस तेत्तीस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। से ण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

सूत्र २० : वे (स्थविर) आगे बोले–"अनेक वर्षों तक श्रमण जीवन पालन करके अन्त समय में आलोचना प्रतिक्रमण कर समाधि मरण के बाद धर्मरुचि अनगार ने सौधर्म आदि देवलोको मे ऊपर सर्वार्थ सिद्ध नामक महाविमान में देव रूप मे जन्म लिया है। वहाँ जघन्य-उत्कृष्ट के भेद से रहित सभी देवो की आयु तेतीस सागरोपम बताई है। धर्मरुचि देव यह तेतीस सागरोपम की आयु पूर्ण कर महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होंगे और सिद्धि को प्राप्त करेगे।"

20. He added, "At the end of a long ascetic life after doing the last critical review, he took the ultimate vow and embraced the meditative death He has reincarnated as a god in the Sarvarth Siddh dimension that is above the other dimensions of gods like the Saudharm. The life-span in that dimension is said to be uniformly thirty three Sagaropam God Dharmaruchi, after completing his life span as a god, will reincarnate in the Mahavideh area and attain liberation "

नागश्री की आलोचना

सूत्र २१ 'त धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएण जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए।'

सूत्र २१ "हे आर्यों ! अधन्य, अपुण्य आदि और निबोली के जैसी कड़ुवी उस नागश्री ब्राह्मणी को धिक्कार है जिसने ऐसे साधु पुरुष धर्मरुचि अनगार को कटु तुबे की सब्जी मासखमण के पारणे में बहराकर असमय ही मार डाला।"

CRITICISMS OF NAAGSHRI

21. "Aryas! Curse that worthless, virtueless, (etc) Naagshri who is as hateful as the bitter margosa-berry, for she gave the bitter and toxic gourd

curry to such a noble soul as ascetic Dharmaruchi and caused his untimely death."

सूत्र २२ : तए ण ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडग-तिग जाव बहुजणस्स एवमाइक्खंति-'धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोविए।'

सूत्र २२ स्थविर आचार्य के मुख से यह वृतान्त सुन-समझकर उन श्रमणों ने चम्पानगरी के शृगाटक आदि स्थानो पर अनेक लोगो के सामने इस कथन को दोहराया-"धिक्कार है उस नागश्री को, जिसने इस प्रकार के साधुरूपधारी, मासखमण तप करने वाले, धर्मरुचि अनगार को कटुक तुंबे का साग देकर मार डाला।"

22. After hearing all these details those ascetics went into the city and repeated this statement before many people on crossings, roads and other such public places in Champa—"Curse that worthless, virtueless, (etc.) Naagshri who is as hateful as the bitter margosa-berry, for she gave the bitter and toxic gourd curry to such a noble soul as ascetic Dharmaruchi and caused his untimely death."

सूत्र २३ : तए ण तेसिं समणाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ-'धिरत्थु ण नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए।'

सूत्र २३ : श्रमणो से यह सब वृत्तान्त सुन-समझकर लोग परस्पर चर्चा करने लगे-"धिक्कार है नागश्री ब्राह्मणी को जिसने असमय ही एक श्रेष्ठ मुनि को मार डाला।"

23. When the citizens heard the incident it became the talk of the town and every one repeated—"Curse that Naagshri Brahmani who caused the untimely death of a great ascetic."

नागश्री की दुर्दशा

सूत्र २४ : तए णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णागसिरिं माहणि एवं वयासी-

'हं भो नागसिरी ! अपत्थियपत्थिए दुरंतपतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभग-णिंबोलियाए, जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव ववरोविए।'

उच्चावएहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहि उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति, उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं णिच्छोडेंति, तज्जेंति, तालेंति, तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति।

सूत्र २४ : तब ब्राह्मण सोम, सोमदत्त तथा सोमभूति अनेक चम्पावासियो के मुख से यह समाचार सुन-समझकर कुपित हुए, रुष्ट हुए और क्रोध से जल उठे। वे नागश्री के पास गए और बोले-" अरी नागश्री ! अवाछित की वाछा करने वाली, दुष्ट और अशुभ लक्षणों वाली। अशुभ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को जन्मी हुई। अधन्य, अपुण्य, भाग्यहीन, अभागिनी। अत्यन्त दुर्भागिनी और निबोली के समान कटु, तुझे धिक्कार है कि तूने एक श्रेष्ठ साधु रूप श्रमण को मासखमण के पारणे मे विषैला साग बहराकर मार डाला।"

इस प्रकार उन ब्राह्मणो ने ऊँचे-नीचे आक्रोश-वचन कहकर आक्रोश प्रकट किया, ऊँचे-नीचे अपमान-जनक वचन कहकर उसे अपमानित किया, ऊँचे-नीचे भर्त्सना-वचन कहकर भर्त्सना की, और ऊँचे-नीचे तिरस्कार वचन कहकर उसका तिरस्कार किया और अन्त मे उसकी तर्जना और ताडना कर अपने घर से निकाल दिया।

THE PLIGHT OF NAAGSHRI

24. Brahmans Som, Somdatt, and Sombhuti also heard all this from many citizens of Champa They became very angry They went to Naagshri and said, "O deplorable Naagshri! O desirous of the undesired! You are infested with the evil and ominous signs like the one born on the fourteenth night of the dark half of the month Curse you, O worthless, virtueless, (etc) Naagshri, you are as hateful as the bitter margosa-berry For you gave the bitter and toxic gourd curry to such a noble soul as ascetic Dharmaruchi for breaking his month long fast and caused his untimely death "

Those Brahmans expressed their anger by uttering angry words in low and high pitched voice In the same manner they insulted, deplored, and rejected her And at last cursing and shouting they kicked her out of their house

सूत्र २५ : तए ण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चपाए नयरीए सिघाडग-तियचउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणेण हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाण वा निलयं वा अलभमाणी दडी-खंडनिवसना खडमल्लग-खडघडग-हत्थगया फुट्ट-हडाहड-सीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेह गेहेणं देहं-बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ।

सूत्र २५ अपने घर से निकाली हुई वह नागश्री चम्पानगरी के शृगाटक, तिराहे, चौक, चबूतरे, चौराहे, महापथ आदि स्थानो से निकली तो सभी स्थानो पर अनेक जनो ने उसकी अवहेलना की, बुराई की, निदा की, गर्हा की, तर्जना की, व्यथा पहुँचाई, धिक्कारा और थूका। यहाँ तक कि वह न तो कही ठहरने का ठिकाना पा सकी और न रहने का स्थान। अतत टुकडे-टुकडे साधे हुए वस्त्र
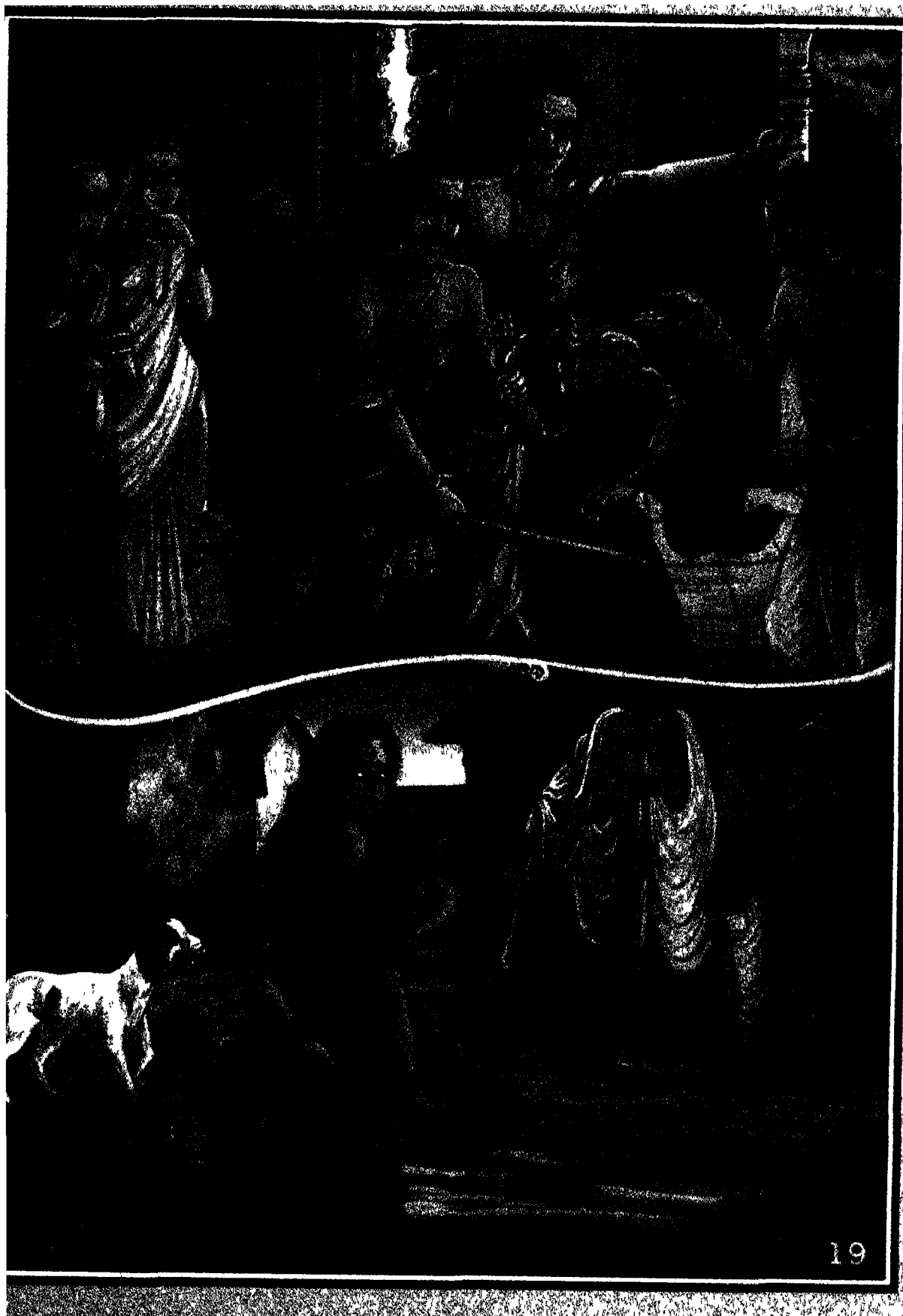
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

प्राणि-रक्षा के निमित्त प्राण त्याग

चित्र : १९

१. गुरु आज्ञा पाकर धर्मरुचि अणगार नगर के बाहर स्थण्डिल भूमि पर पहुँचे। वहाँ एकान्त जीवरहित निर्दोष स्थान देखकर उस घी मसालेदार भोजन की एक बूँद मिट्टी पर डाली। उसकी तेज गंध से हजारों चींटियाँ वहाँ आ गईं। जैसे ही चींटियों ने वह बूँद चखी कि वे वहीं मर गईं।

चींटियों को मरा देखकर मुनि सोचने लगते है–"जब एक बूँद से ही हजारों चींटियाँ मर गईं तो यदि यह पूरा साग यहाँ डाल दूँगा तो न जाने कितने जीवों/सत्त्वों का विनाश होगा ?" प्राणि-रक्षा की अनुकम्पा भावना से मुनि का हृदय द्रवित हो उठा और पूरा साग अपने उदर में डाल लिया।

२. उसका विषैला प्रभाव शरीर पर हुआ। असह्य वेदना उठी। अन्त में अरिहंत भगवान को नमस्कार करते हुए समाधि भाव के साथ शरीर त्यागा। (सोलहवाँ अध्ययन)

SACRIFICING ONESELF TO SAVE OTHERS

ILLUSTRATION 19

1. After getting instructions from his guru, ascetic Dharmaruchi went out of the town and selected a suitable spot. He then poured just a drop of the curry and watched. Drawn by the strong smell thousands of ants swarmed in. Whichever ant consumed that curry died on the spot.

When the ascetic saw all this he thought, "When just a drop of this curry causes the death of thousands of ants, if I throw away all this curry on the ground it would kill an infinite number of living beings and life forms." The compassionate ascetic was deeply moved.

2. The compassionate ascetic gulped all the curry. The toxic effect of the curry spread throughout his body. He started suffering intolerable agony. He paid homage to Arhats and Bhagavans and embraced the meditative death.

(CHAPTER - 16)

यह परिचय चित्र नम्बर २० का समझें। THIS EXPLANATION IS FOR ILLUSTRATION NO. 20

पहने, हाथों में सिकोरे और हांडी के ठीकरे लिए, सर पर बिखरे बाल लिए और अपने पीछे और ऊपर भनभनाती मक्खियों का झुण्ड लिए वह नागश्री घर से बाहर फेंके टुकड़ों से पेट पालती भटकने लगी।

25. Exiled from home, Naagshri drifted to various crossings, trisections, squares, platforms, roads, etc and everywhere all people denounced, deplored, criticized, censured, condemned, hurt, and cursed her, they also spit on her They rejected her to the extent that she found no place to live or even stay At last, dressed in rags (made by stitching together small pieces of cloth), with broken pieces of earthen ware in her hands, and flies hovering over her, she drifted from one place to another living on leftovers thrown outside houses

सूत्र २६ तए ण तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवसि चेव सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा–सासे कासे जोणिसूले जाव कोढे। तए णं नागसिरी माहणी सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना।

सूत्र २६ ब्राह्मणी नागश्री को कालान्तर मे उसी जीवन मे श्वास, कास, योनिशूल, कुष्ट आदि सोलह रोगातक उत्पन्न हुए। इन रोगो की पीडा से दुखित हो आर्त-रौद्र ध्यान करती हुई वह मृत्यु को प्राप्त हुई और फिर छठे नरक मे उत्पन्न हुई। इस नरक मे जन्मे नारक जीवों की उत्कृष्ट आयु वाईस सागरोपम होती है।

26. In due course she became the abode of the sixteen diseases including asthma, bronchitis, and leprosy (as detailed in ch 12 para 21) Suffering from these diseases she died At the moment of her death her attitude was depressed and angry She reincarnated in the sixth hell The maximum life span in this hell is twenty two Sagaropam

नरक यातना

सूत्र २७ · सा णं तओऽणंतर उव्वट्टित्ता मच्छेसु उव्वंन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कतीए कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तित्तीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु उववन्ना।

सूत्र २७ · तत्पश्चात् इस छठे नरक का जीवन पूर्ण कर वह मत्स्य योनि मे उत्पन्न हुई। वहाँ शस्त्र से उसका वध हुआ और शरीर में दाह उत्पन्न होने से मृत्यु प्राप्त कर सातवे नरक में उत्पन्न हुई। इस नरक मे जन्मे नारक जीवो की उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपम होती है।

PASSAGE THROUGH HELLS

27. After completing the life span in the sixth hell she was born as a fish Here she got a painful death by some weapon She reincarnated in the seventh hell The maximum life span in this hell is thirty three Sagaropam

सूत्र २८ : सा णं तओऽणतरं उव्वट्टित्ता दोच्च पि मच्छेसु उववज्जइ, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चं पि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोस तेत्तीससागरोवमठिइएसु नेरइएसु उववज्जइ।

सूत्र २८ : सातवे नरक से निकलकर वह नागश्री पुन: मत्स्य योनि में जन्मी, और वहाँ से फिर शस्त्र से वध किये जाने पर दाह युक्त मृत्यु प्राप्त कर पुन सातवे नरक मे उत्पन्न हुई।

28. After completing the life span in the seventh hell she was again born as a fish Here also she got a painful death by some weapon and again reincarnated in the seventh hell

सूत्र २९ : सा णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता तच्च पि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य ण सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्च पि छट्टीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमठिइएसु नरएसु उववन्ना।

सूत्र २९. सातवें नरक से निकलकर नागश्री एक बार फिर मत्स्य योनि मे गई और वहाँ मे फिर शस्त्र से मृत्यु प्राप्त कर दुबारा छठे नरक में गई। वहा नारकी जीवो की उत्कृष्ट आयु बावीस सागरोपम है।

29. After completing the life span in the seventh hell she was once again born as a fish Here also she got a painful death by some weapon and reincarnated in the sixth hell for the second time

सूत्र ३० . तओऽणंतर उव्वट्टित्ता उरएसु, एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं। जाव रयणप्पहाए सत्तसु उववन्ना। तओ उववट्टित्ता जाव इमाइं खहयरविहाणाइं जाव अदुत्तरं च ण खरबायर-पुढविकाइयत्ताए तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो।

सूत्र ३० छठे नरक से निकलकर वह उरपरिसर्प (सर्प) योनि मे गई। इसी प्रकार गोशालक के समान (भगवती सूत्र के अनुसार) वह रत्नप्रभा आदि सातो नरक भूमियो मे उत्पन्न हुई। फिर पक्षियो (खेचरों) की विविध योनियो में जन्मी और फिर लाखो बार खर (कठिन) बादर पृथ्वीकायिक जीवो के रूप मे उत्पन्न हुई।

30. From the sixth hell she went to the reptile species This way in her cycle of rebirths she drifted to all the seven hells including Ratnaprabha as detailed about Goshalak in the Bhagavati Sutra. After this she drifted from

one species to another in the animal kingdom and then was reborn millions of times as tough and gross earth-bodied living organisms

सुकुमालिका का कथानक

सूत्र ३१ : सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे, चंपाए नयरीए, सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया। तए ण सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं दारिय पयाया। सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं।

तीसे दारियाए निव्वत्ते बारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोन्नं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति–'जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा त होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया।'

तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सुकुमालिय त्ति।

सूत्र ३१ नागश्री का जीव इस प्रकार ससार-भ्रमण के बाद जम्बूद्वीप के भारतवर्ष मे चम्पानगरी मे सार्थवाह सागरदत्त की भार्या भद्रा की कोख मे बालिका के रूप मे अवतरित हुई। नौ माह पूर्ण होने पर भद्रा ने बालिका को जन्म दिया। वह बालिका हाथी के तालु के समान सुकुमार और कोमल थी।

जन्म से बारह दिन बीतने पर माता-पिता ने उसका गुणानुरूप नाम रखा–"हमारी यह बालिका हाथी के तालु के समान अत्यन्त कोमल है अतः इसका नाम हम सुकुमालिका रखते है।"

STORY OF SUKUMALIKA

31. After all this wandering through various life forms this being descended into the womb of Bhadra, the wife of merchant Sagardatt in Champa city in Bharatvarsh in the Jambu continent After nine months Bhadra gave birth to a girl who was as delicate and tender as the palate of an elephant

Twelve days after the birth the parents gave her a name suiting her physique, "As this daughter of ours is as delicate and tender as the palate of an elephant we name her as Sukumalika (delicate) "

सूत्र ३२ : तए णं सा सुकुमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया, तंजहा–खीरधाईए मज्जणधाइए मंडणधाईए, अंकधाईए, कीलावणधाईए, जाव परिवड्ढइ। तए ण सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

सूत्र ३२. सुकुमालिका के पालन-पोषण का दायित्व पाँच धायों ने संभाला–(१) क्षीर धात्री, (२) मज्जन धात्री, (३) मडन धात्री, (४) क्रीडा धात्री, और (५) अंक धात्री। इन पाँच धायों की

देखरेख में वह बालिका सुखपूर्वक विकसित होने लगी, जैसे पर्वत की गुफा मे सरक्षित चंपकलता बढ़ती है। धीरे-धीरे वह बालपन से मुक्त होकर रूप, यौवन और लावण्य से भरपूर उत्कृष्ट शरीर वाली हो गई।

32. Five nurse-maids were appointed to look after infant Sukumalika They were—(1) Kshir Dhatri or milk-nurse-maid, (2) Mandan Dhatri or dress-nurse-maid; (3) Majjan Dhatri or bath-nurse-maid, (4) Kridayan Dhatri or play-nurse-maid, and (5) Anka Dhatri or lap-nurse-maid Under the care of these nurse-maids the baby girl developed happily as a Champak creeper grows in a cave Gradually she crossed her childhood and grew to be a beautiful, charming, and perfectly proportioned young woman

सूत्र ३३ तत्थ ण चपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे, तस्स ण जिणदत्तस्स भद्दा भारिया सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ। तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे।

सूत्र ३३ चपानगरी मे ही जिनदत्त नाम का एक सम्पन्न सार्थवाह रहता था। जिनदत्त के भी भद्रा नाम की एक पत्नी थी। वह सुन्दर व सुकुमार तथा, पति प्रिया थी और आनन्द भोगती जीवन व्यतीत करती थी। जिनदत्त के भद्रा से सागर नाम एक का पुत्र था। वह भी सुन्दर और सुकुमार था।

33. In Champa city also lived another merchant named Jindatt The name of his wife was also Bhadra She was beautiful and delicate and led a happy life This couple had a handsome and charming son named Sagar

सूत्र ३४ · तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयइ, इम च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पि आगासतलगसि कणगतेंदूसएणं कीलमाणी कीलमाणी विहरइ।

सूत्र ३४ एक बार जिनदत्त अपने घर से निकलकर सागरदत्त के घर के पास से गुजर रहा था। वहाँ घर की छत पर सुकुमालिका स्नानादि से निवृत्त होकर दासियो से घिरी हुई स्वर्ण गेद से खेल रही थी।

34. On day when Jindatt was passing in front of the house of Sagardatt he saw Sukumalika who, after taking her bath and getting dressed, was playing with a golden ball with her maid servants

विवाह-प्रस्ताव

सूत्र ३५ तए ण से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालिय दारिय पासइ, पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-'एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा णामधेज्ज से ?'

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल जाव एवं वयासी-'एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया नामं दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठा।'

सूत्र ३५. उस समय जिनदत्त ने सुकुमालिका को देखा और उसके रूप, यौवन और लावण्य को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। उसने अपने सेवको को बुलाकर पूछा-"देवानुप्रियो ! वह किसकी लड़की है और क्या नाम है उसका ?

सेवका न प्रसन्नचित्त हो हाथ जोड़ उत्तर दिया-"देवानुप्रिय ! यह सार्थवाह सागरदत्त की पुत्री और भद्रा की आत्मजा सुकुमालिका है। यह सुकुमार, सुन्दर तथा उत्कृष्ट शरीर वाली है।

MARRIAGE PROPOSAL

35. Jindatt was astonished seeing her beauty, youth, charm, and figure. He called his servants and asked, "Beloved of gods! Whose daughter is she? and what is her name?"

The servants happily replied, "Sire! She is the daughter of merchant Sagardatt and his wife Bhadra and her name is Sukumalika She is extremely beautiful (etc)"

सूत्र ३६ : तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए जाव मित्तनाइपरिवुडे चंपाए नयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ। तए ण सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाह एज्जमाण पासइ, एज्जमाण पासइत्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थं वीसत्थ सुहासणवरगयं एवं वयासी-'भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ? '

सूत्र ३६ सेवको का उत्तर सुनकर जिनदत्त अपने घर लौट आया। स्नानादि कर मित्रो व स्वजनो को साथ लेकर चम्पानगरी के बीच होता हुआ सागरदत्त के घर आया। उसे आता देख, सागरदत्त अपने आसन से उठा और अभिवादन कर जिनदत्त को आसन पर बैठने को कहा। जब जिनदत्त आराम से बैठ गया तब सागरदत्त ने पूछा-"देवानुप्रिय ! कहिये कैसे आना हुआ ?"

36. After this Jindatt returned home He got ready after his bath and along with his relatives and friends went to the residence of Sagardatt When he saw them coming, Sagardatt got up from his seat, greeted them and offered them seats When the guests took their seats and made themselves comfortable Sagardatt asked, "Beloved of gods! Tell me what brings you here?"

सूत्र ३७ : तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–'एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरदत्तस्स भारियत्ताए वरेमि। जइ ण जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स। तए णं देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुंकं सूमालियाए ?'

सूत्र ३७ जिनदत्त ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! मै आपकी पुत्री तथा भद्रा देवी की आत्मजा सुकुमालिका का हाथ अपने पुत्र सागरदत्त के लिए मॉगता हूँ। यदि आप इस प्रस्ताव को उचित, प्राप्य और श्लाघनीय तथा इस सयोग को समान समझे तो सुकुमालिका मेरे पुत्र सागरदत्त को दीजिये। यदि आप इस सयोग को इष्ट समझते है तो वताये कि इसके लिए क्या शुल्क (कन्या हेतु वस्त्र-आभूषण या अन्य शर्तें) दिया जाय ?"

37. Jindatt replied, "Beloved of gods! I have come to ask for the hand of your daughter Sukumalika in marriage for my son Sagardatt If you feel that the match is seemly, appropriate, desirable, commendable and worth a union, please tell me the desired dowry"

सूत्र ३८ : तए ण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमग पुण पासणयाए ? त नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग। त जइ ण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालिय दलयामि।'

सूत्र ३८ सागरदत्त ने कहा–"देवानुप्रिय ! सुकुमालिका हमारी एकमात्र सतान है और हमे प्रिय है। उसका नाम सुनने मात्र से हमे हर्ष होता है तो देखने की तो बात ही क्या है। अत मै क्षण भर के लिए भी उसका वियोग नही चाहता। देवानुप्रिय ! यदि सागर हमारा घर-जवाई बन जाए तो मै उसे सुकुमालिका दे सकता हूँ।"

38. Sagardatt said, "Beloved of gods! Sukumalika is our only and beloved child. Just to hear her name is a pleasure, to say nothing of seeing her As such I cannot think of separation from her even for a moment Beloved of gods! If Sagar consents to live with us I may marry Sukumalika to him "

प्रथम विवाह

सूत्र ३९ तए ण जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'एवं खलु ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया इट्ठा, तं चेव, त जइ ण सागरदत्तए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि।'

तए ण से सागरए दारए जिणदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

सूत्र ३९. यह सुनकर जिनदत्त अपने घर आया और अपने पुत्र सागर को बुलाकर कहा—"हे पुत्र ! सार्थवाह सागरदत्त ने मुझसे कहा कि उसकी लडकी उसे इतनी प्रिय है कि तुम उसके घर जंवाई बनो तभी वह अपनी लडकी का विवाह तुम से करेगा।" तब सागरदत्त ने मौन रहकर स्वीकृति दे दी।

FIRST MARRIAGE

39. Jindatt returned home, called his son Sagar and said, "Son! Merchant Sagardatt says that he loves her daughter so much that he can marry her to you only if you agree to live with them " Sagar remained silent expressing his consent.

सूत्र ४० . तए ण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई सोहणसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउल असणं पाणं खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-सबधिपरियण आमंतेइ, जाव समाणित्ता सागर दारय ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्त-णाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सागरगं दारग सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेइ।

सूत्र ४० सागर की स्वीकृति मिलने पर शुभ तिथि, करण, नक्षत्र तथा मुहूर्त मे जिनदत्त ने विपुल भोजन सामग्री बनवाई और मित्रो व स्वजनो को निमत्रण देकर बुलाया। भोजन के पश्चात् उन्हे सम्मानित किया। सागर को स्नानादि करवा वस्त्राभूषणो से अलकृत किया और हजार पुरुषों से उठाई जाने वाली पालकी पर चढ़ाकर मित्रो-स्वजनो के साथ पूरे वैभव से घर से निकला। चम्पानगरी के बीच मार्ग से होता हुआ वह सागरदत्त के घर पहुँचा। सागर को पालकी से नीचे उतारकर सार्थवाह सागरदत्त के पास ले गया।

40. When Sagar agreed, finding an auspicious date and at an auspicious moment Jindatt made arrangements for a great feast, got delicious and savory dishes prepared and invited all his relatives and friends After the feast he honoured them with gifts. He, then, got his son, Sagar, ready and dressed and put him in a Purisasahass palanquin Displaying all his wealth and glory and accompanied by all his friends and relatives he came out of the house Passing through the streets of Champa the marriage procession arrived at the house of Sagardatt He got Sagar out of the palanquin and took him to Sagardatt.

सूत्र ४१ : तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव संमाणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ,

दुरूहाविता सेयापीयएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता होमं करावेइ, करावित्ता सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हावेइ।

सूत्र ४१ . सागरदत्त ने विपुल खाद्य सामग्री तैयार करवाई और जिनदत्त तथा अन्य अतिथियो को भोजन करवाकर उनका सत्कार सन्मान किया। सागर तथा सुकुमालिका को पाट पर बिठाया और चांदी-सोने के (श्वेत-पीत) कलशों में भरे पानी से स्नान करवाया। तत्पश्चात् होम करवाकर दोनों का विधिवत पाणि-ग्रहण करवाया।

41. Sagardatt also arranged for a feast and offered food to Jındatt and other guests After that he honored them with gifts He made Sagar and Sukumalıka sıt on a platform and performed the marrıage rituals by anoınting them wıth water poured from gold and sılver urns and puttıng offerıngs ınto the sacred fire

कर्कश स्पर्श

सूत्र ४२ : तए णं सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूवं पाणिफासं पडिसंवेदेइ से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा, इत्तो अणिट्ठतराए चेव पाणिफास पडिसंवेदेइ। तए णं से सागरए अकामए अवसव्वसे तं मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ।

सूत्र ४२ · उस समय सागर को सुकुमालिका के हाथ का स्पर्श ऐसा लगा जैसे कोई तलवार हो या जलते अंगारे मिली राख हो। इतना ही नही बल्कि इससे भी अधिक अनिष्टतर, अप्रिय लगा वह स्पर्श। किन्तु विवश होकर सागर अनिच्छापूर्वक वह स्पर्श सहन करता कुछ देर बैठा रहा।

REVOLTING TOUCH

42. Durıng that tıme Sagar felt that the touch of Sukumalıka's hand was lıke that of a sword's edge or ash full of embers In fact ıt was much more paınful than that But he was forced to sıt out the ceremony

सूत्र ४३ : तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ जाव संमाणेत्ता पडिविसज्जेइ।

तए णं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ।

सूत्र ४३ : तत्पश्चात् सार्थवाह सागरदत्त ने सागर के माता-पिता तथा अतिथियो को भरपूर भोजन करा कर पुष्प, वस्त्रादि से सम्मानित कर विदा किया।

सागर सुकुमालिका के साथ शयनागार में आया और दोनों शय्या पर लेट गये।

43. Merchant Sagardatt saw the marriage party off after honourıng them with gifts of flowers, apparels etc

Sagar and Sukumalıka went to theır bed chamber and lied down on the bed.

सूत्र ४४ : तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहानामए असिपत्ते इ वा जाव अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुभवमाणे विहरइ।

तए णं से सागरए दारए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ। तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ।

सूत्र ४४ : उस समय भी सागर को सुकुमालिका का अंगस्पर्श तलवार एव जलते अंगारे जैसा ही लगा। वह उस अत्यन्त तीक्ष्ण एव उष्ण अमनोज्ञ अगस्पर्श का अनुभव करके कुछ देर सहन करता हुआ विवश सा पड़ा रहा। जब उसे लगा कि सुकुमालिका सुखपूर्वक गहरी नींद में सो गई है तो वह उसके पास से उठा और अपनी शय्या पर जाकर सो गया।

44. Even now Sagar felt the touch of Sukumalıka's body lıke that of a sword and ash For some tıme he tolerated that sharp, hot and repulsıve touch When he felt that Sukumalıka was ın deep sleep, he got up from there and went to another bed

सूत्र ४५ : तए ण सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पति पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णिवज्जइ।

सूत्र ४५ · कुछ देर बाद सुकुमालिका जागी। वह पतिव्रता थी और उसके मन में पति के प्रति अनुराग भरा था। अत पति को अपने पास न देख वह उठ बैठी और पति की शय्या के पास आकर पुन उसकी बगल मे सो गई।

45. After some tıme Sukumalıka awoke She was filled wıth love for her husband When she dıd not find her husband ın the bed she got up and saw her husband ın the other bed She went there and slipped ın the bed besıdes her husband

पति द्वारा परित्याग

सूत्र ४६ : तए णं सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चं पि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ।

तए णं से सागरदारए सूमालियं दारिय सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ, विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

सूत्र ४६ : सागर ने पुनः दूसरी बार भी सुकुमालिका का वैसा ही तीक्ष्ण एवं कठोर स्पर्श अनुभव किया पर कुछ देर विवशता पूर्वक पूर्ववत् सोया रहा।

जब सुकुमालिका पुनः सो गई तो वह चुपचाप शय्या से उठा और शयनागार का द्वार खोला। वह वहाँ से अपने घर की ओर ऐसे भागा जैसे मारने वाले पुरुष से छुटकारा पाकर काक पक्षी भागता है।

ABANDONED BY HER HUSBAND

46. When Sukumalika was asleep again, Sagar stealthily got up from the bed and opened the door of the room He ran back to his own house as if he was chased by a ghost

सूत्र ४७ : तए णं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइव्वया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-'गए से सागरे' त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

सूत्र ४७ : कुछ देर बाद सुकुमालिक दारिका जागी और पति को अपने पास न देखकर शय्या से उठ खड़ी हुई। उसने चारो ओर सागर को खोजा और खुला द्वार देखकर समझ गई कि सागर चला गया है। उसका मन उदास हो गया और वह हथेली मे मुँह छुपाकर चिन्तामग्न हो आर्तध्यान करने लगी।

47. After some time Sukumalika awoke once again She found that her husband was not in the bed She got up and searched around When she found the doors of the bedroom open she realized that Sagar had gone away She became sad and sat down brooding, covering her face with her palms

सूत्र ४८ . तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभायाए दासचेडियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहुवरस्स मुहधोहणिय उवणेहि।'

तए णं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तह त्ति पडिसुणेइ, मुहधोवणियं गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालिय दारिय जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-'कि णं तुम देवाणुप्पिए ! ओहयमणसकप्पा झियाहि ?'

सूत्र ४८ : सुबह होने पर भद्रा सार्थवाही ने घर की दासी को बुला कर कहा-"देवानुप्रिये ! वर-वधू के लिए मुख धोने (दातोन पानी आदि) का सामान ले जा।"

दासी ने भद्रा की आज्ञा स्वीकार की और आवश्यक सामग्री लेकर सुकुमालिका के शयनागार में गई। वहाँ सुकुमालिका को चिन्तित देखकर उसने पूछा-"देवानुप्रिये ! तुम इस प्रकार भग्न मनोरथ (मनोरथ टूट गये हो) हो चिन्ता क्यो कर रही हो?"

48. In the morning Bhadra called a maid servant and said, "Beloved of gods! Take water and other things to the newly weds for brushing teeth and washing face."

The maid servant did as told When she entered the bedroom and saw Sukumalika worried and brooding, she asked, "Beloved of gods! Why are you so sad and depressed?"

सूत्र ४९ : तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिए ! सागरए दारए मम सुहपसुत्त जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ, जाव पडिगए। ततो अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए से सागरए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि।'

तए ण सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ।

सूत्र ४९ : सुकुमालिका ने उस दासी को बताया-"हे देवानुप्रिये ! मुझे सुख से सोया जानकर सागर मेरे पास से उठा और कमरे का द्वार खोलकर भाग गया। मै कुछ देर बाद उठी और द्वार खुला देखकर समझ गई कि वह चला गया है। इसी कारण मै भग्न मनोरथ होकर चिन्ता में पड गई हूँ।"

दासी यह बात सुनकर सागरदत्त सार्थवाह के पास गई और सारी बात वताई।

49. Sukumalika explained, "Beloved of gods! When he found me sleeping, Sagar stealthily got up from the bed, opened the door of the room, and went away After some time when I awoke and found the doors of the bedroom open I realized that Sagar had gone away That is the reason I am sad and worried "

The maid servant immediately went to merchant Sagardatt and told everything

सागर नहीं लौटा

सूत्र ५० : तए णं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तसत्थवाहगिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी-'किं णं देवाणुप्पिया ! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा, जं ण सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइव्वयं विप्पजहाय इहमागओ ?' बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ।

सूत्र ५० : दासी से यह वृतान्त सुन-समझ कर सागरदत्त बहुत क्रोधित हो गया और सीधा जिनदत्त के घर पहुँचा। उसने जिनदत्त से कहा-"देवानुप्रिय ! क्या यह योग्य है? उचित है? क्या

यह कुल प्रथा के अनुकूल है और शोभाजनक है कि आपका पुत्र सागर मेरी पुत्री, निर्दोष और पतिव्रता सुकुमालिका को छोडकर यहाँ आ गया है?" ऐसा कहकर अनेक खेद भरी क्रियाएँ करके रुदन की चेष्टाएँ करते हुए उसने उलाहने दिये।

SAGAR REFUSES TO RETURN

50. Sagardatt got angry and he at once rushed to the residence of Jindatt and burst out, "Beloved of gods! Is it right and proper? Is it befitting and worthy of your family tradition that your son Sagar has abandoned my innocent and devoted daughter Sukumalika and come here?" And expressing his anger and sorrow with words and gestures he lamented before Jindatt

सूत्र ५१ . तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरे दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-'दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए। तं गच्छह णं पुत्ता ! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे।'

सूत्र ५१ : जिनदत्त यह सब सुनकर सागर के पास आया और बोला-"हे पुत्र ! तुमने यह बहुत बुरा किया जो अचानक सागरदत्त के घर से यहाँ चले आये। हे पुत्र ! जो हुआ सो हुआ, पर अब तुम वापस सागरदत्त के घर को लौट जाओ।"

51. After listening to this outburst Jindatt went to Sagar and said, "Son! This is unbecoming of you to have suddenly left Sagardatt's house and come here Any way, forget what has happened and go back to Sagardatt's place "

सूत्र ५२ : तए णं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-'अवि याइं अहं ताओ ! गिरिपडण वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा वेहाणस वा सत्थोवाडणं वा गिद्धपिट्ठं वा पव्वज्ज वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा।'

सूत्र ५२ : तब सागर ने जिनदत्त से कहा-'हे तात ! मुझे पर्वत से गिरना स्वीकार है, वृक्ष से गिरना स्वीकार है, मरुस्थल में गिरना स्वीकार है, जल मे डूब जाना स्वीकार है, आग मे प्रवेश करना स्वीकार है, विष खा लेना स्वीकार है, अपने शरीर को श्मशान में या जंगल में छोड देना स्वीकार है, गिद्ध के द्वारा खा लिया जाना स्वीकार है, यहाँ तक कि दीक्षा लेना और परदेश चला जाना भी स्वीकार है। किन्तु मै किसी प्रकार भी सागरदत्त के घर नहीं जाऊँग।

52. Sagar defiantly replied, "Father! I would prefer to fall down from the peak of a mountain, or to fall from a tree top, or to go to a desert, or to drown in a lake, or to enter fire, or to consume poison, to live in a funeral ground or a forest, to be eaten away by vultures, or even to become an ascetic or get exiled, than to return to Sagardatt's place."

सूत्र ५३ : तए णं ते सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी–

'किं णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं मुक्का ! अहं णं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससि' त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र ५३ : सार्थवाह सागरदत्त ने दीवार के पीछे से सागर दारक की यह बातें सुन ली। वह इतना लज्जित हुआ कि सोचने लगा–धरती फट जाये तो मै उसमे समा जाऊँ। वह जिनदत्त के घर से बाहर निकलकर अपने घर लौट आया। उसने सुकुमालिका को बुलाकर अपनी गोद में बिठाया और बोला–

"हे पुत्री ! सागर ने तुझे त्याग दिया है तो क्या हुआ ? अब मै तुझे ऐसे पुरुष को दूँगा जिसे तू इष्ट, कान्त, प्रिय और मनोज्ञ होगी।" यह कहकर उसने मधुर वाणी से अपनी पुत्री को आश्वस्त किया और वापस भीतर भेज दिया।

53. Merchant Sagardatt had heard all this exchange between Sagar and his father from behind the partition wall He got so ashamed that he thought— "May the earth split and draw me in " He got out from the house of Jindatt and returned home He called Sukumalika, took her in his lap and said, "Daughter! It hardly matters that Sagar has left you. I would remarry you and this time to a person who would like you and love you." And he reassured his daughter with soothing and sweet words

सुकुमालिका का पुनर्विवाह

सूत्र ५४ . तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अन्नया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गे आलोएमाणे आलोएमाणे चिट्ठइ। तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ, दंडिखंड-निवसणं खंडमल्लग-खंडघडगहत्थगयं फुट्टहडाहडसीसं मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्गं।

सूत्र ५४ · एक बार सार्थवाह सागरदत्त अपने भवन की छत पर सुखपूर्वक बैठा राजमार्ग की ओर देख रहा था। तब उसने एक अत्यन्त दीन भिखारी को देखा। वह सांधे हुए टुकड़ों का वस्त्र पहने था, उसके हाथ में सिकोरे और घड़े के टुकड़े (ठीकरे) थे। उसके बाल बिखरे हुए थे और उसके चारों ओर आगे पीछे हज़ारों मक्खियाँ भिनभिना रही थीं।

REMARRIAGE OF SUKUMALIKA

54. One day merchant Sagardatt was relaxing on the roof top of his house and looking down at the road in front. He saw an extremely destitute beggar He was dressed in rags (made by stitching together shreds of cloth) and had broken pieces of earthen ware in his hands He had disheveled hair and, thousands of flies were hovering all around him.

सूत्र ५५ : तए णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एय दमगपुरिसं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लग खडघडगं च से एगते एडेह, एडित्ता अलकारियकम्मं कारेह, कारित्ता ण्हायं कयबलिकम्मं जाव सव्वालकारविभूसियं करेह, करित्ता मणुण्णं असण-पाणं खाइमं साइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह।

सूत्र ५५ · सागरदत्त ने अपने सेवको को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और उस (राजमार्ग पर चलते) भिखारी को यथेष्ट आहार सामग्री का लोभ देकर घर के भीतर ले आओ। फिर उसके हाथ में रहे ठीकरो को एक ओर फेक दो उसके नख-केश आदि कटवा दो और स्नानादि करवा कर वस्त्रालकार पहना कर तैयार कर दो। इसके बाद उसे स्वादिष्ट भोजन करवा कर मेरे पास ले आना।"

55. Sagardatt called his servants and instructed, "Beloved of gods! Go and get that beggar you see on the main road, inside our house Offer him ample food to allure him Once inside, throw away the earthen ware he is carrying in his hand, trim his hair, nails etc , make him take his bath and dress up After that, feed him well and then bring him to me

सूत्र ५६ : तए ण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता त दमग असणं पाण खाइम साइम उवप्पलोभेति, उवप्पलोभित्ता सय गिहं अणुप्पवेसेति, अणुप्पवेसित्ता तं खडमल्लग खडघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति।

तए णं से दमगे तंसि खडमल्लगसि खड घडगसिय एडिज्जमाणंसि महया महया सद्देण आरसति।

सूत्र ५६ . सेवको ने सागरदत्त की आज्ञा अगीकार की ओर उसके अनुसार लालच देकर भिखारी को घर मे ले आये। उसके सिकोरे के टुकड़े तथा घडे के ठीकरे को एक तरफ डाल दिया।

जब उन्होंने उसके हाथ के ठीकरों को एक ओर फेका तो वह भिखारी उच्च स्वर मे जोर-जोर से रोने चिल्लाने लगा।

56. The servants accepted Sagardatt's order and brought the beggar inside the house. They took the earthen ware from his hand and threw them on one side

When this was done the beggar started crying and wailing loudly

सूत्र ५७ . तए णं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिस्स तं महया महया आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुबियपुरिसे एवं वयासी–'किं ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया महया सद्देण आरसइ ?'

तए ण ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी–'एस ण सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणसि महया महया सद्देण आरसइ।'

तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुबियपुरिसे एवं वयासी–'मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खडं जाव एडेह, पासे ठवेह, जहा ण पत्तिय भवइ।' ते वि तहेव ठविंति।

सूत्र ५७ . जब सागरदत्त ने उस भिखारी का रुदन सुना तो अपने सेवकों से पूछा–"देवानुप्रियो ! यह भिखारी इतना क्यो चिल्ला रहा है ?"

सेवको ने उत्तर दिया–"स्वामी ! उसके ठीकरे आदि एक ओर डाल देने के कारण वह रो रह है।"

सागरदत्त ने कहा–"देवानुप्रियो ! उस भिखारी के ठीकरो को फेको मत, उसी के पास रहने दो जिससे कि उसका विश्वास बना रह सके।" सेवको ने भिखारी के ठीकरे उसके पास ही रख दिये।

57. When Sagardatt heard the wailing of the beggar he called his servants and asked, "Beloved of gods! Why this beggar is crying so loudly?"

The servants replied, "Sire! He is crying because we have thrown away his earthen ware "

Sagardatt said, "Beloved of gods! Do not throw away these pot shards, let them remain with him so that he does not lose whatever semblance of confidence he has " The servants did as told

सूत्र ५८ : तए णं ते कोडुबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करित्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भगेंति, अब्भंगिए समाणे सुरभिगधुव्वट्टणेणं गायं उव्वट्टेंति उव्वट्टित्ता उसिणोदगगधोदएण ण्होणेंति, सीतादगेणं ण्हाणेंति, ण्हाणित्ता पम्हल-सुकुमाल-गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहित्ता हंसलक्खण पंडगसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउल असणं पाणं खाइमं साइम भोयावेंति भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति।

सूत्र ५८ : फिर उन सेवको ने भिखारी का अलकार कर्म (शरीर-शोभा, हजामत आदि) करवाया। फिर शतपाक तथा सहस्रपाक तेल से मालिश करवायी। सुगधित पदार्थों से उबटन करवाई। उष्णोदक, (गर्म पानी) गंधोदक और शीतोदक से स्नान करवा कर रोंयेदार और कोमल कषाय (गेरुआ) रंग के तौलिए से शरीर पोछा। हंस जैसे सफेद वस्त्र पहनाये। और फिर सब प्रकार के अलंकारों से विभूषित किया। तत्पश्चात् पेट भर कर भोजन करवा कर वे उसे सागरदत्त के पास ले गये।

58. The servants trimmed his hair and nails and did other cleansing on his body After that they gave him a massage with medicated and flavoured oils like Shata-pak and Sahastra-pak After the massage the excess oil was removed by rubbing his body with perfumed pastes(Ubatan) Then they helped him take cold and hot bath with perfumed water His body was dried with soft, fluffy and grey towels He was then helped into white apparels and was adorned with a variety of ornaments Finally after feeding him well they presented him before Sagardatt

सूत्र ५९ . तए णं सागरदत्ते सूमालियं दारिय ण्हाय जाव सव्वालंकारविभूसिय करित्ता तं दमगपुरिसं एव वयासी–'एस ण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा, एयं च णं अह तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दओ भविज्जासि।

सूत्र ५९ उधर सागरदत्त ने अपनी पुत्री सुकुमालिका को स्नानादि करवाकर सब प्रकार के वस्त्र-अलकारो से सजा कर तैयार किया। भिखारी के आने पर उससे कहा–"हे देवानुप्रिय ! यह मेरी पुत्री है और मुझे इष्ट-प्यारी है। मैं इसे तुम्हे भार्या के रूप मे देता हूँ। इस भाग्यशालिनी के लिए तुम भाग्यवान बन जाओगे।"

59. In the mean time Sagardatt got his daughter ready by having her bathed, dressed up and adorned with ornaments When the beggar was brought before him he said, "Beloved of gods! This is my beloved daughter I give her to you as your wife This lucky girl will prove to be the harbinger of good luck for you "

पुन परित्याग

सूत्र ६० . तए ण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि वासघरं अणुपविसइ, सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ।

तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खडमल्लग खडघडं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए।

तए णं सा सूमालिया जाव 'गए णं से दमगपुरिसे' त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

सूत्र ६० : भिखारी ने सागरदत्त का यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। वह सुकुमालिका के साथ शयनागार में गया और उसके साथ एक शय्या पर सोया।

सोने पर उस द्रमुख-भिखारी ने भी सुकुमालिका के शरीर के स्पर्श को वैसा ही अनुभव किया जैसा सागर को हुआ था। वह शय्या से उठकर शयनागार से बाहर निकला और अपने ठीकरे उठाकर वहाँ से ऐसे भाग कर गया जैसे वधस्थल से मुक्त हुआ काक भाग जाता है।

'वह भिखारी भी भाग गया' यह जानकर सुकुमालिका पुनः भग्न मनोरथ निराश होकर शोक में डूब गई।

DESERTED AGAIN

60. The beggar accepted the proposal of Sagardatt He went to the bedroom and slept in the bed with Sukumalika

On sleeping beside her the beggar also found the touch of Sukumalika just as Sagar had found it He got up from the bed, came out of the room, collected his earthenware, and ran away as if a ghost was chasing him

When Sukumalika came to know that the beggar had also run away she became sad, dejected, and depressed

सूत्र ६१ : तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी, जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ। तए ण से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहर तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी–'अहो णं तुमं पुत्ता ! पुरा-पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि, तं मा णं तुमं पुत्ता ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असणं पाणं खाइम साइमं जहा पोट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि।'

सूत्र ६१ : दूसरे दिन प्रातःकाल भद्रा सार्थवाही ने दासी को बुलाकर दतोन पानी आदि देकर सुकुमालिका के कक्ष में भेजा। वहा उसे उदास बैठी देखा, तब दासी ने लौटकर सारी घटना सागरदत्त को बताई (सागर दारक के कथन के समान) । सागरदत्त दुःखी मन से शयनागार मे गया और सुकुमालिका को गोद मे बैठा कर बोला– "हे पुत्री ! तू पूर्वजन्म में किए हिंसा आदि दुष्कृत्यों द्वारा उपार्जित पापकर्मों का फल भोग रही है। अतः दुःख मत कर। हे पुत्री ! मेरी भोजनशाला से विपुल आहार सामग्री आदि श्रमणों ब्राह्मणों आदि को दान करती हुई अपना जीवन बिता।" (अ. १४ सू. २७ के समाने)।

61. In the morning Bhadra called a maid servant and sent her to Sukumalika's room with water and other things for brushing teeth and

washing face. When she entered the bedroom and saw Sukumalika worried and brooding she immediately went to merchant Sagardatt and told him everything. With a heavy heart Sagardatt went to his daughter's room and taking her in his lap said, "Daughter! Your sufferings appear to be the fruits of some evil karmas earned by you by some acts of violence or other such ill deeds during earlier births As such, beloved one! Don't get dejected You can get large quantities of food cooked in my kitchen and distribute it to numerous Shramans, Brahmans, guests and beggars Doing such charity you can spend your time happily"

सूत्र ६२ . तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता महाणसंसि विपुल असणं पाण खाइमं जाव दलमाणी विहरइ।

तेण कालेणं तेणं समएण गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ, तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे, तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एव वयासी-'एवं खलु अज्जाओ ! अह सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा, नेच्छइ ण सागरए मम नाम वा जाव परिभोगं वा, जस्स जस्स वि य ण दिज्जामि तस्स तस्स वि य ण अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहुनायाओ, एवं जहा पोट्टिला जाव उवलद्धे जेण अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि।'

सूत्र ६२ : सुकुमालिका ने पिता की यह बात स्वीकार कर ली। और भोजनशाला मे जाकर श्रमणो आदि को आहार दान करती जीवन बिताने लगी।

उस समय (काल के उस भाग) मे गोपालिका नामक बहुश्रुत-विदुषी आर्या नगर मे पधारी और वे शिष्याओ सहित सुकुमालिका के घर आईं। (विस्तृत वर्णन पूर्वसम-अ.१४ सू. २४ के समान) सुकुमालिका ने उन्हे आहार वहरा कर कहा-"हे आर्याओ ! मै अपने पूर्वपति सागर के लिए अनिष्ट एव अमनोज्ञ हूँ। सागर मेरा नाम सुनना भी नही चाहता परिभोग की तो बात ही क्या। मै जिस-किसी को भी दी गई उसी को अनिष्ट और अमनोज्ञ प्रतीत हुई। हे आर्याओ ! आप तो बहुत ज्ञानवान हो। कुछ ऐसा करो कि मै सागर को प्रिय लगने लगूँ।" (विस्तृत वर्णन पूर्व-अ १४ सू. २५ के समान जैसा पोट्टिला ने कहा)

62. Sukumalika accepted her father's advice and commenced the charity from the kitchen

During that period of time a Sadhvi (female ascetic) named Gopalika, arrived in the town (details as in ch 14 para 24). She set out to beg alms with her group and arrived at the residence of Sukumalika, who gave them ample food and said—Aryas! I am no more cherished, adored, liked, and beloved by my ex-husband Sagar He does not want to hear my name, normal

marital enjoyments are beyond expectation Whoever married me did not love or adore me Aryas! You are learned, experienced and scholarly please do some thing so that I may gain favour and love of Sagar (details as ch 14 para 25)."

दीक्षा-ग्रहण

सूत्र ६३ : अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ, जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया। तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव बंभयारिणी बहूहि चउत्थछट्ठट्ठम जाव विहरइ।

सूत्र ६३ : आर्याओ ने सुव्रता आर्या की तरह कहा–ऐसी बात तो हमें सुनना भी नही कल्पता, उपदेश देने की तो बात ही दूर रही। फिर उसे धर्म का उपदेश दिया जिसे सुनकर वह श्रविका बन गई। फिर उसे दीक्षा लेने का विचार आया। तब वह सुकुमालिका अपने पिता से आज्ञा ले गोपालिका आर्या के पास दीक्षित हो गई और सयम, नियम, ब्रह्मचर्य युक्त एव उपवास बेला-तेला आदि तपस्यामय जीवन बिताने लगी? (विस्तृत विवरण पूर्व–अ. १४ सू.२६-२९ के समान)

DIKSHA

63. The Sadhvis closed their ears and replied as Arya Suvrata had replied to Pottila, "Beloved of gods! It is sinful for us even to hear such talk. How can we preach on the subject?" And the Sadhvis gave a discourse on their unique religion On listening the discourse Pottila became a Shramanopasika. Later she decided to become a Sadhvi She took permission from her father and got initiated She started doing harsh penance including fasting for two, three, or more days and following the codes of conduct leading a disciplined ascetic life (details as Ch 14 para 26-29)

सूत्र ६४ . तए ण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए।'

सूत्र ६४ : किसी समय एक बार आर्या सुकुमालिका अपनी गुरुणी गोपालिका आर्या के पास गई और यथा-विधि वन्दना करके बोली–"हे आर्या ! मै आपकी आज्ञा लेकर चम्पानगरी के बाहर सुभूमिभाग उद्यान के निकट बेले-बेले का निरन्तर तप करते हुए सूर्य के सामने आतापना लेना चाहती हूँ।"

64. Later one day ascetic Sukumalika went to her preceptor and after due obeisance said, "Arya! If you would permit me I would like to go to the

Subhumıbhag garden, outsıde Champa cıty, and commence the penance of toleratıng the sun wıth a serıes of two day fasts ”

सूत्र ६५ : तए ण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एव वयासी–'अम्हे णं अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स सन्निवेसस्स वा छट्ठछट्ठेण जाव विहरित्तए। कप्पइ णं अम्ह अंतो उवस्सयस्स वइपरिक्खित्तस्स संघाडिपडिबद्धियाए णं समतलपइयाए आयावित्तए।'

सूत्र ६५ गोपालिका आर्या ने सुकामालिका को उत्तर दिया–"हे आर्ये ! हम निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं। ईर्यासमिति आदि का पालन करने वाली गुप्त ब्रह्मचारिणियाँ है। इस कारण हमको गाँव या सन्निवेश आदि से बाहर जाकर ऐसी तपस्या व आतापना लेना नहीं कल्पता है। हाँ ! बाड से घिरे–चार दीवारी वाले उपाश्रय के भीतर वस्त्र से शरीर को ढाँप कर या साध्वियो के समूह के साथ रहकर पृथ्वी पर दोनो चरण समान रूप से जमा कर आतापना लेना हमे कल्पता है।"

65. Arya Gopalıka replıed, "Beloved of gods! we are Nırgranth Shramanıs (Jaın female ascetıcs) We are strıctly celıbate and follow the prescrıbed code of conduct, as such, we are not allowed to go out of a vıllage or other ınhabıted area and do such penance However, we are allowed to do such penance, as toleratıng the sun, standıng firmly on the ground wıthın a walled and fenced abode, coverıng the body wıth a pıece of cloth, or ın company of other Sadhvıs "

सूत्र ६६ · तए णं सा सूमालिया गोवालियाए अज्जाए एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणी अपत्तियमाणी अरोएमाणी सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठंछट्ठेण जाव विहरइ।

सूत्र ६६ सुकुमालिका को गोपालिका आर्या की इस बात पर श्रद्धा नही हुई, प्रतीति नही हुई और रुचि भी नही हुई। वह सुभूमिभाग उद्यान के निकट निरन्तर बेले-बेले का तप करती आतापना लेती जीवन बिताने लगी।

66. Thıs statement of Arya Gopalıka dıd not ınvoke faıth, understandıng or acceptance ın Sukumalıka She started doıng the penance, as she had planned, near the Subhumıbhag garden

सुकुमालिका का निदान

सूत्र ६७ · तत्थ णं चंपाए नयरीए ललिया नामं गोट्ठी परिवसइ नरवइदिण्णवियारा, अम्मा–पिइ–निययनिप्पिवासा, वेसविहार-कयनिकेया, नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया।

सूत्र ६७ : चम्पानगरी में एक ललिता-गोष्ठी (मनमौजियों की टोली) रहती थी जिसे राजा द्वारा इच्छानुसार विचरण की छूट मिली हुई थी। वे लोग माता-पिता आदि गुरुजनों को भी महत्त्व नहीं देते थे। वेश्या का घर ही उनका घर था। वे लोग अनेक प्रकार के अनाचारों में लिप्त रहते थे। धनाढ्य होने के कारण वे निर्भय और उद्दण्ड थे।

SUKUMALIKA'S AMBITION

67. In Champa city there was an association of dubious characters They had sanction of the king to do as they liked. They hardly gave any credence to words of their parents or elders houses of ill fame were their homes. They indulged in all sorts of libidinous and other anti-social activities Their affluence made them fearless and arrogant

सूत्र ६८ : तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमाला जहा अंड णाए।

तए ण तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पच गोट्ठिल्लपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लपुरिसे देवदत्त गणिय उच्छगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेव करेइ।

सूत्र ६८ : चम्पानगरी मे देवदत्ता नामकी एक गणिका भी रहती थी। वह सुन्दरता कोमलता आदि गुणो से सम्पन्न थी। (विस्तृत वर्णन अ ३ सू ६ अण्ड ज्ञात के समान)

एक बार उस ललिता-गोष्ठी के पॉच सदस्य देवदत्ता गणिका के साथ सुभूमिभाग उद्यान की छटा का आनन्द ले रहे थे। उनमे से एक ने देवदत्ता को अपनी गोद मे बिठाया, दूसरा पीछे छत्र पकड कर खड़ा हो गया, तीसरा उसके मस्तक पर फूलो का जूडा बनाने लगा, चौथा उसके चरण रगने लगा, और पाँचवा उसपर चामर डुलाने लगा।

68. In Champa also lived a courtesan named Devdatta She was richly endowed in beauty and charm (etc details as ch 3 para 6)

One day five members of this association were enjoying the scenic beauty of the Subhumibhag garden in company of Devdatta. One of them made Devdatta sit in his lap, while another stood with an umbrella in his hand at the back of the first, the third one started embellishing her hairdo with flowers, the fourth one started applying vermilion to her feet, and the fifth one started fanning her with a whisk.

सूत्र ६९ : तए णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणिं पासइ, पासित्ता इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था— 'अहो णं इमा इत्थिया पुरापोराणाणं जाव विहरइ, तं जइ ण केइ इमस्स सुचरियस्स

तव-नियम-बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो ण अहमवि आगमिस्सेण भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि' त्ति कट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ।

सूत्र ६९ · आर्या सुकुमालिका ने देवदत्ता गणिका को पाँच पुरुषो के साथ जी भर कर मानवोचित कामभोग भोगते देखा। यह दृश्य देखकर उसके मन मे कामना जागी–"अहा ! यह स्त्री पूर्वजन्म के पुण्यकृत्यो द्वारा उपार्जित शुभ कर्मो का फल भोग रही है। सो यदि मेरी इस सुकृत्य तपस्या, नियम व ब्रह्मचर्य का कुछ भी कल्याणकारी फल विशेष हो तो मै भी अगले जन्म मे इसी प्रकार मानवोचित कामभोग भोगती हुई जीवन विताऊँ।" मन मे इस प्रकार की आकाक्षा (निदान) स्थिर कर वह अपने तपस्या स्थान पर लौट आई।

69. Arya Sukumalika witnessed Devdatta enjoying all human amorous pleasures with five males This scene gave rise to an ambition in her, "Ah! This women is enjoying the fruits of the good karmas she must have earned by means of some good deeds in her earlier birth So I also wish to spend my next life enjoying such human pleasures if any beneficial karmas are accrued as a result of all the good deeds and penance I am doing and the code of discipline and celibacy I am following currently" Having fixed this ambition in her mind she returned to her place of penance

सूत्र ७० · तए ण सा सूमालिया अज्जा सरीरबाउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खण हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीस धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणतराइ धोवेइ, कक्खतराइं धोवेइ, गोज्झतराइं धोवेइ, जत्थ ण ठाण वा सेज्ज वा निसीहिय वा चेएइ, तत्थ वि य ण पुव्वामेव उदएण अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाण सेज्ज वा चेएइ।

सूत्र ७० इस घटना के वाद सुकुमालिका शरीर की शोभा साज-सज्ज के प्रति विशेष आसक्त हो गई। वह बार-बार हाथ, पैर, मस्तक, मुँह, वक्ष, वगले तथा गुप्तागो को धोती। जिस स्थान पर खडी होती, सोती, कायोत्सर्ग करती या स्वाध्याय करती उस स्थान पर भी पहले जल छिडकती और फिर वे सब कार्य करती।

70. After this incident Sukumalika became more indulgent toward the beauty and adornment of her body She would wash her limbs, head, face, breasts, armpits and genitals many times Before standing, sleeping, meditating or studying she would sprinkle water over the ground she used for these activities

सूत्र ७१ तए ण ताओ गोवलियाओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज एव वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिए ! अज्जे ! अम्ह समणीओ निग्गथाओ ईरियासमियाओ जाव बभचेरधारिणीओ, नो खलु कप्पइ अहं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुम च ण अज्जे ! सरीबाउसिया अभिक्खण

अभिक्खणं हत्थे धोवसि जाव चेएसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।

सूत्र ७१ : जब गोपालिका आर्या ने यह सब देखा तो वे सुकुमालिका से बोली-"हे देवानुप्रिये ! हम निर्ग्रन्थ साध्वियाँ हैं, ब्रह्मचारिणियाँ हैं। हमें शरीर के शोभा-संस्कार के प्रति इतनी आसक्ति नही दिखानी चाहिए। परन्तु तुम बार-बार हाथ पैर धोना आदि करने लगी हो अत. हे देवानुप्रिये ! तुम उस चारित्र-बकुशता (चारित्र को दूषित करने वाले स्थान) की आलोचना करो और यथाविधि प्रायश्चित्त अंगीकार करो।"

71. When Arya Gopalika saw all this she warned Sukumalika, "Beloved of gods! we are Nirgranth Shramanis and we are strictly celibate; as such we are not allowed to indulge in so much care of the body But as you are washing your limbs (etc) again and again, you should condemn this state of disgraceful conduct and do the prescribed atonement "

सूत्र ७२ · तए ण सूमालिया गोवालियाण अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ। तए ण ताओ अज्जाओ सूमालिय अज्जं अभिक्खणं अभिक्खण अभिहीलति जाव परिभवंति, अभिक्खण अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति।

सूत्र ७२ . सुकुमालिका ने आर्या-गोपालिका के इस आदेश-निर्देश का न तो आदर किया न उसे स्वीकार किया। वह पूर्ववत् ही जीवन चर्या करती रही। फलत· समूह की अन्य साध्वियॉ उसकी बार-बार अवहेलना, अनादर आदि करने लगी और इस अनाचार करने से रोकने की चेष्टा करने लगी।

72. Sukumalika neither believed nor accepted these instructions and directions of Arya Gopalika She continued her adopted way of life As a result of this the other Sadhvis of the group tried to restrain her from indulging in prohibited activities and started proscribing and disdaining her

सुकुमालिका का पृथक् विहार

सूत्र ७३ · तए ण तीसे सूमालियाए समणीहि निग्गथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-'जया ण अहं अगारवासमज्झे वसामि, तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुडे पव्वइया, तया ण अहं परवसा, पुव्विं च णं मम समणीओ आढायति, इयाणिं नो आढायंति, त सेयं खुल मम कल्लं पाउप्पभायाए गोवालियाणं अंतियाओ पडिणिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सगं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं पाउप्पभायाए गोवालियाणं अज्जाणं अतियाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता पाडिएक्क उवस्सगं उवसपज्जित्ता णं विहरइ।

सूत्र ७३ : अन्य साध्वियो की इस अवहेलना एव अनादर आदि के कारण सुकुमालिका के मन में विचार उठा–"जब मै गृहस्थवास मे थी तब मै स्वाधीन थी। मुण्डित हो दीक्षा ले लेने के बाद मैं पराधीन हो गई। पहले ये साध्वियाँ मेरा आदर करती थी पर अब नही करतीं। अतः अच्छा होगा कि मैं कल प्रात काल होने पर आर्या गोपालिका के पास से निकल कर अलग उपाश्रय पर जाकर रहने लगूँ।" उसने यही निश्चय किया और भोर होने पर वहाँ से निकलकर अन्य उपाश्रय (स्थान) पर जाकर रहने लगी।

SEPARATION FROM THE GROUP

73. This disregard and disdain by other Sadhvis forced Sukumalika to think, "When I was a house-holder I had my freedom Since I got my head shaved and initiated I have lost my freedom Earlier these Sadhvis used to respect me but not now So it would be good for me to leave this group, led by Arya Gopalika, tomorrow and live in another abode " She resolved to do accordingly and the first thing she did in the morning was to shift to another suitable abode

सूत्र ७४ . तए ण सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खण अभिक्खण हत्थे धोवेइ, जाव चेएइ, तत्थ वि य ण पासत्था, पासत्थविहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी ससत्ता, ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, अद्धमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइय-अपडिक्कता कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा। तत्थेगइयाण देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइ ठिई पन्नत्ता।

सूत्र ७४ अन्य उपाश्रय मे जाकर अकेले रहने पर उसे कोई रोकने-टोकने वाला नही रहा और सुकुमालिका स्वच्छद हो शरीर सस्कारो के प्रति आसक्ति पूर्ण जीवन बिताने लगी। यही नही, वह शिथिल आचार वर्तने के कारण शिथिलाचारिणी हो गई। नियम पालन मे आलस करने से आलसी हो गई। अनाचार मे लिप्त होने से कुशीला हो गई। उपलब्ध साता-सुखो के प्रति आसक्त होने से ससक्ता हो गई। इस प्रकार उसने अनेक वर्षो तक साध्वी रूप मे जीवन व्यतीत किया। अन्त में अर्धमास (१५ दिन) की सलेखना कर, अपने अनुचित आचरण की आलोचना और प्रतिक्रमण किए बिना ही शरीर त्याग कर ईशानकल्प मे देवगणिका के रूप मे उत्पन्न हुई। वहाँ कुछ देवियो की आयु नौ पल्योपम बताई है। सुकुमालिका देवी की आयु भी नौ पल्योपम हुई।

74. Living alone Sukumalika was free of any curbs and restraints. She became unrestrained in her excessive indulgence in the care of her body Not only this, due to her slipshod ways she also became lax in her ascetic conduct Due to her indulgence in base activities she lost her grace Her fondness for mundane physical pleasures made her overindulgent In this

manner she lived long as an ascetic. In the end she observed the ultimate vow of fifteen days duration and died without reviewing and atoning for her misconduct. She reincarnated as a courtesan of gods in the Ishankalp Some of the goddesses have a life-span of nine Palyopams in that dimension Goddess Sukumalika's life-span was also that.

द्रौपदी-कथा

सूत्र ७५ : तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नगरे होत्था। वन्नओ। तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ। तस्स णं चुलणी देवी, धट्ठज्जुण्णे कुमारे जुवराया।

सूत्र ७५ . काल के उस भाग मे इसी जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र के पाचाल देश मे काम्पिल्यपुर नाम का एक नगर था। वहाँ के राजा का नाम द्रुपद, पटरानी का नाम चुलनी और युवराज का नाम धृष्टद्युम्न था। (विस्तृत विवरण औपपातिक सूत्र के अनुसार)

STORY OF DRAUPADI

75. During that period of time there was a city named Kampilyapur in the Panchal state in Bharat area of the Jambu continent King Drupad ruled over that city The name of his wife was queen Chulni and that of the prince was Dhrishtadyumn (details as in Aupapatik Sutra)

सूत्र ७६ · तए ण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया। तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया।

सूत्र ७६ : सुकुमालिका देवी उस देवलोक से आयु, भव और स्थिति को समाप्त कर देव शरीर त्याग कर इसी जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्रान्तर्गत पाचाल जनपद के कपिल्यपुर नगर के द्रुपद राजा की रानी चुलनी की कोख मे कन्या रूप मे अवतरित हुई। रानी ने नौ मास पूर्ण होने पर पुत्री को जन्म दिया

76. The soul of Sukumalika, completing her age, state, and life as god and leaving the divine form descended into the womb of queen Chulni the wife of king Drupad of Kampilyapur in the Panchal state in Bharat area of the Jambu continent After nine months the queen gave birth to a daughter

नामकरण

सूत्र ७७ · तए णं तीसे दारियाए निव्वत्तवारसाहियाए इमं एयारूव नामधेज्जं-जम्हा ण एसा दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, तं होउ णं अम्ह इमीसे दारियाए

नामधिज्जे दोवई। तए ण तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति–'दोवई।'

सूत्र ७७ · जन्म से बारह दिन बीत जाने पर उसका नामकरण हुआ। "यह बालिका द्रुपद राजा की पुत्री और चुलनी रानी की आत्मजा है अत इसका नाम द्रौपदी हो।" यह कहकर माता-पिता ने उसका गुण निष्पन्न नाम द्रौपदी रख दिया।

NAMING CEREMONY

77. Twelve days after the birth the parents gave her a name suiting her background, "As this is the daughter of King Drupad and queen Chulni we will name her as Draupadi (daughter of Drupad)

सूत्र ७८ · तए णं सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया निवायनिव्वाघायंसि सुहसुहेणं परिवड्ढइ। तए ण सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था।

सूत्र ७८ · पॉच धायो की देख-रेख मे द्रौपदी उसी प्रकार विकसित होने लगी जैसे गुफा में वायु आदि के व्याघात के बिना चम्पकलता सुखपूर्वक बढती है। धीरे-धीरे वह श्रेष्ठ राजकन्या बाल्यावस्था से मुक्त हो उत्कृष्ट शरीर वाली सुन्दर युवती हो गई।

78. Under the care of five nurse-maids Draupadi started growing as Champak-vine grows undisturbed in a cave With passage of time she crossed her infancy and grew to be a beautiful, charming, and perfectly proportioned young woman

सूत्र ७९ : तए णं त दोवइ रायवरकन्नं अण्णया कयाइ अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसिय करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पायवदियं पेसति। तए ण सा दोवई रायवरकन्ना जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ।

सूत्र ७९ एक बार अन्त·पुर मे रहने वाली दासियो ने द्रौपदी को स्नानादि वस्त्रालकारो से विभूषित किया। फिर उसे राजा द्रुपद की चरण-वन्दना के लिए भेजा। द्रौपदी अपने पिता राजा द्रुपद के पास गई और उनके चरणो का स्पर्श किया।

79. One day the maid-servants of the palace got Draupadi ready after her bath, helping her dress and adorning her with ornaments When she was ready they sent her to get blessings from her father Draupadi approached King Drupad and touched his feet

सूत्र ८० : तए णं से दुवए राया दोवइं दारिय अंके निवेसइ, निवेसित्ता दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण या लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वयासी–

'जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तए णं ममं जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं णं अहं तव पुत्ता ! अज्जयाए सयंवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णसयंवरा, ज णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि, ते णं तव भत्तारे भविस्सइ,' त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, आसासित्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र ८० : राजा द्रुपद ने अपनी पुत्री को गोद में बिठाया और उसके रूप, यौवन और लावण्य को देखकर विस्मित हो गया। उसने द्रौपदी से कहा–"हे पुत्री ! मै स्वयं यदि किसी राजा या युवराज की पत्नी के रूप में तुझे दूँगा तो कौन जाने तू वहाँ सुखी हो या दुःखी? मुझे जीवनभर कही पश्चात्ताप न हो? अत हे पुत्री ! आज से मैं तुझे स्वयवर की अनुमति देता हूँ। आज से तू स्वयवरा हुई। तू अपनी इच्छा से जिस किसी राजा या युवराज का वरण करेगी वही तेरा भर्तार होगा।" इसप्रकार राजा द्रुपद ने इष्ट, प्रिय और मनोज्ञवाणी में ये शब्द कहकर द्रौपदी को आश्वस्त कर विदा किया।

80. King Drupad asked his daughter to sit in his lap He was astonished to see the charming beauty and youth of his daughter Drupad said to his daughter, "Daughter! If I select some prince or king for you and marry you to him, who knows if you will be happy or sad? In order to avoid repenting throughout my life I, today, give you permission to choose your own husband Whichever prince or king you choose will become your husband The king sent her away after uttering these words in sweet, caressing and reassuring voice.

द्रौपदी का स्वयंवर

सूत्र ८१ : तए ण से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं, तत्थ णं तुम कण्हं वासुदेव, समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे, बलदेवपामुक्खे पंच महावीरे, उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ, संबपामोक्खाओ सट्ठिं दुद्दन्तसाहस्सीओ, वीरसेणपामुक्खाओ इक्कवीस वीरपुरिससाहस्सीओ, महसेणपामोक्खाओ छप्पन्न बलवगसाहस्सीओ, अन्ने य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहिअ दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएण वद्धावेहि, वद्धावित्ता एव वयाहि–

सूत्र ८१ : राजा द्रुपद ने तब दूत को बुलवाया और उससे कहा–"देवानुप्रिय ! तुम द्वारका नगरी जाओ और वहाँ के सभी प्रतिष्ठित व्यक्तियो से भेंट करो। वे सम्माननीय व्यक्ति हैं–कृष्ण वासुदेव, समुद्रविजय आदि दस दशार, बलदेव आदि पाँच महावीर, उग्रसेन आदि सोलह हजार राजा, प्रद्युम्न आदि साढ़े तीन कोटि राजकुमार, शाम्ब आदि साठ हजार दुर्दान्त वीर, वीरसेन

आदि इक्कीस हजार वीर पुरुष, महासेन आदि छप्पन हजार बलवान तथा अन्य अनेक राजा, युवराज, तलवर, माण्डविक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठि, सेनापति और सार्थवाह आदि। इनसे भेंट करके यथाविधि नमस्कार करना, 'जय-विजय हो' कहकर अभिनन्दन करना और कहना–

THE SVAYAMVAR

81. King Drupad called one of his emissaries and said, "Beloved of gods! Go to Dwarka city and meet all the prominent people there These important people are—Krishna Vasudev, the ten Dashar kings led by Samudravijaya, five great warriors led by Baldev, sixteen thousand kings led by Ugrasen, thirty five million princes led by Pradyumna, sixty thousand fiery warriors led by Shamb, twenty one thousand great achievers led by Virsen, fifty six thousand great warriors led by Mahasen, and many other kings, princes, etc (as in Ch 1 para 19) Once you meet them, greet them extending due courtesy and uttering, "Be you victorious!" and convey the following message —

सूत्र ८२ . 'एव खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठजुण्ण-कुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवर-कण्णाए सयवरे भविस्सइ, त ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह।'

सूत्र ८२ : "हे देवानुप्रियो ! काम्पिल्यपुर नगर मे द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की आत्मजा और कुमार धृष्टद्युम्न की बहन श्रेष्ठ राजकुमारी द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है। अत आप सब राजा द्रुपद पर अनुग्रह करते हुए निर्विलम्ब काम्पिल्यपुर पधारे।"

82. 'Beloved of gods! The Svayamvar (bride-groom choosing) for the illustrious princess Draupadi, the daughter of King Drupad and queen Chulni, and the sister of prince Dhrishtadyumn, is being organized in Kampilyapur city You all are cordially invited to grace the occasion and oblige King Drupad Kindly proceed for Kampilyapur city without any delay'"

सूत्र ८३ तए ण से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठ विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।' जाव ते वि तहेव उवट्ठवेंति।

सूत्र ८३ : दूत ने हाथ जोड यथाविधि नमस्कार कर राजा की आज्ञा विनयपूर्वक स्वीकार की और अपने घर लौटकर सेवकों से कहा–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही चार घण्टाओ वाला अश्वरथ जोत कर ले आओ।" सेवको ने रथ उपस्थित किया।

83. The messenger joined his palms and with due greetings and humility accepted the order He went home, called his servants and ordered, "Beloved of gods! go and bring a four-bell chariot after yoking horses to it." The servants produced the chariot as told

सूत्र ८४ : तए णं से दूए ण्हाए जाव अलंकारविभूसियसरीरे चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता गहियाऽऽउह-पहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेण जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव वारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वारवइं नगरिं मज्झमज्झेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्ह वासुदेव समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल त चेव जाव समोसरह।

सूत्र ८४ दूत ने स्नानादि कर वस्त्राभूषण पहने, चार घण्टा वाले रथ पर चढ़ा और अस्त्र-शस्त्रधारी अनेक रक्षको के साथ काम्पिल्यपुर नगर के बीच से निकल पॉचाल देश को पार करता हुआ सीमा पर पहुँचा। फिर सुराष्ट्र जनपद के बीच होता हुआ द्वारका नगरी की दिशा में चला। द्वारका नगरी मे प्रवेश कर कृष्ण वासुदेव की बाहरी राज्य सभा के निकट आकर रथ को रोका। रथ से नीचे उतर अपने रक्षको से घिरा पैदल चलता हुआ वह कृष्ण वासुदेव के पास पहुँचा। वहॉ पहुँच कर उसने कृष्ण वासुदेव समुद्रविजय, एव दश-दशार आदि सभी उपस्थित सज्जनो का यथा विधि अभिवादन किया और स्वयवर मे पहुचने हेतु राजा द्रुपद का निमन्त्रण कह सुनाया।

84. The emissary got ready after taking his bath and dressing up and rode the four-bell chariot Taking along a large contingent of soldiers he moved through the streets of Kampilyapur city and crossing the Panchal state arrived at the border After this he crossed the Surashtra state and entered the city of Dwarka He stopped his contingent at the gate of the outer assembly of Krishna Vasudev He got down from the chariot and, surrounded by his guards, walked to Krishna Vasudev Observing the protocol he greeted Krishna Vasudev, ten Dashars including Samudravijaya, and other present dignitaries and conveyed the invitation to Svayamvar sent by King Drupad

सूत्र ८५ : तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ।'

सूत्र ८५ : कृष्ण वासुदेव उस दूत से समाचार सुनकर प्रसन्न व सन्तुष्ट हुए। फिर दूत का यथोचित सत्कार-सम्मान किया और तब उसे वापस विदा कर दिया।

85. Krishna Vasudev was pleased and contented to get this news from the emissary. He sent the emissary off after duly honouring him.

स्वयंवर के लिए कृष्ण का प्रस्थान

सूत्र ८६ : तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि।'

तए णं से कोडुबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया महया सद्देण तालेइ।

सूत्र ८६ : तत्पश्चात् कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुष (सेवक) को बुला कर आदेश दिया- "देवानुप्रिय! सुधर्मा सभा मे जाकर सामुदायिक भेरी बजाओ।"

सेवक ने हाथ जोडकर विनयपूर्वक वासुदेव कृष्ण की आज्ञा स्वीकार की और सुधर्मा सभा मे जाकर जोर-जोर से भेरी बजाई।

KRISHNA VASUDEV'S DEPARTURE

86. Krishna Vasudev called his servant and instructed, "Beloved of gods! Go to the Sudharma hall and blow the trumpet for general assembly."

The servant joined his palms and with due greetings and humility accepted the order. He went to the Sudharma hall and blew the trumpet loudly.

सूत्र ८७ : तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव-इड्ढि-सक्कार-समुदएण अप्पेगइया जाव पायविहार-चारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण वद्धावेंति।

सूत्र ८७ : उस सामुदायिक भेरी की आवाज सुनकर समुद्रविजय आदि सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति (विस्तार पूर्व के समान-सू-८१) स्नानादि करके अपने-अपने वैभव, ऋद्धि और सत्कार के अनुरूप वाहनादि पर चढ़कर कृष्ण वासुदेव के पास पहुँचे और यथाविधि उनका वन्दन अभिनन्दन किया।

87. Hearing the sound of the trumpet Samudravijaya and other prominent people (as detailed in para 81) got ready and riding the means of conveyance befitting their respective status came to Krishna Vasudev and formally greeted him.

सूत्र ८८ : तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगय जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र ८८ तब श्रीकृष्ण वासुदेव ने अपने सेवकों को बुलाकर कहा–हे दवानुप्रियो ! शीघ्र ही मेरे लिए अभिषेक किए हुए हस्तीरत्न को तैयार करो तथा घोडो, हाथियों युक्त चतुरंगिनी सेना सजाओ। सेवकों ने आज्ञा पालन कर सूचित किया।

88. Now Krishna Vasudev called his attendants and instructed them, "Beloved of gods! Get an elephant ready for me after due anointing and prepare the four pronged army to march" The servants did as told and reported back.

सूत्र ८९ . तए णं से कण्हे वासुदेव जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समुत्तजाला-कुलाभिरामे जाव अजणगिरिकूडसनिभ गयवइं नरवई दुरूढे।

तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयापामुक्खेहि दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहि अणेगाहि गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण बारवइं नयरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ८९ श्रीकृष्ण वासुदेव तब स्नानगृह मे गये और स्नानादि कर वस्त्रालकारो से विभूषित हो अजनगिरि के शिखर के समान गजपति पर वे नरपति आरूढ़ हो गये।

इसके बाद कृष्णवासुदेव समुद्रविजय आदि दस दशार (महान् पुरुषो) यावत् अनगसेना आदि कई हजार गणिकाओ के परिवार से घिरे पूर्ण वैभव तथा गाजे बाजे के साथ द्वारिका नगरी के बीचोबीच होते हुए नगर से बाहर निकले और सुराष्ट्र जनपद के बीच होते हुए देश की सीमा पर पहुँचे। वहॉ से पाचाल जनपद के बीच होते हुए कापिल्यपुर की ओर जाने को तैयार हुए।

89. Krishna Vasudev went to his bathroom and got ready after taking his bath and adorning himself with his dress and ornaments And then 'the king of men' rode the king elephant Now, Krishna Vasudev, surrounded by ten Dashars including Samudravijay, other dignitaries (as detailed in para 81), and also thousands of courtesans including Anangsena, and with all his grandeur and pomp and show, marched through the city of Dwarka and crossing the Surashtra state reached the border Here they commenced preparations for marching into Panchal state to reach Kampilyapur city

अन्य जनपदों मे दूत भेजना

सूत्र ९० : तए ण से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नगरं। तत्थ णं तुमं पडुरायं सपुत्तयं–जुहिट्ठिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसयसमग्ग, गंगेयं, विदुरं, दोणं, जयद्दहं, सउणिं, कीवं, आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह।'

सूत्र ९० उधर द्रुपद राजा ने एक और दूत को बुलाकर कहा-"देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर जाओ और वहाँ राजा पाण्डु, उनके पाँच पुत्र-युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव, सौ भाइयों सहित दुर्योधन, गागेय, विदुर, द्रोण, जयद्रथ, शकुनि, कर्ण और अश्वत्थामा को यथाविधि दोनो हाथ जोड़कर नमन करके द्रौपदी के स्वयवर मे आने का निमन्त्रण दो।"

MESSENGERS TO OTHER STATES

90. Back at Kampılyapur cıty Kıng Drupad called another of hıs emmıssarıes and saıd, "Beloved of gods! Go to Hastınapur, meet Kıng Pandu, hıs five sons, Yudhısthır, Bheem, Arjun, Nakul, and Sahadev, the hundred Kauravs ıncludıng Duryodhan, and Gangeya, Vıdur, Dron, Jayadrath, Shakunı, Karn, and Ashvatthama After duly greetıng them joınıng your palms, extend to them an ınvıtatıon to come to the Svayamvar of Draupadı "

सूत्र ९१ : तए ण से दूए एव वयासी जहा वासुदेवे, नवरं भेरी नत्थि। जाव जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र ९१ दूत ने हस्तिनापुर जाकर वैसे ही कहा जैसे पहले दूत ने वासुदेव को कहा। और राजा पाण्डु ने वैसा ही किया जैसा कृष्ण वासुदेव ने। अन्तर यह था कि हस्तिनापुर मे भेरी नही थी। पाण्डु राजा ने भी अपने स्वजनो के साथ कापिल्यपुर जाने की तैयारी की।

91. The emıssary went to Hastınapur and saıd to Kıng Pandu what the first emıssary had told to Krıshna Vasudev Kıng Pandu also dıd as Krıshna Vasudev had done, the only dıfference beıng that there was no trumpet blowıng at Hastınapur Kıng Pandu also made necessary preparatıons to proceed to Kampılyapur cıty

सूत्र ९२ : एएणेव कमेण तच्चं दूय चंपानयरि, तत्थ ण तुम कण्हं अंगराय, सेल्लं, नदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९२ : इसी क्रम से तीसरे दूत को चम्पानगरी भेजा और अगराज कृष्ण, सेल्लक राजा और नन्दिराज को हाथ जोडकर सन्मानपूर्वक निमन्त्रण कहलवाया।

92. In thıs order the thırd emıssary was sent to Champanagarı and an ınvıtatıon was extended wıth due honour to the ruler of Anga state, Kıng Krıshna, Kıng Sellak, and Kıng Nandı

सूत्र ९३ : चउत्थ दूय सुत्तिमइं नयरि, तत्थ णं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडे करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९३ . चौथे दूत को शुक्तिमती नगरी भेजा और दमघोष के पुत्र और पाँच सौ भाइयो सहित राजा शिशुपाल को आदरपूर्वक निमन्त्रण कहलवाया।

93. The fourth emissary was sent to Shuktimati city and an invitation was extended with due honour to King Shishupal, the son of Damghosh, with his five hundred brothers

सूत्र ९४ : पंचमगं दूयं हत्थिसीसं नगरं, तत्थ णं तुमं दमदंतं नाम रायं करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९४ : पाँचवे दूत को हस्तीशीर्ष नगर भेजा और दमदत राजा को निमन्त्रण कहलवाया।

94. The fifth emissary was sent to Hastisheersh city and an invitation was extended with due honour to King Damdant

सूत्र ९५ : छट्ठ दूयं महुरं नयरिं, तत्थ णं तुम धरं रायं करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९५ : छठे दूत को मथुरा नगरी भेजा और राजा धर को निमन्त्रण कहलवाया।

95. The sixth emissary was sent to Mathura city and an invitation was extended with due honour to King Dhar

सूत्र ९६ : सत्तम दूय रायगिहं नगर, तत्थ ण तुम सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९६ : सातवे दूत के साथ राजगृह नगर के राजा जरासिन्धु-पुत्र सहदेव को निमन्त्रण भेजा।

96. The seventh emissary was sent to Rajagriha city and an invitation was extended with due honour to King Sahadev, son of Jarasandh

सूत्र ९७ : अट्ठम दूयं कोडिण्ण नय, तत्थ तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९७ : आठवे दूते के साथ कौण्डिन्य नगर के राजा भीष्मक-पुत्र रुक्मि को निमन्त्रण भेजा।

97. The eighth emissary was sent to Kaundinya city and an invitation was extended with due honour to King Rukmi, son of Bhishmak

सूत्र ९८ : नवम दूयं विराडनगर। तत्थ ण तुमं कीयग भाउसयसमग्ग करयल तहेव जाव समोसरह।

सूत्र ९८ : नौवें दूत के साथ विराट नगर के राजा कीचक को सौ भाइयो के साथ निमन्त्रण भेजा।

98. The ninth emissary was sent to Virat city and an invitation was extended with due honour to king Keechak and his one hundred brothers.

सूत्र ९९ : दसमं दूयं अवसेसेसु य गामाऽगरऽनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह।

सूत्र ९९ : दसवे दूत को अन्य ग्रामो, आकरो व नगरो मे भेज कर अनेक सहस्र राजाओं को निमन्त्रण कहलवाया।

99. The tenth emissary was sent to other villages, towns, and cities and invitatios were extended with due honour to thousands of other rulers.

सूत्र १०० तए ण से दूए तहेव निग्गच्छइ, जेणेव गामाऽगर नगर जाव समोसरह।

सूत्र १०० वह दूत पूर्ववत निकलकर ग्रामादि मे गया और पूर्ववत् राजाओ को निमन्त्रण दिया।

100. This last emissary went to numerous villages, etc and extended invitations as mentioned before

सूत्र १०१ : तए ण ताइ अणेगाइं रायमहस्साइं तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तं दूय सक्कारेंति, समाणेति, सक्कारित्ता समाणित्ता पडिविसज्जिति।

सूत्र १०१ अनेक हजार राजाओ ने उस दूत से सदेश सुन-समझकर प्रसन्न हो उसे सत्कार-सम्मान सहित विदा किया।

101. These thousands of kings were pleased and contented to get the invitation and bid the emissary farewell with due honour

सूत्र १०२ तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय पत्तेय ण्हाया सनद्ध-बद्ध-वम्मियकवया हत्थिखधवरगया हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेनाए सद्धि सपरिवुडा महया भड-चडगर-पहगरविदपरिक्खित्ता सएहि नगरेहितो अभिनिग्गच्छति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेवे पचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र १०२ वासुदेव के समान ही सभी राजाओ ने तैयारी की और हाथियो पर बैठ अपनी-अपनी सेना के साथ अपने-अपने नगर से निकल कर कापिल्यपुर को प्रस्थान किया।

102. Like Krishna Vasudev all the kings made preparations and riding their elephants they left their cities with their armies and proceeded towards Kampilyapur city

अतिथि-स्वागत की तैयारी

सूत्र १०३ तए णं से दुवए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! कपिल्लपुरे नयरे बहिया गगाए महानदीए अदूरसामते एगं महं सयवरमडव करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठ, लीलट्ठियसालभंजियाग' जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र १०३ : उधर राजा द्रुपद ने सेवको को बुला कर कहा–"देवानुप्रियो ! तुम जाकर कापिल्यपुर नगर के बाहर गगा नदी से न अधिक पास न अधिक दूर एक विशाल स्वयवर मण्डप बनाओ जो सैकडों स्तम्भो से बना हो, जिन पर लीला करती पुतलियाँ बनी हों और जो मन को प्रफुल्लित करने वाला तथा सुन्दर, दर्शनीय और रमणीक हो।" सेवको ने मण्डप तैयार करके राजा को सूचित किया।

PREPARATIONS FOR WELCOME

103. King Drupad once again called his servants and instructed, "Beloved of gods! Go out of the town and select a spot on the bank of the Ganges which is neither very far nor very near Kampilyapur city and erect a large Svayamvar pavilion. It should have hundreds of beautifully decorated pillars embellished with motifs of dancing girls This pavilion should be enchanting, beautiful, grand, and inviting " The servants did as told and reported back.

सूत्र १०४ . तए णं से दुवए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह।' ते वि करित्ता पच्चप्पिणति।

सूत्र १०४ राजा द्रुपद ने पुन. सेवकों को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! शीघ्रता से वासुदेव आदि अनेक हजारो राजाओ के लिए आवास तैयार करो।" सेवको ने आवास की व्यवस्था कर सूचना दी।

104. King Drupad once again called his staff and said, "Beloved of gods! Make arrangements for the stay of Krishna Vasudev and other thousands of kings " The servants did as told and reported back

सूत्र १०५ · तए ण दुवए राया वासुदेवपामुक्खाण बहूणं रायसहस्साण आगमणं जाणेत्ता पत्तेय पत्तेयं हत्थिखध जाव परिवुडे अग्घं च पज्ज च गहाय सव्विड्ढीए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामोक्खाइ अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसि वासुदेवपामुक्खाण पत्तेय पत्तेय आवासे वियरइ।

सूत्र १०५ · वासुदेव आदि अनेक राजाओ के आगमन की सूचना पाकर राजा द्रुपद स्वय हाथी पर बैठकर सुभटो को साथ ले, अर्घ्य (पुष्प आदि) और जल (पाद्य-चरण पखालने के लिए) लेकर सम्पूर्ण वैभव सहित प्रत्येक राजा का स्वागत करने हेतु नगर से बाहर निकला। जिस स्थान पर वासुदेव आदि राजा आ पहुँचे थे वहाँ जाकर उन सबका अर्घ्य और पाद्य से सत्कार सम्मान किया और उन्हें पृथक्-पृथक् आवास प्रदान किये।

105. When King Drupad got the information about the arrival of the kings including Krishna Vasudev, he himself came out of the city riding an elephant and with a battalion of guards, all his regalia, and the paraphernalia of traditional welcoming (bouquets of flowers and pots filled with water) for each and every royal guest He reached the spot where the guests had arrived and duly extended traditional welcome by pouring water

over their feet and offering them bouquets of flowers After this he sent them to independent dwellings

सूत्र १०६ : तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं पत्तेय खंधावारनिवेसं करेंति, करित्ता सएसु सएसु आवासेसु अणुपविसंति, अणुपविसित्ता सएसु आवासेसु आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरति।

सूत्र १०६ : वासुदेव आदि सभी राजा अपने-अपने नियत आवासो पर पहुँचे, हाथियो पर से उतर कर पड़ाव डाले और तब आवासो मे प्रविष्ट हुए। कोई आसन पर बैठा तो कोई शैय्या पर सो गया। अनेको गंधर्व उनके मनोरजन के लिए गान, नृत्य, नाटक आदि करने लगे।

106. Krishna Vasudev and the other kings reached the dwellings allotted to each one of them They got down from the elephant and made camp After that they entered the dwellings provided by King Drupad Some of them sat on chairs and others reclined on beds Numerous Gandharvas (demigods specializing in performing arts) entertained them with songs, dances, dramas, and other such performances

सूत्र १०७ : तए ण से दुवए राया कपिल्लपुरं नगरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, विउल असणं पाणं खाइमं साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विउलं असणं पाण खाइम साइम सुरं च मज्ज च मस च सीधु च पसण्णं च सुबहुपुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालंकार च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह।' ते वि साहरति।

सूत्र १०७ . अतिथियो को यथास्थान ठहरा कर राजा द्रुपद काम्पिल्यपुर लौटे और विपुल भोजन सामग्री का प्रबन्ध करवाया। तैयारी पूरी होने पर राजा ने सेवको को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! तुम यह सब भोजन सामग्री, सुरा, मद्य, माँस, सीधु और प्रसन्ना (मदिरा विशेष) तथा प्रचुर पुष्प, वस्त्र, गध, मालाएँ एव अलकार लेकर वासुदेव आदि हजारो राजाओं के आवासो पर जाओ।" सेवकों ने राजाज्ञानुसार सभी सामग्री यथास्थान पहुँचाई।

107. After making the guests comfortable at their allotted dwellings King Drupad returned to Kampilyapur city and made arrangements for cooking large quantities of food When the preparations were complete he called his servants and said, "Beloved of gods! Collect all this food, a variety of beverages in liberal quantities, and enough flowers, perfumes, apparels, garlands and ornaments and take all this to the dwellings of Krishna Vasudev and the other kings " The servants did as told

सूत्र १०८ : तए णं वासुदेवपामुक्खा तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं जाव पसन्नं च आसाएमाणा आसाएमाणा विहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति।

सूत्र १०८ : वासुदेव आदि सभी राजा उस भोजनादि सामग्री का आस्वादन कर आनन्द लेने लगे। भोजन के पश्चात् वे सुखदायक आसनों पर बैठ गधर्व-संगीत नृत्य का आनन्द लेते हुए समय बिताने लगे।

108. Krishna Vasudev and all the other kings enjoyed all the food and beverages After eating they rested on comfortable seats and spent their time enjoying the performances by the Gandharvas

स्वयंवर की उद्घोषणा

सूत्र १०९ : तए ण से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'गच्छह ण तुमे देवाणुप्पिया ! कपिल्लपुरे संघाडग जाव पहेसु वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखधवरगया महया महया सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एव वदह–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! कल्ल पाउप्पभायाए दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए देवीए अत्तयाए, धट्ठज्जुण्णस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवर भविस्सइ, तं तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाण अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहि वीइज्जमाणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं पत्तेय नामकेसु आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइ रायवरकण्ण पडिवालेमाणा पाडिवालेमाणा चिट्ठह त्ति घोसणं घोसेह, मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह।'

तए ण कोडुबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र १०९ : सध्या समय राजा द्रुपद ने अपने सेवको को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और काम्पिल्यपुर नगर के शृगाटक (चौराहे-तिराहे) आदि मार्गो में तथा वासुदेव आदि हजारो राजाओ के आवासो के निकट हाथी पर चढकर उच्च स्वर तथा स्पष्ट शब्दो मे बार-बार उद्घोष कर यह घोषणा करो–'देवानुप्रियो ! आगामी प्रभात काल मे राजा द्रुपद की पुत्री, रानी चुलनी देवी की आत्मजा और कुमार धृष्टद्युम्न की बहन राजकुमारी द्रौपदी का स्वयंवर होगा। अत हे देवानुप्रियो ! आप सभी राजा द्रुपद पर अनुग्रह कर, स्नानादि से निवृत्त हो, विभूषित हो, हाथी पर आरूढ़ हो,कोरट फूलों की माला लगे छत्र धारण कर, उत्तम श्वेत चामर ढुलवाते हुए, घोडों, हाथियो, रथो तथा सुभटों के समूहों से युक्त चतुरंगिणी सेना से घिरे स्वयंवर मण्डप में

पधारें। वहाँ अपने-अपने नामांकित पृथक्-पृथक् आसनो पर विराज कर राजकन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें।' घोषणा करके मुझे सूचित करो।"

सेवकों ने राजाज्ञा का पालन कर सूचित किया।

SVAYAMVAR ANNOUNCED

109. In the evening King Drupad called his attendants and instructed, "Go riding an elephant and make the following announcement loudly and clearly many times at various places in the city and around the camps of Krishna Vasudev and the other kings—

'Beloved of gods! Tomorrow morning the Svayamvar (bride-groom choosing) for the illustrious princess Draupadi, the daughter of King Drupad and queen Chulni, and the sister of prince Dhrishtadyumn, is being organized in Kampilyapur city Each one of you is cordially invited to grace the occasion and oblige King Drupad Kindly get ready after taking your bath and dressing up and come to the Svayamvar pavilion riding an elephant with a canopy made up of garlands of Korant flowers, plying exquisite white whisks, and surrounded by your four pronged army comprising of elephants, horses, chariots and foot-soldiers After arriving there, take the seat bearing your name and wait for the arrival of the princess '"

The servants did as told and reported back

सूत्र ११० तए णं से दुवए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सयंवरमडवं आसियसमज्जियोवलित्त सुगधवरगंधिय पंचण्णपुप्फपुजोवयार-कलियं कालागरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क जाव गधवट्टिभूय मचाइमचकलिय करेह। करित्ता वासुदेवपामोक्खाण बहूण रायसहस्साण पत्तेय पत्तेय नामकियाइ आसणाइ अत्थुय-पच्चत्थुयाइं रएह, रयइत्ता एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह।' ते वि जाव पच्चप्पिणति।

सूत्र ११० : द्रुपद राजा ने पुन: अपने सेवको को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! स्वयवर मण्डप मे जाकर जल का छिडकाव करो, झाडू लगवाओ, लिपाई करवाओ और श्रेष्ठ सुगधित द्रव्यो से सुगधित करो। पचरगे फूलो से उसे आच्छादित करवा दो। कृष्ण-अगर-श्रेष्ठ कुंदुरुक्क और तुरुष्क (लोबान) आदि की धूप से गध-वाटिका समान अत्यन्त सुगधित बनवा दो। उसके भीतर मच लगवा दो और उन पर वासुदेव आदि हजारो राजाओं के नामो से अकित अलग-अलग आसन सफेद वस्त्रो से ढकवा कर लगवा दो। ये सब कार्य सम्पन्न कर मुझे सूचित करो।" सेवको ने कार्य सम्पन्न कर राजा को सूचित कर दिया।

110. King Drupad once again called his servants and instructed, "Beloved of gods! Hurry up and get the outer assembly hall cleaned, anointed and

sprinkled with good fragrant water Decorate it with enchanting, fragrant and multicoloured flowers Burn a variety of incenses including Krishna-Agar, best Kunduruk and Turushk to make it redolent and pleasant like a chamber of perfumes Erect platforms inside it and install chairs with white covers and bearing names of Krishna Vasudev and thousands of other kings After making all these arrangements report back to me " The servants did as told and reported back

अतिथि-सत्कार

सूत्र १११ तए णं वासदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखधवरगया सकोरट मल्ल दामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहिं हय-गज जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेण जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अणुपविसति, अणुपविसित्ता पत्तेय पत्तेय नामकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइ रायवरकण्ण पडिवालेमाणा चिट्ठंति।

सूत्र १११ दूसरे दिन प्रात काल वासुदेव आदि हजारो राजा स्नानादि से निवृत्त हो तैयार होकर हाथियो पर सवार हो फूलो की माला व छत्र धारण किये अपने पूर्ण वैभव सहित सैन्य-सज्जा तथा गाजे-बाजे के साथ स्वयवर मण्डप मे पहुँचे मण्डप मे प्रवेश कर अपना-अपना स्थान ग्रहण किया और राजकुमारी द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे।

GREETING THE GUESTS

111. Next morning Krishna Vasudev and the other kings got ready after bathing and dressing up and came to the Svayamvar pavilion riding elephants with canopies made up of garlands of Korant flowers, plying exquisite white whisks, and surrounded by armies, with all their regalia and pomp and show After arriving, they took their allotted seats and waited for the arrival of the princess

सूत्र ११२ : तए ण से दुवए राया कल्ल ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखधवरगए सकोरंटमल्लदामेण हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडे महया भडचडकर-रह-परिकरविदपरिक्खित्ते कपिल्लपुर मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सयंवरमडवे, जेणेव वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल जाव वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे उववीयमाणे चिट्ठइ।

सूत्र ११२ : प्रात काल राजा द्रुपद भी तैयार हो वैसी ही सैन्य-सज्जा व वैभव सहित हाथी पर बैठकर चतुरंगिणी सेना के साथ (सू १०९) कापिल्यपुर से निकल कर स्वयंवर मण्डप मे आया।

वहाँ पहले से उपस्थित वासुदेव आदि राजाओ के निकट गया और हाथ जोड आदरपूर्वक उनका अभिनन्दन किया। फिर कृष्ण वासुदेव पर श्रेष्ठ चामर डुलाने लगा।

112. In the mornıng, Kıng Drupad also got ready and dısplayıng hıs grandeur and the army he also came out of Kampılyapur cıty ridıng an elephant (as ın para 109) He entered the Svayamvar pavılıon, approached Krıshna Vasudev and the other kıngs, and joınıng hıs palms he extended hıs greetıngs wıth due respect After that, he started fannıng Krıshna Vasudev with exquısıte whısks

सूत्र ११३ : तए णं सा दोवई रायवरकन्ना कल्लं पाउप्पभायाए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाया जाव सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइं वत्थाइं पवर-परिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ।

तए णं तं दोवइं रायवरकन्न अतेउरियाओ सव्वालकारविभूसिय करेंति, कि ते? वरपायत्तणेउर जाव चेडिया-चक्कावाल-मयहरग-विदपरिक्खत्ता अतेउरओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धि चाउग्घंट आसरह दुरूहइ।

सूत्र ११३ उधर राजकुमारी द्रौपदी प्रभात होने पर स्नानागार मे गई और स्नान करके उसने शुद्ध और सभा मे जाने योग्य मॉगलिक व उत्तम वस्त्र पहने। फिर जिन प्रतिमाओ का पूजन अर्चन किया (सम्पूर्ण वर्णन रायप्रश्नीय सूत्र के सूर्याभ देव वर्णन के अनुसार) और अन्त पुर मे लौट गई।

वहाँ अन्त पुर मे रही कुशल चेटका–महिलाओ आदि ने राजकुमारी द्रौपदी को सागोपाग नूपुर आदि विविध आभूषणो से अलकृत कर दिया। फिर वह अनेक दासियो से घिर कर अन्त पुर मे बाहर निकली और बाहरी सभा मे आई जहॉ चार घण्टाओ वाला रथ तैयार खडा था। अपनी क्रीडा-धात्री तथा लेखिका दासी के साथ वह रथ पर आरूढ़ हो गई।

113. In the mornıng Prıncess Draupadı went ınto her bathroom and dressed herself ın whıte and auspıcıous apparel suıtable for the kıng's assembly After thıs, she worshıped the Jın ımages (as mentıoned ın Raıpasenıya Sutra wıth the descrıptıon of Suryaabh god) and returned to her room

There the expert beautıcıans of the palace embellıshed her wıth Nupur and other ornaments, from head to feet She left her room and surrounded by her maıd servants came to the outer hall Wıth her Krıda-Dhatrı (playıng nurse-maıd) and scrıbe-maid she boarded a four-bell charıot

सूत्र ११४ : तए णं धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थं करेइ। तए णं सा दोवई रायवरकण्णा कपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए य सद्धिं सयंवरमडवं अणुपविसइ, करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ।

सूत्र ११४ · कुमार धृष्टद्युम्न द्रौपदी के इस रथ के सारथी बने। राजकुमारी द्रौपदी कापिल्यपुर नगर के बीच से होकर स्वयवर मण्डप की ओर गई। वहाँ रथ रोका गया और द्रौपदी नीचे उतरी। अपनी क्रीडा धाय और दासियों के साथ उसने स्वयवर मण्डप मे प्रवेश किया और दोनों हाथ जोड़ कर वहाँ उपस्थित वासुदेव आदि राजाओं को यथा विधि प्रणाम किया।

114. Prince Dhrishtadyumn became the driver of her chariot Passing through the streets of Kampilyapur city Draupadi came to the Svayamvar pavilion The chariot was stopped there and Draupadi got down. She entered the pavilion with her Krida-Dhatri and maids and joining her palms she conveyed her formal respectful greetings to Krishna Vasudev and other kings

सूत्र ११५ तए ण सा दोवई रायवरकन्ना एगं महं सिरिदामगंडं, किं ते? पाडल-मल्लिय-चपय जाव सत्तच्छयाईहिं गधद्धणि मुयंत परमसुहफास दरिसणिज्जं गिण्हइ।

सूत्र ११५ कुमारी द्रौपदी ने फूल मालाओं का एक बडा गजरा हाथों मे उठाया। यह गजरा पाटल, मल्लिका, चम्पक, सप्तपर्ण आदि फूलो से गूँथा हुआ था, उसमे से सुगंध निकल रही थी, उसका स्पर्श सुखद था और वह दर्शनीय था।

115. Princess Draupadi picked up a thick entwined garland of flowers. This garland was made up of Patal, Mallika, Champak, Saptparn, and other flowers It was fragrant, soft and beautiful

राजाओं का परिचय

सूत्र ११६ तए णं सा किड्डाविया सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लग दप्पणं गहेऊण सललिय दप्पणसंकेतबिबसदंसिए य से दाहिणेण हत्थेणं दरिसिए पवररायसीहे। फुड-विसय-विसुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुर-भणिया सा तेसि सव्वेसिं पत्थिवाण अम्मापिऊण वंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कंति-कति-बहुविहआगम-माहप्प-रूव-जोव्वणगुण-लावण्ण-कुल-सील-जाणिया कित्तणं करेइ।

सूत्र ११६ : द्रौपदी की क्रीडा-धात्री ने अपने बाये हाथ मे एक चमकता हुआ दर्पण लिया। उस दर्पण मे जिस राजा का प्रतिबिम्ब दिखाई पडता उस श्रेष्ठ सिह के समान राजा को अपने दाहिने हाथ से वह द्रौपदी को दिखलाने लगी। साथ ही स्फुट-स्पष्ट विशद, विशुद्ध, लय युक्त, गम्भीर और मधुर वचनो में उन राजाओ के मातृ एवं पितृ वशो, सत्त्व (शक्ति) सामर्थ्य, गोत्र, पराक्रम, कान्ति, शास्त्र ज्ञान, विस्तृत ज्ञान, महात्म्य, रूप, यौवन, गुण, लावण्य, कुल शील आदि को जानकर उनका विवरण प्रस्तुत करने लगी।

THE INTRODUCTION OF KINGS

116. The Krida-Dhatri of Draupadi took a shining mirror in her left hand She pointed with her right hand at the gorgeous lion-like king whose reflection Draupadi saw in the mirror At the same time she enquired about and portrayed his lineage, power, strength, clan name, valor, brilliance, knowledge of the scriptures, general knowledge, greatness, physical appearance, youth, virtues, charm, family virtues etc in clear, loud, pure, accentuated, deep and sweet voice

सूत्र ११७ पढम जाव वण्हिपुगवाण दमदसारवरवीरपुरिसाण तेलोक्कबलवगाण सत्तु-सय-सहस्स-माणावमद्दगाण भवसिद्धिय-पवरपुडरीयाण चिल्लगाणं बल-वीरिय-रूव-जोव्वण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तण करेइ। ततो पुणो उग्गसेणमाईयाण जायवाण। भणइ य–'सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगधहत्थीण जो हु ते होइ हियय-दइयो।'

सूत्र ११७ सर्वप्रथम उसने वृष्णियो (श्रीकृष्ण के कुल वश) मे मुख्य दस दशार वीरो का वर्णन किया जो तीनो लोको मे सबसे बलवान थे, लाखो शत्रुओं का मान मर्दन करने वाले थे, भव्य जीवो मे श्रेष्ठ श्वेत कमल के समान शोभित थे और तेज से देदीप्यमान थे। गुण कीर्तन करने वाली उस धात्री ने इसके बाद उग्रसेन आदि यादवा का वर्णन किया और कहा–"ये यादव सौभाग्य और रूप से सुशोभित है और श्रेष्ठ पुरुषो मे गधहस्ती के समान है। इनमे से कोई तेरे हृदय को प्रिय हो तो उसका वरण कर।"

117. First of all she described the ten Dashar braves, the leaders among the Vrishnis (Krishna Vasudev's clan), who were the strongest in the three realms, the conquerors of millions of foes, like white lotuses among the noble souls, and radiant with aura After these the bard-like maid described the Yadavs including Ugrasen and said, "These Yadavs are endowed with good fortune and beauty, and like Gandh-hasti (the king elephant emanating fragrance of the rut-fluid) among the virtuous If you are drawn toward any one of these you may choose him "

पाँच पति वरण

सूत्र ११८ तए ण सा दोवई रायवरकन्नगा बहूण रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समतिच्छमाणी समतिच्छमाणी पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी चोइज्जमाणी जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पच पंडवे तेणं दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ, करित्ता एवं वयासी–'एए ण मए पच पंडवा वरिया।'

सूत्र ११८ राजकुमारी द्रौपदी इस प्रकार अनेक सहस्र श्रेष्ठ राजाओ के बीच होकर उनका अतिक्रमण करती-करती पूर्वकृत निदान (नियाणा) से प्रेरित हो वहॉ पहुँची जहाँ पाँच पाण्डव बैठे

थे। वहाँ उसने उन पाँचो पाण्डवो को अपने हाथ मे रहे पच रगे फूलो के गजरे से आवेष्टित कर दिया और कहा—"मैने इन पाँचो पाण्डवो का वरण किया।"

CHOOSING FIVE HUSBANDS

118. Rejecting thousands of illustrious kings in her parade for selection, guided by the ambition from her earlier birth, princess Draupadi arrived at the place where the five Pandav brothers were sitting She encircled all the five brothers with the large multi-coloured garland in her hand and said, "I choose all these five Pandav brothers "

सूत्र ११९ तए ण तेसि वासुदेवपामोक्खाणं बहूणि रायसहस्साणि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एव वयति–'सुवरिय खलु भो ! दोवईए रायवरकन्नाए त्ति कट्टु सयवरमडवाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सया सया आवासा तेणेव उवागच्छंति।

सूत्र ११९ इस पर वहाँ उपस्थित वासुदेव आदि सहस्रो राजाओं ने उच्च स्वर मे बार-बार उद्घोष किया—"अहो ! राजकुमारी द्रौपदी ने श्रेष्ठ वरण किया !" इस उद्घोष के बाद बाकी सभी राजा स्वयवर मण्डप से बाहर निकले और अपने-अपने आवासो मे चले गये।

119. Krishna Vasudev and other thousands of kings hailed the princess loudly, "Indeed! princess Draupadi has made the best selection " And the assembly dispersed The kings left the pavilion and proceeded to their camps

सूत्र १२० तए ण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पच पडवे दोवइ रायवरकण्ण चाउग्घटं आसरह दुरूहइ, दुरूहित्ता कपिल्लपुर मज्झमज्झेण जाव सय भवण अणुपविसइ।

सूत्र १२० कुमार धृष्टद्युम्न ने पाँचो पाण्डवो और राजकुमारी द्रौपदी को चार घण्टाओ वाले रथ पर विठाया और कापिल्यपुर के बीच से चलते हुए अपने राजभवन मे प्रवेश किया।

120. Prince Dhrishtadyumn drove Draupadi and the Pandavs in the four-bell chariot, through the streets of Kampilyapur city, to the royal palace

विवाह समारोह

सूत्र १२१ · तए ण दुवए राया पंच पडवे दोवइं रायवरकण्ण पट्टयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ, पचण्हं पडवाण दोवईए पाणिग्गहण करावेइ।

सूत्र १२१ · राजा द्रुपद ने पाँचों पाण्डवो तथा राजकुमारी द्रौपदी को पाट पर बिठाया। सोने-चाँदी के कलशो में भरे पानी से स्नान करवाया और तब अग्नि होम करवा कर उनका पाणिग्रहण करवा दिया।

MARRIAGE CEREMONY

121. King Drupad made the five Pandavs and Draupadi sit on a platform and got the marriage rituals performed by anointing them with water poured from gold and silver urns and putting offerings into the sacred fire

सूत्र १२२ : तए णं से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णाए इम एयारूवं पीइदाणं दलयइ, त जहा–अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धण-कणग जाव दलयइ।

तए णं से दुवए राया ताइ वासुदेवपामोक्खाइ विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ गंध जाव पडिविसज्जइ।

सूत्र १२२ फिर राजा द्रुपद ने द्रौपदी को विपुल प्रीतिदान दिया–जैसे आठ करोड स्वर्ण मुद्राएँ आदि, आठ प्रेषणकारिणी (आने-जाने का काम करने वाली) दासियाँ आदि, अन्य बहुत-सा धन, कनक वस्त्र अलकार आदि।

अन्त मे राजा द्रुपद ने वासुदेव आदि सभी राजाओ को भोजन कराया और यथाविधि सत्कार सन्मान कर विदा किया।

122. After the marriage ceremony King Drupad gave abundant valuable gifts to Draupadi These included eighty million gold (coins), eight errand-maids, and great wealth including cash, gold, and other valuables

And finally King Drupad invited all the guests to a feast and bid them farewell with due honour and courtesy

सूत्र १२३ : तए णं से पडू राया तेसि वासुदेवपामोक्खाण बहुण रायसहस्साण करयल जाव एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पचण्ह पडवाणं दोवइए य देवीए कल्लाणकारे भविस्सइ, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीण चेव समोसरह।

सूत्र १२३ राजा पाण्डु ने वासुदेव आदि मुख्य राजाओ का हाथ जोडकर यथाविधि अभिनन्दन किया और कहा–"देवानुप्रियो ! हस्तिनापुर नगर मे पाँचो पाण्डवो और द्रौपदी का कल्याण-करण महोत्सव (आशीर्वाद समारोह) होगा। अत देवानुप्रियो ! आप सब मुझ पर अनुग्रह कर यथासमय शीघ्र पधारना।

123. Joining his palms King Pandu greeted Krishna Vasudev and the other kings and said, "Beloved of gods! A reception and blessing ceremony for the Pandavs and Draupadi will be held at Hastinapur As such, please honour me by arriving at your earliest and in time

सूत्र १२४ : तए णं वासुदेवपामोक्खा पत्तेयं २ जाव जेणएव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र १२४ : वासुदेव आदि सभी राजा अलग-अलग हस्तिनापुर नगर आने को तैयार हो गये।

124. Krishna Vasudev and all the other kings agreed to come to Hastinapur.

सूत्र १२५ : तए ण पंडुराया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे पचण्ह पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह, अब्भुग्गयमूसियं वण्णओ जाव पडिरूवे। तए ण ते कोडुबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव करावेति।

सूत्र १२५ राजा पाण्डु ने अपने कौटुम्बिक पुरुषो-सेवको को बुलाकर आदेश दिया- "देवानुप्रियो ! तुम हस्तिनापुर जाओ और पाँचो पाण्डवों के लिए पाँच श्रेष्ठ भवन बनवाओ जो सात तल्ले ऊँचे हो और अत्यन्त मनोहर हो।" सेवको ने राजा की आज्ञा विनयपूर्वक स्वीकार की और जाकर उसी प्रकार भवन बनवाए।

125. King Pandu called his servants and said, "Beloved of gods! Proceed to Hastinapur and get five houses constructed for the five Pandavs These houses should be exquisite and beautiful and having seven storeys each " The servants humbly accepted the order, went to Hastinapur, and got the houses constructed

हस्तिनापुर में समारोह

सूत्र १२६ तए ण से पडुए पचहि पडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हय-गय-संपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए।

सूत्र १२६ . राजा पाण्डु पाँचो पाण्डवो और द्रौपदी को साथ ले हाथी-घोड़े आदि अपनी सेना सहित कांपिल्यपुर से रवाना हो हस्तिनापुर पहुँचे।

RECEPTION IN HASTINAPUR

126. King Pandu left Kampilyapur and came to Hastinapur with five Pandavs, Draupadi, and his army

सूत्र १२७ : तए ण से पंडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे कारेह अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं' तहेव जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र १२७ राजा पाण्डु ने वासुदेव आदि राजाओ के आने की सूचना पाकर अपने सेवको को बुलाया और कहा–"देवानुप्रियो ! जाकर हस्तिनापुर नगर के बाहर वासुदेव आदि राजाओं के लिए आवास तैयार कराओ जो अनेक स्तम्भो आदि से युक्त सुरम्य हो, (पूर्व सम)।" सेवको ने राजाज्ञा का पालन कर सूचना दी।

127. When King Pandu got the news of arrival of Krishna Vasudev and other kings he called his servants and said, "Go and get beautiful houses with numerous pillars constructed outside Hastinapur for Krishna Vasudev and other kings " The servants did as told and reported back

सूत्र १२८ तए ण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छंति।

तए ण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुपए जाव जहारिह आवासे दलयइ।

तए ण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइ सयाइ आवासाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तहेव जाव विहरंति।

सूत्र १२८ तब वासुदेव आदि अनेक राजा हस्तिनापुर आ पहुँचे। राजा पाण्डु उनके आगमन की सूचना पाकर प्रसन्न व सतुष्ट हुए। वे स्नानादि कर तैयार हुए और आगुन्तको का अभिवादन सत्कार कर उन्हे उचित आवास प्रदान किये। वे सभी राजा अपने-अपने आवास मे गये और आनन्द से समय बिताने लगे। (वर्णन राजा द्रुपद के समान)

128. When King Drupad got the information about the arrival of Krishna Vasudev and other kings he was pleased and contented He got ready after his bath etc , went out and duly extended traditional welcome and sent them to independent dwellings All these guests started enjoying their stay (same as in case of king Drupad)

सूत्र १२९ . तए ण से पडुराया हत्थिणाउर नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! विउल असण पाण खाइम साइम' तहेव जाव उवणेंति।

तए ण वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा त विपुल असण पाणं खाइम साइम तहेव जाव विहरंति।

सूत्र १२९ राजा पाण्डु तब हस्तिनापुर लौटे और अपने सेवको को बुलाकर आदेश दिया–"हे देवानुप्रियो ! अशन-पान आदि विपुल भोजन सामग्री तैयार कराओ और अतिथियो के लिए ले जाओ।" सेवको ने राजाज्ञा का पालन किया। अतिथि राजाओ ने भोजन किया और मनोरजन करते समय बिताने लगे। (पूर्व समान)

129. King Pandu returned to Hastinapur, called his servants and said, "Beloved of gods! Arrange for liberal quantity of food and take it to the guests." The servants did as told. The royal guests took their meals and resumed their enjoyments (as detailed before)

सूत्र १३० : तए णं पंडुराया ते पच पंडवे दोवइं च देविं पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेया-पीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता कल्लाणकारं करेइ, करित्ता ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्से विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेण पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता जाव पडिविसज्जेइ। तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जाव पडिगया।

सूत्र १३० : राजा पाण्डु ने पाँचो पाण्डवो तथा द्रौपदी को पाट पर बिठाया और सोने-चाँदी के कलशों मे पानी भरकर स्नान करवाया। फिर कल्याण-कर उत्सव किया। उत्सव के पश्चात् सभी अतिथियों को भरपेट अशन-पान आदि भोजन करवाया और पुष्पों-वस्त्रों आदि से सत्कार सन्मान कर विदा किया। वासुदेव आदि सभी राजा अपने-अपने राज्यो व नगरों को लौट गये।

130. King Pandu made the five Pandavs and Draupadi sit on a platform and got the blessing ceremony performed after formally anointing them with water poured from gold and silver urns And finally King Pandu invited all the guests to a feast and bid them farewell with due honour and courtesy The guests returned back to their respective states and cities

सूत्र १३१ : तए ण ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धिं अंतो अंतेउरपरियालसद्धिं कल्लाकल्लि वारंवारेण ओरालाइ भोगभोगाइ जाव (भुजमाणा) विहरंति।

सूत्र १३१ : सभी समारोह सम्पन्न हो जाने के बाद पॉचो पाण्डव द्रौपदी के साथ अन्तःपुर परिवार में बारी-बारी से एक-एक दिन अनुक्रम से उदार सासारिक काम-भोग का आनन्द लेते समय बिताने लगे।

131. After all the functions were over the five Pandavs started enjoying the mundane pleasures of marital life with Draupadi, one day each in a cyclic sequence in the well equipped and staffed personal quarters of their respective palaces

सूत्र १३२ : तए णं से पंडुराया अन्नया कयाई पंचहिं पडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि होत्था।

सूत्र १३२ : एक बार राजा पाण्डु पॉचों पाण्डवो, कुन्ती देवी और द्रौपदी देवी के साथ अन्तःपुर परिवार से घिरे श्रेष्ठ सिहासन पर बैठे थे।

132. One day King Pandu was sitting on a throne in his personal quarters surrounded by the five Pandavs, queen Kunti, and Draupadi

नारद आगमन

सूत्र १३३ : इमं च ण कच्छुल्लणारए दसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो अंतो य कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य अल्लीण-सोम-पियदंसणे सुरूवे अमइल-सगलपरिहिए कालमियचम्म-उत्तरासंगरइयवत्थे दंडकमडलुहत्थे जडा-मउड-दित्तसिरए जन्नोवइय-गणेत्तिय- मुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संचरणावरणिओवयणउप्पयणि-लेसणीसु य संकामणि-अभिओगि-पण्णत्ति-गमणी-थभीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-सब-अनिरुद्ध-निसढ-उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहाईण जायवाणं अद्धुट्ठाणय कुमारकोडीणं हिययदइए सथवए कलह-जुद्ध-कोऊहलप्पिए भंडणाभिलासी बहुसु य समरेसु य संपराएसु य दंसणरए समतओ कलहं सदक्खिण अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसार-वरवीरपुरिस-तिलोक्कबलवगाइ आमतेऊण त भगवति पक्कमणिं गगण-गमण-दच्छं उप्पइओ गगणमभिलघयतो गामा-गर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टण-संवाह-सहस्समंडियं थिमियमेइणीतल निब्भरजणपद वसुह ओलोइंतो रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए।

सूत्र १३३ · तभी कच्छुल्ल नामक नारद वहाँ आ पहुँचे। वे देखने मे अत्यन्त भद्र और विनीत जान पड़ते थे, किन्तु भीतर से केलिप्रिय होने के कारण उनका मन कलुषित था। वे मध्यस्थवृत्ति के थे तथा आश्रित जनो को उनका दर्शन प्रिय लगता था। वे दीखने मे सुरूप थे तथा उन्होने उज्ज्वल शकल-वस्त्र (अखण्ड वस्त्र) पहन रखा था। उत्तरासग के रूप मे वक्ष पर काला मृग-चर्म धारण किया हुआ था। हाथ में दण्ड और कमण्डल था। उनका मस्तक जटा रूपी मुकुट से शोभित था। आभूषण के रूप मे उन्होने यज्ञोपवीत, रुद्राक्ष की माला, मूँज की कटिमेखला पहन रखे थे तथा वल्कल वस्त्र धारण किये हुए थे। उनके हाथ मे कच्छपी नाम की वीणा थी और वे सगीत प्रिय थे। वे पृथ्वी पर बहुत कम चलते थे। सचरणी (चलने की), आवरणी (ढँकने की), अवतरणी (नीचे उतरने की), उत्पतनी (ऊँचे उडने की) श्लेषणी (चिपकाने वाली), सक्रामणी (पर-शरीर-प्रवेश), अभियोगिनी (सोना-चाँदी बनाना), प्रज्ञप्ति (परोक्ष वृत्तान्त बताना), गमनी (दुर्गम स्थान मे गमन), स्तभिनी (स्तब्ध करना) आदि अनेक विद्याधरो वाली विद्याओ मे प्रवीण होने के कारण उनकी कीर्ति का बहुत प्रसार था। वे बलदेव और वासुदेव के प्रेमपात्र थे। वे प्रद्युम्न, प्रदीप, साब, अनिरुद्ध, निषध, उन्मुख, सारण, गजसुकुमाल, सुमुख, दुर्मुख आदि साढे तीन कोटि यादव कुमारो के प्रिय और प्रशसा पात्र थे। उन्हे कलह, युद्ध और कोतूहल प्रिय थे। वे भाड के समान बोलने के अभिलाषी थे। अनेक समर व सम्पराय (युद्ध विशेष) देखने के रसिक थे। चारों ओर दक्षिणा देकर (अथवा चतुरता से) कलह की खोज करते थे और कलह करवा कर उद्विग्नता उत्पन्न कराते थे। दशार वीरों के चित्त भ्रम का कारण बने रहने वाले वे नारद गगन में गमन करने की शक्ति प्रदायिनी भगवती प्रक्रमणी विद्या का आह्वान करके आकाश मे उड़ते और हजारो ग्राम, आकर, नगर, खेट, कर्बट, मण्डव द्रोणमुख, पट्टन और संबाधो से शोभित अनेक लोगों से व्याप्त धरती का अवलोकन करते-करते रमणीय हस्तिनापुर मे आये और द्रुत गति से राजा पाण्डु के महल में उतरे।

ARRIVAL OF NARAD

133. At that time the Narad (a class of divine sage) named Kacchul arrived there. He appeared to be very sober and humble but his love for frolic made him crooked. He followed the middle path and his followers loved his presence He had a charming personality and was wearing a single length of cloth wrapped around his body His torso was covered by a dark deer-skin He carried a gourd-bowl and a stick in his hands. His long hair, spiraled around in a lump over his head, appeared like a crown As adornments he had a Yajnopaveet (the loosely entwined cotton string generally worn across the body by Brahmans), a string of Rudraksh beads, a girdle of coconut fibre, and mats made of bark-fibres He carried the Kacchapi Veena (a Sitar-like stringed instrument) in his hand because he loved music He seldom walked on the ground.

He was very famous for the numerous divine powers he possessed, these included—Sancharani (transporting), Avarani (camouflaging), Avatarni (descending), Utpatani (ascending and flying), Shleshni (attaching), Sankramani (entering other bodies), Abhiyogini (making precious metals), Prajnapti (telepathy), Gamani (going to impenetrable places), Stambhini (making things immobile), and many others

Baldev and Krishna loved him Thirty five million Yadav princes including Pradyumna, Pradeep, Samb, Aniruddh, Nishadh, Unmukh, Saran, Gajasukumal, Sumukh, and Durmukh liked and praised him. He loved conflict, war, and adventure He desired to speak like a clown He enjoyed watching battles and other conflicts He cunningly looked around for the scope of dispute and acted as a catalyst to increase tension and trigger conflict He was the source of delusion among the Dashar braves

Invoking the divine Prakramani power that enabled flying, Narad took off and while flying enjoyed the panoramic view of the earth dotted with thousands of villages, quarries, cities, kraals, ghettos, boroughs, river-port cities, port cities, and hill-stations crowded with multitudes of people. He came to Hastinapur and landed in the palace of King Pandu

सूत्र १३४ : तए णं से पंडुराया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पंचहिं पंडवेहि कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ।

सूत्र १३४ · नारद को आता देख के पाण्डु राजा पाँचो पाण्डवों तथा कुंती देवी सहित अपने आसन से उठ कर खड़े हुए और नारद के समक्ष सात-आठ कदम आगे बढे। फिर अर्घ्य (पुष्पादि) पाद्य (सुगंधित जल चरण, प्रक्षालन के लिए) देकर बहुमूल्य आसन पर बैठने को आमन्त्रित किया।

134. When they saw Narad coming King Pandu, the five Pandavs, and queen Kunti all got up form their seats and stepped seven or eight steps forward. They gave Narad the traditional welcome by offering flowers and washing his feet and offered him an exquisite seat

सूत्र १३५ · तए ण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीइत्ता पंडुरायं रज्जे जाव य रट्ठे य अंतेउरे य कुसलोदत पुच्छइ।

तए णं से पडुराया कोंति देवी पच य पडवा कच्छुल्लणारय आढायंति जाव पज्जुवासंति।

सूत्र १३५ कच्छुल्ल नारद ने जल छिडक कर स्थान शुद्धि की और उस पर अपना दर्भ आसन बिछाकर बैठ गये। राजा पाण्डु के राज्य, परिवार अन्त पुर आदि की कुशलक्षेम पूछी। राजा पाण्डु ने कुंती देवी तथा पाँचो पाण्डवों सहित खडे होकर नारद का आदर सत्कार किया और पूजा की।

135. Kacchull Narad sprinkled water on the ground for purification, spread his grass mattress and sat down He asked about well being of King Pandu, his family, his palace, and his state King Pandu, queen Kunti and the five Pandavs stood up to greet him with due honour and worshipped him

अमरकंका से क्षुब्ध नारद

सूत्र १३६ . तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारय अस्संजय अविरय-अप्पडिहय-अपच्चक्खायपाव-कम्मे त्ति कट्टु नो अग्घेण पज्जेण य आढाइ, नो परियाणइ, नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ।

सूत्र १३६ किन्तु द्रौपदी देवी ने नारद को असयमी, अविरत तथा स्वकृत कृत्यो की आलोचना और पापो का प्रत्याख्यान न करने वाला जानकर न तो उनका आदर किया और न अनुमोदना की, वह न तो उनके आने पर खडी हुई और न पूजा की।

INSULT IRKS NARAD

136 But considering him to be indisciplined, attached, and one who did not engage in self-criticism or atonement for his deeds, Draupadi neither did approve of him nor did she respect him She neither stood up when he arrived nor did she worship him

सूत्र १३७ तए णं तस्स कच्छुल्लणारयस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिन्तिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–'अहो ण दोवई देवी रूवेण जाव लावण्णेण य पचहिं पडवेहिं अवथद्धा
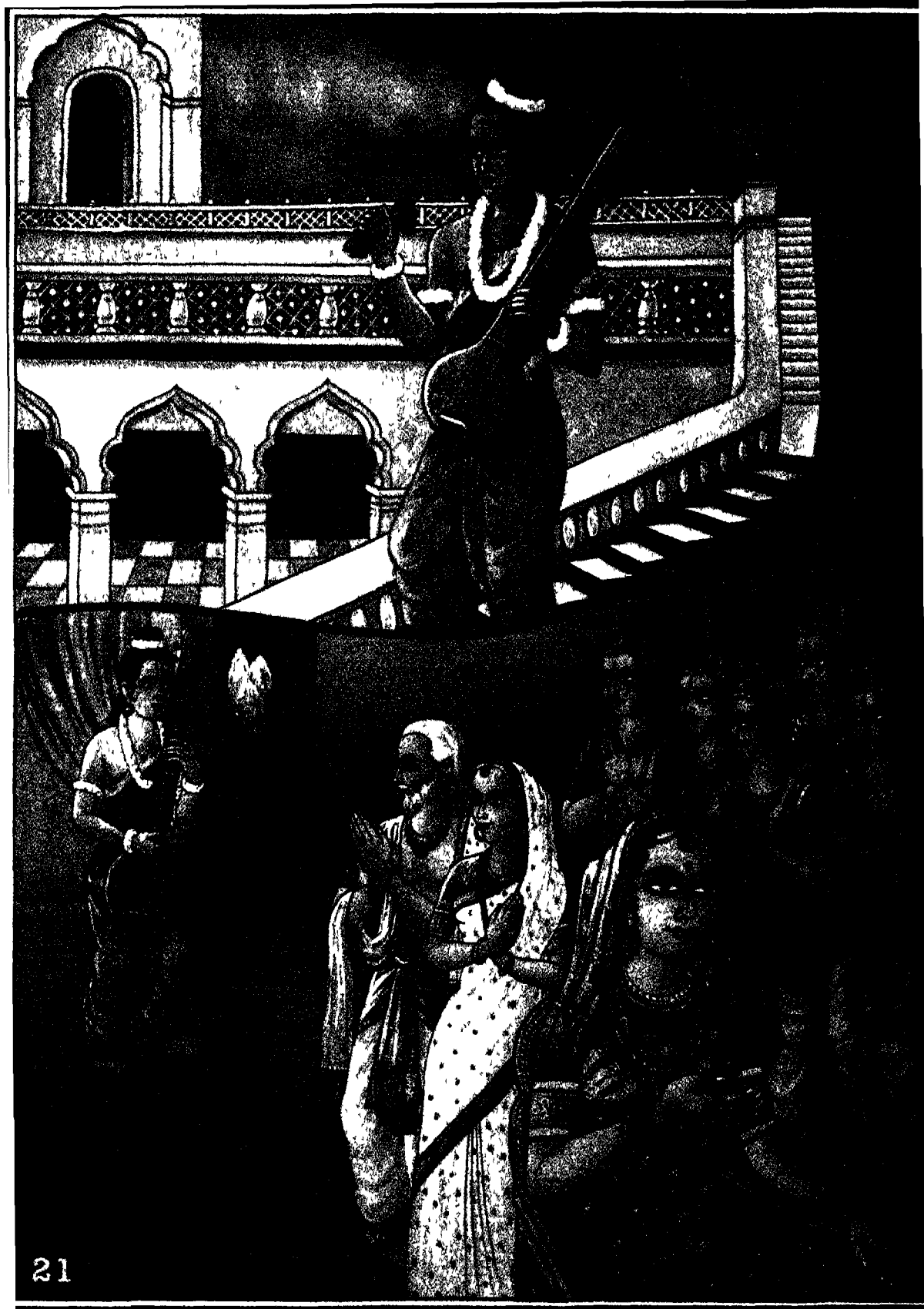
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

नारद ऋषि का आगमन

चित्र २१

एक बार कच्छुल्ल नारद आकाशमार्ग मे जाते हुए हस्तिनापुर के राजमहलो की छत पर आकर उतरे।

नारद ऋषि को आते देखकर पाण्डु राजा कुन्ती देवी तथा पॉचो पाण्डव उनके स्वागत के लिए सात-आठ कदम उठकर सामने आये।

द्रौपदी देवी महल मे एक ओर बैठी रही।

नारद ऋषि ने समझा-"द्रौपदी देवी अपने रूप-यौवन व पॉच पाण्डवो की रानी होने के कारण अहकार से गर्वित है इसलिए मेरी अवहेलना तथा अपमान कर रही है। तो किसी प्रकार इसका दर्प भग कर अनिष्ट करना चाहिए।" अपमान से कुपित हुए नारद प्रतिशोध की भावना से द्रौपदी देवी की तरफ देख रहे है। (सोलहवॉ अध्ययन)

ARRIVAL OF SAGE NARAD

ILLUSTRATION . 21

One day King Kacchul Narad came flying to Hastinapur and landed on the roof top of the palace

When they saw him coming King Pandu, the five Pandavs, and queen Kunti all stepped seven or eight paces forward to greet Narad

But considering him to be indisciplined and non-ascetic Draupadi did not get up to greet him She remained sitting

Narad thought, "Oh! This Draupadi is filled with conceit for her beauty, youth and charm and also for being the wife of the five Pandavs And so she does not respect or worship me Therefore I will put her in a messy situation in order to teach her a lesson " Driven by the feeling of vengeance Narad looks angrily at Draupadi **(CHAPTER - 16)**

समाणी ममं नो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ। तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुराय आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउ पयत्ते यावि होत्था।

सूत्र १३७ . द्रौपदी का यह व्यवहार देख कच्छुल्ल नारद को इस प्रकार का अध्यवसाय व चिन्तित, प्रार्थित तथा मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ–"अहो ! यह द्रौपदी देवी अपने रूप, यौवन और लावण्य पर तथा पाँचो पाण्डवो की विवाहित होने पर अभिमान करने लगी है। इसी कारण यह मेरा आदर, उपासना आदि नहीं करती है। अत इसका कुछ अनिष्ट करना अच्छा होगा।" यह विचार आने पर नारद ने राजा पाण्डु से विदा ली और उत्पतनी विद्या का आह्वान कर आकाश मार्ग द्वारा उत्कृष्ट विद्याधर गति से लवणसमुद्र के बीच होते हुए पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान कर गये।

137. This behaviour of Draupadi forced Kacchull Narad to consider, worry, wish and think, "Oh! This Draupadi is filled with conceit for her beauty, youth and charm and also for being the wife of the five Pandavs That is why she does not respect or worship me As such, I should put her in a messy situation in order to teach her a lesson " He at once took leave of King Pandu and invoking the Utpatini power he proceeded east over the sea with divine speed

अमरकंका में आगमन

सूत्र १३८ तेणं कालेण तेण समएण धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणद्ध-भरहवास अमरकका नामं रायहाणी होत्था। तत्थ ण अमरककाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था, महया हिमवत वण्णओ। तस्स ण पउमणाभस्स रण्णो सत्त देवीसयाइं ओरोहे होत्था। तस्स णं पउमणाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवराया यावि होत्था। तए णं से पउमनाभे राया अतो अतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिहासणवरगए विहरइ।

सूत्र १३८ · काल के उस भाग मे धातकीखण्ड नामक द्वीप मे पूर्व दिशा के दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र मे अमरकका नाम की राजधानी थी। वहाँ का राजा पद्मनाभ था जो हिमवन्त पर्वत के समान महान था। उसके अन्त·पुर मे सात सौ रानियाँ थी। उसके पुत्र व युवराज का नाम सुनाभ था। उस समय राजा पद्मनाभ अपने अन्त.पुर मे रानियो के साथ सिहासन पर बैठा था।

ARRIVAL IN AMARKANKA

138. During that period of time there was a capital city named Amarkanka in the southern half of the eastern Bharat area in the Dhatkikhand continent The king there was Padmanaabh who was as illustrious as the Himalayas He had seven hundred queens The name of his

son was prince Sunabh. At that moment King Padmanaabh was in his private quarters and sitting on a throne with his queens

सूत्र १३९ : तए णं से कच्छुल्लणारए जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव पउमनाभस्स भवणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि झत्तिं वेगेणं समोवइए।

तए णं से पउमणाभे राया कच्छुल्लं नारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेण उवणिमंतेइ।

सूत्र १३९ : कच्छुल्ल नारद राजधानी अमरकका मे आये और शीघ्र वेग से राजा के महल मे उतरे।

नारद को आता देख राजा पद्मनाभ आसन से उठा और यथाशीघ्र आकर सत्कार कर अर्घ्य द्वारा पूजा की और आसन पर बैठने का आग्रह किया।

139. Kacchull Narad came to Amarkanka with great speed and landed in the palace of King Padmanaabh

When he saw Narad coming King Padmanaabh got up from his seat and stepped forward He gave Narad the traditional welcome by offering flowers and washing his feet and, offered him a seat

सूत्र १४० : ते णं से कच्छुल्लणारए उदयपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, जाव कुसलोदंतं आपुच्छइ।

सूत्र १४० : नारद ने जल छिडक कर स्थान शुद्धि की और अपना आसन बिछा कर बैठ गये। और राजा से कुशल समाचार पूछने लगे।

140. Kacchull Narad sprinkled water on the ground for purification, spread his grass mattress and sat down He asked about the King's well being

सूत्र १४१ : तए ण से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारय एव वयासी–'तुमं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइं अणुपविससि, त अत्थि याइ ते कहिंचि देवाणुप्पिया एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जारिसए ण मम ओरोहे?'

सूत्र १४१ : अपनी रानियो के सौन्दर्य से प्रभावित दर्पाविष्ट (अहकार में फूले) पद्मनाभ ने नारद से पूछा–"देवानुप्रिय ! आप तो अनेक ग्रामादि मे जाते है और घरो में प्रवेश करते है, कृपया बतावे कि आपने मेरे अन्त पुर जैसा भी कोई अन्त पुर कही देखा है ?"

141. Obsessed with the beauty of his queens and driven by his bloated ego King Padmanaabh asked Kacchull Narad, "Beloved of gods! You wander around, go to numerous villages (etc) and visit many a king (etc.) Tell me if you have ever come across any seraglio like mine?"

सूत्र १४२ : तए णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करित्ता एवं वयासी–'सरिसे णं तुमं पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स।'

'के णं देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे?'

एवं जहा मल्लिणाए।

एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे दुपयस्स रण्णो धूया, चुलणीए देवीए अत्तया, पंडुस्स सुण्हा पचण्ह पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा। दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अय तव ओरोहे सयमं पि कलं ण अग्घइ त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडिगए।

सूत्र १४२ : यह प्रश्न सुनकर नारद कुछ मुस्कराये और बोले–"हे पद्मनाभ ! तुम तो कुए के उस मेंढक के समान हो।"

पद्मनाभ–"देवानुप्रिय ! कैसा कुए का मेढक ?"

नारद ने कुए और समुद्र के मेंढक की कथा सुनाई (अ ८-सू-११० के मल्ली अध्ययन अनुसार समझे) और बोले–"देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीप मे भरतक्षेत्र के हस्तिनापुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की आत्मजा, पाण्डु राजा की पुत्रवधू और पाँच पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी देवी रूप, लावण्य, शरीर आदि मे उत्कृष्ट है। तुम्हारा यह सारा अन्तःपुर द्रौपदी के पैर के कटे हुए अँगूठे के शतांश की बराबरी भी नही कर सकता।" इस कथन के पश्चात् नारद ने राजा से विदा ली और प्रस्थान किया।

142. Kacchull Narad smiled and said, "Beloved of gods! Your statement gives an impression that you are as ignorant as a frog in a well "

Padmanaabh, "Beloved of gods! what is a frog in a well?"

Narad told the story of the frogs (Ch 8 para 110) and added, "In Hastinapur in the Bharat area of the Jambu continent, Draupadi, the daughter of king Drupad and queen Chulni, the daughter-in-law of King Pandu, and the wife of the five Pandavs, is extremely beautiful, charming, (etc) The beauty of all your queens combined stands nowhere in comparison with the amputated large toe of Draupadi's feet " after saying so Narad took leave of the king and left

पद्मनाभ की आसक्ति

सूत्र १४३ : तए ण से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं जाव पुव्वसंगइय देवं मणसीकरे-माणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ।

तए णं पउमनाभस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पुव्वसंगइओ देवो जाव आगओ।

देवं एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे जाव उक्किट्ठसरीरा, त इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं इहमाणियं।'

सूत्र १४३ : राजा पद्मनाभ कच्छुल्ल नारद की यह बात सुन समझ कर द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य पर मुग्ध, आसक्त, गृद्ध और आग्रहवान (पाने के लिए उतावला) हो गया। वह पौषधशाला में गया और अपने मित्रदेव का आह्वान कर तीन दिन के उपवास का सकल्प लेकर ध्यान मग्न हो गया।

देव के उपस्थित होने पर उसनें कहा–"देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीप मे भारतवर्ष मे हस्तिनापुर नगर में पाँच पाण्डवो की अत्यन्त सुन्दरी द्रौपदी देवी रानी है। मेरी इच्छा है कि द्रौपदी देवी को यहाँ लाया जाय।"

INFATUATION OF PADMANAABH

143. Hearing and understanding all what Narad told him, King Padmanaabh got allured, captivated, and enticed by the beauty, youth, and charm of Draupadi and was driven to possess her He went to the Paushadh-shala (the abode of ascetics and place of meditation) and taking a vow of a three day fast sat in meditation in order to invoke a friendly god

When the friendly god materialized, he said, "Beloved of gods! In Hastinapur in the Bharat area of the Jambu continent, lives Draupadi, the extremely beautiful queen of the five Pandavs I desire that she be brought here"

सूत्र १४४ तए ण से पुव्वसगतिए देवे पउमनाभ एवं वयासी–'नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय, भव्वं वा, भविस्सं वा, ज णं दोवई देवी पंच पडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेण सद्धि ओरालाइं जाव विहरिस्सइ। तहावि य ण अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देवि इहं हव्वमाणेमि' त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र १४४ : उस मित्र देव ने पद्मनाभ से ऐसा कहा–"देवानुप्रिय ! भूत, वर्तमान या भविष्य मे यह असम्भव और अशक्य है कि द्रौपदी देवी पाँच पाण्डवो को छोड दूसरे किसी पुरुष के साथ पत्नी रूप मे रहेगी, फिर भी मै तुम्हारा मन रखने के लिए द्रौपदी को तत्काल यहाँ ले आता हूँ।" ऐसा कहकर उस देव ने उत्कृष्ट देव-गति से लवण समुद्र के बीच होते हुए हस्तिनापुर जाने के लिए प्रस्थान किया।

144. The friendly god replied, "It is improbable and impossible in all the three segments of time (past, present, and future) that Draupadi leaves the

five Pandavs and lives with any other man as wife. However, in order to honour your wish I will at once bring Draupadi here" And the friendly god left for Hastinapur with divine speed over the sea

द्रौपदी का अपहरण

सूत्र १४५ : तेणं कालेणं तेणं समएण हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया दोवईए देवीए सद्धिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था।

सूत्र १४५ : काल के उस भाग मे हस्तिनापुर नगर में राजा युधिष्ठिर द्रौपदी के साथ महल की छत पर सुख से सोया हुआ था।

KIDNAPPING OF DRAUPADI

145. During that period of time in Hastinapur city Yudhishthir was sleeping with Draupadi at the roof top of his palace

सूत्र १४६ : तए ण से पुव्वसगतिए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया, जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ, दलइत्ता दोवइं देविं गिण्हइ गिण्हित्ता, ताए उक्किट्ठाए जाव देवगईए जेणेव अमरकंका, जेणेव पउमणाभस्स भवणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देविं ठावेइ, ठावित्ता ओसोवणि अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी- 'एस ण देवाणुप्पिया ! मए हत्थिणाउराओ दोवई देवी इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतो परं तुम जाणसि' त्ति कट्टु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

सूत्र १४६ : वह पूर्वसागतिक (परिचित) मित्र देव वहाँ पहुँचा और उसने द्रौपदी देवी को अवस्वापिनी (गहरी) निद्रा मे सुला दिया। फिर द्रौपदी देवी को उठाकर उत्कृष्ट तीव्र गति से अमरकका लौट राजा पद्मनाभ के महल मे पहुँचा। वहाँ अशोकवाटिका मे द्रौपदी देवी को रख दिया और अवस्वापिनी निद्रा से उसे जगा दिया। वह देव तब राजा पद्मनाभ के पास गया और बोला- "देवानुप्रिय ! मै हस्तिनापुर से द्रौपदी देवी को यहाँ ले आया हूँ। वह तुम्हारी अशोकवाटिका में है। इससे आगे तुम जानो।" यह कहकर वह देव अपने स्थान को चला गया।

146. The friendly god arrived there and put Draupadi to deep sleep He lifted Draupadi, returned to Amarkanka with very high divine speed and delivered her at the palace of King Padmanaabh After placing her in the Ashok garden of the palace he released her from the deep sleep He went to King Padmanaabh and said, "Beloved of gods! I have brought Draupadi here from Hastinapur She is in your Ashok garden From here on you handle your own affairs" And the god left for his abode

सूत्र १४७ : तए णं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी–नो खलु अम्हं एस सए भवणे, णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणई देवेण वा, दाणवेण वा, किंपुरिसेण वा, किन्नरेण वा, महोरगेण वा, गधव्वेण वा, अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरिय' त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

सूत्र १४७ : कुछ समय बाद जब द्रौपदी की नींद टूटी तो उस अपरिचित अशोकवाटिका को वह नहीं पहचान सकी और मन ही मन बोली–"यह भवन तो मेरा नहीं है, यह अशोकवाटिका भी मेरी नही है। जाने किस देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर, महोरग या गन्धर्व ने मेरा अपहरण कर अन्य राजा की अशोकवाटिका मे पहुँचा दिया है।" यह सोच भग्न-मनोरथ (निराश) उदास हो वह चिन्ता में डूब गई।

147. After some time when Draupadı opened her eyes she could not recognıze the surroundıngs and thought, "This palace is not mıne, not even thıs garden. I don't know what god, demon, Kimpurush, Kinnar, Mahorag, or Gandharva (varıous demıgods) has abducted me and brought me to a garden belongıng to some other kıng" The thought broke her heart. She became dejected and started broodıng

सूत्र १४८ : तए णं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभूसिए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया, जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता दोवइं देविं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणि पासइ, पासित्ता एवं वयासी–'किं णं तुमं देवाणउप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि? एव खलु तुमं देवाणुप्पिए ! मम पुव्वसंगतिएणं देवेणं जम्बुद्दीवाओ दीवाओ, भारहाओ वासाओ, हत्थिणाउराओ नयराओ, जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं मा ण तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि। तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइ जाव विहराहि।'

सूत्र १४८ : राजा पद्मनाभ स्नानादि से निवृत्त हो, वस्त्रालंकार पहन, अन्तःपुर परिवार से घिरा अशोकवाटिका में द्रौपदी के निकट आया। द्रौपदी देवी को चिन्ता मग्न देखकर वह बोला–"देवानुप्रिये ! तुम भग्न मनोरथ होकर चिन्तित क्यो हो रही हो? मेरा पूर्वसांगतिक देव तुम्हारा हरण कर यहाँ ले आया है। अतः देवानुप्रिये ! तुम उदास, टूटे हुए मनःसंकल्प वाली होकर चिन्ता मत करो। तुम मेरे साथ विपुल भोग भोगती आनन्द से जीवन बिताओ।"

148. King Padmanaabh got ready after takıng hıs bath and adornıng hımself wıth hıs dress and ornaments Surrounded by hıs personal staff he came ınto the garden and approached Draupadı When he saw Draupadı worrıed he saıd, "Beloved of gods! Why are you sad and dejected? On my

request a friendly god has abducted you and brought you here So, beloved of gods! you should not be sad, disappointed, and dejected. Come, you may spend rest of your life enjoying all the worldly pleasures with me."

सूत्र १४९ : तए णं सा दोवई देवी पउमणाभं एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवईए नयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ, तं जइ णं से छण्हं मासाणं ममं कूव नो हव्वमागच्छइ तए ण अहं देवाणुप्पिया ! जं तुमं वदसि तस्स आणा-ओवाय-वयण णिद्देसे चिट्ठिस्सामि।'

सूत्र १४९ : द्रौपदी ने पद्मनाभ को इस प्रकार उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में द्वारका नगरी मे मेरे पति के भाई कृष्ण नामक वासुदेव रहते है। यदि वे छह महीने बीतने तक मुझे छुडाने यहाँ नहीं आयेंगे तो मैं तुम्हारी आज्ञा, उपाय, वचन और निर्देश मे रहने लगूँगी।"

149. Draupadi thoughtfully replied to King Padmanaabh, "Beloved of gods! In the city of Dwarka in the Bharat area of the Jambu continent lives Krishna Vasudev, a cousin of my husband If he does not come here to get me released within six months I shall live as you order, advise, instruct, and direct

सूत्र १५० : तए णं से पउमे राया दोवईए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता दोवइं देविं कण्णंतेउरे ठवेइ। तए णं सा दोवई देवी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ।

सूत्र १५० : राजा पद्मनाभ ने द्रौपदी की यह बात मानली और उसे कुँवारी कन्याओ के महल में रख दिया। द्रौपदी ने निरन्तर बेले की तपस्या आरम्भ करदी। पारणे में आयम्बिल तप करने लगी। और संयम मय जीवन बिताने लगी।

150. King Padmanaabh agreed to Draupadi's proposal and put her up in the palace meant for virgin girls Draupadi started the penance of a chain of three day fasts On the day of eating she did the Ayambil penance (eating salt-less food made of one type of grain only). She commenced a disciplined life like an ascetic.

युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी की खोज

सूत्र १५१ : तए णं से जुहिट्ठिले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइं देविं पासे अपासमाणे सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण–गवेसणं करेइ, करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवित्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वयासी–

एवं खलु ताओ ! ममं आगासतलगंसि पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न णज्जइ केणइ देवेण वा, दाणवेण किन्नरेण वा, महोरगेण वा गंधव्वेण वा, हिया वा णीया वा, अवक्खित्ता वा? इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए।

सूत्र १५१ : उधर द्रौपदी का हरण हो जाने के कुछ समय बाद राजा युधिष्ठिर की नींद खुली।। द्रौपदी को अपने आस-पास न देख कर शय्या से उठे और चारों और द्रौपदी की खोज करने लगे। किन्तु कही भी उसकी श्रुति (शब्द), क्षुति (छीक) या प्रवृत्ति (सूचना) न मिली तो राजा पाण्डु के पास जाकर बोले–

"हे तात ! मै छत पर सो रहा था तब मेरे निकट से द्रौपदी का न जाने किस देव, दानव गंधर्व आदि (पूर्व सम-सूत्र १४७) ने हरण कर लिया, उठाकर ले गया या खीच कर ले गया। अत हे तात ! मेरा निवेदन है कि उसकी चारों ओर खोज की जाय।"

SEARCH FOR DRAUPADI BY YUDHISHTHIR

151. Back at Hastinapur, some time after the abduction of Draupadi, Yudhishthir woke up When he did not find Draupadi on the bed he got up and looked for her all around But nowhere did he hear her word, *sneezing or* sound of any other activity He went to King Pandu and said —

"Father! While we were sleeping on the terrace, some god, demon, (etc) appears to have abducted, lifted or pulled and taken away Draupadi from near me As such, father! I submit that a search should be called for her "

सूत्र १५२ : तए णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-महापह-पहेसु महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा उग्घोसेमाणा एव वदह–'एव खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न णज्जइ केणइ देवेण वा, दाणवेण वा, किंपुरिसेण वा, किन्नरेण वा, महोरगेण वा, गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा? तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइ वा खुइं वा पवित्ति वा परिकहेइ तस्स ण पंडुराया विउलं अत्थसंपयाण दलयइ' त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह, घोसावित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।'

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति।

सूत्र १५२ : राजा पाण्डु ने अपने सेवकों को बुलाकर आदेश दिया–"देवानुप्रियो ! हस्तिनापुर नगर में शृंगाटक चौराहे-तिराहे-राजमार्ग आदि सभी स्थानो पर उच्च स्वर मे घोषणा करो कि 'हे देवानुप्रियो ! छत पर सोये हुए राजा युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी का किसी देव, दानव, गधर्व आदि ने अपहरण कर लिया है, उठाकर कहीं फेक दिया है, अत. जो कोई द्रौपदी देवी की श्रुति,

क्षुति या प्रवृत्ति बतायेगा, सूचना देगा उसको राजा पाण्डु पुरस्कार स्वरूप विपुल सम्पदा देगे।' यह घोषणा कर मुझे सूचित करो।"

सेवकों ने राजाज्ञा का पालन कर पुन सूचित किया।

152. King Pandu called his servants and said, "Beloved of gods! Make this announcement at every prominent place in Hastinapur including highways, crossings, (etc) in loud voice —

'While they were sleeping on the terrace, some god, demon, (etc) appears to have abducted, lifted or pulled and taken away Draupadi from near King Yudhishthir Whoever provides information about whereabouts or word, sneezing or sound of any other activity of queen Draupadi will be liberally rewarded by King Pandu ' Do this and report back to me "

The servants did as told and reported back

सूत्र १५३ तए ण से पडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइ वा जाव अलभमाणे कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'गच्छह ण तुम देवाणुप्पिए ! बारवइ नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि। कण्हे णं पर वासुदेवे दोवईए देवीए मग्गण-गवेसणं करेज्जा, अन्नहा न नज्जइ दोवईए देवीए सुइ वा खुइ वा पवित्तिं वा उवलभेज्जा।'

सूत्र १५३ इस घोषणा के बाद भी राजा पाण्डु को द्रौपदी का कही से भी कोई समाचार नहीं मिला। तब उन्होने महारानी कुन्ती को बुलाकर कहा–"हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारका जाओ और कृष्ण वासुदेव से यह सारे समाचार कहो। कृष्ण वासुदेव ही द्रौपदी की खोज करेगे अन्यथा ऐसा नही लगता कि हमे उसका कुछ पता लग सकेगा।"

153. Even after this announcement King Pandu did not get any information about Draupadi He then called queen Kunti and said, "Beloved of gods! Proceed to Dwarka and give all this information to Krishna It appears that we shall not be able find any trace of Draupadi as long as Krishna does not put in his efforts, only he is capable of finding Draupadi "

कुन्ती का कृष्ण के पास जाना

सूत्र १५४ · तए ण कोंती देवी पडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणइ, पडिसुणित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं णयरं मज्झमझेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता कुरुजणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठाजणवए, जेणेव बारवई णयरी, जेणेव अग्गुज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवइं णयरि जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स

गिहे तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयलपरिग्गहियं एवं वयइ–'एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कखति।'

सूत्र १५४ : महारानी कुन्ती ने पाण्डु राजा की बात स्वीकार कर ली और स्नानादि कर तैयार होकर हाथी पर सवार हुई। हस्तिनापुर के बीच से होती कुरु देश को पार किया और फिर सुराष्ट्र जनपद में होती हुई द्वारका नगरी के बाहर पहुँच श्रेष्ठ उद्यान मे ठहरी। हाथी से नीचे उतर कर अपने सेवको को बुलाया और कहा–"देवानुप्रियो ! द्वारका नगरी मे प्रवेश कर कृष्ण वासुदेव के पास जाकर यथाविधि वन्दन कर कहना–"हे स्वामी ! आपके पिता की बहन कुन्ती देवी हस्तिनापुर से यहाँ आई है और आपके दर्शनो की इच्छा करती है।"

KUNTI GOES TO KRISHNA

154. Queen Kuntı accepted the request of King Pandu She got ready after taking her bath and dressing up and rode an elephant She moved through the streets of Hastınapur city and crossing Kuru and Surashtra states reached the outskirts of Dwarka She camped in a beautiful garden After getting down from the elephant she called her servants and said, "Beloved of gods! Enter Dwarka, go to Krishna Vasudev, and after extending due courtesy tell him, 'Sire! Queen Kuntı, your father's sister has arrived here from Hastınapur and desires to behold you '"

सूत्र १५५ : तए णं कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति।

तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे हत्थिखंधवरगए बारवईए नयरीए मज्झमज्झेण जेणेव कोती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता बारवईए नगरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ।

सूत्र १५५. सेवकों ने वासुदेव कृष्ण के पास जाकर कुन्ती देवी के आगमन का समाचार कहा।

कृष्ण वासुदेव यह समाचार जानकर प्रसन्न व सतुष्ट हुए और हाथी पर सवार हो वहाँ आये जहाँ उद्यान मे कुन्ती देवी ठहरी थी। हाथी से उतर कर उन्होंने कुन्ती देवी के चरण स्पर्श किये और उन्हे साथ ले पुन. हाथी पर सवार हो नगर के मध्य होते हुए अपने महल मे आये।

155. The servants went to Krishna Vasudev and conveyed the news of the arrival of queen Kuntı.

Krishna Vasudev was pleased and contented to hear this news and riding an elephant he came to the camp of queen Kuntı. He got down from the

elephant, touched her feet and taking her along he returned to his palace riding the elephant and passing through the city.

सूत्र १५६ : तए णं से कण्हे वासुदेव कोंतिं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी–'संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं?'

सूत्र १५६ : कुन्ती देवी स्नान-भोजनादि से निवृत्त होने के बाद आकर आसन पर बैठीं। तब कृष्ण वासुदेव ने कहा–"हे पितृभगिनी ! बताइये आपके आने का क्या प्रयोजन है?"

156. After her bath and meals queen Kunti came and took a seat near Krishna He asked, "Aunt Kunti! Tell me what brings you to me?"

सूत्र १५७ : तए णं कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–'एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स दोवई देवी पासाओ ण णज्जइ केणइ अवहिया वा, णीया वा, अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए देवीए मग्गणगवेसणं कयं।'

सूत्र १५७ : कुन्ती देवी ने उत्तर दिया–"हे पुत्र ! हस्तिनापुर में रात को युधिष्ठिर छत पर सो रहा था। उसके पास से द्रौपदी को न जाने कौन अपहरण करके ले गया। अतः हे पुत्र ! मै चाहती हूँ कि तुम उसकी खोज करो।"

157. "Son! While they were sleeping on the terrace of their palace in Hastinapur someone has abducted Draupadi from near Yudhishthir Son! I want you to find her"

कृष्ण का आश्वासन

सूत्र १५८ : तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं पिउच्छिं एवं वयासी–'जं नवरं पिउच्छा ! दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमि' त्ति कट्टु कोंतिं पिउच्छिं सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ।

सूत्र १५८ : कृष्ण वासुदेव ने कुन्ती बुआ को आश्वस्त किया–"बुआ जी ! द्रौपदी देवी की श्रुति आदि का तनिक भी आभास होते ही मैं तत्काल उसे ले आऊँगा चाहे वह पाताल में, धरती पर या आकाश में कहीं भी हो।" यह कहकर कृष्ण ने कुन्ती बुआ का यथोचित आदर सत्कार कर उन्हें विदा किया।

KRISHNA GIVES ASSURANCE

158. Krishna assured his aunt Kunti, "Aunt! As soon as I get even the slightest trace of Draupadi I shall get her back from wherever she is, be it on the earth, in the sky, or the nether world." And Krishna bid farewell to his aunt Kunti with due honour and respect.

सूत्र १५९ : तए णं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया।

सूत्र १५९ : वासुदेव श्रीकृष्ण से आश्वासन पाकर कुन्ती देवी अपने नगर को लौट गई।

159. After getting this assurance from Krishna queen Kunti returned to her city.

सूत्र १६० : तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं एव जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ, जाव पच्चप्पिणंति, पडुस्स जहा।

सूत्र १६० . कुन्ती देवी के लौट जाने पर वासुदेव श्रीकृष्ण ने अपने सेवको को बुलाकर आदेश दिया–"देवानुप्रियो ! द्वारका नगर में सभी स्थानों पर द्रौपदी के अपहरण के सम्बन्ध मे घोषणा करो।" (घोषणा का विस्तार पूर्वसम-सू-१५२ के अनुसार जैसी पाण्डु राजा ने हस्तिनापुर में घोषणा करवाई उसी प्रकार समझे) सेवकों ने राजाज्ञा का पालन कर वासुदेव को सूचित कर दिया।

160. When Kunti left, Krishna Vasudev called his servants and said, "Beloved of gods! Make an announcement about queen Draupadi's abduction at every prominent place in Dwarka (as in para 152)" The servants did as told and reported back

सूत्र १६१ . तए ण से कण्हे वासुदेवे अन्नया अतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ। इम च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंत पुच्छइ।

सूत्र १६१ एक बार वासुदेव श्रीकृष्ण अत पुर मे रानियो के साथ बैठे थे। उस समय कच्छुल्ल नारद आकाश से उतर श्रीकृष्ण के पास जाकर आसन पर बैठे और उनसे क्षेम कुशल पूछने लगे। (पूरा वर्णन सूत्र १३४, १३५ के अनुसार समझे)

161. Once when Krishna Vasudev was sitting in his private quarters with his queens, Kacchull Narad landed in the palace, came to Krishna Vasudev, sat down and asked about his well being (details as in para 134, 135)

नारद से सूचना

सूत्र १६२ तए ण से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल णारय एवं वयासी–'तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाऽऽगर जाव अणुपविससि, त अत्थि याइं ते कहिं वि दोवईए देवीए सुइं वा जाव उवलद्धा?'

तए णं से कच्छुल्ले णारए कण्ह वासुदेवं एवं वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणद्धभारहवास अमरकंकारायहाणिं गये, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था।'

तए णं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं णारयं एवं वयासी–'तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्वकम्मं।'

तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

सूत्र १६२ : वासुदेव श्रीकृष्ण ने कच्छुल्ल नारद से पूछा–"देवानुप्रिय ! आप अनेक ग्रामादि मे जाते हैं क्या कही आपको द्रौपदी के सम्बन्ध में कोई सूचना या जानकारी मिली है।"

नारद ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! एक बार मैं धातकीखण्ड द्वीप मे पूर्व दिशा के दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र मे अमरकका नाम की राजधानी मे गया था। वहाँ मैने राजा पद्मनाभ के भवन में द्रौपदी देवी जैसी महिला देखी थी।"

श्रीकृष्ण बोले–"देवानुप्रिय ! यह सब आपका ही किया-धरा जान पडता है ?"

श्रीकृष्ण के ये वचन सुनकर नारद उत्पतनी विद्या का आह्वान कर जिधर से आये उधर ही वापस चले गये।

NEWS FROM NARAD

162. Krishna Vasudev asked Kacchull Narad, "Beloved of gods! You go around to many villages, cities, etc Did you get any news or information about Draupadi?"

Narad replied, "Beloved of gods! Once I went to Amarkanka city in the southern half of the eastern Bharat area in the Dhatkikhand continent There, in the palace of King Padmanaabh I saw a lady who resembled Draupadi "

Krishna, "Beloved of gods! It appears to be your doing?"

Kacchull Narad at once invoked the Utpatni power and took off in the direction he came from

सूत्र १६३ . तए ण से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेई, सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणआउरं, पडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसडे दीवे पुरत्थिमद्धे अमरकंकाए रायहाणीए पउमनाभस्स-भवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा।

तं गच्छंतु णं पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिम-वेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु।'

सूत्र १६३ : श्रीकृष्ण वासुदेव ने अपना दूत बुलाया और उसे आज्ञा दी–"देवानुप्रिय ! हस्तिनापुर जाकर राजा पाण्डु से यह निवेदन करो–"हे देवानुप्रिय ! धातकीखण्ड द्वीप के पूर्वार्ध

भरत में अमरकका नगरी में पद्मनाभ राजा के भवन मे द्रौपदी देवी का पता लगा है। अत. पाँचों पाण्डवो को चतुरंगिणी सेना सहित प्रयाण करके पूर्व दिशा के लवणसमुद्र तट पर पहुँच कर मेरी प्रतीक्षा करने की आज्ञा दें।"

163. Krishna Vasudev called his emissary and said, "Beloved of gods! go to Hastinapur and inform King Pandu—'Beloved of gods! Draupadi has been found in the palace of King Padmanaabh in Amarkanka city in the southern half of the eastern Bharat area in the Dhatkikhand continent As such, you should order the five Pandavs to march with their four pronged army to the eastern coast on the Lavan sea and wait for me '"

सूत्र १६४ तए णं दूए जाव भणइ–'पडिवालेमाणा चिट्ठह।' ते वि जाव चिट्ठंति।

सूत्र १६४ · दूत ने हस्तिनापुर जाकर सदेश कहा और तदनुसार पाँचो पाण्डव अपनी सेना सहित समुद्रतट पर पहुँचकर श्रीकृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करने लगे।

164. The emissary went to Hastinapur and delivered the message Accordingly the five Pandavs arrived with their four pronged army at the eastern coast on the Lavan sea and waited for Krishna

कृष्ण का प्रयाण

सूत्र १६५ : तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहिय भेरिं ताडेह।' ते वि तालेति।

सूत्र १६५ इधर श्रीकृष्ण वासुदेव ने पुन अपने सेवको को बुलाकर आज्ञा दी–"देवानुप्रियो ! जाकर सामरिक भेरी (युद्ध की भेरी) बजाओ।" सेवको ने राजाज्ञा का पालन किया।

KRISHNA MARCHES

165. Krishna Vasudev again called his servants and said, "Beloved of gods! Go and sound the war trumpets " The servants did as told and reported back

सूत्र १६६ . तए ण तीसे सण्णाहियाए भेरीए सद्द सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव छप्पण्ण बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउह-पहरणा अप्पेगइया हयगया जाव वग्गुरा-परिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेति।

सूत्र १६६ : युद्ध की भेरी की ध्वनि सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार सहित सभी छप्पन हजार बलवान यादव वीर कवच आदि पहन, तैयार हो अपने आयुध व प्रहरणो से सन्नद्ध हो हाथी, घोडे आदि पर सवार हो सुभटो के समूह के साथ कृष्ण वासुदेव की सुधर्मा सभा मे आये और हाथ जोड उनका अभिवादन किया।

166. Hearing the war trumpets the Dashar braves including Samudravijaya and all the fifty six thousand Yadav braves got ready after donning armour They collected their weapons and arrived at the Sudharma assembly of Krishna Vasudev riding elephants, horses, etc and accompanied by their soldiers They greeted Krishna joining their palms

सूत्र १६७ : तए णं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेण धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे महया हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भड-चडगर-पहकरेण बारवईए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेवे पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारणिवेस करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुत्थिय देवं मणसि करेमाणे करेमाणे चिट्ठइ।

सूत्र १६७ तब कृष्ण वासुदेव स्वय श्रेष्ठ हाथी पर आरूढ़ हुए। उनके सर पर सफेद कोरट फूलो की मालाओ का छत्र लगाया गया और दोनो पार्श्व मे श्वेत चामर डुलाये जाने लगे। वे विशाल, घोडे, हाथी, रथ तथा पदाति योद्धाओ से बनी चतुरंगिणी सेना और अन्य सुभटो सहित द्वारका नगर के बीच से निकले और पूर्व दिशा मे समुद्र तट पर जा पहुँचे। वहाँ पाण्डवो से मिले और सेना का पडाव (स्कधावार) डालकर पौषधशाला मे गये। वहॉ लवणसमुद्र के आरक्षक सुस्थित देव के ध्यान मे स्थित हो गये।

167. Now Krishna himself rode a king elephant A canopy made up of garlands of Korant flowers was fixed over his head and on both his flanks white whisks were being plied He passed through Dwarka city with his large four pronged army comprising of elephants, horses, chariots and foot soldiers, and many other warriors and proceeded to the eastern sea coast After making camp and meeting the five Pandavs he went to the Paushadh-shala (place for meditation) There he started meditation to invoke god Susthit, the care-taker of the Lavan sea

सूत्र १६८ तए ण कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तसि परिणममाणसि सुट्ठिओ जाव आगओ–'भण देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्व।'

तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी जाव पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि साहरिया, त णं तुम देवाणुप्पिया ! मम पचहि पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि। जाण अहं अमरकंकारायहाणि दोवईए देवीए कूव गच्छामि।'

सूत्र १६८ : श्रीकृष्ण वासुदेव का अष्टमभक्त (तेला) पूर्ण होने पर सुस्थित देव उनके निकट प्रकट होकर बोला–"देवानुप्रिय ! कहिए मुझे क्या करना है?"

श्रीकृष्ण ने बताया–"देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवी का अपहरण कर उन्हे पद्मनाभ राजा के भवन में ले जाया गया है। अत. तुम मेरे और पॉचो पाण्डवो के रथो को लवणसमुद्र पार करने का मार्ग दो जिससे मै द्रौपदी देवी को छुड़ा लाने के लिए अमरकका जा सकूँ।"

168. When Krishna completed his three day fast god Susthit appeared before him and said, "Beloved of gods! Please tell me what I have to do?"

Krishna Vasudev said, "Beloved of gods! Draupadi has been abducted and taken to the palace of King Padmanaabh So make a path for me and the five Pandavs to cross the Lavan sea on chariots so that I may proceed to Amarkanka city in order to get Draupadi released "

सूत्र १६९ तए णं से सुत्थिए देवे कण्हं वासुदेवं एव वयासी–'किण्ण देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगतिएणं देवेणं दोवई देवी जाव संहरिया, तहा चेव दोवइ देवि धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणाउर साहरामि? उदाहु पउमनाभं राय सपुरबलवाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि?'

सूत्र १७६ : सुस्थित देव ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! ऐसा क्यो नही करते? जैसे राजा पद्मनाभ के पूर्वसागतिक देव ने द्रौपदी देवी का युधिष्ठिर के राजमहलो से अपहरण किया था क्या उसी प्रकार मैं द्रौपदी देवी को अमरकका स्थित पद्मनाभ राजा के महल से हस्तिनापुर ले आऊॅ? अथवा क्या पद्मनाभ राजा को, उसके नगर, सैन्य तथा वाहनो सहित लवणसमुद्र मे फेक दूँ?"

169. Susthit god replied, "Beloved of gods! Why not do as I say? As the friendly god abducted Draupadi from the palace of king Yudhishthir, I too will abduct Draupadi from King Padmanaabh's palace and deliver her to Hastinapur Alternatively, I could throw King Padmanaabh in the Lavan sea along with his city, vehicles and army"

सूत्र १७० : तए णं कण्हे वासुदेवे सुत्थिय देव एवं वयासी–'मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि। तुम ण देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण मग्गं वियराहि, सयमेव ण अह दोवईए देवीए कूव गच्छामि।'

सूत्र १७० श्रीकृष्ण वासुदेव ने कहा–"देवानुप्रिय ! तुम यह सव मत करो। तुम तो हमारे छह रथो को लवण समुद्र से जाने का मार्ग दे दो। मै स्वय ही द्रौपदी देवी को वापिस लाने जाऊॅगा।"

170. Krishna Vasudev said, "No, beloved of gods! do no such thing You just give us passage for our six chariots to go across the sea. I will go myself to set Draupadi free "

सूत्र १७१ : ते णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–'एवं होउ।' पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ।

सूत्र १७१ : सुस्थित देव ने–"ऐसा ही हो" कहकर छहों रथों को लवण समुद्र में गमन का मार्ग प्रदान कर दिया।

171. Susthit god said, "As you wish," and gave the desired passage through the sea

सूत्र १७२ : तए ण से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणिं सेण पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहि रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरककाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता दारुय सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–

सूत्र १७२ : वासुदेव कृष्ण ने चतुरगिणी सेना को वापस विदा कर दिया और पाँच पाण्डवो सहित स्वय छह रथों मे बैठकर लवणसमुद्र के बीच से होते हुए अमरकका राजधानी के निकट जा पहुँचे। नगर के बाहर पहुँचकर प्रधान उद्यान मे पहुँचे और अपने सारथी दारुक को बुलाकर कहा–

172. Krishna sent the armies back and in six chariots crossed the sea with the five Pandavs to reach near Amarkanka city He stopped in the main garden outside the city and called his driver Daruk and said—

पद्मनाभ को चुनौती

सूत्र १७३ : 'गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अमरकंका रायहाणिं अणुपविसाहि, अणुपविसित्ता पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएण पायपीढं अक्कमित्ता कुंतग्गेण लेहं पणामेहि; तिवलियं भिउडि णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एव वदह–'हं भो पउमणाहा ! अपत्थिय-पत्थिया ! दुरंत-पंतलक्खाणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धीपरिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि, किं णं तुम ण जाणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइ देवि इहं हव्व आणमाणे। तं एवमवि गए, पच्चप्पिणाहि ण तुम दोवइं देवि कण्हस्स वासुदेवस्स, अहवा ण जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि। एस ण कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूव हव्वमागए।'

सूत्र १७३ : "देवानुप्रिय ! तुम जाओ और अमरकका राजधानी मे प्रवेश कर राजा पद्मनाभ के निकट पहुँचो। वहाँ पहुँचकर उसके पादपीठ को अपने बायें पाँव से ठोकर मारकर अपने भाले की नोक से यह पत्र दे दो। उसके बाद भृकुटि तान, कपाल पर सलवटें डाल, आँखे लालकर, रोष, क्रोध, और कोप से प्रचण्ड रूप धारण करके उससे कहना–'ओ पद्मनाभ ! अवांछित की वाछा करने वाले ! अनन्त कुलक्षणो वाले ! चतुर्दशी को जन्मे पुण्यहीन ! श्री, लज्जा और बुद्धि से

हीन ! आज तू बचेगा नहीं ! क्या तू नही जानता कि तूने कृष्ण वासुदेव की बहन द्रौपदी देवी का हरण कर लिया है ? जो हुआ सो हुआ। अब भी अच्छा होगा कि तू द्रौपदी देवी को कृष्ण वासुदेव को लौटा दे। अन्यथा युद्ध के लिए तैयार होकर बाहर निकल। पाँचों पाण्डवो सहित कृष्ण वासुदेव द्रौपदी देवी को तुझसे छीन कर ले जाने के लिए अभी-अभी यहाँ पहुँचे है।''

CHALLENGE TO PADMANAABH

173. "Beloved of gods! Enter Amarkanka city and go to King Padmanaabh When you arrive near his throne, kick his leg-rest with your left foot and deliver him this letter with the tip of your spear After that, with a frown creasing the skin on your forehead, turn your eyes red, and taking a threatening posture filled with fury, anger, and wrath, give him this warning, 'Hey Padmanaabh! O desirous of the undesired! O storehouse of vices! O virtueless, born on the fourteenth night of the dark half of the month! O graceless, shameless, and witless fool! You are facing your doom Don't you know that you have abducted Draupadi, the sister of Krishna Vasudev However, let bygones be bygones Even now it would be to your benefit if you return Draupadi to Krishna Vasudev Otherwise get ready for war and come out Krishna Vasudev and the five Pandavs have just arrived here to rescue Draupadi from your clutches '"

सूत्र १७४ तए णं से दारुए सारही कण्हेण वासुदेवेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अमरकका रायहाणि अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एव वयासी–'एस ण सामी! मम विणयपडिवत्ती, इमा अन्ना मम सामियस्स समुहाणत्ति' त्ति कट्टु आसुरुत्ते वामपाएण पायपीढ अणुक्कमति, अणुक्कमित्ता कोंतग्गेण लेह पणामेइ, पणामित्ता जाव कूव हव्वमागए।

सूत्र १७४ सारथी दारुक ने वासुदेव की आज्ञा प्रसन्नचित्त हो स्वीकार की और अमरकका राजधानी मे प्रवेश किया। राजा पद्मनाभ के पास पहुँच कर उसने दोनो हाथ जोड यथाविधि अभिनन्दन किया और कहा–''स्वामिन् ! यह तो मेरी ओर से अपने शिष्टाचार की अभिव्यक्ति थी। मेरे स्वामी की आज्ञा इससे भिन्न है। वह अब प्रस्तुत करता हूँ।'' और उसने वासुदेव कृष्ण की आज्ञा का अक्षरश· पालन करते हुए क्रोध से लाल नेत्र कर, पादपीठ को बाये पाँव मे ठोकर मारी, भाले की नोक से पत्र दिया और वासुदेव के आदेश को दोहरा दिया।

174. Driver Daruk was pleased to accept the order and he, at once, went to Amarkanka city He approached King Padmanaabh, joined his palms in greeting and said, "Sire! This was my personal courtesy The instructions of my master are in variance from this Now I do as I have been ordered " And

he did exactly as Krishna Vasudev had instructed him to do. Eyes red with anger, he kicked the leg-rest with his left foot, delivered the letter with the tip of his spear and repeated the message of Krishna

सूत्र १७५ : तए णं से पउमणाभे दारुएण सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी–'णो अप्पणामि णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं, एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जो निग्गच्छामि, त्ति कट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी–'केवलं भो ! रायसत्थेसु दूए अवज्झे' त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावेइ।

सूत्र १७५ : दूत का कथन सुनकर उत्तर में पद्मनाभ ने क्रोध से लाल हो भृकुटि तान कर ललाट पर तीन सलवटे डालकर कहा–"देवानुप्रिय ! मैं कृष्ण वासुदेव को द्रौपदी वापस नहीं करूँगा। लो, मै स्वय युद्ध के लिए तैयार होकर निकलता हूँ।" पद्मनाभ ने पुन दूत को सम्बोधित किया–"हे दूत ! राजनीति शास्त्र में दूत अवध्य है। इस कारण तुझे छोड देता हूँ।" और उसने दूत को अपमानित तिरस्कृत कर पिछले द्वार से निकाल दिया।

175. When he heard this message King Padmanaabh too became furious With a frown and three creases on his forehead he replied, "Beloved of gods! I will not return Draupadi to Krishna I will prepare for the battle and come out at once " King Padmanaabh again addressed the emissary, "Messenger! Emissaries enjoy diplomatic immunity That is why I allow you to go without harm " And he summarily dismissed the emissary and as an insult made him leave from the back door

सूत्र १७६ तए ण से दारुए सारही पउमनाभेणं असक्कारिय जाव निच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल-परिग्गहिय जाव कण्हं वासुदेव एवं वयासी–'एव खलु अह सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ।'

सूत्र १७६ पद्मनाभ राजा द्वारा अपमान करके तिरस्कार पूर्वक निकाले जाने पर सारथि दारुक कृष्ण वासुदेव के पास लौटा और हाथ जोडकर सारा वृत्तान्त सुना दिया।

176. Insulted and dismissed summarily by King Padmanaabh, driver Daruk returned to Krishna Vasudev and narrated his experience in detail

सूत्र १७७ : तए ण से पउमणाभे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह।' तयाणंतर च णं छेयायरिय-उवदेस-मइविकप्पणाहिं विगप्पेहिं जाव उवणेइ। तए णं से पउमनाहे सन्नद्ध जाव अभिसेयं (हत्थिरयणं) दुरूहइ, दुरूहित्ता हय-गय जेणेव कण्हे वासुदेवे तणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र १७७ : उधर वासुदेव के दूत को निकाल देने के पश्चात् राजा पद्मनाभ ने अपने सेनापति को बुलाया और कहा–"देवानुप्रिय ! अभिषेक किये हुए श्रेष्ठ हाथी को तैयार करके

लाओ।" सेनापति ने कुशल आचार्य के उपदेश से उत्पन्न हुई बुद्धि की कल्पना के विकल्पों (अनेक प्रकार की युक्तियों) मे निपुण पुरुषों से श्रेष्ठ हाथी का अभिषेक करवा कर उसे राजा के सामने उपस्थित किया। वह उज्ज्वल वस्त्र से ढका और सुसज्जित था। राजा पद्मनाभ कवच आदि धारण करके सज्जित हुआ और उस अभिषिक्त हाथी पर आरूढ़ हुआ। अपनी चतुरगिणी सेना के साथ उसने कृष्ण वासुदेव के पड़ाव की ओर प्रस्थान किया।

177. After dismissing the emissary of Krishna, King Padmanaabh called his commander-in-chief and said, "Beloved of gods! Equip an anointed elephant of the best breed for war and bring it here " The commander got a good and pedigreed elephant selected and anointed by proficient exponents of the field, trained by experts of the subject, and produced it before the king It was duly covered with white cloth, decorated and equipped King Padmanaabh got ready after putting on his armour, etc and rode that anointed elephant He marched with his armies towards the camp of Krishna

पाण्डवों की हार

सूत्र १७८ : तए ण से कण्हे वासुदेवे पउमनाभ रायाण एज्जमाणं पासइ, पासित्ता ते पच पंडवे एवं वयासी–'हं भो दारगा ! किं तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उदाहु पेच्छिहिह?'

तए णं पंच पंडवा कण्हं वासुदेव एव वयासी–'अम्हे णं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह।'

तए ण पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी–'अम्हे वा पउमणाभे वा राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धि संपलग्गा यावि होत्था।

सूत्र १७८ : जब कृष्ण वासुदेव ने राजा पद्मनाभ को आते देखा तो वे पॉचो पाण्डवो से बोले– "अरे बालको ! तुम पद्मनाभ के साथ युद्ध करोगे या केवल युद्ध देखोगे ही?"

पाण्डवों ने उत्तर दिया–"स्वामी ! हम युद्ध करेंगे आप केवल देखिए।"

पॉंचो पाण्डव अस्त्र-शस्त्र ले तैयार हो रथो पर सवार हुए और राजा पद्मनाभ के निकट पहुँचे। मन में यह सकल्प करके कि "आज या तो हम है या राजा पद्मनाभ है" वे युद्ध मे कूद पडे।

DEFEAT OF PANDAVS

178. When Krishna Vasudev saw King Padmanaabh coming he asked the five Pandavs, "Children! Would you like to fight King Padmanaabh or want to remain spectators only?"

The Pandavs replied, "Sir! We shall fight; you just watch "

The five Pandavs collected their weapons, got ready and boarded their chariots. They approached King Padmanaabh, resolved, "Today either King Padmanaabh will perish or we," and jumped into the battle.

सूत्र १७९ : तए णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हय-महिय-पवरवीर-घाइयविवडिय-चिंधद्धय-पडागे जाव दिसोदिसिं पडिसेहेइ। तए णं ते पंच पंडवा पउमणाभेणं रण्णा हय-महियपवरवीर-घाइयविवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव अधारणिज्ज मिति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेव तेणेव उवागच्छंति।

तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी–'कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संपलग्गा?'

तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी–'एवं खुल देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया रहे दुरुहामो, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ।'

सूत्र १७९ देखते ही देखते राजा पद्मनाभ ने शस्त्रो से प्रहार कर पाँचों पाण्डवों के अहंकार का मर्दन कर दिया और उनकी श्रेष्ठ चिह्न वाली पताका गिरा दी। राजा पद्मनाभ द्वारा खदेडे हुए, शत्रु को पराजित करने मे असमर्थ व हताश हुए वे पॉचों पाण्डव कृष्ण वासुदेव के पास लौट आये। कृष्ण वासुदेव ने कहा–'देवानुप्रियो ! तुम किस संकल्प के साथ राजा पद्मनाभ से युद्ध में संलग्न हुए थे।"

पाण्डवो ने अपने अभियान का पूरा वर्णन करके बताया–"देवानुप्रिय ! हमारा सकल्प था–'आज या तो हम हैं या राजा पद्मनाभ है।' इस सकल्प के साथ हम रथ पर आरूढ़ होकर उसके समक्ष गये, पर उसने हमे प्रतिहत–पराजित कर भगा दिया।"

179. Within no time King Padmanaabh crushed the ego of the five Pandavs with a barrage of blows with his weapons and cut down their exquisite flag. Pushed back by King Padmanaabh, defeated by their enemy, routed and dejected, the five Pandavs came back to Krishna Vasudev Krishna asked, "Beloved of gods! With what resolve did you enter the battle?"

The Pandavs detailed their campaign and said, "Beloved of gods! Our resolve was—'Today either King Padmanaabh will perish or we,' and we boarded our chariots and faced him But he defeated us and made us retreat."

सूत्र १८० : तए णं कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी–'जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एवं वयंता–अम्हे, णो पउमणाभे राय त्ति पउमणाभेणं सद्धिं संपलग्गंता, तो णं तुब्भे णो पउमनाहे हय-महियपवर जाव पडिसेहंते। तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! 'अहं, णो पउमणाभे

राय' त्ति कट्टु पउमनाभेणं रन्ना सद्धिं जुज्झामि। रहं दुरूहइ, दुरूहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेयं गोखीर-हार-धवलं तणसोल्लिय-सिंदुवार-कुंदेंदु-सन्निगासं नियबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्ण-विणासकरं पंचजण्णं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ।

सूत्र १८० : इस पर कृष्ण वासुदेव ने कहा–"देवानुप्रियो !यदि तुम इस संकल्प के साथ कि 'आज हम हैं, पद्मनाभ राजा नहीं' युद्ध मे जुटे होते तो वह तुम्हें प्रतिहत नही कर पाता। अब देखना मै इस सकल्प के साथ पद्मनाभ से युद्ध करता हूँ–'आज मैं हूँ, पद्मनाभ नहीं।' " और कृष्ण वासुदेव रथ पर आरूढ़ हो राजा पद्मनाभ के निकट पहुँचे। वहाँ उन्होंने गाय के दूध, मोतियों के हार, मल्लिका, मालती, सिदुवार तथा कुन्द के फूल और चन्द्रमा के समान सफेद पाँचजन्य शख, जो उनकी अपनी सेना मे हर्ष सचार करता था, तथा रिपु सेना को त्रस्त करने वाला था, वह शख हाथ मे ले कर फूँका।

180. Krishna Vasudev commented "Beloved of gods! Had you entered the battle with the resolve—'Today King Padmanaabh will perish, not us'—he would not have defeated you Now see, I will join the battle with this resolve" Krishna resolved, "Today King Padmanaabh will perish, not me" He then boarded his chariot and went near King Padmanaabh Once there he blew his Panchajanya conch-shell which was white as cow-milk, the pearl necklace, Mallika, Malati, Sinduvar, and Kund flowers, and the moon The sound of Panchajanya instilled joy in his own army and fear in the foe's army.

सूत्र १८१ : तए णं तस्स पउमनाहस्स तेण संखसद्देण बल-तिभाए हए जाव पडिसेहिए। तए णं से कण्हे वासुदेवे धणुं परामुसइ, वेढो, धणु पूरेइ, पूरित्ता धणुसद्दं करेइ। तए णं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बल-तिभाए धणुसद्देणं हयमहिय जाव पडिसेहिए। तए णं से पउमनाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जं ति कट्टु सिग्घ तुरियं जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणिं अणुपविसइ अणुपविसित्ता दाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ।

सूत्र १८१ . उस शख की प्रचण्ड ध्वनि से पद्मनाभ की सेना का एक तिहाई भाग हतोत्साहित व त्रस्त होकर चारों दिशाओं में पलायन कर गया। फिर कृष्ण वासुदेव ने अपना सारग नामक धनुष हाथ में लिया (धनुष का वर्णन जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुसार जाने) और उसकी प्रत्यंचा चढ़ाकर टंकार की। इस तीव्र टंकार से पद्मनाभ की सेना का अन्य एक तिहाई भाग तुरन्त भयभीत, निर्वीय होकर भाग गया। अब उसकी सेना का केवल एक तिहाई भाग शेष रहा और वह सामर्थ्यहीन, बलहीन, वीर्यहीन और पुरुषार्थ-पराक्रमहीन हो गया। कृष्ण वासुदेव के प्रहार को सहने या उससे बचने मे असमर्थ हो जाने से वह शीघ्र ही द्रुतगति से भाग कर अमरकका नगरी के भीतर जा घुसा। राजधानी में प्रवेश कर द्वार बन्द कर नगर सुरक्षा के लिए तैयारी करने लगा।

चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

पद्मनाभ के साथ वासुदेव का युद्ध व सिंहनाद

चित्र : २२

नारद द्वारा प्रेरित अमरकका के राजा पद्मनाभ ने द्रौपदी का अपहरण करवा लिया। पाँचों पाण्डव वासुदेव श्रीकृष्ण की सहायता से द्रौपदी को लाने अमरकका पहुँचे।

१ युद्ध मे पद्मनाभ राजा वासुदेव श्रीकृष्ण की घनघोर बाण-वर्षा के सामने नही टिक सका। भागकर नगरी मे घुस गया और सिंहद्वार बन्द कर लिया।

२ वासुदेव श्रीकृष्ण ने वैक्रिय समुद्घात करके नृसिंह-रूप धारण किया, सिंह-गर्जना के भयंकर नाद से नगर के परकोटे, तोरणद्वार आदि टूटकर धराशायी होने लगे। भयभीत हुआ पद्मनाभ अन्त मे द्रौपदी देवी की चरण-शरण लेकर वासुदेव के समक्ष आता है। (सोलहवाँ अध्ययन)

THE BATTLE OF VASUDEV AND PADMANAABH

ILLUSTRATION 22

Inspired by Narad, King Padmanaabh of Amarkanka got Draupadi abducted The five Pandavs arrived at Amarkanka with the help of Shrikrishna Vasudev

1 In the ensuing battle Padmanaabh could not stand the incessant shower of arrows by Krishna He retreated into the city of Amarkanka and closed the gates

2 Vasudev Shrikrishna approached Amarkanka With the process of Vaikriya Samudghat he transformed himself into a giant man with lion's head He then roared loudly and stomped the ground The terrible roar caused the parapet wall, gates and other structures to fall apart At last, terrified Padmanaabh sought help from Draupadi and according to her advice came to Vasudev, returned Draupadi, and asked forgiveness **(CHAPTER - 16)**

181. The tremendous sound emanating from the conch-shell filled one third of King Padmanaabh's army with fear and it ran away in panic in all directions. After this Krishna picked up his bow, which was named Sarang, fixed its string and twanged it The piercing sound of this twang made another third part of King Padmanaabh's army enervated and run away in panic Now just one third of his army remained with him King Padmanaabh became powerless, weak, enervated, and devoid of vigour and valour. When he found himself unable to save himself from or tolerate the attack of Krishna Vasudev, he at once retreated with great speed and entered Amarkanka city. He had the gates closed and started preparations for the defence of the city.

कृष्ण का नृसिंह रूप

सूत्र १८२ . तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता एग महं णरसीहरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया महया सद्देणं पाददद्दरियं करेइ। तए णं से कण्हेणं वासुदेवेणं महया महया सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागार-गोपुराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सन्निवइया।

सूत्र १८२ · तब कृष्ण वासुदेव अमरकका के निकट गये और रथ रोक कर नीचे उतरे। वैक्रियसमुद्घात की क्रिया से उन्होने एक महान् नृसिंह का रूप धारण किया। वह नृसिह तीव्र स्वर मे गरजने लगा और धरती पर पैर पटकने लगा। इस गर्जना और धमक से नगर का परकोटा, द्वार, अट्टालिका, परकोटे और नगर के बीच के मार्ग, तोरण आदि गिरने लगे और श्रेष्ठ महल, कोषागार आदि भवन चरमरा कर धराशायी होने लगे।

KRISHNA'S FEROCIOUS FORM

182. Krishna followed him and arrived near Amarkanka city. He stopped the chariot and got down With the help of Vaikriya Samudghat (the process of transformation of body detailed in ch. 1, para 46) he took the form of Nrisimha (a giant human with a lion-head). This Nrisimha started roaring ferociously and stomping the ground with great force. The roaring and stomping caused the parapet wall, gates, roads, arches , and other structures to crumble, and the gorgeous buildings including the palaces and storehouses to collapse.

सूत्र १८३ : तए णं पउमणाभे राया अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवइं देविं सरणं उवेइ। तए णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी-'किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ममं इह हव्वमाणेसि? तं एवमवि गए। गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलग-वत्थणियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय मम पुरतो काउं कण्हं वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा।

सूत्र १८३ : अमरकका की यह भग्न दशा देख, भय से आक्रान्त हुआ पद्मनाभ द्रौपदी देवी की शरण में गया। द्रौपदी ने कहा-"देवानुप्रिय ! क्या तुम भूल गये कि पुरुषोत्तम कृष्ण वासुदेव का विप्रिय (अप्रिय कार्य) कर तुम मुझे यहाँ लाये हो ! फिर भी जो हुआ उसे भूलकर तुम स्नान करो, गीले ही वस्त्र धारण करो और काछ खुली रखो। अपने अन्त पुर परिवार को साथ में लो और साथ ही बहुमूल्य रत्न भेट स्वरूप लो। इसके बाद मुझे आगे रखो और चलकर कृष्ण वासुदेव के पास पहुँच हाथ जोड उनके चरणों में गिरकर शरण माँगो । देवानुप्रिय ! उत्तम पुरुष शरणागतवत्सल होते हैं।"

183. When King Padmanaabh saw this holocaust in Amarkanka city he rushed to Draupadi in panic and sought her help Draupadi said, "Beloved of gods! Have you forgotten that you have annoyed Krishna Vasudev by abducting me Anyway, forget what you have done, take your bath and just wrap a length of wet cloth around your body Collect valuable gems as gifts, take along your women folk and then, keeping me in the lead, humbly walk down to Krishna Vasudev When you reach him join your palms and fall at his feet to seek refuge Beloved of gods! Virtuous persons have feelings of compassion for refugees "

सूत्र १८४ : तए णं से पउमणाभे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणएइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवइत्ता करयल एव वयासी-'दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! जाव खमतु णं जाव भुज्जो एव करणयाए' त्ति पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ।

सूत्र १८४ · पद्मनाभ ने द्रौपदी का यह मन्तव्य स्वीकार कर द्रौपदी के कहे अनुसार सभी काम करता हुआ वासुदेव कृष्ण की शरण मे गया। हाथ-जोड कर बोला-" हे देवानुप्रिय ! मैंने आपकी ऋद्धि और पराक्रम देख लिया। हे देवानुप्रिय ! मै आपसे क्षमा प्रार्थना करता हूँ। मै ऐसा कार्य फिर नहीं करूँगा। आप मुझे क्षमा करें।" यह कहते-कहते वह कृष्ण के चरणों में गिर पड़ा। उसने स्वयं द्रौपदी देवी को लौटा दिया।

184. King Padmanaabh accepted the advice of Draupadi and following her instructions approached Krishna Vasudev. With joined palms he said, "Beloved of gods! I have seen your glory and valour. I humbly seek your forgiveness. I will never repeat such an act. Kindly pardon me " With these words he fell at the feet of Krishna Vasudev. He personally returned Draupadi to Krishna.

सूत्र १८५ : तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी-'हं भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया ! किण्णं तुमं ण जाणसि मम भगिणिं दोवइं देविं इह हव्वमाणमाणे? तं एवमवि गए। णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि' त्ति कट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरूहेइ, दुरूहित्ता जेणेव पंच पंडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ।

सूत्र १८५ : कृष्ण ने कहा-"अरे पद्मनाभ ! अवांछित (अनचाहे) की इच्छा करने वाले। क्या तू भूल गया है कि तू मेरी बहन द्रौपदी को उठाकर लाया था। फिर भी मैं तुझे अभयदान देता हूँ। जा, मुझसे तुझे कोई भय नहीं।" यह कहकर कृष्ण वासुदेव ने पद्मनाभ को मुक्त किया और द्रौपदी को लेकर रथ पर चढ पाण्डवों के निकट आये। द्रौपदी को पाण्डवों को सौंप दिया।

185. Krishna replied, "Padmanaabh! O desirous of the undesired! You forget that you abducted my sister Draupadi However, I forgive you Go away and have no fear from me " And Krishna set King Padmanaabh free He boarded his chariot with Draupadi and came near the five Pandavs. He handed over Draupadi to the five Pandavs.

सूत्र १८६ : तए णं से कण्हे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र १८६ : पाँचो पाण्डवों के साथ कृष्ण छहो रथों मे सवार हो लवणसमुद्र पारकर जम्बूद्वीप स्थित भारतवर्ष आने के लिए प्रस्थित हुए।

186. Krishna and the five Pandavs left in their six chariots for the Bharat area in the Jambu continent through the Lavan sea

सूत्र १८७ : तेणं कालेणं तेणं समएण धायइसंडे पुरित्थमद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। तत्थ णं चंपाए णयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत वण्णओ।

सूत्र १८७ : काल के उस भाग में धातकीखण्ड के पूर्वार्ध भाग के भरतक्षेत्र में चम्पा नाम की नगरी थी, जिसमें पूर्ण भद्र नामक चैत्य था। उस नगरी में कपिल नामक वासुदेव राज्य करते थे। वे हिमवान् पर्वत के समान महान थे (वर्णन पूर्ववत्)।

187. During that period of time there was a city named Champa in the Bharat area of the eastern Dhatkikhand continent There was a temple named Purnabhadra there Kapil Vasudev was the ruler of that city. He was as illustrious as the Himalayas (as before)

कपिल वासुदेव का आश्चर्य

सूत्र १८८ . तेणं कालेण तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे। कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेइ। तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्मं सुणमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्दं सुणेइ। तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-'कि मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियभइ?'

सूत्र १८८ · काल के उस भाग मे मुनिसुव्रत नामक अरिहत विचरते हुए चम्पा नगरी के पूर्णभद्र चैत्य मे पधारे। वासुदेव कपिल ने उनका धर्मोपदेश सुना। इसी बीच कपिल वासुदेव ने कृष्ण वासुदेव के पाँचजन्य शख का नाद सुना। कपिल के मन मे विचार उठा-"क्या धातकीखण्ड के भारतवर्ष में दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है? और उसका शखनाद ऐसा फैल रहा है जैसे स्वय मैंने ही फूँका हो?"

SURPRISE OF KAPIL VASUDEV

188. During that period of time Arihant Munisuvrat came to Champa and stayed in the Purnabhadra Chaitya Vasudev Kapil went to his discourse During the discourse Kapil heard the echoing sound of the Panchajanya conch of Krishna Vasudev Kapil thought, "Has another Vasudev been born in the Bharat area of the Dhatkikhand? And is the sound of his conch resonating as it would if I were blowing it?"

सूत्र १८९ · 'कविला वासुदेवा, मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेव एवं वयासी-'से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पण्णे-'किं मण्णे जाव वियंभइ, से नूणं कविला ! वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे?'

'हंता अत्थि।'

सूत्र १८९ · मुनिसुव्रत अरिहत ने कपिल वासुदेव से कहा-"हे कपिल वासुदेव ! मेरा उपदेश सुनते-सुनते तुम्हारे मन में प्रश्न उठा कि क्या इस भरतक्षेत्र में दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है जिसका शखनाद इतना प्रचण्ड और व्याप्त हो रहा है। (पूर्व सम-सू-१९५)। हे कपिल ! क्या यह ठीक है, यथार्थ है?"

कपिल-"जी हाँ ! यह सत्य है।"

189. Arihant Munisuvrat asked Vasudev Kapil, "Kapil Vasudev! While listening to my sermon you are wondering if another Vasudev has been born in the Bharat area of the Dhatkikhand the sound of whose conch is so loud and resonating? Kapil! Am I right?"

"Yes my lord! you are right."

सूत्र १९० : 'नो खलु कविला वासुदेवा, ! एवं भूयं वा, भवइ वा, भविस्सइ वा जण्णं एगे खेत्ते, एगे जुगे, एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु वा, उप्पज्जंति वा, उप्पज्जिस्संति वा। एवं खलु वासुदेवा ! जम्बूद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरनयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमणाभस्स रण्णो पुव्वसंगतिएणं देवेणं अमरकंकाणयरिं साहरिया। तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहि अमरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए। तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव-मुहवायपूरिते इव इट्ठे कंते इहेव वियंभइ।'

सूत्र १९० : अरिहंत मुनिसुव्रत ने कहा-"कपिल वासुदेव ! ऐसा कभी हुआ नहीं, होता नहीं और होगा नहीं कि एक ही युग मे, एक ही समय में दो तीर्थंकर, दो चक्रवर्ती, दो बलदेव अथवा दो वासुदेव उत्पन्न हों। हे वासुदेव ! जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के हस्तिनापुर नगर के राजा पाण्डु की पुत्र-वधु द्रौपदी देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्वजन्म का साथी देव हरण करके ले आया था। इस पर कृष्ण वासुदेव पाँचो पाण्डवो सहित उसे छुडाने के लिए आये है। वे राजा पद्मनाभ के साथ सग्राम कर रहे हैं। सग्राम करते हुए कृष्ण वासुदेव का शंखनाद जो इष्ट और कान्त है तुम्हें यहाँ सुनाई दिया है और तुम्हें ऐसा प्रतीत हो रहा जैसे वह तुम्हारे द्वारा फूँका शंखनाद हो।"

190. Arihant Munisuvrat said, "Kapil Vasudev! It has never happened, does not happen, and will never happen that in the same era at the same time two Tirthankars, two Chakravartis, two Baldevs, or two Vasudevs are born. Vasudev! Draupadi, the daughter-in-law of King Pandu of Hastinapur in Bharat area of the Jambu continent was abducted by a god friendly to your King Padmanaabh Krishna Vasudev and the five Pandavs have come to her rescue. They are at war against King Padmanaabh During the war Krishna has blown the conch shell emitting the melodious likeable sound which you have heard and it makes you feel as if you have blown the conch yourself"

सूत्र १९१ : तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ, नमंसइ,वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं पासामि।'

तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी-'नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा, भवइ वा, भविस्सइ वा जण्णं अरिहंता वा अरिहंतं पासंति, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति, बलदेवा वा बलदेवं पासंति, वासुदेवा वा वासुदेवं पासंति। तह वि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्जंमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि।'

सूत्र १९१ : कपिल वासुदेव ने तीर्थंकर मुनिसुव्रत को यथाविधि वन्दना की और पूछा-"भंते मैं जाऊँ और पुरुषोत्तम कृष्ण वासुदेव के दर्शन करूँ?"

अरिहंत मुनिसुव्रत ने कहा-"देवानुप्रिय ! ऐसा न हुआ, न होता है, न होगा कि एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर को देखे, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती को देखे, एक बलदेव दूसरे बलदेव को देखे और एक वासुदेव दूसरे वासुदेव को देखे। फिर भी तुम लवणसमुद्र के मध्य से जाते हुए कृष्ण वासुदेव के श्वेत व पीत ध्वज के अग्रभाग को देख सकोगे।"

191. Kapil Vasudev duly bowed before Tirthankar Munisuvrat and asked, "Bhante! Should I go and behold the great Krishna Vasudev?"

Arihant Munisuvrat, "Beloved of gods! It has never happened, does not happen, and will never happen that two Tirthankars, two Chakravartis, two Baldevs, or two Vasudevs see each other However, you will be able to see the edge of the white and yellow flag of Krishna Vasudev while he is crossing the Lavan sea"

शंखनाद-मिलन

सूत्र १९२ : तए णं कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता सिग्घं सिग्घं जेणेव वेलाउले तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ-'एस ण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ' त्ति कट्टु पंच जन्नं सखं परामुसइ मुहवायपूरिय करेइ।

सूत्र १९२ : कपिल वासुदेव ने तीर्थंकर मुनिसुव्रत को यथाविधि वन्दन किया और हाथी पर आरूढ़ होकर अति शीघ्र गति से समुद्रतट पर आये। वहाँ उन्होने लवणसमुद्र पार करते हुए कृष्ण वासुदेव के श्वेत पीत ध्वज का अग्रभाग देखा और बोले-"यह मेरे समान पुरुष है। यह पुरुषोत्तम कृष्ण वासुदेव है। ये लवणसमुद्र को पार कर रह रहे है।" और उन्होंने अपना पाँचजन्य शंख हाथ में ले मुँह के निकट ला उसे फूँका।

CONCH-SOUND GREETING

192. Kapil Vasudev duly bowed before Tirthankar Munisuvrat and riding an elephant rushed to the sea shore with great speed. There he saw the edge

of the white and yellow flag of Krishna Vasudev while he was going across the Lavan sea and said, "He is a lofty person like me. He is the great Krishna Vasudev and he is crossing the Lavan sea." He picked up his Panchajanya conch, took it to his lips and blew it.

सूत्र १९३ : तए णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं आयन्नेइ, आयन्नित्ता पंचजन्नं जाव पूरियं करेइ। तए णं दो वि वासुदेवा संखसद्दसामायारिं करेंति।

सूत्र १९३ : कृष्ण वासुदेव ने वह शखनाद सुना और अपना पाँचजन्य शंख निकाल कर स्वय भी फूँक दिया। इस प्रकार दोनो वासुदेवो ने शंखनाद-मिलन किया।

193. Krishna heard the echo and blew his own conch Thus the two Vasudevs greeted each other with conch sound

सूत्र १९४ : तए ण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभं एव वयासी-'किण्णं देवाणुप्पिया ! एस अमरकंका रायहाणी संभग्ग जाव सन्निवइया?'

सूत्र १९४ तत्पश्चात् कपिल वासुदेव अमरकका आये। वहॉ पहुँचकर उन्होने देखा कि अमरकका के तोरण आदि ध्वस्त हो चुके है। उन्होने पद्मनाभ से प्रश्न किया-"देवानुप्रिय ! यह ध्वस क्यो कर हुआ?"

194. After this Kapil Vasudev came to Amarkanka city and saw that the arches and gates and all other constructions have been destroyed He asked King Padmanaabh, "Beloved of gods! What has caused this destruction?"

सूत्र १९५ : तए णं से पउमनाभे कविल वासुदेवं एवं वयासी-'एवं खलु सामी ! जम्बुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अमरकंका जाव सन्निवाइया।'

सूत्र १९५ तब कपिल वासुदेव से पद्मनाभ ने कहा, "हे स्वामी ! जम्बू द्वीप के भरत क्षेत्र से कृष्ण वासुदेव यहाँ आए और आपको अपमानित कर अमरकका को ध्वस्त कर दिया है।"

195. King Padmanaabh replied, "Sire! Krishna Vasudev from the Bharat area of Jambu continent came here, insulted you, and destroyed Amarkanka city"

सूत्र १९६ . तए णं से कविले वासुदेव पउमणाहस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एव वयासी-'हं भो पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किं ण तुमं न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे?' आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसय आणेवइ, पउमणाहस्स पुत्तं अमरककारायहाणीए महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, जाव पडिगए।

सूत्र १९६ : पद्मनाभ का उत्तर सुन कपिल वासुदेव बोले–"अरे पद्मनाभ ! अनीच्छित की इच्छा करने वाले ! क्या तू नहीं जानता कि तूने मेरे समान उत्तम पुरुष कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया है?" और क्रोधित हो उन्होंने पद्मनाभ को देश निकाला दे दिया। पद्मनाभ के पुत्र का अमरकंका के सिंहासन पर राज्याभिषेक कर कपिल वासुदेव लौट गये।

196. Hearing this reply from King Padmanaabh, Kapil Vasudev reprimanded him, "Padmanaabh! O desirous of the undesired! Don't you know that you have ill treated Krishna Vasudev, who is a great man like me?" Sizzling with anger, he exiled King Padmanaabh. Kapil Vasudev placed King Padmanaabh's son on the throne of Amarkanka city and returned.

पाण्डवों द्वारा कृष्ण बल-परीक्षा

सूत्र १९७ : तए ण से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीइवयइ, गगं उवागए, ते पंच पंडवे एव वयासी–'गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गगामहानदिं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं देवं लवणाहिवइ पासामि।'

तए ण पच पंडवा कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगामहानदिं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति–'पहू ण देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गगामहाणइ वाहाहि उत्तरित्तए? उदाहु णो पभू उत्तरित्तए?' त्ति कट्टु एगट्ठिय नाव णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा पडिवालेमाणा चिट्ठंति।

सूत्र १९७ : इधर कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्र पारकर गगा महानदी के निकट आये। वहाँ पहुँचकर उन्होने पाण्डवों से कहा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग प्रस्थान करो। जब तक तुम गंगानदी को पार करोगे मै लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव से भेट कर लेता हूँ।"

पाँचो पाण्डव कृष्ण के कथनानुसार गगा नदी के तट पर पहुँचे और एक नौका की खोजकर उसमे बैठ गगा के पार पहुँच गये। वहाँ उतरकर उन्होंने परस्पर विचार किया–"देवानुप्रिय ! देखते है कि कृष्ण वासुदेव महानदी गगा को भुजाओ से तैरकर पार करने मे समर्थ है या नहीं?" यह विचार कर उन्होने वह नाव छुपा दी और कृष्ण की प्रतीक्षा करने लगे।

PANDVAS TEST KRISHNA

197. In the mean time, Krishna crossed the Lavan sea and arrived near the great Ganges. He said to the Pandavs, "Beloved of gods! You may proceed While you cross the Ganges I shall meet Susthit god, the care taker of the Lavan sea "

As instructed by Krishna the Pandavs came to the river bank, searched for a boat and then crossed the Ganges. After they disembarked they conferred, "Beloved of gods! Let us see if Krishna Vasudev is strong enough to swim across the great Ganges" Agreeing to this they hid the boat and waited for Krishna.

सूत्र १९८ : तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसण करेइ, करित्ता एगट्ठियं णावं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरंगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए गंगं महाणदिं बासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिन्न उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था।

तए णं कण्हे वासुदेवे गंगामहाणईए बहूमज्झदेसभागं संपत्ते समाणे संते तंते परितंतें बद्धसेए जाये यावि होत्था।

सूत्र १९८ : उधर कृष्ण वासुदेव लवणाधिपति सुस्थितदेव से मिलकर गगा महानदी के तट पर आये। वहाँ उन्होंने चारों ओर नाव की खोज की पर नौका कहीं दिखाई नही दी। तब उन्होंने अपने एक हाथ मे अश्व और सारथी सहित रथ को उठाया और दूसरे हाथ से तैरते हुए साढे बासठ योजन विस्तार वाली गगा महानदी को पार करने लगे।

कृष्ण वासुदेव जब गगा नदी के बीचो बीच पहुँचे तो थक गये, उन्हें पसीना आ गया। उन्हे नाव की आवश्यकता महसूस हुई और नाव न होने से बहुत खेद हुआ।

198. Krishna came to the bank of the Ganges after his meeting with the master of the Lavan sea He searched all around for a boat in vain. He then lifted the chariot with the driver in one hand and started swimming with the help of the other This way he commenced the sixty two and a half Yojan long swim. When he reached midway he felt tired He was perspiring profusely He acutely felt the need of a boat and was sorry not to have one.

सूत्र १९९ : तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-'अहो णं पंच पंडवा महाबलवग्गा, जेहिं गंगा महाणदी बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयण च वित्थिन्ना बाहाहिं उत्तिण्णा। इच्छंतएहिं णं पंचहि पंडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए।'

तए णं गंगा देवी कण्हस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं जाव जाणित्ता थाहं वियरइ। तए ण से कण्हे वासुदेवे मुहत्तंतरं समासासेइ, समासासित्ता गंगामहाणदिं बावट्ठिं जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी-अहो णं तुब्भ देवाणुप्पिया ! महाबलवगा, जेहिणं तुब्भेहिं गंगा महाणदी बावट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इच्छंतएहिं तुब्भेहिं पउमनाहे जाव णो पडिसेहिए।

सूत्र १९९ : उस समय वासुदेव के मन मे विचार उठा–"अहो ! पाँचों पाण्डव महान बलवान हैं, उन्होंने इस विशाल पाट वाली गंगा नदी को तैर कर पार कर लिया। ऐसा लगता है कि उन्होने जानबूझ कर राजा पद्मनाभ को पराजित नहीं किया।"

उनकी यह मनोदशा देख गगा देवी ने उन्हें स्थान (आश्रय) दे दिया। कृष्ण ने थोडी देर विश्राम किया और फिर गंगा के विशाल पाट का शेष भाग पार किया। जब वे पाण्डवों के पास पहुँचे तो बोले–"अहो देवानुप्रियो ! तुम लोग महान बलवान हो क्योकि तुमने विशाल पाट वाली गगा महा नदी को तैरकर पार किया है। तब तो तुमने जानबूझ कर ही पद्मनाभ को पराजित नही किया होगा?"

199. At that time Krishna thought, "Oh! The Pandavs are extremely strong, they have crossed the great width of the Ganges swimming It appears that they intentionally did not defeat King Padmanaabh "

Looking at his mental condition the river goddess gave him a place to rest After resting for some time Krishna covered the remaining distance When he approached the Pandavs he said, "Beloved of gods! You are extremely strong because you have crossed the great expanse of the Ganges swimming It appears that you intentionally did not defeat King Padmanaabh "

पाण्डवों का देश निकाला

सूत्र २०० : तए णं पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेवं एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणदी तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो।'

सूत्र २०० : श्रीकृष्ण वसुदेव की बात सुनकर पॉचों पाण्डवो ने स्पष्ट किया–"देवानुप्रिय ! आपसे विदा लेकर हम गंगा तट पर आये और नौका की खोज कर उस पर बैठकर इस पार चले आये। फिर आपके बल की परीक्षा लेने के उद्देश्य से हमने नाव छुपा दी और आपके आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।"

PANDAVS EXILED

200. The Pandavs explained, "Beloved of gods! After we left you we came to the bank of the Ganges and searched for a boat We found one and crossed the river in that boat Then we hid the boat in order to test your strength and waited for you "

सूत्र २०१ : तए णं कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचण्हं पंडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं वयासी-'अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिन्नं वीईवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्गा, दोवई साहत्थिं उवणीया, तया णं तुब्भेहिं मम माहप्प ण विण्णायं, इयाणि जाणिस्सह !' त्ति कट्टु लोहदंड परामुसइ, पंचण्हं पडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रहमद्दणे नाम कोट्टे णिविट्ठे।

सूत्र २०१ · पाण्डवों की यह बात सुनकर कृष्ण वासुदेव अतीव क्रुद्ध हो गये और उनके ललाट पर तीन सल पड गये। वे बोले-"अहो, जब मैने दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार करके पद्मनाभ को क्षत-विक्षत और पराजित किया, अमरकका को ध्वस्त किया और अपने हाथो द्रौपदी को लाकर तुम्हे सौपा तब तुम्हे मेरे महात्म्य का परिचय नहीं मिला और अब तुम मेरा महात्म्य जान लोगे?" यह कहकर उन्होने हाथ मे एक लौहदण्ड लिया और पाण्डवो के रथ को चूर-चूर कर दिया। पाण्डवो को देश निकाले की आज्ञा दे दी और उस स्थान पर रथ-मर्दन नामक कोट (स्थान) की स्थापना की।

201. Krishna got furious at this statement of the Pandavs and three creases appeared on his forehead He said, "How foolish of you! You could not recognize my greatness when I crossed the two hundred thousand Yojan wide Lavan sea, subdued and conquered King Padmanaabh, destroyed Amarkanka city, rescued Draupadi and brought her to you But now you will be able to recognize my greatness " And he took an iron rod and turned the chariots of Pandavs to pulp He exiled the five Pandavs and founded a township at that spot naming it as Rath-mardan (breaking of the chariots)

सूत्र २०२ तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था। तए ण से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं णयरिं अणुपविसइ।

सूत्र २०२ कृष्ण वासुदेव तब अपनी सेना के पडाव में आये और सेना सहित प्रयाण कर द्वारका नगरी आ पहुँचे।

202. Krishna then returned to the place where his army had camped, broke camp and returned to Dwarka

सूत्र २०३ : तए णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-'एवं ताओ ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता।'

तए णं पडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी-'कहं ण पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता?'

तए णं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी-'एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिनियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता तए णं से कण्हे वासुदेवे अम्हे एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहाणदिं उत्तरह जाव चिट्ठह, ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठेमो। तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं, नवरं कण्हस्स चिंता ण बुज्झति, जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ।'

सूत्र २०३ : उधर पाँचो पाण्डव हस्तिनापुर पहुँचे और राजा पाण्डु के पास जा हाथ जोडकर बोले-"हे तात ! कृष्ण ने हमे देश निकाले की आज्ञा दी है।"

राजा पाण्डु ने पूछा-"पुत्रो ! कृष्ण वासुदेव ने तुम्हें किस कारण ऐसी आज्ञा दी?"

तब पाण्डवो ने अमरकका से लौटने, लवण समुद्र पार करने, और गगा महानदी उतरने से लेकर देश निकाले की आज्ञा मिलने तक की सम्पूर्ण घटना का सविस्तार वर्णन किया।

203. The five Pandavs returned to Hastinapur, went to King Pandu and after greetings said, "Father! Krishna Vasudev has exiled us"

King Pandu asked, "Sons! For what reason Krishna has given such order?"

The Pandavs narrated in details all the incidents including departure from Amarkanka city, crossing the sea, crossing the Ganges, and getting the order of exile

सूत्र २०४ : तए णं से पडुराया ते पंच पडवे एव वयासी-'दुट्ठु णं पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पिय करेमाणेहिं।'

सूत्र २०४ : राजा पाण्डु ने पाण्डवो से कहा-"पुत्रो ! तुमने कृष्ण वासदेव को अप्रिय लगने वाला काम करके अच्छा नही किया।"

204. King Pandu commented, "Sons! It is not befitting you to have done something that annoyed Krishna Vasudev"

कुन्ती का कृष्ण के पास जाना

सूत्र २०५ : तए ण पंडू राया कोंति देवि सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स णिवेदेहि-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं देसं वा दिसिं या विदिसिं वा गच्छंतु?'

सूत्र २०५ : और फिर पाण्डु राजा ने कुन्ती देवी को बुलाकर कहा-"देवानुप्रिये ! तुम द्वारका जाओ और वासुदेव कृष्ण से निवदेन करो-" हे देवानुप्रिय ! तुमने पाँचों पाण्डवों को देश निकाले की आज्ञा दी है परन्तु तुम्हारा आधिपत्य तो समस्त दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र पर है। अतः तुम्हीं बताओ कि पाँचों पाण्डव किस देश, किस दिशा या विदिशा में जायें ?"

KUNTI GOES TO KRISHNA

205. After this King Pandu called queen Kunti and said, "Beloved of gods! Proceed to Dwarka and submit before Krishna Vasudev—'Beloved of gods! You have ordered the five Pandavs to leave the country but you are the sovereign of the whole southern Bharat As such, kindly tell to which country or direction the Pandavs should go?'"

सूत्र २०६ : तए णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव-'सदिसंतु ण पिउत्था ! किमागमण पओयणं?

तए ण सा कोंती कण्हं वासुदेवं एव वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढभरहस्स सामी। तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ते पंच पंडवा कयरं देसं वा दिसं वा जाव विदिसिं वा गच्छंतु?

सूत्र २०६ : राजा पाण्डु के कहने पर कुन्ती देवी हाथी पर आरूढ़ होकर द्वारका गईं और कृष्ण वासुदेव के पास पहुँची (विस्तृत विवरण-पूर्व सूत्र १५४, १५५ के अनुसार)। कृष्ण ने पूछा-"बुआ ! कहिये कैसे आना हुआ ?"

कुन्ती ने उत्तर दिया-"हे पुत्र ! तुमने पाण्डवों को देश निकाले की आज्ञा दी है। पर तुम तो समस्त दक्षिणार्ध भारत के स्वामी हो, ऐसे मे तुम्ही बताओ वे कहाँ जाये ?"

206. As directed by King Pandu queen Kunti rode an elephant and went to Krishna Vasudev in Dwarka (details as before) Krishna asked, "Aunt! Please say what brings you to me?"

Kunti replied, "Beloved of gods! You have ordered the five Pandavs to leave the country but you are the sovereign of the whole southern Bharat. As such, kindly tell to which country or direction the Pandavs should go?"

सूत्र २०७ : तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देवि एवं वयासी-'अपूइवयणा णं पिउच्छा! उत्तमपुरिसा-वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी। तं गच्छंतु णं पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं, तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु, ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु' त्ति कट्टु सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ।

सूत्र २०७ : कृष्ण वासुदेव ने कुन्ती से कहा-"बुआ ! वासुदेव, बलदेव व चक्रवर्ती जैसे उत्तम पुरुष आपूर्तिवचन (अपना वचन पूरा करने वाले) होते हैं, उनके वचन न तो मिथ्या होते न वापस

होते। देवानुप्रिये !पाँचों पाण्डव दक्षिण दिशा में समुद्र तट पर जाये और वहाँ पाण्डु-मथुरा नाम की नयी नगरी बसावें और मेरे अदृष्ट सेवक (मेरी आँखो से दूर) होकर रहे।" इस प्रकार समाधान कर कृष्ण ने कुती को सम्मान पूर्वक विदा किया।

207. Krishna replied, "Aunt! The words uttered by great men like Vasudev, Baldev, and Chakravarti never become false nor are taken back. Beloved of gods! Let the five Pandavs go to the southern sea coast and found a new town named Pandu-Mathura They should spend their lives as my subjects beyond the reach of my eyes " After providing this solution Krishna bid farewell to Kunti with due regards

सूत्र २०८ तए ण सा कोती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठं णिवेदेइ। तए णं पडू राया पच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेयालि, तत्थ णं तुब्भे पडुमहुरं णिवेसेह।'

तए ण पंच पंडवा पडुस्स रण्णो जाव तह त्ति पडिसुणेति, पडिसुणित्ता सबल-वाहणा हय-गय हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरि निवेसंति, निवेसित्ता तत्थ ण ते विपुलभोग-समितिसमण्णागया यावि होत्था।

सूत्र २०८ कुती देवी ने द्वारका से लौट कर यह सब वृतान्त राजा पाण्डु को सुनाया। पाण्डु राजा ने अपने पुत्रो को बुलाकर श्रीकृष्ण का आदेश बताते हुए कहा-"पुत्रो !तुम दक्षिणी समुद्र तट पर पाण्डु-मथुरा नगरी बसा कर वहॉ पर रहो।"

पाण्डवों ने "जो आज्ञा" कहकर पाण्डु राजा की आज्ञा स्वीकार की और बल, वाहन, घोडे, हाथी सहित चतुरगिनी सेना आदि साथ ले हस्तिनापुर से निकले। दक्षिण की ओर प्रयाण कर वे समुद्र तट पर पहुँचे और पाण्डु-मथुरा नामक नगरी बसा कर सुखपूर्वक रहने लगे।

208. Queen Kunti returned from Dwarka and informed all this in detail to King Pandu. King Pandu called his sons and informed them about the order of Krishna Vasudev He added, "Sons! Now you should proceed to the southern sea coast, found a new town named Pandu-Mathura, and live there "

"As you say With these words the Pandavs accepted the order of King Pandu and left Hastinapur with goods, vehicles, horses, elephants and army and proceeded south After reaching the southern sea coast they founded a new town and named it Pandu - Mathura. And they resumed their normal happy life

सूत्र २०९ : तए णं सा दोवई देवी अन्नया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था। तए णं दोवई देवी णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव सुरूवं दारगं पयाया सूमालं, कोमलय गयतालुयसमाणं। णिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति–जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए देवीए अत्तए, तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्जं 'पंडुसेणे'।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्जं करेंति पंडुसेण त्ति।

बावत्तरिं कलातो जाव भोग समत्थे। जाते जुवराय जाव विहरति।

सूत्र २०९ : कालान्तर में द्रौपदी देवी गर्भवती हुई और उसने यथासमय सुन्दर सुकुमार और हाथी के तालू जैसे कोमल शरीर वाले पुत्र को जन्म दिया। बारह दिन बीतने पर बालक के माता-पिता ने निर्णय लिया कि यह बालक पाँच पाण्डवों का पुत्र और द्रौपदी का आत्मज है अतः इसका नाम पाण्डुसेन होना चाहिए।

तब उन्होंने समारोह पूर्वक बालक का नाम पाण्डुसेन रख दिया।

पाण्डुसेन क्रमशः बड़ा हुआ। बहत्तर कलाओं का ज्ञाता बना। युवा होने पर उसका पाणिग्रहण हुआ और फिर युवराज बनकर रहने लगा।

209. With passage of time Draupadi conceived and in due course gave birth to a son who was beautiful, delicate, and tender as the palate of an elephant After twelve days of his birth the parents decided that as he was the son of the Pandavs and Draupadi he should be called Pandusen

Accordingly they performed his naming ceremony with great festivities.

As time passed Pandusen grew up and learned the seventy two arts When he came of age he was married and made the heir to the throne.

पाण्डवों की दीक्षा

सूत्र २१० : तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा थेरा समोसढा। परिसा निग्गया। पंडवा निग्गया, धम्मं सोच्चा एवं वयासी–'जं णवरं देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं आपुच्छामो, पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो, तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

सूत्र २१० : काल के उस भाग में वहाँ धर्मघोष स्थविर पधारे। परिषद निकली और पाँचों पाण्डव भी उपदेश सुनने गये। बाद में उन्होंने स्थविर मुनि से कहा–"देवानुप्रिय ! हमें संसार से विरक्ति हो गई है। हम द्रौपदी देवी से आज्ञा लेकर तथा कुमार पाण्डुसेन को राजसिंहासन पर स्थापित करने के पश्चात् आपके निकट मुण्डित हो दीक्षा ग्रहण करेंगे।"

स्थविर धर्मघोष ने कहा–"देवानुप्रियो ! जिसमें तुम्हें सुख मिले वह करो।"

DIKSHA OF PANDAVS

210. During that period of time Sthavir Dharmaghosh arrived there. A delegation of citizens including the Pandavs went to his discourse. After the discourse the Pandavs said to the great ascetic, "Beloved of gods! We are filled with a feeling of detachment from the mundane life We shall seek approval of queen Draupadi and crown prince Pandusen, and after that come to you to accept Diksha after shaving our heads "

Sthavir Dharmaghosh said, "Beloved of gods! Do as you please "

सूत्र २११ : तए णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो, तुमं देवाणुप्पिये ! किं करेसि?'

तए णं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-'जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा पव्वयह, ममं के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ ! अहं पि य ण संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि।'

सूत्र २११ पाँचो पाण्डव अपने महल मे लौटे और द्रौपदी देवी को बुलाकर कहा-"देवानुप्रिये ! हमने स्थविर मुनि का उपदेश सुना है और ससार त्याग कर दीक्षा लेने का निर्णय किया है। तुम्हें क्या करना है?"

द्रौपदी ने उत्तर दिया-"देवानुप्रियो !जब आप ससार भय से उद्विग्न हो दीक्षा ले लेते है तो मेरा यहाँ अन्य क्या अवलम्बन रह जायेगा? ऐसी स्थिति मे ससार के भय से उद्विग्न मैं भी आपके साथ ही दीक्षा अंगीकार करूँगी।"

211. The Pandavs returned to their palace, called Draupadi and said, "Beloved of gods! We have listened to the discourse of the Sthavir ascetic and have decided to renounce the world to get initiated What do you want to do?"

Draupadi replied, "Beloved of gods! When you are disturbed by the fears of the mundane world and want to get initiated I will be left with no support and purpose. In this situation I will also accept Diksha as I am also disturbed by the fears of the mundane world "

सूत्र २१२ . तए णं पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाव रज्ज पसासेमाण विहरइ। तए णं ते पंच पंडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइं पंडुसेण रायाणं आपुच्छंति।

तए णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं करेह, जाव पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह।' जाव पच्चोरुहंति। जेणेव थेरा तेणेव आलित्ते णं जाव समणा जाया। चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति,

अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति।

सूत्र २१२ : तब पाण्डवों ने कुमार पाण्डुसेन का राज्याभिषेक कर दिया। पाण्डुसेन कुशलतापूर्वक राज्य संचालन करने लगे। कालान्तर में पाँचों पाण्डवों तथा द्रौपदी ने पाण्डुसेन राजा से दीक्षा की अनुमति माँगी।

पाण्डुसेन ने अपने सेवको को बुलाया और कहा–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही दीक्षा-महोत्सव की तैयारी करो और हजार पुरुष उठाये ऐसी विशाल पालकियाँ तैयार कराओ।" सेवकों ने आज्ञा का पालन किया और पाण्डवों ने द्रौपदी सहित समारोह पूर्वक यथाविधि धर्मघोष स्थविर के पास जाकर दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के पश्चात् उन्होंने चौदह पूर्वों का अध्ययन किया और बेला-तेला-चोला यावत् अर्ध-मासखमण आदि कठिन तपस्या करते हुए आत्मोन्नति की ओर प्रयत्नशील हो साधु जीवन बिताने लगे।

212. The Pandavs crowned their son prince Pandusen and he took the reigns of the state in his able hands Later the Pandavs and Draupadi sought permission for Diksha from king Pandusen

Pandusen called his servants and said, "Beloved of gods! Make arrangements for the Diksha ceremony and get Purisasahassa palanquins ready" The servants did as told and the five Pandavs with Draupadi ceremoniously went to the camp of Dharmaghosh Sthavir and there the Pandavs got initiated With passage of time they acquired the knowledge of the fourteen sublime canons and started doing various penances including two day, three day, four day, and a fortnight long fasts for their spiritual advancement

सूत्र २१३ : तए ण सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ, जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयति। इक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं जाव विहरइ।

सूत्र २१३ : तब द्रौपदी देवी भी पालकी से उतरी और उसने भी दीक्षा ले ली। वह सुव्रता आर्या की शिष्या के रूप मे दी गई। उसने भी ग्यारह अंगो का अध्ययन किया और बेला-तेला आदि अनेक प्रकार का कठिन तप करती हुई संयम जीवन बिताने लगी।

213. After this Draupadi also got down from the palanquin and she also got initiated She became the disciple of Suvrata Arya She also studied the eleven canons and commenced the harsh and disciplined ascetic life.

सूत्र २१४ : तए णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पंडुमहुराओ णयरीओ सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति।

सूत्र २१४ : कालान्तर में वे स्थविर मुनि पाण्डु-मथुरा के सहस्राम्रवन उद्यान से निकले और बाहर जनपदों में विचरने लगे।

214. Later the Sthavır ascetıc left Sahasramravan and Pandu-Mathura and resumed his itınerant life

यात्रा व तपस्या

सूत्र २१५ : तेणं कालेणं तेणं समएणं अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तए णं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ। तए णं से जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–

'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं जाव विहरइ, तं सेयं खलु अम्हं थेरे भगवंते आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए।' अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति, नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

सूत्र २१५ : काल के उस भाग में अरिहत अरिष्टनेमि सुराष्ट्र जनपद मे पधारे। वे तप और संयम द्वारा आत्मा को भावित करते हुए सुराष्ट्र जनपद मे विचरने लगे। वहाँ पर अनेक लोग परस्पर चर्चा कर रहे थे कि तीर्थंकर अरिष्टनेमि सुराष्ट्र (सौराष्ट्र) जनपद मे विचर रहे हैं।

युधिष्ठिर आदि पाँचो अनगारों ने भी जन-मुख से यह समाचार सुने और परस्पर विमर्श करने लगे–"देवानुप्रियो !अरिहंत अरिष्टनेमि अनुक्रम से विचरते हुए सुराष्ट्र जनपद में पधारे हैं। अत स्थविर गुरु से अनुमति लेकर उन्हें वन्दन करने जाना हमारे लिए अच्छा होगा।" सब अनगार इस बात पर सहमत हो स्थविर भगवंत के पास गये और यथाविधि वन्दना करके पूछा–"भगवन्त ! आपकी अनुमति लेकर हम अरिहंत अरिष्टनेमि को वन्दन करने जाना चाहते हैं।"

स्थविर भगवन्त ने कहा–"देवानुप्रियो ! जिसमे तुम्हें सुख प्राप्त हो वही करो।

TRAVEL AND PENANCE

215. Durıng that period of tıme Arıhant Arıshtanemı came to Surashtra area He started movıng around ın Surashtra doıng hıs spırıtual practices of penance and discıpline. People were telling each other that Arıhant Arıshtanemı is wanderıng ın the Surashtra area. The five ascetics including

Yudhisthir also heard this news and deliberated, "Beloved of gods! Wandering from one place to another Arihant Arishtanemi has come to the Surashtra area. So we should take permission from our Sthavir guru and go to him to pay our homage." They all agreed and went to the Sthavir ascetic. After conveying due obeisance they asked, "Bhante! With your permission we want to go to Arihant Arishtanemi to pay our homage."

Sthavir Bhagavant replied, "Beloved of gods! Do as you please."

सूत्र २१६ : तए णं ते जहुट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवंते वंदंति, णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता मासंमासेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति।

सूत्र २१६ : युधिष्ठिर आदि पाँचों मुनियों ने स्थविर भगवन्त से आज्ञा प्राप्त कर उन्हें वन्दना नमस्कार की, और वहाँ से प्रस्थान किया। निरन्तर मासखमण तप करते हुए, एक गाँव से दूसरे गाँव विहार करते हुए हस्तीकल्प नगर के बाहर सहस्राम्रवन उद्यान में पहुँचे।

216. The five ascetics including Yudhishthir formally bowed before him after getting permission and commenced their journey. Doing a chain of one month long fasts they crossed one village and then other and reached at the Sahasramravan garden outside Hastikalp city

सूत्र २१७ : तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, बीयाए एव जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छंति, जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जिंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे सव्वदुक्खप्पहीणे।'

सूत्र २१७ : वहाँ युधिष्ठिर के अतिरिक्त शेष चारों अनगारों ने मासखमण के पारणे के दिन प्रथम प्रहर में स्वाध्याय तथा दूसरे प्रहर में ध्यान किया। (चर्या का शेष वर्णन गौतम स्वामी के समान)। फिर वे युधिष्ठिर अनगार से अनुमति ले भिक्षा हेतु निकले। चलते-चलते उन्होंने अनेक लोगों को चर्चा करते सुना-"देवानुप्रियो ! तीर्थंकर अरिष्टनेमि उज्जयंत पर्वत गिरनार पर्वत के शिखर पर एक मास का निर्जल उपवास करके पाँच सौ छत्तीस श्रमणों के साथ सिद्ध, बुद्ध, मुक्त, अन्तकृत् होकर समस्त दुःखों से रहित हो गये हैं।"

217. There, on the day of the breakfast, leaving aside Yudhishthir the other four ascetics spent the first quarter of the day doing their studies and the second quarter doing meditation (detailed description of the daily routine same as in case of Gautam Swami). After this they took permission from

Yudhisthir and went out to collect alms. While they were walking they heard many people talking—"Beloved of gods! Tirthankar Arishtanemi along with five hundred and thirty six ascetics went to the peak of the Ujjayant mountain (Girnar) and after a month long fast became Siddh, enlightened, and liberated from the cycles of rebirth ending all sorrows."

सूत्र २१८ : तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणे सहसंबवणे उज्जाणे, जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति, पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति, आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदसेंति, पडिदंसित्ता एवं वयासी–

सूत्र २१८ . यह समाचार सुन चारो मुनि हस्तीकल्प नगर से बाहर निकले और सहस्राम्रवन में युधिष्ठिर अनगार के पास आये। वहाँ उन्होने आहार-पानी की प्रत्युपेक्षणा की, गमनागमन का प्रतिक्रमण किया, एषणा-अनेषणा की आलोचना की और आहार-पानी युधिष्ठिर अनगार को दिखला कर बोले–

218. Getting this news, the four ascetics came out of Hastikalp city and reached Yudhisthir in the Sahasramravan garden They inspected the food they had brought, did the Pratikraman for movement, reviewed proper and improper actions, showed the food to Yudhishthir and said —

सिद्धपद-प्राप्ति

सूत्र २१९ 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंज्जं पव्वयं सणियं सणियं दुरुहित्तए, संलेहणा-झूसणा-झोसियाणं काल अणवकंखमाणाणं विहरित्तए, त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणित्ता त पुव्वगहिय भत्तपाणं एगते परिट्ठवंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज्जे पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेत्तुंज्जं पव्वयं दुरुहंति, दुरुहित्ता जाव कालं अणवकखमाणा विहरंति।

सूत्र २१९ : "हे देवानुप्रिय ! भिक्षा के लिए नगर में जाने पर हमने सुना कि तीर्थंकर अरिष्टनेमि कालधर्म को प्राप्त हुए हैं। अत अच्छा यह होगा कि भगवान के निर्वाण की सूचना सुनने से पूर्व ग्रहण किये हुए इस आहार पानी को त्याग कर धीमे-धीमे शत्रुंजय पर्वत पर चढ़ें और सलेखना तथा कर्मों का शोषण व क्षीण करने की क्रियाएँ करते हुए मृत्यु की आकाक्षा रहित हो ध्यान मग्न हो जाये।" सभी अनगार इस बात पर सहमत हो गये और तब लाई हुई आहार सामग्री को यथाविधि यथास्थान परठकर (डालकर) शत्रुंजय पर्वत की ओर प्रस्थान किया। वहाँ जाकर अपने निश्चयानुसार समय व्यतीत करने लगे।

GETTING LIBERATED

219. "Beloved of gods! While we were moving around in the city to collect alms we heard that Tirthankar Arishtanemi has breathed his last. So it would be good if we abandon this food that was collected before getting the news of the Nirvana of the Tirthankar, slowly climb the Shatrunjaya mountain, take the ultimate vow, indulge in the activities that weaken and eliminate karmas, and go into meditation without the desire of death." They all agreed and disposed of the food they had collected at the proper place and left for Shatrunjaya mountain After arriving there they commenced the practices as they had decided

सूत्र २२० : तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता दो मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे जाव तमट्ठं आराहेंति। आराहित्ता अणंते जाव केवलवरनाणदंसण समुप्पाडेत्ता जाव सिद्धा।

सूत्र २२० युधिष्ठिर आदि पाँचों अनगारो ने सामायिक से आरम्भ कर चौदह पूर्वों का अभ्यास करते हुए अनेक वर्षों तक श्रमण जीवन का पालन किया था, और अन्त में दो मास की संलेखना से आत्मा को शुद्ध किया। अतत. जिस उद्देश्य से नग्नत्व तथा मुडित होना अंगीकार किया जाता है वह उद्देश्य प्राप्त किया। उन्हें श्रेष्ठ केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त हुए और वे सिद्ध हो गये।

220. The five ascetics including Yudhishthir had studied the fourteen sublime canons and led a long ascetic life In the end they took the ultimate vow of two months' duration and purified their souls At last they achieved the goal for which they had shaved their heads and got initiated They attained the supreme Keval Jnana and Keval Darshan and became Siddhs (the pure and liberated state of soul)

सूत्र २२१ : तए णं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस्स अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए आलोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववन्ना।

सूत्र २२१ : उधर दीक्षा लेने के पश्चात् आर्या द्रौपदी ने आर्या सुव्रता के पास सामायिक से लेकर ग्यारह अंगों का अध्ययन करते हुए अनेक वर्षों तक श्रमण जीवन का पालन किया। अन्त में एक मास की संलेखना, आलोचना और प्रतिक्रमण करके यथासमय देह त्याग किया और ब्रह्मलोक में जन्म लिया।

221. In the mean time, after getting initiated Arya Draupadi studied the eleven canons starting with the Samayik and spent a long and disciplined

life as an ascetic In the end she took an ultimate vow of one month duration, reviewed her life and did the ultimate Pratikraman. In due course she breathed her last and reincarnated as a goddess in the Brahmalok.

सूत्र २२२ : तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं दोवइस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता।

सूत्र २२२ . ब्रह्मलोक नाम के पाँचवें देवलोक में अनेक देवो की आयु दस सागरोपम की बताई गई है। द्रौपदी देव की आयु भी दस सागरोपम की बताई है।

222. In Brhamlok, the fifth dimension of gods, the life-span of many gods is said to be ten Sagaropam The life span of god Draupadi is also said to be ten Sagaropam

सूत्र २२३ : से णं भन्ते ! दुवए देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे जाव अंतं काहिइ?

सूत्र २२३ : गौतम स्वामी ने जिज्ञासा की–'भन्ते ! वह द्रुपद देव वहाँ से च्यवन कर कहाँ जन्म लेगा?'' भगवान ने उत्तर दिया–ब्रह्मलोक की आयु, स्थिति और भव का क्षय होने पर वह महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर कर्मों का अन्त करेगा।''

223. Gautam Swami asked, "Bhante! Where will this Drupad god descend after completing this life span?" Mahavir replied, "After completing the life-span, state, and form as a god in the Brahmalok this god will be born in the Mahavideh area and end all karmas "

सूत्र २२४ : एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र २२४ : हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने सोलहवे ज्ञात अध्ययन का यह अर्थ बताया है। मैंने जैसा सुना वैसा ही कहा है।''

224. Jambu! This is the text and the meaning of the sixteenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm.

॥ सोलसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ सोलहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

|| END OF THE SIXTEENTH CHAPTER ||

उपसंहार

ज्ञाता धर्मकथासूत्र की इस सोलहवीं विस्तृत कथा में अनेक चरित्र हैं तथा अनेक घटनाएँ। इन सब के माध्यम से प्रतिष्ठा, वासना, भय, आसक्ति, कौतुहल आदि भावनाओं से प्रेरित व्यक्ति सन्मार्ग से कैसे भटक जाता है इसका रोचक चित्रण है। विवेक नष्ट होने पर कैसे कष्ट उठाने पड़ते हैं यह वर्णन कर सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया गया है।

CONCLUSION

This sixteenth story of Jnata Dharma Katha is very long and has numerous characters and incidents With the help of all these the story explains how a man drifts away from the spiritual path under the influence of a variety of feelings and attitudes, including conceit, lust, fear, fondness, and curiosity How much one suffers when he takes leave of his rationality has been detailed in an interesting style in order to inspire one to accept the right path

उपनय गाथा

सुबहू वि तव-किलेसो, नियाणदोसेण दूसिओ संतो।
न सिवाय दोवतीए, जह किल सुकुमालियाजम्मे॥१॥
अमणुन्नमभत्तीए, पत्ते दाणं भवे अणत्थाय।
जह कडुयतुंबदाणं, नागसिरिभवंमि दोवईए॥२॥

तपश्चर्या का कोई कितना ही कष्ट क्यो न सहन करे किन्तु जब वह निदान के दोष से दूषित हो जाती है तो मोक्षप्रद नही होती, जैसे सुकुमालिका के भव में द्रौपदी के जीव का तपश्चरण मोक्षफलदायक नहीं हुआ॥१॥

अथवा इस अध्ययन का उपनय इस प्रकार समझना चाहिए–सुपात्र को भी दिया गया आहार अगर अमनोज्ञ हो और दुर्भावपूर्वक दिया गया हो तो अनर्थ का कारण होता है, जैसे नागश्री ब्राह्मणी के भव मे द्रौपदी के जीव द्वारा दिया कटुक तुम्बे का दान॥२॥

THE MESSAGE

No matter how much pain one has to tolerate while doing penance, if it becomes contaminated by ambition it does not lead to Moksha, this is the same as the penance done by the being that became Draupadi during her birth as Sukumalika (1)

Another message is—The donation of food even to a deserving recepient bears evil fruits if it is contaminated or is given with bad intentions This is the same as the donation of bitter gourd by the being that became Draupadi during her birth as Nagshri Brahmani (2)

परिशिष्ट

कांपिल्य (कपिला)–तेरहवे तीर्थंकर विमलनाथ का जन्म स्थान। तीर्थकल्प के अनुसार यह पाचाल जनपद मे गगा के किनारे बताया गया है। अठारहवी शताब्दी के जैन यात्रियो के वर्णन के अनुसार यह नगरी अयोध्या के पश्चिम दिशा मे है। इन वर्णनोके अनुसार फर्रुखाबाद जिले के कायमगज से उत्तर-पश्चिम मे छह मील दूर यह स्थान लगता है। तीर्थकल्प में कांपिल्य के निकट पिटियारी ग्राम का उल्लेख है। यह वर्तमान का पटियारी ग्राम लगता है जो कपिला से १८-१९ मील उत्तर-पश्चिम मे है।

पाडु मथुरा–पुराने समय मे मदुरा मे पाण्ड्य वंश का राज्य था। इससे यह अनुमान होता है कि प्राचीन पाडु-मथुरा आज की मदुरा है। इस कथा मे भी कृष्ण द्वारा पाण्डवों को दक्षिण समुद्र तट पर भेजने की बात कही है। इससे भी यह अनुमान पुष्ट होता है।

हत्थकप्प–इस कथा के वर्णन के अनुसार यह स्थान शत्रुजय के आसपास होने का अनुमान लगता है। वर्तमान मे काठियावाड मे तलाजा के निकट हाथप नाम का गॉव है। यह शत्रुजय से दूर नही है। यही हथ्थकप्प रहा होगा। गुप्तवश के धरसेन प्रथम के वल्लभी दानपत्र मे हस्तवप्र क्षेत्र का उल्लेख है। विद्वानो के मत मे यह हथ्थकप्प ही है। सत्रहवी शताब्दी के गद्य पाडवचरित्र मे देवविजय जी के अनुसार हस्तिकल्प से रैवतक की दूरी बारह योजन बताई है। यह भी इसी अनुमान की पुष्टि करता है।

उज्जयंत पर्वत–रैवतक पर्वत या गिरनार।

हस्तिनापुर–पौराणिक दृष्टि से यह नगर भी वाराणसी तथा अयोध्या की भॉति एक महत्वपूर्ण नगर रहा है। यह कुरुजांगल जनपद की राजधानी थी। महाभारत के अनुसार सुहोत्र के पुत्र राजा हस्ती ने इसे बसाया था। विविध तीर्थकल्प के अनुसार ऋषभदेव के पौत्र तथा कुरु के पुत्र हस्ती ने यह नगर बसाया था। वसुदेवहिण्डी में इसका नाम ब्रह्मस्थली लिखा है। वर्तमान में मेरठ से २२ मील उत्तर-पश्चिम तथा दिल्ली से छप्पन मील दक्षिण-पूर्व में यह नगर विद्यमान है।

निदान के सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन अन्तकृद्दशा महिमा में तथा दशाश्रुतस्कध सूत्र में देखें।

APPENDIX

Kampilya (Kampila)—The birth place of Vimalnath, the thirteenth Tirthankar According to Tirthakalp it is situated on the banks of the Ganges in the Panchal area According to the eighteenth century Jain pilgrims, this city is to the east of Ayodhya Going by these descriptions this place is somewhere six miles northeast of Kayamganj in district Farrukhabad In Tirthakalp there is mention of village Pitiyari near Kampilya This appears to be the modern Patiyari village lying about eighteen miles north east of the site now accepted as Kampila Recently a temple and research complex have been constructed there

Pandu-Mathura—In the past the Pandya dynasty ruled over Madura This gives rise to the surmise that the ancient Pandu-Mathura is modern Madura According to this story the Pandavs were sent to the southern sea coast by Krishna This also supports this theory

Hatthakapp—According to the details mentioned in this story this place appears to be somewhere near the Shatrunjaya hills There is a village named Hathap near Talaja in modern Kathiyawad It is not far from Shatrunjaya, so this could be the ancient Hatthakapp In the Vallabhi inscription of Dhaarsen first of the Gupta dynasty there is mention of Hast and Prakshep According to scholars this is the same Hatthakapp In the seventeenth century prose work *Pandav Charitra* by Devavijaya it is mentioned that the distance between Hastikalp and Raivatak hill was 48 miles This also confirms the theory

Ujjayant hill—Raivatak hill or Girnar hill

Hastinapur—In Indian mythology this town also finds pride of a place like Varanasi and Ayodhya According to the *Mahabharat* it was founded by king Hast, the son of Suhotra According to *Vividh Tirthakalp* it was founded by King Hasti, the son of Kuru and grandson of Rishabhdev In *Vasudevhindi* it is mentioned as Brahmasthali The city still exists and is 22 miles northwest of Meruth and 56 miles south east of Delhi

Nidan—Desire or ambition Details about this are available in *Antakriddasha Mahima* and *Dashashrutaskandh Sutra*

■■

सत्रहवाँ अध्ययन : आकीर्ण : आमुख

शीर्षक–आइण्णे–आकीर्ण–एक उत्तम जाति विशेष के अश्व। इन्द्रिय-सुखों के आकषर्णों के विस्तृत जाल हर कदम पर साधना पथ पर बिछे होते हैं। तनिक चूके कि जाल में फँसे। अश्वों के पकड़े जाने के उदाहरण से विषयों की आसक्ति अनासक्ति के परिणाम को स्पष्ट किया गया है।

कथासार–हस्तिशीर्ष नगर के कतिपय व्यापारी व्यापार हेतु समुद्र यात्रा पर निकले। समुद्री तूफान मे फँस कर वे एक अनजाने कालिक द्वीप मे जा पहुँचे। वहाँ उन्होने अनेक खनिज पदार्थ तथा उत्तम जाति के घोड़ो के झुंड देखे। उन्होने खनिजों से अपना जहाज भरा और हस्तिशीर्ष लौट आए।

वे राजा को भेंट देने गये तो राजा ने पूछा कि तुमने कोई आश्चर्यजनक वस्तुएँ भी कभी देखीं? उन्होने राजा से कहा कि कालिक द्वीप के सुन्दर अश्व सचमुच ही आश्चर्यजनक है। राजा ने अपने सेवको को व्यापारियो के साथ कर दिया और कहा कि घोडे पकड कर लावे।

राजा के सेवक घोड़ों को लुभाने वाली अनेक वस्तुएँ साथ लेकर द्वीप पर आए और अपने जाल बिछा दिये। घोड़ों का समूह वहाँ आया तो अनेक घोड़े उन विभिन्न वस्तुओं से आकर्षित हुए और जाल में फँस गये। अन्य अनेक अश्व दूर से ही बिदक कर अपने चारागाह की ओर लौट गए।

सेवक घोड़ो को जहाज में भरकर ले आए और राजा के पास पहुँचा दिये। राजा ने अश्व-मर्दको को बुलाकर घोड़ो को कार्य योग्य बनाने का प्रशिक्षण दिलाया। इस प्रकार जो घोडे आकर्षण में फँस गये थे वे बंदी बनाए गये और अनेक प्रकार की पीडा सहते हुए जीवन बिताने लगे। जो आकर्षण में नहीं फँसे वे स्वच्छद सुखमय जीवन बिताते रहे।

SEVENTEENTH CHAPTER : THE HORSES : INTRODUCTION

Title—Ainne—Akirna—horses of an excellent breed The enticing and elaborate snares of sensual pleasures litter the path of spiritual endeavour One wrong step and you are caught With an appropriate example of ensnaring the horses, the outcome of both fondness for and detachment from carnal pleasures has been explained in this story

Gist of the story—Some merchants from Hastishirsh city set out on a sea voyage Caught in a storm they arrived at an unknown island, the Kalik Island There they saw numerous precious minerals and herds of wild horses They filled the coffers of their ship with these minerals and returned to Hastishirsh

When they visited the king with gifts he asked them if they had come across any astonishing things during their voyage They informed the king that the graceful horses of the Kalik island were truly astonishing The king ordered his servants to go with the merchants and bring some horses

The king's servants took along a variety of alluring things and devices to attract the horses and came to the island They fixed a few snares The herd of horses arrived there and many of them were attracted and trapped Many others were fearful of the strange contraptions and galloped away to their regular grazing pastures

The servants transferred the trapped horses to the ship and delivered them to the king The king called horse trainers to break and train the horses Thus the horses that were trapped led a painful life Those who shunned the allurements continued to led a free and happy life

■■

सत्तरसमं अज्झयणं : आइण्णे
सत्रहवाँ अध्ययन : आकीर्ण
SEVENTEENTH CHAPTER : AKIRNA - THE HORSES

सूत्र १ : 'जइ णं भंते ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तरसमस्स णं णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?'

सूत्र १ : जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया-"भन्ते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने सोलहवें ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो सत्रहवें ज्ञात अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the seventeenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ 'एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेणं समएण हत्थिसीसे णामं नयरे होत्था, वण्णओ। तत्थ ण कणगकेऊ णामं राया होत्था, वण्णओ।

सूत्र २ सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया-"जम्बू ! काल के उस भाग मे हस्तिशीर्ष नाम का नगर था। उस नगर में कनककेतु नाम का राजा था। (विस्तृत वर्णन औपपातिकसूत्र के नगर वर्णन अनुसार)

2. Sudharma Swami narrated —Jambu! During that period of time there was a city named Hastisheersh The name of the ruler of this city was King Kanak-ketu (details as in Aupapatik Sutra)

सूत्र ३ . तत्थ णं हत्थिसीसे णयरे बहवे संजुत्ता-णावा-वाणियगा परिवसंति, अड्डा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था। तए णं तेसि सजत्ता-णावा-वाणियगाणं अन्नया कयाइं एगयो सहियाणं जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्द अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था।

सूत्र ३ हस्तिशीर्ष नगर में अनेक सायात्रिक (साथ-साथ यात्रा करने वाले) नौकावणिक् रहते थे। वे धनाढ्य और समर्थ थे। एक बार वे व्यापारी परस्पर मिले और समुद्रयात्रा पर जाने का निर्णय किया। यथासमय शुभ मुहुर्त मे (यथाविधि) यात्रारम्भ कर वे सायात्रिक नौकावणिक् लवणसमुद्र में सैकडो योजन पहुँच गये। (विस्तृत विवरण अर्हन्नक की कथा के समान-अ ८)

3. In Hastisheersh city there lived many wealthy and reputed Sanyantriks (merchants who went to other countries for trade) and Nauvaniks (merchants who carried their merchandise in boats) One day all these merchants met together and decided to go on a sea voyage. At an auspicious

moment they started their journey and went hundreds of Yojans ahead on the Lavan sea within a few days. (details as in ch. 8, story of Arhannak)

सूत्र ४ · तए णं तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइं जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुत्थिए। तए णं सा णावा तेणं कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी आघोलिज्जमाणी संचालिज्जमाणी संचालिज्जमाणी सखोहिज्जमाणी संखोहिज्जमाणी तत्थेव परिभमइ।

तए णं से णिज्जामए णट्ठमईए णट्ठसुईए णट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था। ण जाणइ कयरं देस वा दिसिं वा विदिसं वा पोयवहणे अवहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ।

सूत्र ४ : वहाँ लवण समुद्र मे उन्हे अनेकों उत्पातों का सामना करना पड़ा (विस्तृत विवरण माकन्दी पुत्र की कथा के समान–अ . ९)। उसी समय समुद्री तूफान भी आरम्भ हो गया और उनकी नौका वायु के थपेड़ो से बारम्बार काँपने लगी, डोलने लगी, ऊपर-नीचे गिरने लगी और एक स्थान पर ही चक्कर काटने लगी।

ऐसी विकट स्थिति में माँझी की बुद्धि मारी गई व अनुभव लुप्त हो गया और वह सज्ञाहीन जैसा हो गया। दिशा का ज्ञान भी नहीं रहा। और यह भान भी नहीं रहा कि नाव किस प्रदेश में है अथवा किस दिशा या विदिशा मे जा रही है। वह भग्न सकल्प हो चिन्ता मग्न हो गया।

4. In the sea they had to face many difficulties They were caught in a storm and the ship started trembling, drifting, rising and falling, and whirling under the force of the gale (details as in ch 9, the story of Makandi)

In this dangerous situation the captain of the ship lost his wit and poise and was bewildered He lost all sense of direction and thus was unaware of the position and the direction of movement of the ship He became disoriented and started brooding

उत्पातों से मुक्ति

सूत्र ५ : तए णं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य सजत्ता णावा वाणिया य जेणेव से निज्जामए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी–'किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि।'

तए णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियगा य एवं वयासी–'एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! णट्ठमईए जाव अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि।'

सूत्र ५ : यह देख नाव में रहे अनेक कुक्षिधार (चप्पू चलाने वाले), कर्णधार, गब्भिल्लक (सामान्य श्रमिक) तथा वणिक यात्री निर्यामक–माँझी के पास आये और पूछा–"देवानुप्रिय ! तुम भग्न संकल्प (निराश) हो चिबुक हथेली पर टिकाये चिन्ता क्यों कर रहे हो ?"

माँझी ने उन्हें उत्तर दिया–"देवानुप्रियो ! तूफान के कारण मेरी नियंत्रण बुद्धि नष्ट हो गई है और मुझे यह भान नहीं हो रहा है कि नाव किस दिशा में और कहाँ जा रही है। इसी कारण मैं भग्न संकल्प हो चिन्तित हो गया हूँ।"

FREEDOM FROM TROUBLES

5. Seeing all this, the passengers and the crew including many rowers, navigators, labourers, and the traders approached the captain and asked, "Beloved of gods! What ails you? Why have you lost your poise and are worrying with your chin in your palm?"

The captain replied, "Beloved of gods! Due to this storm I have lost my capacity to control the ship and I am unaware of the position and the direction of movement of the ship. That is the reason I have lost my poise and become anxious."

सूत्र ६ : तए णं ते कण्णधारा तस्स णिज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ण्हाया कयबलिकम्मा करयल-परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु बहूणं इंदाणं य खंदाण य जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा उवायमाणा चिट्ठंति।

सूत्र ६ : माँझी की यह बात सुन समझकर नाव के सभी यात्री व कर्मचारी भयभीत, त्रस्त व उद्विग्न हो गये। उन्होने स्नान, बलिकर्म आदि किया और हाथ जोड कर इन्द्र, स्कन्द आदि अपने-अपने इष्ट देवो को याद करने लगे, उनकी मनौती मनाने लगे। (विस्तार अर्हन्नक की कथा, के अध्ययन ८ के अनुसार)

6. Hearing this from the captain all the passengers and the crew became worried, fearful, and panicky They cleansed themselves by bathing and other rituals and started remembering, and calling for help to their deities including Indra and Skand (details as in ch 8 story of Arhannak)

सूत्र ७ : तए णं से णिज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमईए, लद्धसुईए, लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था। तए णं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियगा य एवं वयासी–'एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए जाए। अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवंतेणं संवूढा, एस णं कालियदीवे आलोक्कइ।

सूत्र ७ : कुछ समय बाद उस माँझी की बुद्धि, अनुभव, सज्ञा लौट आये और उसकी मूढता समाप्त हो गई। उसने अपने सहकर्मियो तथा यात्रियों से कहा–देवानुप्रियो ! मेरी मति स्वस्थ हो गई है और अब मै दिग्भ्रांत नहीं रहा। हम लोग कालिक द्वीप के निकट आ पहुँचे हैं। देखिये, वह कालिक द्वीप दिखाई पड़ रहा है।"

7. After some tıme the captaın regaıned hıs wit, poıse, memory and sense of dırectıon and came out of hıs state of numbness. He told to his crew and passengers, "Beloved of gods! I have regaıned my senses and now I am not lost. We have arrıved near Kalık ısland Look there! the land you see ahead ıs Kalık island "

सूत्र ८ : तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ताणावावाणियगा य तस्स निज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म हट्ठ-तुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति।

सूत्र ८ : माँझी की यह बात सुन नाव के सभी कर्मचारी व यात्री प्रसन्न और सतुष्ट हुए। दक्षिणी पवन की सहायता से वे कालिक द्वीप के तट पर आ पहुँचे और वहाँ लंगर डाल छोटी-छोटी नावो मे बैठ द्वीप पर उतरे।

8. Hearing thıs from the captaın the passengers and the crew on board became happy and reassured With the help of southern wınd the shıp reached the shore of Kalık ısland and they landed on the beach wıth the help of small boats

खनिज भण्डार और अश्व

सूत्र ९ . तत्थ ण बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य बहवे तत्थ आसे पासति। किं ते? हरि-रेणु-सोणिसुत्तगा आईण्णवेढो।

तए ण ते आसा ते वाणियए पासति, पासित्ता तेसिं गध अग्घायति, अग्घाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमति, ते णं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेण विहरंति।

सूत्र ९ कालिक द्वीप मे उन्होने चॉदी, सोना, रत्नो तथा हीरे की अनेक खानें देखी तथा अनेक अश्व देखे। वे नाना रग के अश्व उत्तम जाति के थे। (जैसे काले, नीले, श्वेत व कपिल वर्ण के अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट-चपल दौडने मे तेज देखने मे सुन्दर आदि) श्रेष्ठ जाति के अश्वों के समान उनका वर्णन समझना चाहिए।

उन अश्वों ने भी वणिको को देखा और उनकी गध सूँघी। अश्व भयभीत, त्रस्त और उद्विग्न हो कई योजन दूर भाग गये। वहाँ उन्हे विशाल गोचर भूमि दिखाई दी और वे घास-पानी मिलने से निर्भय और निरुद्वेग हो सुखपूर्वक समय बिताने लगे।

MINERAL WEALTH AND HORSES

9. On Kalık ısland they saw many deposıts of sılver, gold, dıamonds, and gems and also herds of horses. These horses were of excellent breed and were

in numerous colours (black, blue, white, yellow; they were healthy, agile, beautiful, etc. according to the description of good breeds of horses in the commentaries).

The horses also saw and smelled these merchants They became afraid and disturbed, and galloped many Yojans away in panic There they saw pasture land and water and resumed their normal undisturbed and carefree activities

सूत्र १० : तए णं ते संजत्ताणावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी–'किण्हं अम्हे देवाणुप्पिया ! आसेहिं? इमे णं बहवे हिरण्णागरा य, सुवण्णागरा य, रयणागरा य, वइरागरा य, तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य, सुवण्णस्स य, रयणस्स य, वइरस्स य पोयवहण भरित्तए' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता हिरण्णस्स य, सुवण्णस्स य, रयणस्स य, वइरस्स य, तणस्स य, अण्णस्स य, कट्ठस्स य, पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति, भरित्ता पयक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयवहणपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबित्ता सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तं हिरण्ण जाव वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ सचारेंति, संचारित्ता सगडीसागड सजोइंति, संजोइत्ता जेणेव हत्थिसीसए नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थणिवेस करेति करित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता महत्थं जाव पाहुड गेण्हंति गेण्हित्ता हत्थिसीसं नयरं अणुपविसंति, अणुपविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जाव उवणेंति।

तए ण से कणगकेऊ तेसिं सजत्ताणावावाणियगाण त महत्थं जाव पडिच्छइ।

सूत्र १० · इधर व्यापारियो ने परस्पर विचार किया–"देवानुप्रियो ! हमे अश्वो से क्या काम है? यहाँ अनेक चाँदी, सोने, रत्नो व हीरो की खाने है। अत· हमारे लिए तो इन खनिजो से जहाज को भर लेना ही लाभदायक है।" यह सोच परस्पर सहमत होकर उन्होंने अपना जहाज सभी खनिजो तथा घास, अन्न, काठ तथा मीठे पानी से भर दिया। अनुकूल वायु होने पर वे गम्भीरपत्तन पहुँचे और लगर डालकर तट पर उतरे। वहॉ गाडियाँ तैयार की और जहाज मे लादा माल उतार कर गाडियो मे भरा। फिर गाडियो को जोत वहॉ से प्रस्थान किया। हस्तिशीर्ष नगर पहुँचने पर नगर के बाहर मुख्य उद्यान मे सार्थ रोका, गाडियाँ खोलीं, और बहुमूल्य उपहार साथ में लेकर हस्तिशीर्ष नगर में प्रवेश किया। राज्यसभा में जाकर कनककेतु राजा के सामने वे उपहार भेंट स्वरूप रख दिये।

राज कनककेतु ने व्यापारियों के वे बहुमूल्य उपहार स्वीकार कर लिए।

10. The merchants deliberated, "Beloved of gods! We have nothing to do with the horses There are rich deposits of silver, gold, gems, and diamonds.

It would be profitable for us to fill the holds of our ship with these minerals." They all agreed and filled the holds of the ship with all the minerals and also hay, wood, grain and fresh water When the wind favoured, they sailed and arrived at Gambhir port. They anchored the ship and disembarked. The ship was unloaded and the cargo was transferred to carts made ready for travel Once the complete cargo was transferred, they left the port and came to Hastisheersh city They halted the caravan outside the city and camped in the main garden Collecting valuable gifts, they entered the city and went to the king's court After greeting King Kanak-ketu they displayed before him the gifts they had brought for him

The king accepted the gifts

अश्वों की कामना

सूत्र ११ : ते संजत्ताणावावाणियगे एवं वयासी–'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! गामागर जाव आहिंडह, लवणसमुद्द च अभिक्खण अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहह, तं अत्थियाइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे?'

तए ण सजत्ताणावावाणिया कणगकेउं राय एवं वयासी–'एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो, तं चेव जाव कालियदीवंतेण संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसे, किं ते हरि-रेणु-सोणिसुत्तगा जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। तए णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठा।

सूत्र ११ फिर राजा ने उन व्यापारियो से पूछा–"देवानुप्रियो ! तुम लोग अनेक गॉवो और बस्तियो व द्वीपो मे जाते हो, बार-बार जहाजो द्वारा लवणसमुद्र की यात्रा करते हो, क्या कहीं तुमने कोई आश्चर्यजनक वस्तु देखी?"

उन व्यापारियो ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! हम लोग इसी हस्तिशीर्ष नगर के निवासी हैं। इस बार हम कालिक द्वीप की यात्रा पर गये थे। वहॉ चाँदी, सोने आदि के बहुत से खनिज हैं तथा बहुत से अश्व है (अश्वो का वर्णन पूर्वसमान)। वे अश्व हम लोगो के भय से उद्विग्न हो कई योजन दूर चले गये। हे स्वामी ! हमे कालिक द्वीप के श्रेष्ठ अश्व आश्चर्यजनक लगे।"

DESIRE FOR THE HORSES

11. After this, the king asked the merchants, "Beloved of gods! You visit many villages, towns, and islands. You go on sea voyage now and then. Have you seen some astonishing things?"

The merchants replied, "Beloved of gods! We are inhabitants of this Hastisheersh city. This time we went to Kalik island In that island there are

rich deposits of many minerals including silver and gold There are herds of horses also on that island (the description of horses as before) Disturbed by our presence these horses have drifted many miles deeper into the island Sire! We found these horses of Kalik island astonishing objects "

सूत्र १२ . तए णं कणगकेऊ तेसिं संजत्ता णावावाणियगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म ते संजत्ता णावावाणियए एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेइ।'

तए णं ते संजत्ता वाणियगा कणगकेउ राय एवं वयासी-'एवं सामी !' त्ति कट्टु आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति।

सूत्र १२ . राजा कनककेतु ने उन व्यापारियो की बात सुनकर उनसे कहा-"देवानुप्रियो ! तुम मेरे सेवकों के साथ जाओ और कालिक द्वीप से उन अश्वो को यहाँ ले आओ।"

व्यापारियों ने 'स्वामी की जो आज्ञा' कहकर राजा के वचनो को आज्ञा रूप सविनय स्वीकार किया।

12. On getting this information king Kanak-ketu instructed the merchants , "Beloved of gods! Go along with my servants and bring the horses of Kalik island here "

"As you say Sire!" the merchants humbly accepted the kings words as order

सूत्र १३ · तए ण कणगकेऊ राया कोटुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-'गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सजत्ताणावावाणिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह।' ते वि पडिसुणेंति।

तए ण ते कोटुबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थ ण बहूणं वीणाण य, वल्लकीण य, भामरीण य, कच्छभीण य, भंभाण य, छब्भामरीण य, विचित्तवीणाय य, अन्नेसिं च बहूणं सोइंदियपाउग्गाणं दव्वाण सगडीसागड भरेंति।

सूत्र १३ : इस पर राजा ने अपने सेवको को बुलाया और कहा-"देवानुप्रियो ! तुम इन व्यापारियो के साथ जाओ और मेरे लिए कालिक द्वीप के अश्व ले आओ।" सेवको ने भी राजा का आदेश स्वीकार किया। फिर उन सेवको ने गाड़ियाँ तैयार की और उनमे बहुत सी आवश्यक सामग्री के साथ विभिन्न प्रकार की वीणाये, यथा-बल्लकी, भ्रामरी, कच्छपी, भंभा, षट्भ्रामरी आदि कानों को प्रिय लगने वाली विविध सामग्री भर ली।

13. Now the king called his servants and said, "Beloved of gods! Go with these merchants and bring the horses of Kalik island for me " The servants

accepted the order They prepared many carts and filled them with the required materials for the voyage. Besides this they also loaded into the carts a variety of Veenas (string instruments) like — Ballaki, Bhramari, Kacchapi, Bhambha, Shatbhramari, etc and other musical instruments that appealed to the ears.

अश्व-मोदक सामग्री

सूत्र १४ . भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किल्लाण य कट्ठकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थ-कम्माण य लेप्पकम्माण य गथिमाण य जाव संघाइमाण य अन्नेसि च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाण सगडीसागड भरेंति।

भरित्ता बहूणं कोट्ठपुडाण य केयइपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति।

भरित्ता बहुस्स खडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तराए अन्नेसि च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागड भरेंति।

भरित्ता बहूणं कोयवाण य कंबलाण य पावाणाय य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति।

सूत्र १४ उन राज सेवको ने अपनी गाडियो मे फिर काली, लाल, सफेद आदि अनेक रगो की काष्टकर्म (लकडी की कलाकृतियॉ), चित्र कर्म (चित्रांकन की कलाकृतियॉ), पुस्तकर्म (लेखन कार्य से सम्बन्धित कृतियॉ), लेप्य कर्म (मिट्टी आदि से बनी कलाकृतियॉ), ग्रन्थिम (गूँथकर बनाई कलाकृतियाँ), वेष्टिम (वेष्टन कर-या चढ़ाकर बनाई कलाकृतियाँ), पूरिम (भरकर या पूर कर बनाई कलाकृतियॉ), सघातिम (विभिन्न वस्तुओ को मिलाकर बनाई कलाकृतियाँ), आदि नेत्रो को भाने वाला सामान भर लिया।

इसके बाद कोष्ट पुट (अर्क खींचना, डिस्टिलेशन या एक्स्ट्रेक्षन) तगर, एला, केतकी (इलायची) चंदन, जूही आदि घ्राणेन्द्रिय को लुभाने वाले विभिन्न प्रकार के सुगधित पदार्थ भी गाड़ियो मे भर लिए।

यही नही स्वाद में भले लगने वाले अनेक पदार्थ जैसे-खाँड, गुड़, शर्करा, मत्स्यंडिका (मिश्री) पुष्पोत्तर-शर्करा, पद्मोत्तर शर्करा आदि जिह्वा इन्द्रियो को लुभाने वाला सामान भी गाडियो में भर लिया।

अन्त में कोयतक (रुई के), कबल, प्रावरण (ओढ़ने के), नवत (जीन), मलय (आसन विशेष), मसग (चमडे के), शिकावतक आदि स्पर्श में भली लगने वाली स्पर्श इन्द्रिय को लुभाने वाली अनेक वस्तुएँ भी गाडी में भर ली।

ALLUREMENTS FOR HORSES

14. The servants also included in their cargo every variety of objects of art that appealed to eyes. This included multi-coloured things made in wood, paintings, writings, terra-cottas, knit-work, coated things, inlaid works, and mixed art pieces

Then they included fragrant items that appealed to the sense of smell This included concentrates of Tagar, Ela, Ketaki, sandal-wood, Juhi and many other types of perfumes and fragrant powders

Also loaded were things that appealed to the taste buds These included different types of sugar such as semi-finished, powdered, crystallized, etc

In the end they loaded bed covers, blankets, rugs, mattresses and other such products made of cotton, wool, leather, etc that appealed to the sense of touch

सूत्र १५ . भरित्ता सगडीसागड जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरपोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सगडीसागड मोएंति, मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति सज्जित्ता तेसि उक्किट्ठाण सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूण पोयवहण-पाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति।

सूत्र १५ उन्होने यह सभी सामान गाडियो मे भरकर, गाडियॉ जोत कर गभीर पट्टन की ओर चले आये। वहॉ पहुँचकर गाडियॉ खोल दी और जहाज तैयार किये। फिर जहाज मे लाई हुई सभी खाद्य-गध-स्पर्श योग्य सामग्री तथा काठ, घास, जल, चावल, आटा, दूध आदि अन्य सभी प्रकार की आवश्यक सामग्री भर ली।

15 After loading all this material they moved to Gambhir port and transferred the cargo into the ship They also loaded enough quantities of other essential items like wood, hay, soft water, flour, milk, etc

जाल बिछाना

सूत्र १६ भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लबेंति, लबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्द-फरिस-रस-रूव-गधाइं एगट्ठियाहि कालियदीवं उत्तारेंति, उत्तारित्ता जहिं जहि च ण ते आसा आसयंति वा, सयंति वा, चिट्ठंति वा, तुयट्टति वा, तहिं तहिं च ण ते कोडुबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा समुदीरेमाणा चिट्ठंति, तेसिं च परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

सूत्र १६ : जब जहाज भरकर तैयार हो गये और पवन अनुकूल हुआ तब वे राजसेवक व्यापारियों के साथ रवाना हुए और कालिक द्वीप के निकट पहुँचे। यहाँ लंगर डालकर छोटी नावों में सामान भरकर द्वीप में उतारा। यह सब सामान लेकर वे राजसेवक जहाँ-जहाँ घोडे बैठते, सोते या लोटते थे वहाँ-वहाँ गये, आस-पास मे जाल बिछाये और पूर्वोक्त वाद्ययंत्रों से मधुर ध्वनियाँ निकालने लगे। फिर वे निश्चल, निस्पन्द और मूक होकर छुप गये।

FIXING THE SNARES

16. After the ships were loaded and when the wind favoured, they left Gambhir port and arrived near Kalik island. They anchored the ship and disembarked The ship was unloaded and the cargo was transferred to the island with the help of small boats. The servants of the king then went to the places where the horses rested or tumbled in the sand and fixed snares and played musical instruments for some time After that they hid themselves, made themselves absolutely still and waited silently

सूत्र १७ जत्थ जत्थ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा, तत्थ तत्थ णं त कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेति, तेसि परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

सूत्र १७ इसी प्रकार घोडो के विचरने के स्थानो पर नेत्रों को आकर्षित करने वाले कृष्ण-नील, लाल, आदि विविध रंगो के सामान सजा दिये, फिर आसपास जाल बिछा दिये और छुपकर बैठ गये।

17. Similarly they arranged the colourful objects that appealed to eyes in the areas frequented by the horses, fixed snares and waited concealing themselves

सूत्र १८ : जत्थ जत्थ ते आसा आसयंति वा, सयंति वा, चिट्ठंति वा, तुयट्टंति वा, तत्थ-तत्थ ण ते कोडुंबियपुरिसा तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाण य अन्नेसिं च घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति, करित्ता तेसिं परिपेरंते जाव चिट्ठंति।

सूत्र १८ : इसी प्रकार उन सेवकों ने घोड़ो के घूमने, बैठने, सोने के स्थानों पर घ्राणेन्द्रिय को आकर्षित करने वाले सुगंधित पुष्प व इत्र आदि सामान के ढेर बनाकर इधर-उधर लगा दिये और छुपकर बैठ गए।

18. Then, they arranged ın heaps the fragrant thıngs that appealed to the sense of smell ın the areas frequented by the horses, fixed snares and waıted concealıng themselves

सूत्र १९ : जत्थ जत्थ ण ते आसा आसयंति वा, सयति वा, चिट्ठंति वा, तुयट्टंति वा, तत्थ तत्थ गुलस्स जाव अन्नेसि च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाण पुजे य णियरे य करेंति, करित्ता वियरए खणति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स अन्नेसिं च बहूणं पाणगाण वियरे भरेंति, भरित्ता तेसि परिपेरंतेण पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति।

सूत्र १९ · इसी प्रकार घोडो के सोने, बैठने, घूमने के स्थान पर गुड, शक्कर आदि स्वाद को रुचने वाले तथा जीभ को लुभाने वाले पदार्थ सजा दिये, उनके ढेर लगा दिये, तरल पदार्थों को गड्ढो मे भर दिया और आस-पास जाल बिछा दिये।

19. After that, they arranged the savoury thıngs that appealed to taste buds, puttıng solıds ın heaps and the lıquıds ın dıtches, ın the areas frequented by the horses, fixed snares and waıted concealıng themselves

सूत्र २० जहिं जहिं च ण ते आसा आसयति वा, सयंति वा, चिट्ठति वा, तुयट्टति वा, तहि तहि च ण ते बहवे कोयवया य जाव सिलावट्टया अण्णाणि य फासिंदियपाउग्गाइ अत्थुय-पच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवित्ता तेसि परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति।

सूत्र २० अन्त मे उन्होने घोडो की स्पर्श इन्द्रिय को भले लगने वाले रुई के, ऊन के, चमडे के विविध सामान भी सजा दिये। गुप्त जाल बिछा दिये और स्वय आस-पास वृक्षो-पत्रो आदि की ओट मे छुप गये।

20. Fınally they arranged the soft objects made of cotton, wool, leather etc that appealed to the sense of touch ın the areas frequented by the horses, fixed snares and waıted concealıng themselves ın the nearby folıage

अनासक्ति का लाभ

सूत्र २१ . तए णं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गधा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तत्थ ण अत्थेगइया आसा 'अपुव्वा ण इमे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा' इति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु अमुच्छिया अगढिया अगिद्धा अणज्झोववण्णा, तेसिं उक्किट्ठाण सद्द जाव गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्कमंति, ते ण तत्थ पउरगोयरा पउरतण-पाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति।

सूत्र २१ कुछ समय बाद वे घोडे वहाँ आये जहॉ यह सब उत्कृष्ट, सुन्दर, मनमोहक, शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध युक्त वस्तुएँ रखी थी। उनमे से अनेक अश्व यह सोचकर कि ये सभी
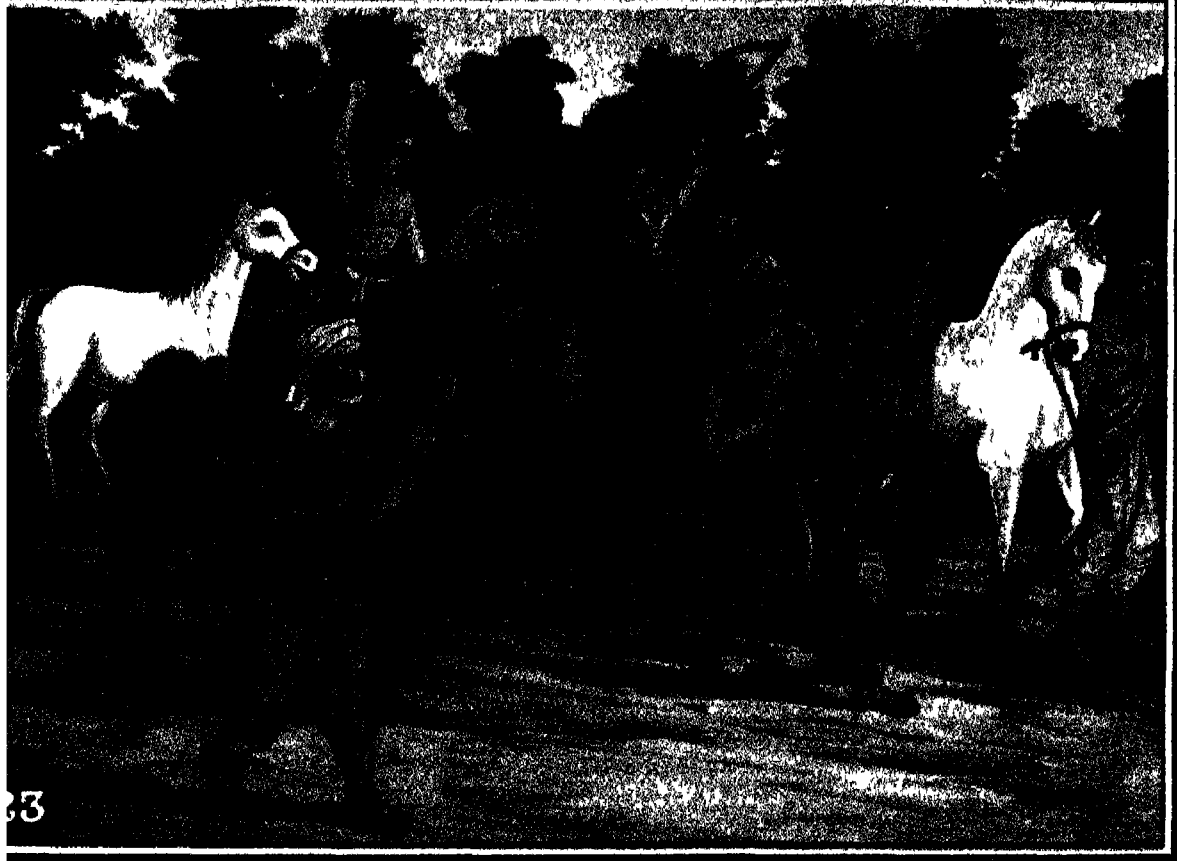
चित्र परिचय
THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

सुखों का प्रलोभन : बन्धन का कारण

चित्र २३

कनककेतु राजा ने कालिक द्वीप मे स्वच्छन्द विचरण करने वाले घोडो को पकडने के लिए अपने कुशल सेवको को भेजा। सेवको ने द्वीप के विशाल मैदान मे तरह-तरह के सुगन्धित, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ, कोमल स्पर्श वाले गलीचे तथा सभी इन्द्रियो को लुभाने वाले पदार्थ चारो तरफ बिछा दिये तथा कर्मचारी छुपकर मधुर वीणा नाद करने लगे। कुछ लोग जाल व रस्सियाँ लेकर छुप गये।

घोडे जब मैदान मे आये और इन पदार्थो को देखा तो कुछ घोडे इन पदार्थो के स्वाद व रूप-गध आदि मे लुब्ध होकर वही चरने लगे। सेवको ने घोडो को अपने जाल मे फँसा लिया। चाबुक आदि से प्रताडित कर अपने वाहनो के काम मे लेने लगे।

जो कुछ घोडे इन मधुर स्वादिष्ट–सुगन्धित पदार्थो के प्रति ललचाये नही वे पहले की तरह स्वच्छन्द स्वाधीन विचरते रहे। (सत्रहवाँ अध्ययन)

A FONDNESS FOR PLEASURES : THE CAUSE OF BONDAGE

ILLUSTRATION : 23

King Kanak-ketu of Hastishirsh city ordered his experienced trappers to go to Kalik island to trap and bring some wild horses These trappers spread around a variety of things to lure horses These included perfumed things, tasty food, and soft carpets Some trappers started playing alluring melodies on musical instruments and others hid themselves with nets and lariats in their hands

When the herd of horses arrived there, many of them were attracted by these things and came near The trappers caught them These horses were tied with ropes, hit with whips and yoked to chariots Wild horses lost their freedom

Many others were not lured by the attractive things and kept there distance They remained free grazing in their natural habitat

(CHAPTER - 17)

वस्तुएँ अपूर्व हैं, पहले कभी नहीं देखी हैं, इनका अनुभव भी नहीं है, उनमें न तो मूर्च्छित हुए, न ही गृद्ध व आसक्त हुए, अतः शंकित होकर उनसे दूर चले गये और चारागाह भूमि में जाकर घास-पानी पर ही निर्भर रहकर निर्भय व निरुद्विग्न हो सुखपूर्वक विचरने लगे।

BENEFIT OF APATHY

21. After some time the horses came to all these spots where objects with beautiful and enticing sound, touch, taste, form and smell were placed. Many of the horses thought that these things were new to them and beyond their experience, and thus they were not attracted, allured, or enticed by them. In fact, they became wary of them and drifted away to their familiar pastures and resumed their normal activities contented with the available grass and water

सूत्र २२ : एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु णो सज्जइ, से णं इहलोगे चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावयाणं सावियाणं य अच्चणिज्जे जाव वीइवयइ।

सूत्र २२ : हे आयुष्मान् श्रमणो ! इस प्रकार हमारा जो साधु-साध्वी वर्ग है, वह शब्द स्पर्श, रस, रूप और गंध मे आसक्त नही होता मूर्च्छित व गृद्ध नहीं होता, वह इस लोक में अनेक साधु-साध्वि-श्रावक-श्राविकाओ का पूजनीय होता है और ससार-अटवी को पार कर लेता है।

22. Long-lived Shramans! In this way those of our ascetics who are not attracted, allured, or enticed by the subjects of the five senses of sound, touch, taste, form and smell become the objects of reverence of many ascetics and lay persons and cross the ocean of rebirth.

आसक्ति का दुष्परिणाम

सूत्र २३ : तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठ सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु मुच्छिया जाव अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था। तए णं ते आसा एए उक्किट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव गंधे आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झंति।

सूत्र २३ : उनमें से अनेक घोड़े उन उत्कृष्ट लुभावनी वस्तुओं में अति मूर्च्छित और आसक्त हो गये और उनका सेवन भोग उपभोग करने लगे। वे सभी अश्व राज-सेवकों द्वारा अनेको कूटपाशों (जाल) में, गले के फंदे, पैर के बंधन आदि से उलझ गये और पकड़ लिए गये।

HARMS OF INDULGENCE

23. Many of the horses were lured by these good and attractive things. They became extremely fond of these things and started consuming and enjoying them. All these horses were caught in a variety of snares (nets, nooses, foot-snares, etc) fixed by the king's men.

सूत्र २४ : तए णं ते कोडुबियपुरिसा एए आसे गिण्हति, गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं. पोयवहणे संचारेंति, संचारित्ता तणस्स य कट्ठस्स य जाव भरेंति।

तए णं ते सजत्ता णावावाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गंभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेति, लबित्ता ते आसे उत्तारेंति, उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे, जेणेव कणगकेऊ राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति वद्धावित्ता ते आसे उवणेंति।

तए णं से कणगकेऊ राया तेंसि संजत्ता णावावाणियगाणं उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र २४ . राजसेवको ने उन सभी घोड़ो को पकडा और छोटी नौकाओ द्वारा जहाज पर ले आये। जहाज मे आवश्यक खाद्यादि सामग्री भरी और अनुकूल पवन होने पर रवाना होकर गभीर पत्तन पहुँचे। वहाँ लगर डाल कर उन घोडो को उतारा और उन्हे लेकर हस्तिशीर्ष नगर मे राजा कनककेतु के पास ले आये। यथा विधि राजा का अभिवादन कर वे अश्व उनके सम्मुख उपस्थित कर दिये।

राजा ने उन समुद्र यात्रा व्यापारियो का शुल्क माफ कर दिया और सत्कार-सम्मान करके विदा कर दिया।

24. The royal staff rounded up these horses and transferred them to the ship with the help of boats They loaded other essential things like food When the wind favoured they sailed and arrived at Gambhir port, anchored the ship, unloaded the horses and brought them to Hastisheersh city They took these horses to King Kanak-ketu and after due greetings presented them to him.

The king exempted all their taxes and bid them farewell after duly honouring and rewarding them

सूत्र २५ : तए णं से कणगकेऊ राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता सक्कारेइ, संमाणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ।

सूत्र २५ : राजा ने फिर उन सेवकों को बुलाया जिन्हे उसने घोडो को लाने के लिए कालिक द्वीप भेजा था। उन्हें भी सत्कार-सम्मान कर विदा किया।

25. The king then called the servants who were sent to catch and bring the horses from the Kalik island and honoured and rewarded them.

सूत्र २६ : तए णं कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम आसे विणएह।'

तए णं ते आसमद्दगा तह त्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुहबंधेहिं य, कण्णबंधेहिं य, णासाबंधेहिं य, वालबंधेहिं य, खुरबंधेहिं य कडगबंधेहिं य खलिणबंधेहिं य, अहिलाणेहिं य, पडयाणेहि य, अंकणाहि य, वेत्तप्पहारेहिं य, लयप्पहारेहि य, कसप्पहारेहिं य, छिवप्पहारेहिं य विणयंति, विणइत्ता कणगकेउस्स रण्णो उवणेंति।

सूत्र २६ : कनककेतु राजा ने अन्त मे अश्वमर्दकों (अश्वो को प्रशिक्षण देने वाले) को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो, तुम मेरे अश्वों को विनीत (प्रशिक्षित) करो।

"जो आज्ञा" कहकर अश्वमर्दको ने राजा की आज्ञा स्वीकार की। फिर अश्वो को ले जाकर उनके मुख, कान, नाक, झौंरा (पूँछ का अग्र भाग), खुर व कटक बाँधकर, चौकडी व तोबरा चढाकर, पटतानक लगा कर, खस्सी कर, बेला, वेत, लता चाबुक, चमडे के कोडे आदि से प्रहार करके उन्हे विनीत किया। जब वे घोडे प्रशिक्षित हो गये तो उन्हे राजा के पास ले आये।

26. At last the king called for the horse trainers and asked, "Beloved of gods! You are appointed to break these horses and train them."

"As you say, Sire!" With these words the trainers accepted the king's order and took away the horses They tied the mouth, ears, nose, and edge of the tail of each of these horses They also tied their hooves and thighs They put nose-bags and the saddles on them and also the eye guards After all this they broke these horses by hitting them with ropes, canes, vines, lashes, whips, etc Once the horses were trained they brought them to the king

सूत्र २७ : तए ण से कणगकेऊ ते आसमद्दए सक्कारेइ, समाणेइ, सक्कारित्ता संमाणित्ता पडिविसज्जेइ। तए ण ते आसा बहूहिं मुहबधेहिं य जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीर-माणसाणि दुक्खाइ पावेंति।

सूत्र २७ राजा ने अश्वमर्दको का सम्मान-सत्कार किया और फिर विदा कर दिया। उधर उन अश्वों ने मुख बधनादि तथा बेत चाबुक आदि के प्रहार के कारण बहुत शारीरिक व मानसिक दु ख उठाया।

27. The king honoured and rewarded these horse trainers and dismissed them. All these horses went through a lot of suffering due to the bondage and the beating they got during the training

उपसंहार

सूत्र २८ : एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु सज्जति, रज्जति, गिज्झति, मुज्झति, अज्झोववज्जति, से णं इह लोगे चेव बहूणं समणाण य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ।

सूत्र २८ : हे आयुष्मान श्रमणो ! इसी प्रकार हमारा जो निर्ग्रन्थ व निर्ग्रन्थी दीक्षित होकर प्रिय शब्द, रस, स्पर्श, रूप और गंध के प्रति आकर्षित, मुग्ध और आसक्त होता है उनमें लुब्ध हो जाता है। वह इसी लोक में अनेक श्रमण, श्रमणियों, श्रावक, श्राविकाओं की अवहेलना का पात्र होता है तथा चतुर्गति रूप संसारअटवी में पुनः पुन. भ्रमण करता है।

CONCLUSION

28. Long-lived Shramans ! In this way those of our ascetics who, after getting initiated, are attracted, allured, or enticed by the subjects of the five senses of sound, touch, taste, form and smell become the objects of neglect by many ascetics and lay persons and are caught in the cycles of rebirth indefinitely

इन्द्रियलोलुपता का दुष्फल

सूत्र २९ : कल-रिभिय-महुर-तंती-तलताल-वंस-कउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंति सोइंदियवसट्टा॥१॥

सूत्र २९ : सुनने में सुखद व आकर्षक, गुँजन लिए वीणा, ताल व बॉसुरी जैसे श्रेष्ठ और मनोहारी वाद्यों के शब्दों मे अनुरक्त होने वाले श्रोत्रेन्द्रिय के वशीभूत प्राणी ऐसे सगीत को आनन्ददायक मानते है॥१॥

HARMS OF INDULGENCE

29. The beings who are slaves of the sense of hearing and are enticed by the pleasing and enchanting sound of good quality musical instruments like Veena, drums, and flute consider such music to be the source of bliss. (1)

सोइंदियदुद्दंत-त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो।
दीविगरुयमसहंतो, वहबंधं तित्तिरो पत्तो॥२॥

किन्तु श्रोत्रेन्द्रिय का यह दुर्दान्त आकर्षण वैसा ही दोषपूर्ण होता है जैसे व्याध (शिकारी) के पिजरे में रहे तीतर का स्वर स्वतन्त्र तीतर को आकर्षित कर व्याध के जाल मे ले आता है और उसके बंधन और वध का कारण बन जाता है॥२॥

But this compelling attraction of the sense of hearing is harmful in the same way that the call of a caged partridge, belonging to a fowler, lures a wild partridge into the snare and becomes the cause of its bondage and death. (2)

थण-जहण-वयण-कर-चरण-णयण-गव्विय-विलासियगइसु।
रूवेसु रज्जमाणा, रमति चक्खिंदियवसट्टा॥३॥

चक्षु इन्द्रिय के वशीभूत और रूप मे अनुरक्त रहने वाले पुरुष स्त्री के स्तन, जंघा, वदन, हाथ, पैर, नेत्र तथा गर्वीली चेष्टाओं की विलासमय गति में रमण करने को आनन्द मानते हैं॥३॥

The beings who are slaves of the sense of seeing consider feasting upon the lascivious movements of the breasts and thighs, limbs and torso, and eyes and face of a woman to be the source of bliss. (3)

चक्खिंदियदुद्दन्त-त्तणस्स अह एत्तिओ भवइ दोसो।
ज जलणम्मि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धीओ॥४॥

किन्तु चक्षु इन्द्रिय का यह दुर्दान्त आकर्षण वैसा ही दोषपूर्ण होता है जैसे बुद्धिहीन पतंगा जलती आग की लपट के रूप से आकर्षित हो उसका आलिंगन करता है और जल मरता है॥४॥

But this compelling attraction of the sense of seeing is harmful in the same way that the beauty of a flame draws the ignorant moth, embraces it and reduces it to ashes (4)

अगुरु-वरपवरधूवण, उउय-मल्लाणुलेवणविहीसु।
गधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिदियवसट्टा॥५॥

घ्राणेन्द्रिय के वशीभूत हुए प्राणी कृष्णागुरु, प्रवर धूप, ऋतु के अनुकूल मालाएँ और फूल, चन्दनादि के लेप आदि सुगधित पदार्थों के सेवन मे आनन्द का अनुभव करते हैं॥५॥

The beings who are slaves of the sense of smell consider enjoying the smell of fragrant things like Krishnaguru, Pravar-dhoop, seasonal flowers and garlands made of these, and sandal-wood paste to be the source of bliss (5)

घाणिंदियदुद्दन्त-त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो।
जं ओसहिगंधेणं, विलाओ निद्धावई उरगो॥६॥

किन्तु यह घ्राणेन्द्रिय का दुर्दान्त आकर्षण वैसा ही दोष पूर्ण होता है जैसे केतकी आदि वनस्पति की गंध से आकर्षित होकर सांप अपने बिल से बाहर निकल आता है और बंधन, वध आदि के कष्ट झेलता है॥६॥

But this compelling attraction of the sense of smell is harmful in the same way that the alluring fragrance of Ketaki and other flowers draws a snake out of its hole and causes it to suffer the pain of captivity and death (6)

तित्त-कडुयं कसायब-महुरं बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु।
आसायंति उ गिद्धा, रमंति जिब्भिंदियवसट्टा॥७॥

जिह्वा-इन्द्रिय के वशीभूत हुए प्राणी कडवे, तीखे, कसैले, खट्टे तथा मधुर रस वाले खाद्य, पेय तथा लेह्य (चाटने योग्य) पदार्थों के सेवन मे आनन्द अनुभव करते हैं॥७॥

The beings who are slaves of the sense of taste consider relishing savoury preparations, solid, semi-solid, and liquid, having bitter, hot, pungent, sour, and sweet flavours to be the source of bliss (7)

जिब्भिंदियदुद्दन्त-त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो।
ज गललग्गुक्खित्तो, फुरइ थलविरल्लिओ मच्छो॥८॥

किन्तु यह जिह्वा-इन्द्रिय का दुर्दान्त आकर्षण वैसा ही दोषपूर्ण है जैसे—मछेरे के कॉटे मे लगे मॉस के टुकड़े से आकर्षित हो उसे निगलने वाली मछली गले मे अटके कॉटे द्वारा जल से बाहर खीच ली जाती है और तडप-तडप कर प्राण त्याग देती है॥८॥

But this compelling attraction of the sense of taste is harmful in the same way that the piece of meat attached to the fish-hook lures the fish who bites it and is drawn out of water to die a slow writhing death. (8)

उउ-भयमाण-सुहेसु य, सविभव-हियय-मणनिव्वुइकरेसु।
फासेसु रज्जमाणा, रमति फासिंदियवसट्टा॥९॥

स्पर्शेन्द्रिय के वशीभूत हुए प्राणी उसकी लोलुपता के कारण विभिन्न ऋतुओ से सम्बन्धित सुख भोगते है तथा समृद्धि और वैभव के प्रतीक व मन को सुखदायक लगने वाले स्पर्श एव स्त्री आदि पदार्थों के रमण में आनन्द अनुभव करते हैं॥९॥

The beings who are slaves of the sense of touch consider enjoying various seasonal pleasures, the possession of symbols of wealth and grandeur, and carnal pleasures derived out of fondling the female body and other such objects to be the source of bliss (9)

फासिंदियदुद्दन्त-त्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो।
जं खणइ मत्थय कुजरस्स लोहंकुसो तिक्खो॥१०॥

किन्तु यह स्पर्शनेन्द्रिय का दुर्दान्त आकर्षण वैसा ही दोषपूर्ण व दुःखदायी है जैसे हस्तिनी के स्पर्श के लिए लुब्ध हुआ मत्त गजराज पकडा जाता है और तीखे लौह अंकुश का अपने मस्तक पर वार सहता है॥१०॥

But this compelling attraction of the sense of touch is harmful in the same way that by the craving to brush a she-elephant traps the elephant in season and causes it to suffer the piercing pain of lancet blows on its head (10)

इन्द्रियसंवर का सुफल

कलरिभिय–महुरतंती-तल-ताल-वंस-ककुहाभिरामेसु।
सद्देसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए॥११॥

जो प्राणी कल, रिभित आदि वाद्यो के मधुर शब्दो मे आसक्त नही होते वे वशार्तमरण को प्राप्त नही होते। (वशार्तमरण–इन्द्रियो के विषय, कषाय, नौकषाय आदि के वशीभूत हुआ परवश पीड़ादायक मृत्यु)॥११॥

BENEFIT OF CONTAINMENT

The beings who are not allured by the melodious sounds of musical instruments like Kal, Ribhit, etc do not embrace Vashartmaran (forced and painful death caused by indulgence in sensual pleasures, intense passions, and light passions) (11)

थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्वियविलासियगईसु।
रूवेसु जे न सत्ता, वसट्टमरण न ते मरए॥१२॥

स्त्रियो के स्तन जघन-नयन आदि रूपो मे जो प्राणी आसक्त नही होते वे वशार्तमरण को प्राप्त नही होते॥१२॥

The beings who are not allured by the visual beauty of female breasts, thighs etc do not embrace Vashartmaran (12)

अगरु-वरपवरधूवण-उउयमल्लाणुलेवण-विहीसु।
गंधेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए॥१३॥

अगर, धूप, फूल माला, चन्दन लेप आदि सुगधो मे जो प्राणी आसक्त नही होते वे वशार्तमरण को प्राप्त नही होते॥१३॥

The beings who are not allured by the aroma of fragrant things like Krishnaguru, Dhoop, seasonal flowers, garlands, and sandal-wood paste etc do not embrace Vashartmaran (13)

तित्त-कडुयं कसायंब-महुरं बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु।
आसायंमि न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए॥१४॥

तिक्त, कटु मधुर आदि स्वादों में तथा खाद्य-पेय आदि से जो प्राणी आसक्त नहीं होते वे वशार्तमरण को प्राप्त नहीं होते।।१४।।

The beings who are not allured by savoury preparations, solid, semi-solid, and liquid, having bitter, hot, pungent, sour, and sweet flavours, etc do not embrace Vashartmaran (14)

उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव-हियय-निव्वुइकरेसु।
फासेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए।।१५।।

मन को आनन्द देने वाले विभिन्न प्रकार के स्पर्शों में जो प्राणी आसक्त नही होते वे वशार्तमरण को प्राप्त नही होते।।१५।।

The beings who are not allured by a variety of objects pleasing to the sense of touch do not embrace Vashartmaran. (15)

कर्त्तव्य-निर्देश

सद्देसु य भद्दग-पावएसु सोयविसयं उवगएसु।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होअव्वं।।१६।।

श्रमण को शुभ या मनोज्ञ ध्वनियाँ सुनकर कभी तुष्ट नही होना चाहिए और अशुभ या अमनोज्ञ ध्वनियाँ सुनकर कभी रुष्ट नहीं होना चाहिए।।१६।।

DIRECTIONS

A Shraman should never be contented by pleasant sounds and disturbed by unpleasant ones. (16)

रूवेसु य भद्दग-पावएसु चक्खुविसयं उवगएसु।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होअव्व।।१७।।

श्रमण को आँखो के सामने आये हुए प्रिय अथवा अप्रिय दृश्य देखकर कभी तुष्ट या रुष्ट नहीं होना चाहिए।।१७।।

A Shraman should never be contented by pleasant views and disturbed by unpleasant ones (17)

गंधेसु य भद्दग-पावएसु घाण-विसयमुवगएसु।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया ण होअव्वं।।१८।।

श्रमण को घ्राणेन्द्रिय के समक्ष आये प्रिय अथवा अप्रिय गंध सूँघने पर कभी तुष्ट या रुष्ट नहीं होना चाहिए।।१८।।

A Shraman should never be contented by pleasant smells and disturbed by unpleasant ones. (18)

रसेसु य भद्दय-पावएसु जिब्भविसयं उवगएसु।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होअव्वं॥१९॥

श्रमण को प्रिय अथवा अप्रिय स्वाद प्राप्त होने पर कभी जिह्वेन्द्रिय के रसों में तुष्ट या रुष्ट नहीं होना चाहिए॥१९॥

A Shraman should never be contented by pleasant tastes and disturbed by unpleasant ones (19)

फासेसु य भद्दय-पावएसु कायविसयमुवगएसु।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होअव्वं॥२०॥

श्रमण को प्रिय अथवा अप्रिय स्पर्श प्राप्त होने पर कभी शरीर सम्बन्धी स्पर्श में तुष्ट या रुष्ट नहीं होना चाहिए॥२०॥

A Shraman should never be contented by a pleasant touch and disturbed by an unpleasant one (20)

सूत्र ३१ . एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ३१ : हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने सत्रहवें ज्ञात अध्ययन का यह अर्थ कहा है। जैसा मैंने सुना है वैसा ही मै कहता हूँ।

31. Jambu! This is the text and the meaning of the seventeenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir. So I have heard, so I confirm.

॥ सत्तरसमं अज्झयण समत्तं ॥

॥ सत्तरहवाँ अध्ययन समाप्त ॥

|| END OF THE SEVENTEENTH CHAPTER ||

उपसंहार

ज्ञाता धर्मकथा की इस सत्रहवी कथा मे विभिन्न इन्द्रियो के विषयों में आसक्ति के दुष्परिणाम तथा अनासक्ति द्वारा आत्मिक विकास की बात को विस्तार से समझाया है। सभी दु:खों के मूल मे आसक्ति के आवरण द्वारा विवेक का ढक दिया जाना है यह बात सरल उदाहरण से पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है।

CONCLUSION

This seventeenth story of Jnata Dharma Katha explains in detail the unhealthy consequences of indulgence in various sensual pleasures and the attainment of spiritual uplift with the help of detachment With the help of a simple example it has been made clear that at the root of all sorrows is the veiling of rational thinking by attachment

उपनय गाथा

जह सो कालियदीवो अणुवमसोक्खो तहेव जइधम्मो।
जह आसा तह साहू, वणियव्वऽणुकूलकारिजणा॥१॥
जह सद्दाइ-अगिद्धा पत्ता नो पासबधणं आसा।
तह विसएसु अगिद्धा, वज्झंति न कम्मणा साहू॥२॥
जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह य इह वरमुणीणं।
जर - मरणाइविवज्जिय - संपत्ताणंद - निव्वाणं॥३॥
जह सद्दाइसु गिद्धा, बद्धा आसा तहेव विसयरया।
पावेंति कम्मबधं, परमासुहकारणं घोरं॥४॥
जह ते कालियदीवा णीया अन्नत्थ दुहगणं पत्ता।
तह धम्मपरिब्भट्ठा, अधम्मपत्ता इहं जीवा॥५॥
पावेंति कम्म-नरवइ-वसया संसार-वाहयालीए।
आसप्पमद्दएहि व, नेरइयाईहि दुक्खाइं॥६॥

जैसे यहाँ कालिक द्वीप कहा है, वैसे अनुपम सुख प्रदान करने वाला श्रमणधर्म समझना चाहिए। अश्वों के समान साधु और वणिकों के समान अनुकूल उपसर्ग करने वाले (ललचाने वाले) लोग हैं॥१॥

जैसे शब्द आदि विषयों में आसक्त न होने वाले अश्व जाल मे नही फँसे, उसी प्रकार जो साधु इन्द्रियविषयों में आसक्त नहीं होते वे कर्मो से बद्ध नही होते॥२॥

जैसे अश्वों का स्वच्छद विहार कहा, उसी प्रकार श्रेष्ठ मुनिजनों का जरा-मरण से रहित और आनन्दमय निर्वाण समझना। तात्पर्य यह है कि शब्दादि विषयो से विरत रहने वाले अश्व जैसे स्वाधीन-इच्छानुसार विचरण करने मे समर्थ हुए, वैसे ही विषयों से विरत महामुनि मुक्ति प्राप्त करने में समर्थ होते हैं॥३॥

इससे विपरीत शब्दादि विषयो मे अनुरक्त हुए अश्व जैसे बन्धन-बद्ध हुए, उसी प्रकार जो विषयो मे अनुरागवान् है, वे प्राणी अत्यन्त दुःख के कारणभूत एवं घोर कर्मबन्धन को प्राप्त करते है॥४॥

जैसे शब्दादि मे आसक्त हुए अश्व अन्यत्र ले जाए गए और अनेक दुःखों को प्राप्त हुए, उसी प्रकार धर्म से भ्रष्ट जीव अधर्म को प्राप्त होकर दुःखो को प्राप्त होते है॥५॥

ऐसे प्राणी कर्मरूपी राजा के वशीभूत होते हैं। वे सवारी जैसे सांसारिक दुःखो के, अश्वमर्दकों द्वारा होने वाली पीडा के समान (परभव मे) नारको द्वारा दिये जाने वाले कष्टो के पात्र बनते है॥६॥

THE MESSAGE

Kalik island is the ultimate bliss giving Shraman-Dharma (the spiritual path shown by Tirthankars) The horses are ascetics and the merchants are those people who create temptations (1)

As the horses which were not lured by sensual pleasure remained free, in same way the ascetics who are not lured by sensual pleasures remain free of the bondage of Karmas (2)

The free movement of horses is the blissful state of Nirvana that is free of old age and death. This means that as the horses which were not attracted by sensual allurements were able to roam free, in same way ascetics indifferent to sensual pleasures are able to attain liberation (3)

Just as the horses that were drawn by attractions were trapped, in same way beings who are attached to carnal pleasures are trapped in the bondage of Karmas, the root of extreme sorrow (4)

Just as the horses trapped by sensual pleasures were shifted to other places and suffered extreme pain, in same way beings who drift away from the righteous path fall from grace and embrace sufferings. (5)

Such beings are slaves of King Karma. They suffer the pains of being ridden (worldly sorrows) and the agony of being tortured by trainers (the tortures given in hell) (6)

परिशिष्ट

खड–बूरा, मधु-धूलिका या रजकण के समान शक्कर।

गुल अथवा गोल–गुड़

सक्करा, शर्करा–दानेदार चीनी

मत्स्यडिका–खाड का विकार, गुड़िया खाड।

पुष्पोत्तरा–फूलो के रस से बनी शर्करा।

पद्मोत्तरा–सुगधित शर्करा, कमल के रस से बनी शर्करा।

APPENDIX

Khanda—Bura, Madhu-Dhulika, a powdered form of refined sugar

Gul or Gol—Gud, jaggery

Sakkara or Sharkara—crystal sugar

Matsyandika—raw sugar made from molasses

Pushpottara—sugar made from flower extract

Padmottara—fragrant sugar made from lotus flower extract

■■

अठारहवाँ अध्ययन : सुंसुमा : आमुख

शीर्षक–सुंसुमा–नाम विशेष। इस कथानक का एक पात्र है सुंसुमा। इसके अपहरण और हत्या से प्रकट किया है मनुष्य का चरम अध पतन। और उसकी मृत देह के मास द्वारा प्राण रक्षा करने की घटना से इंगित किया है साधना पथ पर चरम अनासक्ति के भाव से साधना हेतु देह रक्षा करने की ओर। यह मार्मिक कथा प्रतीकात्मक है, भाव की गहराई पर पहुँचने का संकेत है।

कथासार–राजगृह नगर में धन्य सार्थवाह अपने पाँच बेटों तथा एक बेटी सुंसुमा सहित रहता था। उसके यहाँ चिलात नाम का एक नौकर कन्या सुंसुमा की देख-रेख के लिए रहता था। वह सुंसुमा को गोद में लिए मुहल्ले के अन्य बच्चों के साथ खेलता रहता था। पर दुष्ट चंचल प्रकृति होने के कारण वह अन्य बच्चों को सताता रहता था। पडोसी धन्य के पास शिकायत करते थे। एक दिन तंग आकर धन्य ने चिलात को मार पीटकर निकाल दिया।

चिलात वहाँ से निकल घूमता-घामता निकटवर्ती सिंह-गुफा नाम की चोर बस्ती के अधिपति विजय चोर की शरण मे चला गया। धीरे-धीरे विजय से चोरी की कलाएँ सीख वह उसका मुख्य सहायक बन गया। विजय की मृत्यु के पश्चात् चोरो ने उसे ही मुखिया बना दिया।

मुखिया बनने के बाद चिलात ने एक दिन धन्य सार्थवाह के यहाँ डाका डाला। अन्य सभी चोरों को उसने सारा धन लेने को कहा और स्वय सेठ की कन्या सुंसुमा पर अधिकार कर लिया। सेठ नगर रक्षकों सहित चोरों के पीछे गया। सैनिकों ने चोरों को तितर-बितर कर सारा माल बरामद कर लिया। किन्तु चिलात सुंसुमा को लिए बीहड मे चला गया। धन्य अपने पाँचो पुत्रो सहित चिलात के पीछे बीहड़ मे प्रवेश कर गया। चिलात ने देखा कि सुंसुमा के कारण वह पकड़ा जायेगा तो उसने सुसुमा का शिरच्छेद कर दिया। धड़ को वहीं छोड़ वह बीहड़ में और आगे निकल गया और वहाँ भूख प्यास से मर गया।

धन्य चिलात को खोजता-खोजता अपने पुत्रो सहित उस स्थल पर पहुँचा जहाँ सुंसुमा की मृतदेह पड़ी थी। पुत्री के शोक में कुछ देर तो वह विलाप करता रहा पर फिर चिलात को खोजने लगा। बहुत खोजने पर भी चिलात नहीं मिला तो वह अपने पुत्रों सहित वापस उसी स्थान पर आया जहाँ सुंसुमा की देह पड़ी थी। भोजन-पानी की उपलब्धि न होने के कारण धन्य को लगा कि उसका वापस राजगृह लौटना असंभव है। उसने अपने पुत्रों से कहा कि वे उसे मार डालें और उसके मांस से भूख मिटा किसी तरह राजगृह पहुँच जाएँ। पुत्रों ने मना कर दिया और स्वयं अपना बलिदान करने को कहा। अंततः धन्य ने यह निर्णय लिया कि सुंसुमा की देह प्राणविहीन हो ही चुकी है–उसी से क्षुधा शान्त कर सभी को अपने गंतव्य तक पहुँचना चाहिये। वे सभी इस उपाय से वापस लौटने में सफल हुए।

धन्य व उसके पुत्रों ने अंत में दीक्षा ले ली और देवलोक मे जन्मे।

EIGHTEENTH CHAPTER : SUMSUMA : INTRODUCTION

Title—Sumsuma—a name A character in this story is named Sumsuma The incident of her abduction and killing has been used to reveal the ultimate human depravity The incident of consuming the flesh of her dead body to save lives has been used to show the importance of extreme detachment in saving one's life for spiritual pursuits This story is metaphoric and it explores the depths of feelings and attitudes

Gist of the story—In Rajagriha lived merchant Dhanya with his five sons and daughter Sumsuma He had a servant named Chilat who looked after Sumsuma He used to carry Sumsuma and play around with other children of the neighbourhood Chilat was cruel and mischievous by nature and used to torture the children The neighbours regularly complained of this to Dhanya One day Dhanya got extremely annoyed and he beat up Chilat and fired him

Chilat wandered around and finally took refuge with thief Vijaya, the head of a nearby den of thieves named Simha-gufa With passage of time he learned all the tricks of the trade from Vijaya and became his deputy When Vijaya died the gang of thieves made Chilat their leader

After he was elected leader, one day Chilat looted the house of Dhanya merchant He asked the other thieves to take all the wealth and he himself abducted Sumsuma The merchant followed the thieves with the help of city guards The guards attacked and dispersed the thieves and recovered the stolen goods However, Chilat entered a nearby forest Dhanya followed him with his five sons When Chilat realized that Sumsuma was slowing him and he would soon be caught, he beheaded her, left the body there, and went deeper into the forest There he was lost and died of hunger and thirst

Following the trail of Chilat Dhanya and his five sons reached the spot where the body of Sumsuma was lying He was stunned by the tragedy and wept After some time he resumed the search for Chilat When all his efforts failed he returned to the spot Dhanya realized that in absence of food and water it was impossible for him and his sons to return to Rajagriha He asked his sons to kill him and eat his flesh to regain strength to reach Rajagriha The sons refused and instead offered themselves At last Dhanya decided that as the body of Sumsuma was lifeless they should use the flesh to regain strength to reach Rajagriha And they finally returned to Rajagriha

In the end Dhanya and his sons became ascetics and then reincarnated as gods

■■

अट्ठारसमं अज्झयणं : सुंसुमा
अठारहवाँ अध्ययन : सुंसुमा
EIGHTEENTH CHAPTER : SUMSUMA

सूत्र १ : जइ ण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारसमस्स के अट्ठे पण्णत्ते?

सूत्र १ : जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भन्ते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने सत्रहवें ज्ञाता अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो अठारहवें अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the eighteenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णामं नयरे होत्था, वण्णओ। तत्थ णं धण्णे णाम सत्थवाहे परिवसइ, तस्स ण भद्दा भारिया।

तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा-धणे, धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजाइया सुसुमा णामं दारिया होत्था सूमालपाणि-पाया।

तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडए होत्था। अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावण-कुसले यावि होत्था।

सूत्र २ : सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–हे जम्बू ! काल के उस भाग में राजगृह नामक नगर था। वहाँ धन्य नामक धन सम्पन्न श्रीमंत सार्थवाह अपनी भद्रा नामकी पत्नी के साथ निवास करता था। सार्थवाह धन्य के पॉच पुत्र थे। जिनके क्रमश: नाम थे–धन, धनपाल, धनदेव, धनगोप तथा धनरक्षित। धन्य सार्थवाह और भद्रा के एक पुत्री थी जो अपने पाँचों भाइयों से छोटी थी और जिसका नाम सुंसुमा था। उसके अंगोपाग सुकोमल सुन्दर थे।

धन्य सार्थवाह के यहॉ चिलात नाम का एक दासपुत्र (नौकर) था। चिलात पंचेन्द्रिय परिपूर्ण तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला था और बच्चों की सारसँभाल रखने व उन्हें खिलाने में कुशल था।

2. Sudharma Swami narrated —Jambu! During that period of time there was a city named Rajagriha A wealthy merchant named Dhanna lived in that city with his wife, Bhadra.

Dhanya and Bhadra had five sons. Their names were Dhan, Dhanpal, Dhandev, Dhangope, and Dhanrakshit The couple had a daughter named

Sumsuma who was younger than these five brothers She was beautiful and delicate.

Dhanya merchant had a slave-boy named Chilat. Chilat had a fully developed body and was healthy. He was expert in looking after children and entertaining them.

दास-चेटक · उसकी शैतानी

सूत्र ३ : तए णं से दासचेडे सुंसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था। सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं दारएहिं य दारियाहि य डिंभएहिं य डिंभयाहिं य कुमारएहिं य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे अभिरममाणे विहरइ।

सूत्र ३ : वह दासपुत्र चिलात बालिका सुंसुमा की देखरेख के लिए नियुक्त किया गया। चिलात बालिका सुंसुमा को गोद में लेता और अनेक लडके-लडकियों, बच्चे-बच्चियों और कुमार-कुमारियों के साथ खेलता रहता था।

CHILAT'S MISCHIEF

3. Slave boy Chilat was appointed to look after baby Sumsuma He used to pick up the infant and play with many children from the neighbourhood

सूत्र ४ : तए णं चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभिया य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वट्टए आडोलियाओ तेंदूसए पोत्तल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ, एवं अवहसइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ।

सूत्र ४ : चिलात खेलते समय उन बच्चों में से किसी की कौड़ियाँ ले लेता तो किसी के वर्तरु (लाख के गोले), किसी की गेंद, किसी का डण्डा, किसी की गुड़िया आदि छीन लेता था। वह उन बच्चों के आभरण, माला और अलंकार भी चुरा लेता था। यही नहीं, वह उन बच्चो में से किसी पर क्रोध करता, किसी की हँसी उड़ाता, किसी को ठग लेता, किसी की भर्त्सना, किसी की तर्जना करता और किसी को मारता-पीटता रहता था।

4. While playing with children Chilat would snatch playthings like shells, shellac balls, balls, sticks, dolls, etc. from the boys and girls He would also steal the necklaces and other ornaments from the children Not only this, he used to shout at some children, and tease, cheat, insult, molest, and beat others.

सूत्र ५ : तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारा य कुमारिया य रोयमाणा य कंदमाणा य तिप्पमाणा य सोयमाणा य विलवमाणा य साणं-साणं अम्मा-पिऊण णिवेदेंति।

तए णं तेसिं बहूणं दारगाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति।

सूत्र ५ . तब वे बहुत से बच्चे रोते, चिल्लाते, शोक करते, आँसू बहाते और विलाप करते हुए अपने-अपने माता-पिता के पास जाकर चिलात की शिकायत करते थे।

बच्चो के माता-पिता धन्य सार्थवाह के पास जाकर खेद भरे वचनो मे भरे गले से उलाहना देते हुए अपना दु:ख प्रकट करते और रोते-रोते धन्य सार्थवाह से शिकायत करते थे।

5. At this the children wept, shrieked, became sad, cried, and went to their parents to report the ill-treatment by Chilat.

The parents of these children came to Dhanya merchant and reported to him with regret, complained in choked voice, and expressed their sorrow with tears in their eyes

सूत्र ६ तए ण धण्णे सत्थवाहे चिलाय दासचेड एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो णिवारेति, णो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमइ। तए ण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ।

सूत्र ६ · धन्य सार्थवाह ने इस धृष्टता के लिए चिलात दास पुत्र को बार-बार मना किया समझाया, पर वह माना नही। धन्य सार्थवाह के रोकने पर भी चिलात उन बच्चो को विभिन्न प्रकार से सताता रहा, उनको डाँटता रहा।

6. Dhanya merchant admonished Chilat for all this mischief and told him many a time to behave himself In spite of all this Chilat continued to torture and mistreat the children

सूत्र ७ · तए णं ते बहवे दारगा य दारियगा य डिंभगा य डिंभिया य कुमारा य कुमारिया य रोवमाणा य जाव अम्मापिऊणं णिवेदेंति।

तए णं ते आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं णिवेदेंति।

सूत्र ७ : इस पर बच्चों ने रोते कलपते फिर अपने माता-पिता से चिलात की शिकायत की।

बच्चों के माता-पिता इस स्थिति से एकदम क्रुद्ध, रुष्ट और कुपित हो गये और प्रचण्ड क्रोध से जलते हुए पुन· धन्य सार्थवाह के पास गये। वहाँ पहुँचकर उन्होंने खीज भरे वचनो मे सारी बात धन्य सार्थवाह को बताई।

7. When this continued the children again complained to their parents crying.

The parents of these children got annoyed, angry and furious and they went to Dhanya merchant seething with anger They explained everything to Dhanya merchant expressing their extreme displeasure

दास-चेटक का निष्कासन

सूत्र ८ : तए णं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं दारियाणं डिंभयाणं डिंभियाणं कुमारगाण कुमारियाणं अम्मापिऊणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, उद्धंसइ, णिब्भच्छेइ, णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहि तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ।

सूत्र ८ . बच्चो के माता-पिताओ की बाते सुनकर धन्य सार्थवाह एकदम कुपित हो गया। उसने चिलात को ऊँचे-नीचे शब्दो मे फटकारा, उसका तिरस्कार किया, भर्त्सना की, धमकी दी, तर्जना की, खूब खरी-खोटी सुनाकर ताडना की और अपने घर से बाहर निकाल दिया।

CHILAT FIRED

8. When Dhanya merchant listened to the complaints from the parents of the children he lost his temper He expressed his anger by uttering angry words in low and high pitched voice In the same manner he insulted, deplored, warned and rejected Chilat. And at last, cursing and shouting, he kicked Chilat out of his house

सूत्र ९ तए ण से चिलाए दासचेडे साआ गिहाओ णिच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडए जाव पहेसु य देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरएसु य सुहसुहेण परियट्टइ।

तए णं चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जपसगी चोज्जपसंगी मंसपसगी जूयप्पसंगी वेसापसगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था।

सूत्र ९ · घर से तिरस्कार पूर्वक निकाला हुआ चिलात राजगृह नगर में श्रृंगाटकों आदि विभिन्न पथो पर, देवालयो मे, सभाओ मे, प्याउओं मे, द्यूत-गृहो में, वेश्या-गृहो मे तथा मदिरालयो मे आनन्द मनाता हुआ भटकने लगा।

जब उस दासपुत्र को कोई रोकने-टोकने वाला ही नहीं रहा तो वह निरकुश, स्वेच्छाचारी, मदिरालुब्ध, चोर, माँसाहारी, जुआरी, वेश्याचारी, परस्त्री भोगी तथा अन्य दुराचारो मे आसक्त हो गया।

24
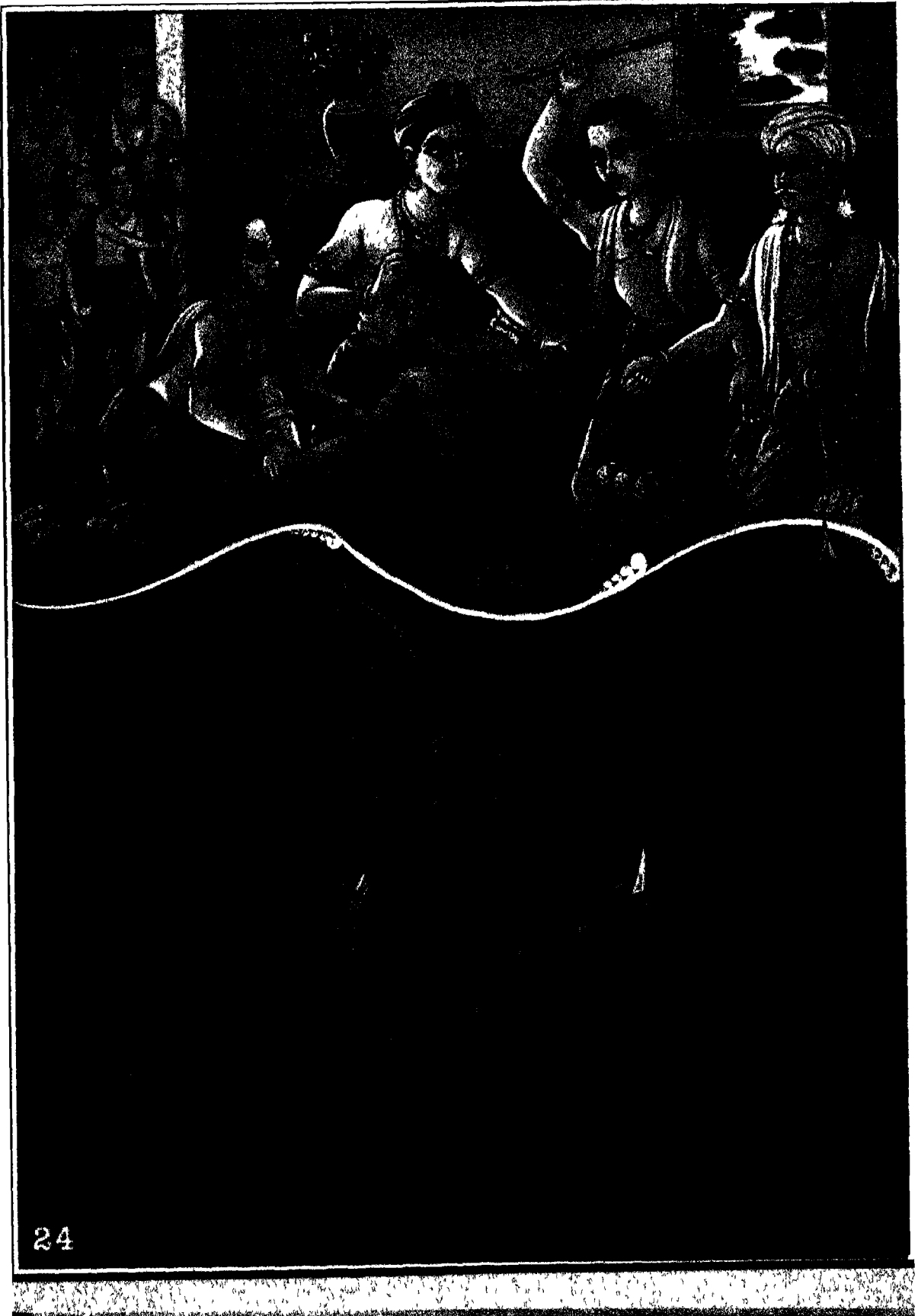
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

चिलात द्वारा सुंसुमा का अपहरण

चित्र २४

१ धन्य सेठ की पुत्री सुसुमा की देखभाल के लिए दासपुत्र चिलात को नियुक्त किया गया। किन्तु वह बहुत ही चचल व दुष्ट स्वभाव का था। पडौसी आये दिन उसकी शिकायत लेकर आते, जिससे परेशान होकर सेठ धन्य व उसके पुत्रो ने उसे बहुत मारा-पीटा और धिक्कार कर घर से निकाल दिया।

२ दुष्ट चिलात सिह-गुफा चोरबस्ती के विजय तस्कर की टोली मे जा मिला और उसकी मृत्यु के पश्चात् वही चोर पल्ली का नायक बन गया। बदला लेने के लिए एक रात्रि मे उसने सेठ के भवन पर डाका डाला। अपने साथियो से कहा–"इसका धन-माल लूटकर तुम ले लो, केवल सुसुमा कन्या मुझे चाहिए।" सेठ व उसके पुत्र भवन मे एक ओर छुप गये। चोरो ने भालो व लौह-दण्डो से मजबूत दरवाजे तोडकर धन-सम्पत्ति लूट ली व चिलात चोर सुसुमा का अपहरण करके ले गया। (अठारहवाँ अध्ययन)

CHILAT ABDUCTS SUMSUMA

ILLUSTRATION · 24

1 Dhanya merchant appointed a servant named Chilat to look after his daughter Sumsuma Chilat was cruel and mischievous by nature and used to torture the children of the neighbourhood The neighbours regularly complained of this to Dhanya One day Dhanya got extremely annoyed and he beat up Chilat and fired him

2 Chilat took refuge with thief chieftain Vijaya When Vijaya died Chilat became the chieftain Vengeful Chilat one day looted the house of Dhanya merchant He asked the other thieves to take all the wealth as he only wanted Sumsuma for himself The merchant and his sons hid themselves in a remote corner of the house The thieves used their spears and rods to break open gates and looted all the wealth Chilat abducted Sumsuma and left

(CHAPTER - 18)

9. After being insulted and expelled from home Chilat started wandering around various roads and crossings, temples, halls, water huts, casinos, brothels and bars in Rajagriha and enjoying himself

When there was no one to restrain him, he became vagrant, wayward, a drunkard, a thief, a gambler, a prostitutor, an adulterer, and debased

सूत्र १० : तए णं रायगिहस्स णगरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसिभाए सीहगुहा नाम चोरपल्ली होत्था, विसमगिरिकडग-कोडब-संनिविट्ठा वंसीकलक-पागार-परिक्खित्ता छिण्ण-सेलविसमप्पवाय-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखडी विदितजणणिग्गम-पवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभ–जलपेरता सुबहुस्स वि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था।

सूत्र १० राजगृह नगर के आसपास के क्षेत्र मे दक्षिणपूर्व दिशा की ओर सिंह गुफा नामकी एक चोर-बस्ती थी। वह पर्वत प्रदेश के बीचो बीच दुर्गम स्थल पर बसी हुई थी और बॉस की झाडियों से घिरी हुई थी। उसके चारो ओर प्राकृतिक खाइयाँ व गर्त गड्ढे थे। उसमे मुक्त आवागमन के लिए एक ही द्वार था किन्तु पलायन करने के लिए अनेक छोटे-छोटे द्वार थे। उस बस्ती के आसपास कही पानी उपलब्ध नही था, केवल बस्ती मे ही पानी था। चोरी का माल जप्त करने के लिए आई हुई सेना भी उस बस्ती का कुछ न बिगाड सकती। ऐसी थी वह चोर बस्ती।

10. In the outskirts of Rajagriha, in the south-eastern direction there was a hideout of thieves known as Simha-Gupha It was located at an impregnable spot in a hilly terrain and was surrounded by bamboo thickets Around it there were natural gorges, trenches, and ditches It had only one known gate for normal movement but many small and concealed passages for escape There was no source of water in the general area except the hideout proper Even armed forces coming to investigate and apprehend could not harm this hideout Such was Simha-Gupha

सूत्र ११ तत्थ ण सीहगुहाए चोरपल्लीण विजए णामं चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्ह चोरसयाणं आहेवच्च जाव विहरइ।

सूत्र ११ उस सिह गुफा चोर बस्ती मे विजय नाम का चोर सेनापति रहता था। वह अधार्मिक (अधर्म से जीविका करने वाला) तथा सर्वदोष सम्पन्न था और अपने पाप कर्मों के कारण अधर्म की ध्वजा के समान था। अनेक नगरों मे उसकी बदनामी फैली थी। वह शूरवीर, दृढ़ प्रहारी (प्रहार करने में कठोर) साहसी और शब्दवेधी था। सिंह गुफा के पाँच सौ चोरो पर उसका एक छत्र आधिपत्य था।

11. In Simha-Gupha lived the leader of thieves, Vijay. He was absolutely corrupt and had all the vices Due to his extreme indulgence in sinful

activities he was like the flag of debasement His notoriety had reached numerous towns. He was brave, ruthless, courageous, and an expert marksman He was the undisputed leader of the five hundred thieves of Simha-Gupha

सूत्र १२ : तए ण से विजए तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसभगायगाण य जूयकराण य खंडरक्खाण य अन्नेसि च बहूणं छिन्न-भिन्न बाहिराहयाण कुडंगे यावि होत्था।

सूत्र १२ वह चोर सेनापति, विजय तस्कर, अन्य अनेक चोरो परस्त्रीगामियो, ग्रन्थि भेदको (धरोहर हडपने वाले), सधिच्छदेको (सेध लगाने वालो), क्षात्रखनको (दीवारे तोडकर चोरी करने वालो), राजद्रोहियो, ऋण लेने वालो, बालहत्यारो, विश्वासघातियो, जुआरियो, अतिक्रमणकारियो तथा अन्य विभिन्न प्रकार के राजदण्डित अपराधियो का उसी प्रकार आश्रयदाता था जैसे बॉस की झाडी होती है।

12. Like a bamboo thicket he provided protection and refuge to all sorts of branded and escaped criminals These included thieves, womanizers, bamboozlers (Granthibhedak), housebreakers (Sandhicchedak), wall-breakers (Kshatrakhanak), rebels, insolvents, infanticides, betrayers, gamblers, transgressors, and other persons with criminal records

सूत्र १३ तए ण से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स नगरस्स दाहिणपुरच्छिम जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बदिग्गहणेहि य पंथकोट्टणेहि य खत्तखणणेहि य ओवीलेमाणे ओवीलेमाणे विद्धसेमाणे-विद्धसेमाणे णित्थाण णिद्धणं करेमाणे विहरइ।

सूत्र १३ · विजय तस्कर नामका वह चोर सेनापति राजगृह नगर के दक्षिणपूर्व मे स्थित जनपद प्रदेश को ग्राम-घात, नगर-घात, गायो का अपहरण, लोगो का अपहरण, पथिको को लूटना-पीटना तथा सेध लगाना आदि उपद्रवो द्वारा उत्पीडित और विध्वस करता रहता था और लोगो को स्थानहीन आश्रयहीन) व धनहीन (दरिद्र) करता रहता था।

13 That leader of the thieves, the smuggler Vijay, habitually indulged in activities like raiding villages, raiding towns, driving away cattle, kidnapping people, looting and beating wayfarers, and house breaking With these activities he caused torment and havoc and deprived citizens of their wealth and peaceful living

चोर-सेनापति की शरण में

सूत्र १४ : तए णं से चिलाए दासचेडे रायगिहे णयरे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणिएहि य जूयकरेहि य परब्भवमाणे परब्भवमाणे रायगिहातो नयराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजय चोरसेणावइं उपसंपिज्जत्ता णं विहरइ।

सूत्र १४ · उधर राजगृह नगर के अनेक आशकित लोगो, जिनमे धन, स्त्री, पुत्र आदि के अपहरण की आशका रखने वाले तथा धनाढ्य व जुआरी सम्मिलित थे, उनके द्वारा तिरस्कृत होकर, चिलात दास पुत्र राजगृह नगर से बाहर निकल गया। वह सिह गुफा में चोर सेनापति विजय के पास जा पहुँचा और उसका शरणागत होकर रहने लगा।

UNDER VIJAY'S PROTECTION

14. Pushed out by many citizens of Rajagriha including the wealthy, habitual gamblers, and others apprehensive of being deprived of their wealth and family, Chilat left the city He went to the Simha-Gupha and joined ranks with thief-chieften Vijay

सूत्र १५ तए ण से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्ग-असि-लट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था। जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउं वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि कूवियबल हयमहियं जाव पडिसेहेइ, पडिसेहित्ता पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ।

सूत्र १५ · कालान्तर मे दासपुत्र चिलात विजय का मुख्य खड्ग व दण्डधारी बन गया। जब भी विजय किसी ग्रामादि को लूटने या अन्य यात्रियो की लूट-खसोट की मुहिम पर जाता था तब चिलात चोरी पकडने आई सेना को हराकर तितर-बितर करता था और लूट का माल लेकर सिह गुफा मे सकुशल लौट आता था।

15. With the passage of time Chilat became the second in command of chief Vijay Whenever Vijay went out on a mission to raid some village or a caravan, Chilat led the forces that engaged the state forces, scattered them, and brought back the loot safely to Simha-Gupha

सूत्र १६ : तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ च चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ।

सूत्र १६ : इस बीच विजय चोर सेनापति ने चिलात तस्कर को अनेक चोर-विद्याएँ, चोर मत्र, चोर माया और निकृतियाँ (छल-कपट) सिखला दिये।

16. During this period chief Vijay taught Chilat many skills, mantras, illusions, and tricks useful to thieves

सूत्र १७ : तए णं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइं कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। ताइ पंच चोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया महया इड्ढी-सक्कार-समुदएण णीहरण करेंति, करित्ता बहूइ लोइयाइं मयकिच्चाइ करेइ, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था।

सूत्र १७ कालान्तर मे विजय चोर सेनापति की मृत्यु हो गई। उसके दल के पॉच सौ चोरो ने बहुत ऋद्धि (धन व्यय करके) सत्कार व समारोह पूर्वक उसका अन्तिम सस्कार व मृतक-कृत्य सम्पन्न किए। समय बीतने के साथ-साथ उनका शोक भी समाप्त हो गया।

17. After some time chief Vijay died The five hundred thieves of his gang performed his last rites with grandeur befitting his status With the passage of time they recovered from their sorrow

चिलात सेनापति बना

सूत्र १८ · तए णं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नन्नं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी-'एव खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा सजुत्ते, अयं च ण चिलाए तक्करे विजएण चोरसेणावइणा बहुओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, त सेय खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए।' त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता चिलाय तक्कर तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिचति। तए ण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ।

सूत्र १८ · इसके बाद उन सभी पॉच सौ चोरो ने एकत्र हो मत्रणा की-"देवानुप्रियो ! हमारे चोर सेनापति विजय की मृत्यु हो गई है। उसने इस चिलात तस्कर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सिखलाई हैं। अत अच्छा होगा कि चिलात तस्कर का सिह गुफा नामकी चोर बस्ती के चोर-सेनापति के रूप में अभिषेक किया जाये।" सभी इस प्रस्ताव से सहमत हो गये और चिलात का चोर सेनापति के रूप मे अभिषेक कर दिया। चोर सेनापति बनकर चिलात अपने पूर्वगामी विजय के समान ही अधार्मिक, क्रूर, और पाप-कृत्यो मे लिप्त हो जीवन बिताने लगा।

CHILAT BECOMES CHIEF

18. Now the five hundred thieves collectively deliberated, "Beloved of gods! Our leader, chief Vijaya, has died He has taught Chilat many arts and skills of our trade As such, it would be proper if we choose Chilat and formally appoint him as our leader" They took a unanimous decision and formally appointed Chilat as their leader. having become the leader Chilat conveniently adopted the evil, cruel and sinful life style of the deceased chief Vijay.

सूत्र १९ तए णं से चिलाए चोरसेणावई चोरणायगे जाव कुडंगे यावि होत्था। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स नगरस्स दाहिण पुरच्छिमिल्लं जणवयं जाव णित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ।

सूत्र १९ चिलात चोरो का नायक और सबका आश्रयदाता हो गया। सिंहगुफा मे अपने अधीन पाँच सौ चोरों के साथ रहता हुआ विजय की तरह राजगृह के दक्षिण-पूर्व के प्रदेश को आतंकित करने लगा। (विस्तृत विवरण पूर्व सूत्र १२-१३ के समान)।

19. Chılat became the leader and protector of all the thieves Living in the Simha-Gupha with his gang of five hundred thieves Chilat started terrorizing the area south-east of Rajagriha (details as para 12, 13)

सूत्र २० . तए णं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइ विपुल असण पाण खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता पच चोरसए आमतेइ। तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धि विपुलं असणं पाण खाइम साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे वसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूव-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेण सक्कारेइ, समाणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी–

सूत्र २० एक दिन चिलात चोर सेनापति ने विपुल खाद्य सामग्री तैयार करवाकर अपने आधीन पाँच सौ चोरो को भोजन के लिए आमन्त्रित किया। स्नानादि के बाद तैयार हो भोजन मण्डप मे उनके साथ भोजन तथा विभिन्न प्रकार की मदिरा आदि का आस्वादन, विस्वादन, वितरण एव परिभोग किया। फिर सभी आमन्त्रित पाँच सौ चोरों का यथेष्ट धूप-गंध-माला-अलकार आदि से विधिवत् सत्कार-सम्मान किया और उनसे बोला–

20. One day he made arrangements for a great feast and invited all the members of his gang He himself got ready after his bath and joined them in the pavilion to taste, relish, distribute, and enjoy the food and a variety of beverages After the feast he formally honoured the guests with perfumes, flowers, dresses, ornaments and other gifts and said —

धन्य सार्थवाह के घर की लूट

सूत्र २१ : एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे णयरे धण्णे णामं सत्थवाहे अड्ढे। तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसुमा णामं दारिया यावि होत्था अहीणा जाव सुरूवा। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो। तुब्भं विपुले धण-कणग जाव सिलप्पवाले, ममं सुंसुमा दारिया।'

तए णं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति।

सूत्र २१ "देवानुप्रियो ! राजगृह नगर मे धन्य नामका एक धनाढ्य सार्थवाह रहता है। उसकी पुत्री, भद्रा की आत्मजा और पॉच पुत्रो के बाद जन्मी हुई सुसुमा नामक एक पुत्री है। वह पंचेन्द्रिय परिपूर्ण तथा सुन्दर रूप वाली है। हे देवानुप्रियो ! हम लोग चलकर धन्य सार्थवाह को लूटें। उस लूट मे मिलने वाला सारा धन, सोना आदि माल तुम्हारा होगा, केवल सुंसुमा नाम की कन्या मेरी होगी।"

सभी पॉच सौ चोरो ने चिलात का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

RAID ON DHANYA'S HOUSE

21. "Beloved of gods! A wealthy merchant named Dhanya lives in Rajagriha

Dhanya and his wife Bhadra have a daughter named Sumsuma who was born after her five brothers She is beautiful and perfectly proportioned Beloved of gods! We should go and raid Dhanya merchant All the loot including gold and wealth will be yours and only Sumsuma will be mine "

All the five hundred thieves accepted Chilat's proposal

सूत्र २२ : तए ण से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पचहिं चोरसएहिं सद्धि अल्ल चम्म दुरूहइ, पच्चावरण्हकालसमयंसि पचहि चोरसएहिं सद्धि सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइय-गोमुहिएहि फलएहिं, णिक्कट्ठाहि असिलट्ठीहि, अंसगएहि तोणेहिं, सज्जीवेहिं धणूहि, समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहि दाहाहिं, ओसारियाहि ऊरुघटियाहिं, छिप्पतूरेहि वज्जमाणेहि महया महया उक्किट्ठसीहणाय जाव समुद्दरवभूय करेमाणा सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवसं खवेमाणो चिट्ठइ।

सूत्र २२ तब पॉच सौ साथियो सहित शुभ शकुन के निमित्त चिलात चोर सेनापति गीले चमडे के आसनो पर बैठा। दिन के अन्तिम प्रहर मे वे सभी कवच धारण कर तैयार हुए। आयुध और प्रहरण धारण किये। गोमुख ढाल लिए और तलवारे म्यान से बाहर निकाल ली। कन्धो पर तर्कश लटकाये और धनुष पर प्रत्यचा चढा कर बाण बाहर निकाल लिए। बर्छियॉ और भाले उछालने लगे। जॉघो पर बॉधी हुई घण्टियॉ लटका ली। और तब बाजे बजने लगे। उच्च स्वर मे तीव्र सिहनाद और बोलने के संयुक्त निनाद से ऐसा लगने लगा जैसे यहॉ समुद्र में लहरो का गर्जन हो रहा हो। ऐसे कोलाहल के साथ वह समूह सिह गुफा से बाहर निकला और राजगृह की ओर चला। नगर से कुछ दूर एक सघन वन में वे सब चोर प्रवेश कर गये और सूर्यास्त की प्रतीक्षा करने लगे।

22 After this, for the purpose of an auspicious launching of the project, Chilat and his gang of five hundred thieves sat on wet leather mattresses.

During the last quarter of the day they all got ready after putting on their armour. They equipped themselves with various weapons and other tools of their trade. Taking cow-head shields and bare swords with them, they hung quivers on their shoulders, stringed their bows, and took arrows in their hands. They started tossing spears and lances in air They also tied bells on their thighs and started blowing trumpets. Their loud hails and exchanges produced a tumultuous sound like the thunder of waves. With such an uproar the gang came out of Simha-Gupha and proceeded toward Rajagriha. A short distance from Rajagriha, they entered a dense jungle and waited for sunset.

सूत्र २३ : तए णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसंतपडिनिसंतंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं ऊरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहे नयरे पुरच्छिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ, परामुसित्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूइ तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेइ, अच्छोडित्ता कवाड विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिहं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयासी–

सूत्र २३ : आधी रात के समय जब चारो ओर शान्ति और सन्नाटा छा गया तब चिलात अपने पाँच सौ चोर साथियो सहित, अपनी प्रतिरक्षा हेतु ढाल, भालू की खाल, घण्टिया आदि शरीर पर बाँधे, राजगृह नगर के पूर्व दिशा वाले द्वार पर पहुँचा। वहाँ चिलात चोर सेनापति जल की मशक में से एक अंजलि जल लेकर आचमन कर शुद्ध हुआ, और ताला खोलने की विद्या का आह्वान कर द्वार पर अभिमन्त्रित जल छिडका। द्वार खुल गया और सब चोर नगर में घुस गये। चिलात ने ऊँचे स्वर मे घोषणा की–

23. At midnight when there was peace and quiet all around, Chilat and his gang arrived at the eastern gate of Rajagriha. They had tied shields, bear-skins, and bells on their body for protection At the city gate Chilat took water in his cupped hand from a leather canteen, washed his hands, and invoking the power that opens locks, sprinkled the energized water on the gate The gate opened and all the thieves entered the city Once in the city Chilat uttered a challenge loudly —

सूत्र २४ : 'एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे, तं जे णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे, से णं निग्गच्छउ' त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिहं विहाडेइ।

सूत्र २४ : "देवानुप्रियो ! मैं चिलात नामक चोर सेनापति अपने अधीन पाँच सौ चोरों के साथ सिंह गुफा नामक चोर बस्ती से धन्य सार्थवाह का घर लूटने आया हूँ। जो नई माता का दूध पीना चाहता हो (मरकर दुबारा जन्म लेना चाहता हो) वह निकल कर मेरा सामना करे।" इस प्रकार ललकार कर वह धन्य सार्थवाह के घर की तरफ आया और उसके घर का द्वार खोला।

24. "Beloved of gods! I, thief-chieften Chilat with my gang of five hundred thieves, have come from the hide-out of thieves known as Simha-Gupha to raid the house of Dhanya merchant Whoever wants to suck the milk of a new mother (wants to die and be reborn) may come out and face me." With this challenge he came to the house of Dhanya merchant and opened the gate

सूत्र २५ : तए णं से धण्णे सत्थवाहे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए, तत्थे, पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ।

तए णं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहुं धण-कणग जाव सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र २५ धन्य सार्थवाह ने जब देखा कि उसका घर लूटने के लिए चिलात चोर सेनापति अपने पाँच सौ चोरो के साथ घुस आया है तो वह भयभीत हो गया और घबराकर अपने पाँचो पुत्रो के साथ एकान्त में जाकर छुप गया।

चिलात ने धन्य के घर में लूट मचाई। बहुत सा धन, चाँदी, सोना आदि तथा सुसुमा कन्या को लेकर उसने राजगृह से निकल सिंह गुफा की ओर प्रस्थान किया।

25. When Dhanya merchant saw that chief Chilat with his gang of thieves had entered his house he was filled with fear and panic He ran away and with his five sons hid himself at a secure place

Chilat raided the house. He collected heaps of wealth, silver, and gold and the merchant's daughter Sumsuma, came out of Rajagriha, and proceeded towards Simha-Gupha

नगररक्षकों के समक्ष फरियाद

सूत्र २६ : तए णं से धण्णे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहु धण-कणगं सुंसुमं दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त महत्थ जाव पाहुडं उवणेइ, उवणित्ता एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धण-कणगं सुंसुमं च दारियं गहाय जाव

पडिगए, तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमादारियाए कूवं गमित्तए। तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! से विपुले धण-कणगे, ममं सुंसुमा दारिया।

सूत्र २६ : चोरो के चले जाने के बाद धन्य सार्थवाह अपने घर लौटा। जब उसे पता चला कि धन के साथ ही उसकी पुत्री सुंसुमा का भी अपहरण हो गया है तो वह बहुमूल्य भेंट लेकर नगररक्षकों के पास गया और बोला–"देवानुप्रियो ! चिलात नाम के चोर सेनापति ने मेरा घर लूट लिया है और मेरी पुत्री का भी अपहरण कर लिया है। अतः हम सुंसुमा को छुड़ाने जाना चाहते हैं। वहाँ जो भी धन आदि वापस मिलेगा वह सब तुम लोगो को दूँगा, मुझे केवल मेरी पुत्री चाहिए।"

REPORT TO THE GUARDS

26. After the thieves left, Dhanya merchant returned to his house When he found that along with his wealth his daughter Sumsuma had also been abducted he collected valuable gifts and went to the city guards. He reported to the head of the guards and requested, "Beloved of gods ! Chief Chilat has raided my house and with my wealth he has also lifted my daughter Sumsuma We want to go to her rescue I will give you all the wealth we recover, I want only my daughter"

सूत्र २७ : तए ण ते णयरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया महया उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था।

सूत्र २७ : नगररक्षको ने धन्य की बात सुनी और स्वीकार की तथा कवच, आयुध, प्रहरण आदि धारण कर तैयार हो गये। फिर उच्च स्वर मे समुद्र गर्जना जैसा सिंहनाद करते हुए राजगृह नगर से बाहर निकले और चिलात सेनापति के पास पहुँच उससे युद्ध करने लगे।

27. The guards heard Dhanya merchant's request and accepted it They all got ready after putting on breast plates, weapons, armour, etc With loud hails like the thunder of waves they came out of Rajagriha, caught up with Chief Chilat and attacked his gang

सूत्र २८ : तए णं णगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहंति। तए णं ते पंच चोरसया णगरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धण-कणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था।

तए णं ते णयरगुत्तिया तं विपुलं धण-कणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति।

सूत्र २८ : नगररक्षकों ने चिलात चोर सेनापति और उसके साथियो को मार-पीट कर पराजित कर दिया। उसके साथी पराजित होने पर लूट का माल वही फेक कर इधर-उधर भाग गये।

नगररक्षकों ने लूट का वह सारा माल एकत्र कर लिया और उसे लेकर नगर की ओर लौट आये।

28. The battalion of guards fought and defeated the gang The gang abandoned the loot and ran helter-skelter

The guards collected all the loot and returned to the city

सूत्र २९ · तए णं से चिलाए त चोरसेण्ण तेहिं नगरगुत्तिएहिं हयमहिय पवर-वीरघाइय-विवडियचिध-धय-पडागं जाव किच्छोवगयपाणं दिसोदिसि पडिसेहिंय भीते तत्थे सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठे।

तए णं धण्णे सत्थवाहे सुंसुम दारियं चिलाएणं अडिविमुहिं अवहीरमाणिं पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध-वम्मियकवए चिलायस्स पदमग्गविहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ।

सूत्र २९ : चिलात चोर ने जब देखा कि नगररक्षको ने उसके साथियो को हरा दिया है, उसके श्रेष्ठ वीर मारे गये है, ध्वजा-पताका नष्ट हो गई है, प्राण सकट मे पड गये है, और दस्यु तितर-बितर हो गये है, तो वह भय से उद्विग्न हो गया। फिर वह सुसुमा को साथ ले एक दुर्गम और लम्बी अटवी में घुस गया।

जब सुंसुमा को अटवी मे ले जाते चिलात पर धन्य सार्थवाह की दृष्टि पडी तो वह अपने पाँचो पुत्रों को साथ ले कवचादि पहन चिलात के पद चिह्न खोजता हुआ उसके पीछे हो लिया। वह गर्जना करता, चुनौती देता, पुकारता, तर्जना करता और त्रस्त करता हुआ चिलात का पीछा करने लगा।

29. When Chilat saw that the guards had defeated his gang, with the best of his warriors dead, his flag destroyed, his life in danger, and the gang disintegrated and dispersed, he panicked He took along Sumsuma and entered a vast and wild terrain

When Dhanya merchant saw Chilat entering the wilderness with Sumsuma he took his five sons along and followed Chilat's trail While on the trail of the thief he kept on roaring, challenging, calling, abusing, and insulting the thief in order to instill fear in Chilat

सुंसुमा का शिरच्छेदन

सूत्र ३० : तए णं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्धं समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अपरक्कमे अवीरिए जाहे णो संचाएइ सुंसुमं

दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे संते तंते परितंते नीलुप्पलं असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता तं गहाय तं अगामियं अडविं अणुपविट्ठे।

सूत्र ३० : जब चिलात ने देखा कि धन्य सार्थवाह अपने पाँच पुत्रों सहित अस्त्र-शस्त्र से सज्जित हो उसका पीछा कर रहा है तो वह निस्तेज, निर्बल, पराक्रमहीन और वीर्यहीन हो गया। जब वह थक गया और ग्लानि से श्रान्त हो गया तो उसे लगा कि वह सुंसुमा को साथ ले जाने में समर्थ नहीं है। उसने तत्काल नीलकमल जैसी नीली तलवार हाथ में ली और सुसुमा का सर काट लिया। वह कटा हुआ सर हाथ में लिए चिलात उस दुर्गम अटवी मे आगे बढ़ गया।

BEHEADING OF SUMSUMA

30. When Chilat saw Dhanya merchant and his five sons, well equipped with weapons, following him, he lost his vigour, strength, power, and valour. When he got tired and depressed with failure he realized that he was not capable of carrying Sumsuma along He at once took out a blue sword and beheaded Sumsuma Taking the disjointed head he went further into the wilderness

सूत्र ३१ : तए णं चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए।

सूत्र ३१ · चिलात चोर उस दुर्गम अटवी में भटक गया और चोर बस्ती नही पहुँच सका। उसने भूख-प्यास से त्रस्त होकर वही दम तोड़ दिया।

31. Chilat lost his way in the wilderness and could not reach the hideout He got emaciated due to thirst and hunger and died.

सूत्र ३२ · एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव वण्णहेउं जाव आहारं आहारेइ, से ण इहलोए चेव बहूणं समणाणं समणीणं सावयाणं हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से चिलाए तक्करे।

सूत्र ३२ : हे आयुष्मान् श्रमणो ! हमारे जो साधु-साध्वी दीक्षा लेने के बाद वात-पित्तादि अशुचि पदार्थों के भण्डार इस नाशवान औदारिक शरीर के सौदर्य हेतु आहारादि चेष्टाओं में लिप्त हो जाते हैं वे इस लोक में अनेक श्रमण-श्रमणियों तथा श्रावक-श्राविकाओं की अवहेलनाके पात्र बनते हैं और उसी प्रकार संसार अटवी मे फँस कर दुःख भोगते हैं, जैसे चिलात चोर ने भोगा।

32. Long-lived Shramans! In just this way, those of our ascetics who, after getting initiated, indulge in activities like consuming rich food etc in order to pamper this mortal physical body which is a storehouse of foul waste matter like wind, phlegm, and faeces, become the objects of neglect and disrespect of

many ascetics and lay-persons Moreover, lost in the wilderness of cycles of rebirth, they also suffer misery as Chilat did

धन्य का शोक

सूत्र ३३ : तए ण से धण्णे सत्थवाहे पचहि पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं परिधाडेमाणे परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य सते तंते परितते नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहित्थि गिण्हित्तए। से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविएल्लिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुंसुमं दारियं चिलाएण जीवियाओववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्ते व चंपगपायवे निव्वत्तमहेव्व इंदलट्ठी विमुक्कबंधणे धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिए।

सूत्र ३३ धन्य सार्थवाह अपने पाँचों पुत्रो के साथ चिलात के पीछे दौडता-दौडता भूख-प्यास से आकुल-व्याकुल हो गया। जब वह चिलात को पकडने मे असफल हो गया तो वहाँ से लौट पडा। वह उस स्थान पर पहुँचा जहाँ चिलात ने सुसुमा का वध कर दिया था। वहाँ धन्य सार्थवाह ने देखा कि सुसुमा का वध हो गया है। उसे जीवन रहित देखा, देखते ही वह कुल्हाडे से कटे चम्पा के पेड तथा उत्सव हो चुकने के बाद टूटी हुई ध्वजा के समान धडाम से धरती पर गिर पडा।

GRIEF OF DHANYA

33. Following Chilat with his five sons, Dhanya merchant was in a state of distress due to thirst and hunger When he could not apprehend Chilat he turned back and came to the spot where Chilat had dismembered Sumsuma When he saw that his daughter had been murdered he collapsed on the ground like a Champa tree cut by an axe or a flag after a festival is over

सूत्र ३४ : तए ण से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहि अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कदमाणे विलवमाणे महया महया सद्देणं कुहकुहस्स परुन्ने सुचिर काल वाहमोक्ख करेइ।

सूत्र ३४ जब धन्य सार्थवाह और उसके पाँचो पुत्रों को होश आया तो वह रोने लगा, विलाप करने लगा और ऊँचे स्वर मे क्रन्दन करने लगा। वह बहुत देर तक रोते-विलपते आँसू बहाते रहे।

34. When Dhanya merchant and his sons regained consciousness they started weeping, crying and wailing They wept and shed tears for quite some time

सूत्र ३५ तए ण से धण्णे पंचहिं पुत्तेहिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य पराभूए समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेति, करित्ता संते तंते परितते णिव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेइ।

सूत्र ३५ : चिलात चोर सेनापति के पीछे दौड़ने-भागने के कारण धन्य और उसके पुत्र भूख-प्यास से क्षीण हो गये और उस दुर्गम अटवी में चारों ओर जल की खोज करने लगे। खोजते-खोजते थक कर चूर हो जाने पर भी उन्हें उस दुर्गम अटवी में कहीं भी जल नहीं मिला।

35. Dhanya merchant and his sons became weak and emaciated due to running after Chilat without food and water. They started searching for a source of water all around. Even after an extensive search they failed to find even a drop of water anywhere in that wilderness and were totally exhausted.

प्राण-त्याग के प्रस्ताव

सूत्र ३६ : तए णं उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोएल्लया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणे सत्थवाहे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो। तए णं उदगं अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए। तं णं तुब्भे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मंसं च सोणियं च आहारेइ, आहारित्ता तेणं आहारेणं अवट्ठिद्धा समाणा तओ पच्छा इम अगामियं अडविं णित्थरिहिह, रायगिहं च संपाविहिह, मित्त-णाइय-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह।'

सूत्र ३६ : इस पर वे हार थक कर उस स्थल पर लौटे जहाँ सुंसुमा का वध हुआ था। धन्य सार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र को निकट बुला कर कहा–हे पुत्र ! सुसुमा के लिए चिलात के पीछे दौड़ते-दौड़ते भूख-प्यास से पीडित हो हमे इस अटवी में खाने-पीने को कुछ नही मिला। भोजन पानी के बिना हम राजगृह नही पहुँच सकते। अतः हे देवानुप्रिय ! तुम मुझे मार डालो और सब भाई मेरे रक्त-माँस से भूख-प्यास मिटाओ। फिर स्वस्थ होकर इस दुर्गम अटवी को पार कर राजगृह चले जाओ और स्वजनो, मित्रों, सम्बन्धिजनों आदि से मिलकर अर्थ, धर्म और पुण्य के भागी बनो।"

OFFERS OF SACRIFICE

36. At last they returned to the spot where Sumsuma's body was lying Dhanya merchant called his elder son and said, "Following Chilat we got into a state of distress due to thirst and hunger and we have now failed to find anything to eat or drink. Without food and water we cannot reach Rajagriha Therefore, Beloved of gods! You should kill me and you should all feed on my flesh and blood. When you regain your strength you should cross this

wilderness and go to Rajagriha. You should rejoin our family, relatives and friends, and enjoy wealth, follow religion, and gain piety."

सूत्र ३७ : तए णं से जेट्ठपुत्ते धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी-'तुब्भे ण ताओ ! अम्हं पिया, गुरु, जणया, देवयभूया, ठवका, पइट्ठवका, संरक्खगा, संगोवगा, तं कहं णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो ? तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं तातो ! ममं जीवियाओ ववरोवेह; मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं अडविं णित्थरह।' तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह।

सूत्र ३७ : धन्य सार्थवाह की यह बात सुनकर उसके ज्येष्ठ पुत्र ने कहा-"तात ! आप हमारे पिता हैं, गुरु है, जनक हैं, देवता-स्वरूप है, स्थापक है, प्रतिष्ठापक है, रक्षक हैं, और दुर्व्यसनों व विपत्तियों से बचाने वाले है। अत. हम आपका वध कैसे कर सकते हैं? कैसे आपके रक्त-माँस का आहार कर सकते है? हे तात ! आप मुझे जीवन रहित कर दे और मेरे रक्त मॉस का आहार कर इस दुर्गम अटवी को पार करे। स्वजनो-मित्रो के पास पहुँचकर अर्थ, धर्म और पुण्य के भागी बने।

37. After hearing this from Dhanya merchant, his eldest son said, "Father you are our progenitor, guru, founder, promoter, protector, defender from vices and afflictions, and also like a god to us How can we kill you? How can we feed on your flesh and blood? So, father! You should kill me and you and all my brothers should feed on my flesh and blood, cross this wilderness and go to Rajagriha You should rejoin our family, relatives and friends, and enjoy wealth, follow religion, and gain piety"

सूत्र ३८ . तए णं धण्णं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी-'मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुं देवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं तातो ! मम जीवियाओ ववरोवेह, जाव आभागी भविस्सह।' एव जाव पंचमे पुत्ते।

सूत्र ३८ यह सब सुन दूसरे पुत्र ने धन्य से प्रार्थना की-"हे तात ! हम गुरु और देव के समान बडे भाई का जीवन नष्ट नही करेंगे। आप तो मुझे जीवन रहित करके इस अटवी पार करे।" इसी प्रकार तीसरे, चौथे, और पाँचवे पुत्र ने भी अनुरोध किया।

38. Hearing all this the second son appealed to Dhanya merchant, "You should not kill our guru and god-like elder brother Instead, kill me and cross this wilderness " The third, fourth and fifth sons also made similar appeals

अन्तिम निर्णय

सूत्र ३९ : तए णं धण्णे सत्थवाहे पंचपुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंच पुत्ते एवं वयासी-'मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो, एस णं सुंसुमाए दारियाए सरीरे णिप्पाणे

जाव जीवविप्पजढे, तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुसुमाए दारियाए मस च सोणियं च आहारेत्तए। तए ण अम्हे तेण आहारेणं अवत्थद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो।'

सूत्र ३९ पॉचो पुत्रो के मन की बात जान कर धन्य सार्थवाह ने कहा–पुत्रो ! हम किसी को भी जीवन रहित न करे। सुसुमा का यह शरीर अब निष्प्राण, निश्चेष्ट और जीव द्वारा त्यागा हुआ है। अत सुसुमा के इस शरीर के मॉस और रक्त का आहार करके अपने प्राण बचाना हमारे लिए उचित होगा। इस भोजन से शक्ति आने पर हम राजगृह पहुँच सकेगे।

FINAL DECISION

39 After getting the views of all his five sons Dhanya merchant said, "Sons! None of us shall be killed Sumsuma's body has been abandoned by her soul and is now lifeless and still So, it is proper to feed on this body and save ourselves When we regain our strength with the help of this feeding we shall be able to reach Rajagriha

सूत्र ४० तए णं ते पच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेण एव वुत्ता समाणा एयमट्ठ पडिसुणेति। तए ण धण्णे सत्थवाहे पचहि पुत्तेहि सद्धि अरणि करइ, करित्ता सरग च करेइ, करित्ता सरएण अरणि महइ, महित्ता अग्गि पाडेइ, पाडित्ता अग्गि सधुक्खेइ, सधुक्खित्ता दारुयाइं पक्खेवेइ, पक्खेवित्ता अग्गि पज्जालेइ, पज्जालित्ता सुसुमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेइ।

सूत्र ४० पॉचो पुत्रो ने धन्य सार्थवाह की बात स्वीकार कर ली। धन्य ने पुत्रो की सहायता से अरणि काष्ठ मे गडहा किया और उसी काष्ठ की एक तीखी डण्डी तैयार की। डण्डी को गडहे मे डालकर मथन किया और घर्षण से अग्नि उत्पन्न की। फूँक मार कर लपटे उठाई और ऊपर से ईधन की लकडियॉ डाली। अग्नि प्रज्वलित हो जाने के बाद सुसुमा के शरीर का मॉस पकाया और उस मॉस तथा रक्त का आहार किया।

40. The five sons accepted the proposal of Dhanya merchant With the help of his sons Dhanya merchant drilled a hole in a log of wood and prepared a sharp edged rod of the same wood They put the rod in the hole and whirled it to produce sparks They blew the sparks into a flame and added more fuel-wood When the fire was ready they cooked pieces of meat from the body of Sumsuma and fed themselves

सूत्र ४१ तए ण आहारेण अवत्थद्धा समाणा रायगिह नयरिं सपत्ता मित्तणाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं अभिसमण्णागया, तस्स य विउलस्स धण-कणगरयण जाव आभागी जाया वि होत्था।

तए णं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था।

सूत्र ४१ · उस आहार से चलने योग्य होकर वे राजगृह नगर पहुँचे, अपने स्वजनो, मित्रो आदि से जाकर मिले, और विपुल धन, सोना आदि तथा धर्म, अर्थ, व पुण्य के भागी बने।

धन्य सार्थवाह ने सुसुमा के सभी लौकिक मृतक-कृत्य यथाविधि सम्पन्न किये और समय बीतने के साथ वह शोक रहित हो गया।

41. When they regained enough energy to move, they returned to Rajagriha, joined their family, relatives, and friends, and heartily enjoyed wealth, followed religion, and gained piety

Dhanya merchant performed the last rites of Sumsuma traditionally and with passage of time emerged from the sorrow

सूत्र ४२ तेण कालेण तेणं समएण समणे भगव महावीरे गुणसीलए चेइए समोसढे। से ण धण्णे सत्थवाहे सपत्ते, धम्म सोच्चा पव्वइए, एक्कारसगवी, मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ।

सूत्र ४२ काल के उस भाग मे श्रमण भगवान महावीर विहार करते हुए राजगृह के गुणशील चैत्य मे पधारे। उस समय धन्य सार्थवाह वन्दना करने के लिए उनके पास गया और धर्मोपदेश सुनकर दीक्षा ग्रहण कर ली। उसने क्रमश ग्यारह अगो का अध्ययन कर लिया। अन्तिम समय आने पर एक माह की सलेखना कर सौधर्म देवलोक मे जन्म लिया। वहाँ से च्यवन कर वह महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेगा और सिद्ध बनेगा।

42. During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in the Gunasheel Chaitya in Rajagriha Dhanya merchant went to pay homage After the discourse he got initiated In due course he studied the eleven canons When his end was near he took the ultimate vow of one month duration and embraced the meditative death He reincarnated as god in the Saudharm dimension From there he will descend in the Mahavideh area and get liberated

उपसंहार

सूत्र ४३ जहा वि य ण जबू ! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा, णो रूवहेउं वा, नो बल हेउ वा नो विसयहेउं वा, सुंसुमाए दारियाए मस-सोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं सपावणट्ठाए।

एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्स विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं

वा, नो रूवहेउं वा, नो बलहेउ वा, नो विसयहेउ वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूण समणाणं, बहूण समणीणं, बहूण सावयाण बहूणं सावियाणं अच्चणिज्जे जाव वीईवइस्सइ।

सूत्र ४३ हे जम्बू ! धन्य सार्थवाह ने सुसुमा के मृत शरीर के मॉस व रुधिर का आहार वर्ण, रूप, बल अथवा विषय भोग के हेतु नही किया, मात्र विकट अटवी को पार कर राजगृह पहुँच पाने के लिए किया था।

ठीक उसी प्रकार हे आयुष्मान श्रमणो ! हमारे जो साधु-साध्वी वमन, पित्त, शुक्र, रक्त झरने वाले और त्यागने योग्य इस औदारिक शरीर के वर्ण, बल अथवा विषय के लिए आहार नही करते अपितु सिद्धगति को प्राप्त करने हेतु आहार करते है वे इस भव मे अनेक श्रमणो, श्रमणियो, श्रावको तथा श्राविकाओ के अर्चनीय होते है और ससार-सागर को पार करते है।

CONCLUSION

43. Jambu! Dhanya merchant did not feed on the flesh and blood of deceased Sumsuma for the purpose of enhancing or enjoying complexion, form, strength or carnal pleasures of the body He did that only to cross the wilderness and reach Rajagriha

Long-lived Shramans! In just this way those of our ascetics who, after getting initiated, do not indulge in activities like consuming rich food etc in order to enhance or enjoy the complexion, form, strength, or carnal pleasures of this mortal physical body which oozes foul waste matter like vomit, bile, semen, and blood and is worth abandoning, become the objects of reverence of many ascetics and lay-persons Moreover, they also cross this ocean of cycles of rebirth

सूत्र ४४ एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ४४ जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने अठारहवे ज्ञात-अध्ययन का यह अर्थ कहा है। जैसा मैने सुना वैसा तुम्हे कहा है।

44. Jambu! This is the text and the meaning of the eighteenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm

॥ अट्ठारसमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ अठारहवाँ अध्ययन समाप्त॥

|| END OF THE EIGHTEENTH CHAPTER ||

उपसंहार

ज्ञाताधर्मकथा की यह अठारहवी कथा अन्य कथाओ के समान दुष्कर्म के दुष्फल पर तो प्रकाश डालती ही है साथ ही इसमे साधना की ओर अग्रसर व्यक्ति के साधना के निमित्त शरीर अथवा जीवन को बनाए रखने के कर्तव्य के प्रति जागरूक रहने पर भी बल दिया है। आत्मा और शरीर को पृथक जानने समझने और स्वीकार कर लेने के स्तर पर जो अनासक्ति उत्पन्न होती है उसकी झलक प्रस्तुत की गई है।

CONCLUSION

This eighteenth story of Jnata Dharma Katha details the evil results of evil deeds, as do the other stories Besides this, it lays emphasis on the need to protect one's life for the purpose of spiritual practices Also provided is a glimpse of the ultimate state of detachment when the practicer realizes and accepts that the soul is different from the body

उपनय गाथा

जह सो चिलाइपुत्तो, सुसुमगिद्धो अकज्जपडिबद्धो।
धण-पारद्धो पत्तो, महाडवि वसणसय-कलिअ॥१॥

तह जीवो विसयसुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ।
कम्मवसेण पावइ, भवाडवीए महादुक्ख॥२॥

धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी।
सुय-मासमिवाहारो, रायगिह इह सिव नेयं॥३॥

जह अडवि-नयर-नित्थरण-पावणत्थ तएहि सुयमस।
भत्त तहेह साहू, गुरुण आणाए आहार॥४॥

भवलघण-सिवपावण-हेउं भुंजंति न उण गेहीए।
वण्ण-बल-रूवहेउ, च भावियप्पा महासत्ता॥५॥

जैसे चिलातीपुत्र सुसुमा पर आसक्त होकर कुकर्म करने पर उतारू हो गया और धन्य श्रेष्ठी के पीछा करने पर सैकडो सकटों से व्याप्त महा-अटवी को प्राप्त हुआ॥१॥

उसी प्रकार जीव विषय-सुखो मे लुब्ध होकर पापक्रियाएँ करता है। पापक्रियाएँ करके कर्म के वशीभूत होकर इस ससाररूपी अटवी मे घोर दु.ख पाता है॥२॥

यहाँ धन्य श्रेष्ठी के समान गुरु है, उसके पुत्रो के समान साधु है और अटवी के समान ससार है। सुता (पुत्री) के मास के समान आहार है और राजगृह के समान मोक्ष है॥३॥

जैसे उन्होने अटवी पार करने और नगर तक पहुँचने के उद्देश्य से ही सुता के मॉस का भक्षण किया, उसी प्रकार साधु, गुरु की आज्ञा से आहार करते है॥४॥

वे भवितात्मा एव महासत्त्वशाली मुनि आहार करते है एक मात्र ससार को पार करने और मोक्ष प्राप्त करने के ही उद्देश्य से। आसक्ति से अथवा शरीर के वर्ण, बल या रूप के लिए नही॥५॥

THE MESSAGE

Just as Chilatiputra, infatuated with Sumsuma, indulged in detestable deeds and, chased by Dhanya merchant, ended up in the great wilderness filled with hundreds of dangers (1)

In same way a being lured by carnal pleasures indulges in sinful activities As a result he is trapped in the bondage of Karmas and suffers much in the wilderness of mundane life (2)

Here Dhanya merchant is Guru, his sons are ascetics, the wilderness is mundane life The flesh of the dead daughter is food and Rajagriha city is Moksha (3)

As they consumed the meat from the corpse of the daughter solely for the purpose of crossing the wilderness, same way ascetics consume food with the permission of the guru (4)

Those great souls and accomplished ascetics consume food solely for the purpose of crossing the mundane wilderness and attaining liberation and not because of attachment nor for the complexion, strength or beauty of the body (5)

■■

उन्नीसवाँ अध्ययन : पुण्डरीक : आमुख

शीर्षक–पुडरीए–पुडरीक–नाम विशेष। पुडरीक राजा तथा उनके भाई कडरीक की कथा भावना रहित बाह्य साधना की व्यर्थता और भावना सहित साधना के महत्त्व को दर्शाती है। तपस्या कितनी ही लम्बी और कठोर क्यों न हो मन मे राग-द्वेष एव विषयो से विरक्ति न हो तो निष्फल हो जाती है। दूसरी ओर राग-द्वेष वासना मे विरक्त मन अन्धकार मे भी अपने ध्येय को पा लेता है।

कथासार–महाविदेह मे पुडरीकिणी नगरी के राजा पद्मनाभ के दो पुत्र थे। पुडरीक तथा कंडरीक। राजा जब विरक्त हो दीक्षा लेने लगे तो उन्होने पुडरीक को राजा तथा कडरीक को युवराज बना दिया। कुछ समय बाद स्थविर मुनि के पुडरीकिणी नगरी मे आने पर दोनो भाई उपदेश सुनने गये। राजा पुडरीक श्रमणोपासक बने और कडरीक को दीक्षा लेने की इच्छा हुई। राजा से आज्ञा लेने पर उन्होने कहा कि अभी दीक्षा मत ले मै तुझे राजा बनाना चाहता हूँ। कडरीक नही माना और दीक्षा ले ली। उग्र विहार भी किया पर शरीर मे अस्वस्थ हो गया। जब कडरीक मुनि पुन नगर मे आए तो राजा ने उन्हे अस्वस्थ देख उपचार की व्यवस्था की। उनके स्वस्थ होने के बाद स्थविर मुनि ने अन्य शिष्यो सहित प्रस्थान किया किन्तु कडरीक भोजन और सुविधाओ के प्रति आसक्त हो जाने के कारण वही रह गए। इस पर राजा पुडरीक ने उन्हें समझाया और उनके आग्रह पर वह पुन विहार करने लगे। पर यह विहार सहन न होने से वापस नगर मे आ गए। इस बार राजा ने पूछा "क्या तुम्हे सासारिक भोगो की अभिलाषा है?" कडरीक के हॉ कहने पर पुडरीक उन्हे राज्य सिहासन पर बैठा स्वय दीक्षित हो गए।

कडरीक राज्य मिलते ही भोजनादि मे लिप्त हो गये और फलस्वरूप बीमार पडे और कलुषित भावनाओ के कारण मरकर नरक मे गये।

पुडरीक दीक्षा के पश्चात् विहार कर गुरु की खोज मे निकले और गुरु के पास पहुँच यथाविधि दीक्षा ली। पारणे मे रूखे-सूखे भोजन से वे भी बीमार पड गये और अन्त समय निकट जान प्रतिक्रमण व सलेखना कर देह त्याग दी। वे देवलोक मे जन्मे। वहॉ से महाविदेह मे जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करेगे।

NINETEENTH CHAPTER : PUNDAREEK : INTRODUCTION

Title—Pundariye—Pundareek—a name This story of King Pundareek and his brother, Kandarik, stresses the futility of the semblance of spiritual practice without one's heart in it and the importance of sincere effort No matter how long and tough a penance is, if the mind is not detached from the carnal indulgences, attachment, and aversion it bears no fruit However the mind that is free of attachment and aversion reaches its goal even in the darkness

Gist of the story—The king of Pundarikini city in Mahavideh area, Padmanabh, had two sons—Pundareek and Kandareek When the king desired to renounce the world he crowned Pundareek and made Kandarik the heir apparent After some time a senior ascetic arrived in the city and both the brothers went to his discourse King Pundareek became a Shramanopasak and Kandareek desired to become an ascetic When he sought permission from the king he was told that the king wanted to put him on the throne and so he should not get initiated Kandareek did not agree to the proposal and got initiated He commenced the harsh itinerant life but got sick

When after some time he came to the city the king saw his ailing condition and made arrangements for his treatment When Kandareek regained his health the senior ascetic left the city with his disciples, but Kandareek stayed back as he was enslaved by the food and comforts King Pundareek came and persuaded him to follow the proper ascetic code At the king's request Kandareek resumed the harsh ascetic life But he once again could not tolerate the hardships and returned to the city This time the king asked him if he still had desire for mundane pleasures When Kandareek replied in affirmative the king crowned him and himself renounced the world

As soon as Kandareek got the kingdom he went all out for rich food and comforts As a result of all this he got sick and embraced death As a result of his feelings of infatuation for carnal pleasures he reincarnated in hell

Pundareek went out in search of a guru after his self-initiation He got formally and properly initiated when he found his guru As he ate stale and tasteless food when he broke his long fast, he got sick When he realized that *his end was near he did Pratikraman (critical review of the past deeds)* and took the ultimate vow After his death he reincarnated as a god and from there he will attain liberation after being born in the Mahavideh area

■■

एगूण वीसइम अज्झयण : पुंडरीए
उन्नीसवाँ अध्ययन : पुण्डरीक
NINETEENTH CHAPTER : PUNDAREEYE - PUNDAREEK

सूत्र १ जइ ण भते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र १ . जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भन्ते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने अठारहवे ज्ञात अध्ययन का पूर्वोक्त अर्थ कहा है तो उन्होने उन्नीसवें अध्ययन का क्या अर्थ कहा है!

1. Jambu Swami inquired, "Bhante! What is the meaning of the nineteenth chapter according to Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र २ : एव खलु जबू ! तेण कालेण तेणं समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे सीयाए महाणदीए उत्तरिल्ले कूले नीलवतस्स दाहिणेण उत्तरिल्लस्स सीतामुखवणसडस्स पच्छिमेण एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरच्छिमेण एत्थं ण पुक्खलावई णाम विजए पण्णत्ते।

तत्थ ण पुडरीगिणी णाम रायहाणी पन्नत्ता–णवजोयणवित्थिन्ना दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया दसणीया अभिरूवा पडिरूवा। तीसे ण पुडरीगिणीए णयरीए उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे होत्था। वण्णओ।

सूत्र २ · सुधर्मा स्वामी ने कहा–जम्बू ! काल के उस भाग मे इसी जम्बू द्वीप मे पूर्व विदेह क्षेत्र मे सीता नाम की महानदी के उत्तरी किनारे पर नीलवन्त वर्षधर पर्वत के दक्षिण मे, उत्तर के सीतामुख वनखण्ड के पश्चिम मे और एकशैल नाम के वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा मे पुष्कलावती नामक विजय का वर्णन है।

उस पुष्कलावती विजय की राजधानी पुण्डरीकिणी नाम की नगरी थी। वह नौ योजन चौडी और बारह योजन लम्बी नगरी साक्षात देवलोक के समान मनोहर, दर्शनीय, सुन्दर और आनन्ददायक थी। उस नगरी की उत्तर पूर्व दिशा मे नलिनीवन नाम का उद्यान था। उसका यह सब वर्णन औपपातिक सूत्र के अनुसार समझना चाहिए।

2. Sudharma Swami narrated —Jambu! During that period of time in this same Jambu continent in the east Mahavideh area on the northern bank of the great river Sita, on the southern side of the mountain Neelvant Varshdhar, on the western side of the northern Sitamukh forest, and on the

eastern side of the Ekshail Vakshaskar mountain existed a Vijaya (a geographical area, like a state) named Pushkalavati

The capital of Pushkalavati Vijaya was the city of Pundarikini It was twelve Yojans long and nine Yojan wide and looked as attractive, enchanting, beautiful and pleasing as a heavenly town There was a garden named Nalinivan to the north-east of the city These details are mentioned in the Aupapatik Sutra

महापद्म राजा की दीक्षा सिद्धि-प्राप्ति

सूत्र ३ तत्थ णं पुंडरीगिणीए रायहाणीय महापउमे णामं राया होत्था। तस्स णं पउमावई देवी होत्था। तस्स ण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा–पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया। पुडरीए जुवराया।

सूत्र ३ · पुण्डरीकिणी नगरी मे महापद्म नामक राजा राज्य करता था। उसकी पटरानी पद्मावती देवी थी। महापद्म के पुत्र और पद्मावती के आत्मज दो कुमार थे–पुण्डरीक और कण्डरीक। उनके शरीर कोमल यावत् सुन्दर सुरूप थे। उनमे से पुण्डरीक युवराज था।

DIKSHA OF KING MAHAPADMA

3. The name of the ruler of that city was Mahapadma The name of his principal queen was Padmavati The royal couple had two sons named Pundareek and Kandareek They were handsome and delicate Prince Pundareek was the heir to the throne

सूत्र ४ · तेण कालेण तेण समएण थेरागमण

महापउमे राया णिग्गए। धम्म सोच्चा पोडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पोंडरीए राया जाए। कंडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ। तए णं थेरा बहिया जणवयविहार विहरइ। तए ण से महापउमे बहूणि वासाणि जाव सिद्धे।

सूत्र ४ काल के उस भाग मे स्थविर मुनियो का वहाँ आगमन हुआ। नलिनी वन उद्यान मे ठहरे। राजा महापद्म स्थविर मुनि को वन्दना करने निकले और धर्मोपदेश सुनकर उन्होंने अपने पुत्र पुण्डरीक को राज्य पर स्थापित कर दीक्षा ग्रहण कर ली। अब पुण्डरीक राजा हो गया और कण्डरीक युवराज। महापद्म अनगार ने चौदह पूर्वों का अध्ययन किया। स्थविर मुनि वहाँ से निकल जनपदो मे विहार करने लगे। महापद्म ने बहुत वर्षों की साधना के बाद सिद्ध पद प्राप्त किया।

4. During that period of time a Sthavir ascetic arrived there and stayed in the Nalinivan garden King Mahapadma came to pay homage to the ascetic After listening to the discourse he crowned his son Pundareek and

got ınıtıated Now Pundareek was the kıng and Kandareek the heır to the throne Ascetıc Mahapadma studıed the fourteen sublıme canons The Sthavır ascetıc left the town and resumed hıs ıtınerant lıfe After long spırıtual practıces Mahapadma obtaıned lıberatıon

सूत्र ५ . तए ण थेरा अन्नया कयाइ पुणरवि पुडरीगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा। पोंडरीए राया णिग्गए। कडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाब्बलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्मं परिकहेंति। पुडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए।

सूत्र ५ कालान्तर मे पुन स्थविर मुनि पुण्डरीकिणी नगरी के नलिनीवन उद्यान मे पधारे। राजा पुण्डरीक उन्हे वन्दना करने गये। युवराज कण्डरीक भी अनेक लोगो से स्थविर मुनि के आगमन की बात सुनकर वन्दना करने गये (विस्तृत वर्णन भगवती सूत्र मे वर्णित महाबल कुमार के कथानक के समान समझना) वे स्थविर मुनि की उपासना करने लगे और स्थविर मुनि ने उन्हे धर्मोपदेश दिया। धर्मोपदेश सुनकर पुण्डरीक श्रमणोपासक बन गये और अपने घर लौट आये।

5. Later, once agaın the Sthavır ascetıc arrıved there and stayed ın the Nalınıvan garden Kıng Pundareek came to pay homage to the ascetıc When he heard about the arrıval of the great ascetıc, prınce Kandareek also went to pay homage (Detaıled descrıptıon ıs ıdentıcal to that of Mahabal Kumar ın Bhagavatı Sutra) He worshıpped and lıstened to the dıscourse of the great ascetıc Kıng Pundareek became a Shramanopasak and returned to hıs palace

कण्डरीक की दीक्षा

सूत्र ६ : तए ण कडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेय तुब्भे वदह, ज णवर पुडरीय रायं आपुच्छामि, तए ण जाव पव्वयामि।

'अहासुहं देवाणुप्पिया !'

सूत्र ६ युवराज कण्डरीक ने खडे होकर[1] कहा–"भन्ते ! आपने जो कहा है वह अक्षरश सत्य है। मै पुण्डरीक राजा की अनुमति लेने के पश्चात् दीक्षा ग्रहण करूँगा।"

स्थविर मुनि ने उत्तर दिया–"देवानुप्रिय ! तुम्हें जिसमे सुख मिले वह करो।"

INITATION OF KANDAREEK

6. Prınce Kandareek got up and saıd, "Bhante! What you have saıd ıs ındeed true I wıll seek permıssıon from kıng Pundareek and get ınıtıated "

The Sthavır ascetıc replıed, "Beloved of gods! Do as you please "

---

१ उट्ठाए उट्ठित्ता से एक अभिप्राय यह भी है–सयम के लिए उपस्थित होकर।

सूत्र ७ · तए णं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउघंटं आसरहं दुरूहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव पुडरीए राय एव वयासी–'एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अंतिए जाव धम्मे निसंते, से धम्मे अभिरुइए, तए णं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइत्तए।'

सूत्र ७ · कण्डरीक स्थविर मुनि को वन्दन-नमस्कार करके वहाँ से बाहर आया और चार घण्टा वाले अश्वरथ पर आरूढ़ होकर राजभवन मे आया। रथ से उतर कर वह पुण्डरीक राजा के पास गया और हाथ जोड कर बोला–"देवानुप्रिय !मैने स्थविर मुनि से धर्मोपदेश सुना है और उसमे मेरी रुचि हो गई है। अत मै दीक्षा ग्रहण करने की इच्छा करता हूँ।

7. Kandareek formally begged leave from the great ascetic and came out He rode a four horse chariot to the palace After getting down from the chariot he went to king Pundareek and joining his palms submitted, "Beloved of gods! I have listened to the discourse of the Sthavir ascetic and liked it Now I wish to get initiated "

सूत्र ८ तए ण पुडरीए राया कडरीये जुवराय एव वयासी–'मा ण तुम देवाणुप्पिया ! इदाणि मुडे जाव पव्वयाहि, अहं ण तुम महया महया रायाभिसेएण अभिसिचामि।

तए ण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ, जाव तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए ण पुडरीए राया कडरीय दोच्च पि तच्च पि एव वयासी जाव तुसिणीए सचिट्ठइ।

सूत्र ८ राजा पुण्डरीक ने कण्डरीक युवराज से कहा–"देवानुप्रिय ! तुम अभी दीक्षा ग्रहण मत करो क्योकि मै तुम्हारा विशाल समारोह सहित राज्याभिषेक करना चाहता हूँ।"

युवराज ने राजा कुण्डरीक की बात को स्वीकार नही किया और मौन ही रहा। राजा पुण्डरीक ने पुन दूसरी बार और तीसरी बार वही बात कही किन्तु कण्डरीक मौन रहा।

8. King Pundareek replied, "Beloved of gods! Do not get initiated now because I want you to ascend the throne after a lavish coronation celebration "

Prince Kandareek did not give his consent to the king's proposal and remained silent King Pundareek repeated his request two-three times but Kandareek still remained silent

सूत्र ९ : तए ण पुडरीए कंडरीयं कुमार जाहे नो संचाएइ बहूहि आघवणाहि पण्णवणाहिं य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमण्णित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ। पव्वइए, अणगारे जाए, एक्कारसंगविऊ।

तए णं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरीगिणीओ नयरीओ नलिनीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति।

सूत्र ९ · जब राजा पुण्डरीक कण्डरीक कुमार को बहुत कहकर, समझा-बुझाकर, और विज्ञप्ति करके भी उसे रोकने मे समर्थ नही हुए तो अनिच्छा से ही उसकी बात मान ली। दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति देने के पश्चात् उनका निष्क्रमण अभिषेक किया और स्थविर मुनि को शिष्य-भिक्षा प्रदान की। कण्डरीक दीक्षित हो अनगार बन गया और क्रमश· ग्यारह अगो का जानकार बन गया।

कालान्तर मे वे स्थविर मुनि नलिनीवन उद्यान से प्रस्थान कर अन्य जनपदो मे विहार करने लगे।

9. When King Pundareek was unable to stop Kandareek even after a lot of persuasion, he conceded to Kandareek's desire unwillingly After giving him permission to accept Diksha (initiation) the king performed the formal anointing and gave a disciple-donation to the Sthavir ascetic Kandareek became an ascetic and in due course studied the eleven canons

In due course the Sthavir ascetic left the town and resumed his itinerant life

कण्डरीक की रुग्णता

सूत्र १० . तए णं तस्स कडरीयस्स अणगारस्स तेहि अतेहि य पतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए यावि विहरइ।

सूत्र १० इधर अनगार कण्डरीक के शरीर मे रुखे-सूखे आहार के कारण शैलक मुनि के समान दाह-ज्वर उत्पन्न हो गया। वे रुग्ण हो गये।

KANDAREEK'S AILMENT

10. Due to eating dry and tasteless food ascetic Kandareek caught fever and became sick like ascetic Shailak

सूत्र ११ · तए णं थेरा अन्नया कयाई जेणेव पोडरीगिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा, पोडरीए णिग्गए, धम्मं सुणेइ।

तए णं पुडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं वदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एव वयासी–'अहं णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि, तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह।'

सूत्र ११ एक बार स्थविर मुनि पुण्डरीकिणी नगरी के नलिनीवन उद्यान मे पधारे। राजा पुण्डरीक धर्म देशना सुनने आये।

धर्मोपदेश सुनकर पुण्डरीक राजा कण्डरीक अनगार के पास गये और उन्हे वन्दना नमस्कार किया। वहाँ उन्होने देखा कि कण्डरीक मुनि का शरीर सब प्रकार की बाधाओं से युक्त और रोगाक्रान्त है। यह देख के पुन. स्थविर मुनि के पास गये और उन्हें वन्दना करके कहा–"भन्ते ! मै कण्डरीक मुनि की यथाप्रवृत्त औषध और भेषज से चिकित्सा कराना चाहता हूँ। अत· आप मेरी यानशाला मे पधारिये।

11. Later, once again the Sthavir ascetic came to Pundarikini town and stayed in the Nalinivan garden King Pundareek came to pay homage

After the discourse, King Pundareek visited ascetic Kandareek and paid his homage When the king observed the dull, anaemic, deteriorated and ailing body of ascetic Kandareek he went to the Sthavir ascetic and said, "Bhante! I wish to get ascetic Kandareek treated by such a doctor, medicines, and diet that is not prohibited for an ascetic Bhante! Please come to my coach-house and stay there "

सूत्र १२ तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उवसंपिज्जत्ता ण विहरंति। तए ण पुडरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए।

सूत्र १२ स्थविर भगवन्त ने राजा पुण्डरीक का यह निवेदन स्वीकार कर लिया और उनकी अनुमति लेकर वहाँ रहने लगे। जिस प्रकार मण्डुक राजा ने शैलक मुनि की चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार राजा पुण्डरीक ने कण्डरीक मुनि की चिकित्सा करवाई। इससे कण्डरीक अनगार नीरोग होकर बलवान शरीर वाले हो गये।

12. The Sthavir ascetic accepted the request of King Pundareek and shifted as the king desired. As king Manduk had arranged for the treatment of ascetic Shailak, King Pundareek also got ascetic Kandareek treated The ascetic regained his health and became strong

कण्डरीक मुनि की शिथिलता

सूत्र १३ · तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयं रायं पुच्छति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति। तए ण से कण्डरीए ताओ रोगयकाओ विप्पमुक्के समाणे तसि मणुण्णसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने, णो संचाएइ पुंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं विहरित्तए। तत्थेव ओसण्णे जाए।

सूत्र १३ : कालान्तर मे स्थविर भगवन्त ने पुण्डरीक राजा को सूचना देकर वहाँ से प्रस्थान किया और जनपदों मे विहार करने लगे।

उस समय मे कण्डरीक अनगार रोग मुक्त हो जाने पर भी वहाँ उपलब्ध मनोज्ञ आहार खादिम-स्वादिम आदि मे मूर्च्छित, गृद्ध, आसक्त और लीन हो चुके थे। इस कारण वे राजा पुण्डरीक को सूचित कर जनपदो मे उग्र विहार करने मे समर्थ न हो सके। वे वही रहने लगे।

LAXNESS OF KANDAREEK

13. Later, the Sthavir ascetic informed the king, left the town, and resumed his itinerant life

Although ascetic Kandareek had regained his health by that time, he had become fond of and ravenous for and attached and addicted to sumptuous food Thus, he was unable to resume the itinerant way after informing the king He stayed

सूत्र १४ . तए णं से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अतेउरपरियालसर्परिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ, करित्ता वदइ, णमंसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-'धन्ने सि ण तुम देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले, जे ण तुम रज्ज च जाव अतेउरं च छड्डइत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वइए। अह ण अहण्णे अकयपुण्णे रज्जेय जाव अतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो सचाएमि जाव पव्वइत्तए। त धन्नो सि ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले।'

सूत्र १४ . राजा पुण्डरीक को जब यह सूचना मिली तो वे तैयार होकर अपने अन्त पुर परिवार तथा परिजनो के साथ कण्डरीक अनगार के पास आए। कण्डरीक मुनि की तीन बार प्रदक्षिणा की और वन्दना करके कहा-'देवानुप्रिय ! आप धन्य है, कृतार्थ है, कृतपुण्य है और सुलक्षणवान है। आपको मनुष्य जन्म और जीवन का सुन्दर फल मिला है जो आप राज्य और अन्त पुर को त्याग कर, अवहेलित कर, प्रव्रजित हुए है और मै अधन्य हूँ, पुण्यहीन हूँ कि राज्य और अन्त.पुर सहित मानवीय काम भोगो मे लिप्त बना हुआ हूँ तथा दीक्षा ग्रहण करने मे असमर्थ हूँ। देवानुप्रिय ! आप सचमुच धन्य है कि आपको जन्म और जीवन का सुफल प्राप्त हुआ है।

14. When King Pundareek became aware of this he got ready and came to ascetic Kandareek with his queens and other members of the family He circumambulated ascetic Kandareek three times and after bowing said, "Beloved of gods! You are blessed, pious, successful and virtuous You have been blessed with the true goal of human life and form by getting initiated after renouncing the palace and the kingdom I am the opposite of you in all respects, I am still attached to the palace, kingdom and the carnal pleasures of life and unable to get initiated Beloved of gods! you are indeed blessed to have got the true reward of the human life and form "

सूत्र १५ : तए ण से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ। तए णं कंडरीए पुडंरीएणं दोच्चं पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवसवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ। तए णं से कडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचि काल उग्गउग्गेणं विहरइ। तओ पच्छा समणत्तण–परितंते समणत्तण-णिव्विण्णे समणत्तण-णिब्भत्थिए समणगुण-मुक्कजोगी थेराणं अंतियाओ सणिय सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुडंरीगिणी णयरी, जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगसि णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे सचिट्ठइ।

सूत्र १५ अनगार कुडरीक ने पुण्डरीक राजा की इस बात पर ध्यान नहीं दिया और मौन रहे। पुण्डरीक ने दो तीन बार यह बात दोहराई। इस पर लज्जित हो तथा बडे भाई का सम्मान रखने के लिए अनिच्छापूर्वक कुडरीक ने राजा पुण्डरीक से प्रस्थान करने की अनुमति मॉगी। अनुमति प्राप्त कर वह स्थविर मुनि के साथ अन्य जनपदो मे विचरने लगा। कुछ काल तक तो वह स्थविर मुनि के साथ उग्र विहार करता रहा पर फिर श्रमण जीवन से थक गया। उसे ऐसे कठिन जीवन मे ऊब और अरुचि हो गई। फलस्वरूप वह साधुता के गुणो से रहित हो गया और धीरे-धीरें स्थविर मुनि से दूर होने लगा। अन्तत उनका साथ छोड पुण्डरीकिणी नगरी आ गया। राजभवन के निकट पहुँच अशोकवाकिटा मे एक श्रेष्ठ अशोक वृक्ष के नीचे पडी एक शिला पर बैठ गया। भग्न मनोरथ उदास हो वह चिता मे डूब गया।

15. Ascetic Kandareek did not pay any attention to the king's statement and remained silent The king repeated the statement two-three times Now, ashamed of himself and in order to honour his elder brother's advice ascetic Kandareek sought permission to leave, though unwillingly On getting the permission he joined the Sthavir ascetic and resumed the itinerant life For some time he continued the ascetic life but in the end he got tired of the harsh life His dislike for such harsh life increased further Consequently he lost the virtues of an ascetic and gradually distanced himself from the Sthavir ascetic Finally he departed his company and returned to Pundarikini He reached the palace and sat down on a rock under an Ashok tree in a nearby garden In dejection he sat brooding

सूत्र १६ : तए णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीय अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागिच्छत्ता पोंडरीय राय एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पियभाउए कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ।'

सूत्र १६ · उस समय किसी काम से राजा पुण्डरीक की धाय माँ अशोकवाटिका मे आई तो उसने चिन्तामग्न कण्डरीक को वहाँ पर बैठे देखा। वह पुण्डरीक के पास गई और उससे कहा-"देवानुप्रिय ! तुम्हारा प्रिय भाई कण्डरीक अशोकवाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे पृथ्वी शिलापट पर चिन्ता-मग्न बैठा हुआ है।"

16. At that time the nurse maid of King Pundareek came to that garden for some work and saw a dejected Kandareek She went to King Pundareek and said, "Beloved of gods! Your darling brother Kandareek is sitting on a rock under an Ashok tree in a nearby garden overwhelmed by anxiety"

सूत्र १७ . तए णं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव सभते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अतेउरपरियाल-सपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीय तिक्खुत्तो एव वयासी-'धण्णे सि तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए। अह ण अधण्णे जाव पव्वइत्तए। तं धन्ने सि णं तुम देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले।'

सूत्र १७ धाय माता की यह बात सुन राजा पुण्डरीक आशकित हो उठा। वह तत्काल अपने अत पुर परिवार के साथ अशोक-वाटिका मे गया और कण्डरीक की तीन बार वन्दना करके कहा-"देवानुप्रिय ! तुम धन्य हो जोकि दीक्षित हो गए और मै अधन्य हूँ कि दीक्षा लेने का सामर्थ्य नही जुटा पा रहा हूँ। तुमने मानवीय जीवन का सुन्दर फल पाया है।"

17. King Pundareek got worried when he got this news from his nurse maid He rushed to the garden with his queens and after paying homage thrice, said to Kandareek, " Beloved of gods! You are the blessed one that you got initiated and I am the cursed one that I do not have enough courage to do so You have achieved the best goal of life "

सूत्र १८ तए णं कंडरीए पुडरीएण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ। दोच्च पि तच्च पि जाव चिट्ठइ।

सूत्र १८ · पुण्डरीक राजा के इस कथन पर कण्डरीक तीनो बार मौन ही रहा उसके कथन पर कुछ भी उत्तर नही दिया।

18 All the three times when the king repeated this statement Kandareek did not reply, he just remained silent

प्रव्रज्या का परित्याग

सूत्र १९ तए ण पुडरीए कडरीय एवं वयासी-'अट्ठो भंते ! भोगेहिं ?'

'हंता अट्ठो।'

सूत्र १९ · तब पुण्डरीक राजा ने कण्डरीक से पूछा-"भते ! क्या भोग भोगने की इच्छा है ?"

कण्डरीक बोला-"हाँ ! है।"

ABANDONING THE ASCETIC LIFE

19. Now King Pundareek asked, "Bhante! Do you have the desire to enjoy mundane pleasures?"

Kandareek replied, "Yes, I do"

सूत्र २० : तए णं पोंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेयं उवट्ठवेह।' जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ।

सूत्र २० : यह सुन राजा पुण्डरीक ने अपने सेवको को बुलाया और कहा–"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही कडरीक के लिए समृद्धिवान और महान पुरुषो के योग्य राज्याभिषेक की तैयारी करो।" और उसने समारोहपूर्वक कडरीक का राज्याभिषेक कर दिया। कडरीक श्रमण जीवन छोड राज-सिंहासन पर जा बैठा।

20. King Pundareek at once called his servants and said, "Beloved of gods! Make arrangement for coronation of Kandareek, befitting affluent and great persons, at once" And he crowned Kandareek with all ceremonies and festivities Kandareek left the ascetic ways and ascended the throne.

सूत्र २१ : तए णं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ सयमेव चाउज्जाम धम्म पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स अंतिअं आयारभडय गेण्हइ, गेण्हित्ता इम एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–'कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपिज्जत्ता ण तओ पच्छा आहारं आहारित्तए' त्ति कट्टु इम च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता ण पोडरीगिणीए पडिणिक्खमइ। पडिणिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

सूत्र २१ : राजा पुण्डरीक ने स्वय ही पचमुष्ठि लोच किया और स्वयं ही चातुर्याम धर्म अगीकार कर लिया। फिर कण्डरीक से श्रमण के रजोहरण-पात्र आदि ले लिए, और इस प्रकार का अभिग्रह ग्रहण किया–स्थविर भगवन्तों को वन्दना कर उनसे चातुर्याम धर्म ग्रहण करने के पश्चात् ही मुझे आहार करना कल्पता है।" यह सकल्प कर वह पुण्डरीकिणी नगरी के बाहर निकला और जिस दिशा मे स्थविर भगवन्त थे उस दिशा में एक के बाद दूसरा ग्राम पार करता चलने लगा।

22. King Pundareek, on his own, performed the five fistful pulling out of hair and got initiated into the four dimensional religion as an ascetic. He then took the formal requisites of an ascetic like the broom and alms-pots and resolved, "I will not accept any food until I behold the Sthavir Bhagavant

and get initiated properly" And he left Pundarikini city and commenced his journey in the direction the Sthavir ascetic had gone He kept on moving from one village to another

कण्डरीक की पुनः रुग्णता

सूत्र २२ . तए णं तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइभोयणप्पसगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ। तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला कक्खडा पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कंतीए यावि होत्था।

सूत्र २२ : इधर गरिष्ट आहार करने वाले राजा कण्डरीक को रात्रि को अति जागरण और दुष्पाच्य भोजन की अधिकता के कारण अपच हो गई। कण्डरीक को शरीर में आहार आदि का सम्यक् पचन-पाचन न होने के कारण एक बार मध्य रात्रि के समय उसके शरीर मे तीव्र, विपुल, कर्कश, गहन, असह्य, प्रचण्ड और दु:खद वेदना उत्पन्न हो गई। उसके शरीर मे पित्त ज्वर व्याप्त हो गया और सारे शरीर मे जलन, दाह उत्पन्न होने लगी।

KANDAREEK'S AILMENT RELAPSES

22. Due to the rich food he consumed and late night activities he indulged in, king Kandareek started suffering from stomach problems like indigestion Once at midnight due to indigestion he got an attack of a sharp, acute, extreme, intolerable, and agonizing stomach ache He also got bile-fever and had burning sensation throughout his body.

सूत्र २३ तए णं से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्न अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे।

सूत्र २३ : राज्य, राष्ट्र, अन्त:पुर आदि मे अतीव आसक्ति के कारण राजा कण्डरीक आर्त्तध्यान मे डूब गया और अनायास, आकस्मिक और अकाल मरण को प्राप्त हुआ। उसने सातवी निम्न पृथ्वी में सर्वाधिक स्थिति वाले नरक मे नारक जीव के रूप में जन्म लिया।

23. Due to his extreme attachment with his palace, kingdom, and state, king Kandareek went into deep depression and embraced a sudden and premature death He reincarnated as a hell being in the seventh hell having the longest span of life among hells
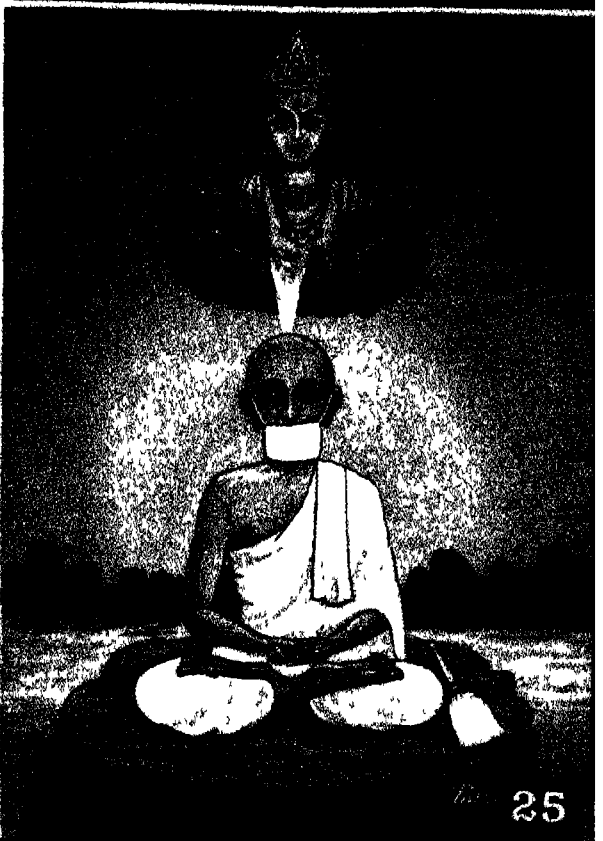
चित्र परिचय

THE ILLUSTRATIONS EXPLAINED

त्याग से भोग : भोग से त्याग

चित्र २५

१ राजा पुण्डरीक को जब पता चला कि मेरे छोटे भाई मुनि कण्डरीक संयम त्यागकर पुन संसार-सुखो के प्रति आसक्त हो गये है तो राजा मुनि वेश त्यागी कण्डरीक का अपने हाथो से राजतिलक करके समूचा राज्य उन्हे सौप देता है और स्वय मुनिधर्म ग्रहण कर स्थविरो की सेवा मे चला जाता है।

२ कण्डरीक की अतृप्त इच्छाएँ राज-सुखो का असीमित भोग करने लगी। फलस्वरूप वह शीघ्र ही अनेक कठिन रोगो से ग्रस्त हो गया।

३ वैद्यो के विविध उपचार करने पर भी कण्डरीक स्वस्थ नही हो सका। अन्त मे आर्त्त-रौद्रध्यान मे डूबा मरकर सातवी नरक भूमि मे नैरयिक रूप मे उत्पन्न हुआ।

४ उधर ढलती वय मे मुनि दीक्षा धारण कर पुण्डरीक मुनि खूब उत्कृष्ट तप-ध्यान शुभ भावनाओ से भावित होकर समाधिमरण प्राप्त कर सर्वार्थसिद्ध विमान मे देव रूप मे उत्पन्न हुए।

(उन्नीसवॉ अध्ययन)

DETACHMENT TO ATTACHMENT : ATTACHMENT TO DETACHMENT

ILLUSTRATION · 25

1 When King Pundareek comes to know that his younger brother, ascetic Kandarik, is attracted towards mundane pleasures and has abandoned the ascetic way, he invites Kandareek and offers him the kingdom He himself crowns the past ascetic and renounces the mundane life Turning ascetic he joins the Sthavir ascetic

2 The unsatisfied desires of Kandareek force him into excessive indulgence in carnal pleasures His lusty ways, dance-music, and heavy food lead him to acute ailments All treatment fails to cure him

3 At last he dies after suffering acute pain and in a depressed and agitated mental state, he is born as a hell being

4 After getting initiated ascetic Pundarik indulges in harsh penance and deep meditation He embraces a meditative death and is reincarnated as a god in the Sarvarthasiddh dimension of gods

(CHAPTER - 19)

सूत्र २४ : एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया।

सूत्र २४ : इस प्रकार हे आयुष्मान श्रमणो ! हमारा जो साधु-साध्वी दीक्षित होकर पुनः मनुष्य-शरीर सम्बन्धी कामभोगों की इच्छा करता है वह कण्डरीक राजा के समान संसार सागर मे पुनः पुनः जन्म-मरण के चक्कर मे फँस जाता है।"

24. Long-lived Shramans! In this way those of our ascetics who, after getting initiated, desire for carnal and mundane pleasures once again, are caught in the cycle of rebirth indefinitely like king Kandareek."

पुण्डरीक की उग्र साधना

सूत्र २५ : तए ण ते पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चं पि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, करित्ता जाव अडमाणे सीय-लुक्खं पाण-भोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तइ, पडिणियत्तित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणं पाण खाइम साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ।

सूत्र २५ : उधर पुण्डरीक अनगार स्थविर भगवंत के पास पहुँचे और उनको यथाविधि वन्दना करके उनके निकट पुनः चातुर्याम धर्म अगीकार किया। फिर षष्ठ भक्त के पारणे के लिए प्रथम प्रहर मे स्वाध्याय किया, दूसरे प्रहर मे ध्यान और तीसरे प्रहर मे भिक्षाटन करके ठण्डा और रूखा जैसा भी प्राप्त हुआ भोजन-पान ग्रहण किया। फिर यह विचार कर वापस लौटे कि मेरे लिए यही यथेष्ट व पर्याप्त है। लौट कर स्थविर भगवन्त के पास आये, उन्हे लाया हुआ भोजन दिखाया और भोजन करने की आज्ञा प्राप्त की। तत्पश्चात् मूर्च्छा व आसक्ति रहित भाव पूर्वक उस एषणीय आहार को उन्होने शरीर रूपी कोठे में वैसे ही डाल दिया जैसे सर्प सीधा बिल में प्रवेश कर जाता है।

HARSH PRACTICES OF PUNDAREEK

25. In the mean time ascetic Pundareek caught up with the Sthavir ascetic and after due formalities got properly initiated into the ascetic order. On the day of his fast breaking he spent the first quarter of the day in studies, the second quarter in meditation, and during the third quarter he set out to collect alms. He accepted whatever stale or dry food he got. He returned satisfied that this should be all he needed He went to the Sthavir

Bhagavant, showed him the alms he had collected and sought permission to eat After this he swallowed the food prescribed for an ascetic without any fondness or relishing, exactly as a snake enters its hole.

सूत्र २६ · तए णं तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंत अरसं विरसं सीय-लुक्खं पाण-भोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स स आहारे णो सम्म परिणमइ। तए ण तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए विहरइ।

सूत्र २६ · वह बासी, (कालातिक्रान्त) अरस, विरस, ठण्डा और रूखा भोजन पुण्डरीक मुनि पूरी तरह से पचा नही पाये। मध्य रात्रि के समय जव वे धर्म जागरणा कर रहे थे तब उनके शरीर में तीव्र, दुस्सह, (आदि) वेदना उत्पन्न हुई और उनका शरीर पित्त ज्वर से जलने लगा।

26. That stale, tasteless, flavourless, cold, and dry food proved to be hard to digest for ascetic Pundareek During the night when he was doing his ascetic duties he got an attack of a sharp, acute, extreme, intolerable and agonizing stomach ache He also got bile-fever and had burning sensation throughout his body

उग्र साधना का सुफल

सूत्र २७ तए ण ते पुंडरीए अणगारे अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कार-परक्कमे करयल जाव एव वयासी–

नमोऽत्थु ण अरिहंताण जाव सपत्ताण णमोऽत्थु ण थेराणं भगवताण मम धम्मारियाण धम्मोवएसयाण, पुव्वि पि य णं मए थेराण अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले ण पच्चक्खाए' जाव आलोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववण्णे। ततोऽणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमतं काहिइ।

सूत्र २७ · उस तीव्र वेदना के कारण पुण्डरीक अनगार निस्तेज, निर्बल, निर्वीर्य और पुरुषार्थ रहित हो गये। उन्होने दोनो हाथ जोड कर कहा–

"अरिहन्तो को नमस्कार, सिद्धि प्राप्त भगवतो को नमस्कार · (शक्रस्तव के समान)। मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक स्थविर भगवन्त को नमस्कार। स्थविर गुरुजनों के सम्मुख मैने पहले भी समस्त प्राणातिपात मिथ्यादर्शनशल्य रूप अठारह पापस्थानों का त्याग किया था ··· ।" इस प्रकार विधिवत अन्तिम प्रत्याख्यान कर, शरीर का त्याग कर आलोचना प्रतिक्रमण करके कालमास मे आयु क्षीण होने पर काल करके सर्वार्थसिद्ध नामक अनुत्तर विमान में देवरूप मे उत्पन्न हुए। वहाँ से च्यवन कर सीधे महाविदेह क्षेत्र मे जन्म लेकर सिद्ध गति प्राप्त करेगे।

FRUITS OF HARSH PENANCE

27. Due to this acute pain ascetic Pundareek became shaky, weak, emaciated, and vigourless He joined his palms and uttered, "I bow and convey my reverence to the worthy ones (Arhats), the supreme ones (Bhagavans), (the panegyric by the king of gods or the Shakrastav) My reverence also to my preceptor, the Sthavir Bhagavant Earlier, before the Sthavir guru, I took the five great vows including refraining from hurting life Now I once again take the same oath in the name of the Arihants. I also take an oath to remain detached from my body till my last breath "

Saying thus, and after doing the last critical review (Alochana Pratikraman), he took the ultimate vow and embraced the meditative death He reincarnated as a god in the Sarvarthsiddh Anuttar Viman From there he will descend in the Mahavideh area and obtain liberation

सूत्र २८ एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहि कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ, से णं इह भवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीणं बहूण सावयाण बहूण सावियाण अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मंगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरतसंसारकतारं जाव वीईवइस्सइ, जहा व से पोडरीए अणगारे।

सूत्र २८ इसी प्रकार हे आयुष्मान श्रमणो ! हमारा जो साधु-साध्वी दीक्षित होकर मनुष्य सम्बन्धी काम भोगो मे आसक्त और अनुरक्त नही होता, प्रतिघात (अस्थिरता) को प्राप्त नहीं होता वह इसी भव मे अनेक श्रमणो, श्रमणियो, श्रावको, श्राविकाओ द्वारा अर्चनीय, वन्दनीय, पूजनीय, सत्करणीय, सम्माननीय, कल्याणरूप, मगलकारक और देव तथा चैत्य के समान उपासना करने योग्य होता है। साथ ही वह परलोक मे भी राजदण्ड, राज-निग्रह, तर्जना और ताडना को प्राप्त नही होता तथा अन्तत ससार सागर को पार कर जाता है; जैसे पुण्डरीक अनगार।

28. Long-lived Shramans! In just this way those of our ascetics who, after getting initiated, do not get distracted from their practices and attracted and attached to the carnal mundane pleasures, become during this life the objects of reverence, respect, obeisance, honour, and regard for, and blissful and beneficent to, and worthy of worship as gods and temples by numerous ascetics and lay persons Moreover, during the next life also they do not suffer miseries like punishment and the curse of the state, or abuse or beating, and in the end cross the ocean of mundane sufferings, as ascetic Pundareek did

सूत्र २९ : एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं सपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते।

सूत्र २९ : हे जम्बू ! धर्म की आदि करने वाले तीर्थकर तथा सिद्ध गति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने उन्नीसवें ज्ञात अध्ययन का यही अर्थ कहा है। ऐसा मैंने सुना है, ऐसा ही कहता हूँ।

29. Jambu! This is the text and the meaning of the nineteenth chapter of the Jnata Sutra as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm

सूत्र ३० : एवं खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाण संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि।

सूत्र ३० हे जम्बू ! सिद्धगति को प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने छठे अग के प्रथम श्रुतस्कध का यही अर्थ बताया है।

30. Jambu! This is the text and the meaning of the first part of the sixth canon as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard, so I confirm

सूत्र ३१ : तस्स ण सुयक्खंधस्स एगूणवीस अज्झयणाणि एक्कसरगाणि एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति।

सूत्र ३१ : इस प्रथम श्रुतस्कध के उन्नीस अध्ययन हैं। एक-एक अध्ययन एक-एक दिन मे पढने से उन्नीस दिनों मे यह श्रुतस्कन्ध सम्पूर्ण होता है।

31. This first part has nineteen chapters Reading one chapter every day it is completed in nineteen days

॥ एगूण वीसइम अज्झयण समत्त ॥

॥ उन्नीसवॉ अध्ययन समाप्त॥

|| END OF THE NINETEENTH CHAPTER ||

॥ पढमं सुयक्खधं समत्तं॥

॥ प्रथम श्रुतस्कध समाप्त॥

|| END OF THE FIRST PART ||

उपसंहार

ज्ञाता धर्मकथा की यह उन्नीसवी कथा शैलक राज की कथा के समान है। साधक के सुविधा भोगी होकर साधना पथ से विमुख हो जाने के दुष्परिणाम को स्पष्ट करती है।

CONCLUSION

This nineteenth story of Jnata Dharma Katha is almost same as the story of King Shailak. It explains the bad result of abandoning the spiritual path due to attachment to mundane comforts

उपनय गाथा

वाससहस्स पि जई, काऊण संजमं सुविउल पि।
अंते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कउरीयव्व॥१॥
अप्पेण वि कालेण, केइ जहा गहियसीलसामण्णा।
साहिति नियकज्जं, पुंडरीयमहारिसि व्व जहा॥२॥

कोई हजार वर्ष तक अत्यन्त विपुल-उच्चकोटि के संयम का पालन करे किन्तु अन्त में उसकी भावना सक्लेशयुक्त–मलीन हो जाए तो वह कडरीक के समान सिद्धि प्राप्त नही कर सकता॥१॥

इसके विपरीत, कोई शील एव श्रामण्य–साधुधर्म को अगीकार करके अल्प काल मे भी महर्षि पुडरीक के समान अपने प्रयोजन को–शुद्ध आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लक्ष्य को–प्राप्त कर लेते है॥२॥

THE MESSAGE

Even after a thousand years of maintaining a high degree of discipline, if feelings or attitudes are tarnished a being can never attain the goal, as Kandareek did not (1)

However, someone like ascetic Pundareek reaches the goal of the pure state of liberation in short time by sincerely accepting discipline and following the ascetic code of conduct. (2)

■■

द्वितीय श्रुतस्कंध : धर्मकथा : आमुख

शीर्षक–धम्मकहा–धर्मकथा–कथा के माध्यम से धर्म की चर्चा अथवा धर्म सबधी कथा।

कथासार सम्यक् साधना से कर्मो का क्षय होता है और अन्तत मोक्ष प्राप्ति। किन्तु जिन जीवों के सम्पूर्ण कर्मों का क्षय नही होता अपितु पुण्य कर्मो का उपार्जन होता रहता है वे वैमानिक देवलोक मे उत्पन्न होते हैं। जो जीव उत्कृष्ट तपस्या तो करते हैं अर्थात् पुण्योपार्जन तो करते हैं किन्तु चारित्र पालन मे शैथिल्य तथा विराधना भी करते रहते है वे आत्मशुद्धि के उच्चस्तर तक नही पहुच पाते और अपेक्षाकृत निम्नकोटि के देव बनते है, यथा–भवनवासी, व्यन्तर व ज्योतिष्क।

धर्मकथा मे इसी प्रकार की देवियो के पूर्वजन्म की कथाए सकलित है जो पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ के तीर्थ मे हुई है। इसके दस वर्ग है। तथा प्रत्येक वर्ग मे इन्द्र-विशेष की पटरानियो-अग्रमहिषियो की कथाए है।

प्रथम वर्ग मे चमरेन्द्र की,

द्वितीय वर्ग मे बलि इन्द्र की,

तीसरे वर्ग मे चमरेद्र के अतिरिक्त दक्षिण दिशा के अन्य इन्द्रो की,

चौथे वर्ग मे बलीन्द्र के अतिरिक्त उत्तर दिशा के अन्य इन्द्रो की,

पाचवे वर्ग मे दक्षिण दिशा के वाणव्यतर इन्द्रो की,

छठे वर्ग मे उत्तर दिशा के वाणव्यतर इन्द्रो की,

सातवे वर्ग मे सूर्य की,

आठवे वर्ग मे चन्द्र की,

नवे वर्ग मे सौधर्मेन्द्र की तथा

दसवे वर्ग मे ईशानेन्द्र की।

इन कथाओं मे लगभग पूर्ण समानता है। अत एक ही पद्धति अपनाई गई है। सर्वप्रथम पटरानी का नाम है, फिर राजगृह नगर के गुणशील चैत्य मे भगवान महावीर के आने की और परिषद द्वारा उपासना की चर्चा है। उस समय वह देवी-विशेष प्रभु के सम्मुख उपस्थित होकर नृत्यादि के प्रदर्शन द्वारा भावमय उपासना करती है। उसके चले जाने पर गौतम स्वामी प्रभु से पूछते है कि उस देवी ने ऐसी ऋद्धि कैसे प्राप्त की? भगवान देवी के पूर्वभव की कथा कहते है। इस पूर्व भव की कथा मे नगरी का नाम, माता-पिता के नाम, अर्हत् पार्श्वनाथ की देशना, दीक्षा, दीक्षा के पश्चात् आचार मे शिथिलता अन्त मे अनशन द्वारा प्राण त्याग तथा देवलोक मे जन्म। देव भव की आयुष्य तथा वहा से महाविदेह मे जन्म से मोक्ष प्राप्ति। इस प्रकार प्रथम वर्ग में काली देवी की कथा पूर्ण विस्तार सहित दी गई है। अन्य सभी कथाओ मे नामादि विशिष्टताओ के उल्लेख है तथा कथा प्राय प्रथम वर्ग के समान बताई गई है। इस प्रकार यह द्वितीय श्रुतस्कध सक्षेप मे पूर्ण किया गया है।

THE SECOND PART : DHARMAKATHA : INTRODUCTION

Title—Dhammakaha—Dharmakatha—The discussion of Dharma with the help of tales or tales related to Dharma (detailed explanation in the preface)

Gist of the story—The right spiritual practice helps in the shedding of Karmas and eventually attaining Moksha The beings who are unable to shed all Karmas, and acquire good Karmas as well, are born as the Vaimanik Devs (the loftiest dimension of gods) The beings who indulge in very harsh penance, or in other words acquire good Karmas, but become lax in discipline and are not very strict in following the prescribed codes of conduct, do not reach a high degree of purity of soul and are born as gods of comparatively lower dimensions, viz Bhavan-vasi, Vyantar, and Jyotishka

In this part, Dharmakatha, are compiled the stories of earlier births of this class of goddesses It has ten sections and every section contains the stories of the principal queens of a particular class of Indras (kings of gods) —

Section	**Indras**
First—	Chamerandra
Second—	Bali-indra
Third—	Other Indras of the south besides Chamarendra
Fourth—	Other Indras of the north besides Bali-indra
Fifth—	Van-vyantar Indras of the south
Sixth—	Van-vyantar Indras of the north
Seventh—	Surya
Eighth—	Chandra
Ninth—	Saudharmendra, and
Tenth—	Ishanendra

These stories are almost the same in the sequence of events desribed, and are uniform in style The stories start with the name of the principal queen followed by the event of the arrival of Shraman Bhagavan Mahavir in Rajagriha and his worship by the people During this religious assembly the goddess in question appears before Bhagavan Mahavir, does his worship, dances and gives other performances with all her grandeur When she departs Gautam Swami asks about the acquisition of such grandeur by the goddess Bhagavan Mahavir tells him the story of the earlier birth of the goddess Such a story contains the names of the town and the parents, and describes events like the discourse of Arhat Parshva, initiation, laxness in conduct, death after fasting, and birth as a goddess Also mentioned are the life-span, and future liberation after being born in Mahavideh In the first chapter about goddess Kali, these things are mentioned in detail In the later chapters the specific information about the goddesses is given with a note that the incidents are the same as detailed in the first chapter about goddess Kali Thus this second part has been done in brief

■■

पढमं अज्झयणं : काली
प्रथम अध्ययन : काली
FIRST CHAPTER : KALI

सूत्र १ : तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे होत्था। वण्णओ। तस्स णं रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए तत्थ णं गुणसीलए णामं चेइए होत्था। वण्णओ।

सूत्र १ : काल के उस भाग मे राजगृह नामक नगर था। नगर के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा में गुणशील नामक चैत्य था। (औपपातिकसूत्र के अनुसार वर्णन)

1. Jambu! During that period of time there was a city named Rajagriha Outside the city in the northeastern direction there was a Chaitya named Gunashil Chaitya (Aupapatik Sutra)

सूत्र २ : तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्जसुहम्मा णामं थेरा भगवतो जाइसंपन्ना, कुलसपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी, चउनाणोवगया, पचहि अणगारसएहिं सद्धिं सपरिवुडा, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा, गामाणुगाम दूइज्जमाणा, सुहंसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे, जेणेव गुणसीलए चेइए, जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति।

सूत्र २ : काल के उस भाग मे श्रमण भगवान महावीर के अन्तेवासी स्थविर आर्य सुधर्मा, जो उच्च जाति व कुल के थे तथा चौदह पूर्ववेत्ता व चार ज्ञान युक्त थे, अपने पॉच सौ श्रमण शिष्यो सहित अनुक्रम से ग्रामानुग्राम मे विचरण करते हुए, सुखपूर्वक विहार करते हुए गुणशील चैत्य मे पधारे। वहॉ यथाविधि ठहरकर तप-सयम साधनामय जीवन बिताने लगे।

2. During that period of time, going from one village to another and staying comfortably there, Arya Sudharma, a disciple of Shraman Bhagavan Mahavir, with his five hundred disciples arrived in the Gunashil Chaitya He belonged to a respectable family and clan and possessed the four types of knowledge including that of the fourteen sublime canons With due procedure and formality he camped there and commenced his practices of penance and discipline.

सूत्र ३ : परिसा णिग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अंतेवासी अज्जजंबू णामं अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमसुयक्खंधस्स नायाण अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र ३ : आर्य सुधर्मा को वन्दना करने के लिए परिषद् निकली और उनका धर्मोपदेश सुनकर वापस लौट गई।

काल के उस भाग में आर्य सुधर्मा के अन्तेवासी आर्य जम्बू नामक अनगार उनकी उपासना करते हुए बोले–"भन्ते ! जब श्रमण भगवान महावीर ने छठे अग के 'ज्ञात श्रुत' नामक प्रथम श्रुतस्कध का पूर्वोक्त अर्थ बताया है तो धर्मकथा नामक द्वितीय श्रुतस्कध का उन्होंने क्या अर्थ कहा है ?

3. A delegation of citizens came to pay homage to him and returned after the discourse

During that period of time ascetic Arya Jambu, a disciple of Arya Sudharma, said after the formal routine worship, "Bhante! If the meaning of the Jnata Shrut, the first part of the sixth canon, as explained by Shraman Bhagavan Mahavir, is as narrated earlier, then what is the meaning of the second part that is known as Dharma Katha as explained by him?"

सुधर्मा स्वामी का उत्तर

सूत्र ४ : एवं खलु जंबू ! समणेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पन्नत्ता, तं जहा–

१. चमरस्स अग्गमहिसीण पढमे वग्गे।

२. बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे।

३. असुरिंदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं भवणवासीणं इंदाणं अग्गमहिसीणं तइए वग्गे।

४. उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाणं भवणवासिइंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे।

५. दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमे वग्गे।

६. उत्तरिल्लाण वाणमंतराण इंदाण अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे।

७. चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमे वग्गे।

८. सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे।

९. सक्कस्स अग्गमहिसीणं णवमे वग्गे।

१०. ईसाणस्स अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे।

सूत्र ४ : हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने धर्मकथा नाम के द्वितीय श्रुतस्कध के दस वर्ग बताये है; वे इस प्रकार हैं–

१. प्रथम वर्ग–चमरेन्द्र की अग्रमहिषियों (पटरानियों) का।

२ द्वितीय वर्ग–वैरोचनेन्द्र (बलीन्द्र) अथवा वैरोचनराज बलि की पटरानियो का।

३. तृतीय वर्ग–असुरेन्द्र के अतिरिक्त शेष नौ दक्षिण दिशा के भवनपति इन्द्रों की अग्रमहिषियों का।

४ चतुर्थ वर्ग–असुरेन्द्र के अतिरिक्त नौ उत्तरदिशा के भवनपति इन्द्रों की पटरानियो का।

५. पंचम वर्ग–दक्षिण दिशा के वाणव्यन्तर देवो के इन्द्रो की पटरानियो का।

६. षष्ठम वर्ग–उत्तर दिशा के वाणव्यन्तर देवो के इन्द्रो की पटरानियो का।

७. सप्तम वर्ग–चन्द्र की अग्रमहिषियो का।

८ अष्टम वर्ग–सूर्य की अग्रमहिषियो का।

९. नवम वर्ग–शक्र इन्द्र की पटरानियो का। और

१०. दशम वर्ग–ईशानेन्द्र की पटरानियो का।

SUDHARMA SWAMI REPLIES

4. Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir the second part, known as Dharma Katha, is divided into ten sections, they are—(1) First section—The principal queens of Chamarendra (2) Second section—The principal queens of Vairochanendra (Balindra) or the Vairochana king Bali (3) Third section—The principal queens of the nine Viman dwelling kings of gods of the southern direction, other then the Asurendra (4) Fourth section—The principal queens of the nine Viman dwelling kings of gods of the northern direction, other then the Asurendra (5) Fifth section—The principal queens of the kings of the Van-vyantar gods of the southern direction (6) Sixth section—The principal queens of the kings of the Van-vyantar gods of the northern direction (7) Seventh section—The principal queens of Chandra (the moon god) (8) Eighth section—The principal queens of Surya (the sun god). (9) Ninth section—The principal queens of Shakrendra (the king of gods of Saudharmkalp or the first dimension of gods) and (10) Tenth section—The principal queens of Ishanendra (the king of gods of Ishankalp or the second dimension of gods)

काली देवी का आगमन

सूत्र ५ : जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाणं दस वग्गा पन्नत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-(१) काली, (२) राई, (३) रयणी, (४) विज्जू, (५) मेहा।

जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र ५ : "भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने धर्मकथा के दस वर्ग बताये हैं तो उनमें से प्रथम वर्ग का उन्होंने क्या अर्थ कहा है ?"

"जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने प्रथम वर्ग के पाँच अध्ययन बताये हैं-(१) काली, (२) राजी, (३) रजनी, (४) विद्युत, और (५) मेघा।"

"भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

ARRIVAL OF GODDESS KALI

5. Bhante! of the ten sections of the Dharma Katha as told by Shraman Bhagavan Mahavir what has he explained about the first section?

Jambu! Shraman Bhagavan Mahavir has further divided the first section into five chapters—1 Kali, 2 Raji, 3 Rajni, 4 Vidyut, and 5 Megha.

Bhante! What has Shraman Bhagavan Mahavir explained about the first chapter

सूत्र ६ : जंबू 'एवं खलु ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए, सेणिए राया, चेलणा देवी। सामी समोसरिए। परिसा निग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ।

सूत्र ६ जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नाम का नगर था। जिसके बाहर गुणशील चैत्य था। वहाँ श्रेणिक राजा राज्य करते थे। उनकी रानी चेलना थी। एक बार वहाँ श्रमण भगवान महावीर पधारे। वन्दना के लिए परिषद् निकली और भगवान की उपासना करने लगी।

6. Jambu! During that period of time there was a city named Rajagriha Outside the city there was a Chaitya named Gunashil Chaitya King Shrenik ruled over that city The name of his queen was Chelna. Once Shraman Bhagavan Mahavir arrived there A delegation of citizens came and commenced worship

सूत्र ७ : तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि, चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, चउहिं महयरियाहिं, सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं, अण्णेहिं बहुएहि य कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहि देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ।

सूत्र ७ काल के उस भाग मे राजधानी चमरचचा मे कालावतसक भवन मे काली नाम की देवी काल नाम के सिंहासन पर बैठी थी। चार हजार सामानिक देवियॉ, चार महत्तरिका देवियॉ, सपरिवार तीन परिषद्, सात अनीक, सात अनीकाधिपति, सोलह हजार आत्म-रक्षक देव तथा अन्यान्य कालावतंसक भवन के निवासी असुरकुमार देवो और देवियो के समूह से घिरी वह उच्च ध्वनि वाले वाद्य-यत्र, नृत्य, गीत आदि द्वारा मनोरजन करती समय व्यतीत कर रही थी।

7. During that period of time a goddess named Kali was sitting on a throne named Kaal in the Kaalavatansak divine vehicle in the capital city Chamarchancha Surrounded by four thousand vehicle-based goddesses, four queen-goddesses, three types of assemblies with members, seven armies, seven commanders, sixteen thousand guard-gods, and a mass of many other Asur-kumar gods and goddesses residing in the Kaalavatansak dimension, she was enjoying divine pleasures including melodious musical instruments, dances and songs

सूत्र ८ : इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीव दीवं विउलेण ओहिणा आभोएमाणी आभोएमाणी पासइ। तत्थ ण समण भगवं महावीर जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूव उग्गहं उग्गिण्हित्ता सयमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा हयहियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अचेइ, अंचित्ता दाहिण जाणुं धरणियलसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाण धरणियलसि निवेसेइ, निवेसित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमइत्ता कडय-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल जाव सिरसावत्त कट्टु एव वयासी–

सूत्र ८ · काली देवी सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को अपने विपुल अवधिज्ञान के उपयोग से देख रही थी। उसने भरत क्षेत्र मे राजगृह नगर के गुणशील चैत्य मे यथा प्रतिरूप, साधु के लिए उचित स्थान की याचना कर संयम और तप की साधना मे लीन श्रमण भगवान महावीर को देखा। उन्हें देखकर वह प्रसन्न और सतुष्ट हुई, उसका चित्त आनन्दमग्न हो गया और मन प्रीति से अभिभूत हो गया। वह आत्मविभोर होकर सिंहासन से उठी और पादपीठ से नीचे उतरकर पादुकाएँ उतार दी। फिर तीर्थंकर भगवान की दिशा मे सात-आठ चरण आगे बढी, बायें घुटने को ऊपर रख दाहिने घुटने को धरती पर टेका और मस्तक को कुछ ऊँचा किया। कडों और बाजूबदो से शिथिल भुजाओ को मिलाया और यथाविधि हाथ जोडकर बोली–

8. With the help of her all enveloping Avadhi Jnana she was observing the whole Jambu continent She saw Shraman Bhagavan Mahavir begging for an appropriate place and commencing his profound practices of penance and spiritual discipline in the Gunasheel Chaitya in Rajagriha city in the Bharat

area She was pleased and contented, she was filled with joy and overwhelmed with fondness. In her state of enchantment she got up from her throne, stepped down from the foot rest and took off her sandals. She took seven - eight steps in the direction of the Tirthankar, sat down with her left knee high and right knee touching the ground. She raised her head a little, brought together her arms that were heavy with bracelets and armlets, properly joined her palms and uttered—

सूत्र ९ : णमोऽत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इह गए, पासउ णं मे समणं भगवं महावीरे तत्थ गए इह गयं, ति कट्टु वदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा।

सूत्र ९ "अरिहंतों को नमस्कार हो . (शक्र-स्तव)। सिद्ध गति प्राप्त करने की कामना रखने वाले श्रमण भगवान महावीर को नमस्कार हो। वहाँ स्थित भगवान को मै यहाँ से वन्दना करती हूँ। वहाँ रहे भगवान मुझे यहाँ देखें।" फिर उसने वन्दना-नमस्कार किया और पूर्व दिशा की ओर मुख करके अपने श्रेष्ठ सिहासन पर बैठ गई।

9. "I bow and convey my reverence to the worthy ones (Arhats), the supreme ones (Bhagavans), . (the panegyric by the king of gods or the Shakrastav) My reverence also to Shraman Bhagavan Mahavir who is desirous of attaining the status of Siddh From here I offer my salutations to Bhagavan who sits there, may he see me and accept my salutations from there " After the salutation and due obeisance she sat on her throne facing east

सूत्र १० · तए ण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था–'सेय खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए' त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, सपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देह, जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं ति करेह। करित्ता जाव पच्चप्पिणह।' ते वि तहेव जाव करित्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सविच्छिन्नं जाणं, सेसं तहेव। णामगोयं साहेइ, तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ, जाव पडिगया।

सूत्र १० : इस वन्दना के पश्चात् उसके मन में इच्छा हुई–"श्रमण भगवान महावीर को वन्दना करना और उनकी उपासना करना मेरे लिए श्रेयष्कर होगा।" यह विचार उठते ही उसने आभियोगिक देवो को बुलाकर कहा–"देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान महावीर राजगृह नगर के गुणशील चैत्य में विराजमान हैं . . . . अतः दिव्य और श्रेष्ठ देवगमन योग्य विमान तैयार करके

मुझे सूचित करो।" (विस्तृत आज्ञा सूर्याभ देव के समान–राजप्रश्नीयसूत्र-९) आभियोगिक देवों ने आज्ञानुसार हजार योजन विस्तार वाला विमान बनाया। काली देवी अपने समुदाय व ऋद्धि-वैभव सहित श्रमण भगवान महावीर के सम्मुख उपस्थित हुई और नृत्यादि प्रदर्शन कर वन्दना-नमस्कार कर वापस लौट गई।

10. She then had a desire—"It would be proper for me to offer my salutations to Shraman Bhagavan Mahavir in person and worship him." She at once called some Abhiyogik Devs (servant-gods) and said, "Beloved of gods! Prepare the best of the vehicles suitable for divine movement and inform me" (detailed instructions as mentioned in the Raj-prashniya Sutra in connection with the Suryaabh god) Accordingly the servant-gods created a thousand Yojan large Viman Goddess Kali arrived before Shraman Bhagavan Mahavir with her retinue, in all her power and glory She performed dances, etc and returned after due salutations

सूत्र ११ : भंते ! त्ति भगवं गोयमे समण भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–'कालीए णं भन्ते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी कहिं गया ?' कूडागारसाला-दिट्ठंतो।

सूत्र ११ . गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दना-नमस्कार कर पूछा–"भन्ते ! काली देवी की वह दिव्य ऋद्धि कहाँ चली गई ?" भगवान ने कूटागारशाला का दृष्टान्त दिया। (अ १३ सू. ५ के समान)

11. Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir, "Bhante! Where did the divine powers of Kali Devi disappear?" Bhagavan answered the question by giving the example of Kutagar (see appendix of Ch 13)

काली देवी का पूर्व–भव

सूत्र १२ : 'अहो णं भन्ते ! काली देवी महिड्ढिया। कालीए णं भन्ते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमण्णागया ?'

एवं जहा सूरियाभस्स जाव एव खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था। वण्णओ। अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया।

सूत्र १२ · "भन्ते ! काली देवी महान् ऋद्धिशाली है। उसे यह दिव्य ऋद्धि पूर्व-भव में क्या करने से मिली ? देव-भव कैसे प्राप्त हुआ और कैसे वह शक्ति उपयोग मे आई ?"

यह वर्णन भी सूर्याभ देव के वर्णन के समान है। भगवान ने उत्तर दिया–हे गौतम ! काल के उस भाग में भारतवर्ष में आमलकल्पा नाम की नगरी थी। उसके बाहर आम्रशालवन नाम का चैत्य था। उस नगर मे जितशत्रु राजा राज्य करता था।

EARLIER INCARNATION OF GODDESS KALI

12. "Bhante! Goddess Kali was very powerful What deeds did she do in her earlier birth that she was endowed with so much power How did she attain her divine form and power?"

Shraman Bhagavan Mahavir replied—

Gautam! During that period of time there was a city named Amalkalpa in Bharatvarsh Outside the city there was a Chaitya named Amrashalvan King Jitshatru was the ruler of that city

सूत्र १३ . तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले णामं गाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा। तस्स णं कालगस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था, वड्ढा वड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया वि होत्था।

सूत्र १३ वहाँ काल नाम का गाथापति (गृहस्थ) रहता था। वह धनाढ्य और सामर्थ्यवान था। उसकी पत्नी का नाम कालश्री था। वह सुकुमार अगो वाली थी और मनोहर रूप वाली थी। काल गाथापति की पुत्री तथा कालश्री की आत्मजा का नाम काली था। वह बडी आयु की हो जाने पर भी अविवाहिता थी। उसका शरीर जीर्ण हो चला था, उसके स्तन लटक गये थे और लोग उसे देख विरक्त हो जाते थे। इस कारण वह अविवाहित ही रह गई थी।

13. A citizen named Kaal lived there He was rich and resourceful The name of his wife was Kaalshri She was delicate and beautiful The couple had a daughter named Kali She was middle aged but still unmarried Her body had lost its charm, her breasts drooped, and so she presented a repulsive appearance to spouse-seekers That was the reason she had become a spinster

सूत्र १४ · तेण कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी, णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहि अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे जाव अबसालवणे समोसढे, परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ।

सूत्र १४ · काल के उस भाग मे पुरुषादानी धर्म प्रवर्त्तक अरिहत पार्श्वनाथ विद्यमान थे। वे वर्धमान स्वामी के समान गुण वाले थे। अन्तर यह था कि उनका शरीर नौ हाथ ऊँचा था और उनके साथ सोलह हजार साधु तथा अडतीस हजार साध्वियाँ थी। वे आम्रशालवन मे पधारे। परिषद् निकली और भगवान की उपासना करने लगी।

14. During that period of time, the propagator of religion Purushadani Arhat Parshvanath was living He was as endowed as Shraman Bhagavan

Mahavır The only dıfference was that hıs heıght was nıne hands (approxımately nıne feet) and he was accompanıed by sıxteen thousand male ascetıcs and thırty eıght thousand female ascetıcs He arrıved ın the Amrashalvan A delegatıon of cıtızens came and commenced hıs worshıp

सूत्र १५ तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-'एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए।'

'अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेहि।'

सूत्र १५ काली यह समाचार सुनकर प्रसन्न और सतुष्ट हुई तथा अपने माता-पिता के पास जा हाथ जोडकर बोली-"हे माता-पिता ! पार्श्वनाथ अरिहत, पुरुषादानीय, धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले (आदि) यहाँ आये हुए है। आपकी आज्ञा हो तो मै उनके चरणो मे वन्दना करने जाना चाहती हूँ।"

माता-पिता ने उत्तर दिया-"देवानुप्रिये ! तुझे जिसमे सुख मिले वही कर। विलम्ब मत कर।"

15. Hearıng about thıs, Kalı was pleased and contented She went to her parents, joıned her palms and saıd, "Father and mother! Arhat Parshvanath, the propagator of relıgıon, Purushadanıya (etc) ıs ın town If you gıve me permıssıon I would love to go and pay my homage and salutatıons at hıs feet "

The parents replıed, "Beloved of gods! Do as you please wıthout any delay"

सूत्र १६ तए णं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा।

सूत्र १६ · माता-पिता की आज्ञा मिल जाने से काली का मन प्रसन्न हो गया। वह स्नानादि नित्य कर्मो से निवृत्त हो श्रेष्ठ व मागलिक वस्त्र धारण कर, आभूषण पहन, दासियो को साथ ले अपने घर से बाहर निकली। बाहर ड्योढ़ी में पहुँचकर श्रेष्ठ यान पर सवार हुई।

16. Kalı beamed wıth joy when she got permıssıon from her parents She bathed and dressed ın her best and auspıcıous apparel and ornaments She took along her maıd servants, came out ın the courtyard of her house, and boarded a splendıd charıot

सूत्र १७ तए णं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी एवं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ। तए ण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं कहेइ।

सूत्र १७ वाहन पर सवार हो कर वह वहॉ पहुँची जहॉ भगवान पार्श्वनाथ विराजमान थे। फिर वह द्रौपदी के समान भगवान की वन्दना-उपासना करने लगी। भगवान ने काली तथा उपस्थित जनसमूह को धर्मोपदेश दिया।

17. She arrived at the spot where Arhat Parshvanath was sitting She paid her homage and did worship as done by Draupadi (ch 17) Bhagavan gave his discourse before Kali and the large audience

सूत्र १८ तए ण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–'सद्दहामि ण भते ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भे वयह, ज णवर देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिए जाव पव्वयामि।'

'अहासुह देवाणुप्पिए ?'

सूत्र १८ काली नाम की उस कन्या ने अरिहत पार्श्वनाथ का धर्मोपदेश सुनकर उसके मर्म को समझकर प्रसन्नचित्त हो उन्हे तीन वार यथाविधि वन्दना-नमस्कार किया। फिर वह बोली–"भन्ते ! मै निर्ग्रन्थ वचन पर श्रद्धा करती हूँ। आपने जो कहा है वह अक्षरश. सत्य है। हे देवानुप्रिय ! मै अपने माता-पिता से अनुमति ले लेती हूँ और तब मै आपके पास दीक्षा ग्रहण करूँगी।"

भगवान ने कहा–"देवानुप्रिये ! जिसमे तुम्हे सुख मिले वही करो।"

18. Kali was pleased and satisfied to hear and grasp the meaning of the discourse She offered salutations to Arhat Parshvanath three times and said, "Bhante! I have faith on the word of the Nirgranth (the Omniscient) What you have said is the absolute truth Beloved of gods! I would get permission from my parents and come back to get initiated in your order"

Bhagavan replied, "Beloved of gods! Do as you please"

सूत्र १९ . तए ण सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएण एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मिय जाणप्पवर दुरूहइ, दुरूहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतियाओ अबसालवणाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरि मज्झमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं

ठवेइ, ठवित्ता धम्मियामो जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-

सूत्र १९ : पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ की यह बात सुन प्रसन्न व संतुष्ट हुई और उन्हें वन्दना करके अपने श्रेष्ठ यान पर सवार हो आम्रशालवन चैत्य से बाहर निकली। आमलकल्पा नगरी के बीच से होती हुई अपने घर के बाहर उपस्थानशाला मे पहुँची और यान रुकवाकर नीचे उतरी। अपने माता-पिता के पास जा दोनो हाथ जोडकर बोली-

19. She was pleased and satisfied to hear this She offered salutations to Arhat Parshvanath, boarded her chariot, and came out of the Amrashalvan She crossed the city and reached the courtyard of her house When the chariot stopped, she got down and went to her parents After due greetings she said—

सूत्र २० 'एव खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अतिए धम्मे णिसंते, से वि य ण धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए, तए ण अहं अम्मयाओ ! ससारभउव्विग्गा, भीया जम्मण-मरणाणं इच्छामि ण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अतिए मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेह।'

सूत्र २० . "हे माता-पिता ! मैने अर्हत् पार्श्वनाथ का धर्मोपदेश सुना और बार-बार उस धर्म को स्वीकार करने की इच्छा मेरे मन मे जागी है। वह धर्म मुझे रुचा है। अत मै संसार के भय से उद्विग्न हो गई हूँ और जन्म-मरण से भयभीत भी। मैं आपकी आज्ञा प्राप्त कर अर्हत् पार्श्वनाथ के निकट मुण्डित होकर, गृह त्यागकर अनगार बनना चाहती हूँ, दीक्षा लेना चाहती हूँ।"

माता-पिता ने स्वीकृति प्रदान की-"देवानुप्रिये ! जिसमे तुम्हे सुख मिले, वह निर्विलम्ब करो।"

20. "Father and mother! I have listened to the discourse of Arhat Parshvanath, I like his religion and time and again I feel the urge to embrace that religious path Thus, I have become disturbed by the sorrows of the world and afraid of the cycles of rebirth I seek your permission to remove my hair, renounce family life, and become an ascetic by getting initiated into his order"

The parents gave their consent, "Beloved of gods! Do as you please without any delay"

सूत्र २१ : तए णं से काले गाहावई विपुल असणं पाण खाइमं साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतित्ता ततो पच्छा ण्हाए

जाव विपुलेणं पुप्फवत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबधि-परियणस्स पुरओ कालिय दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ, ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता मित्त-णाइ-णियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडा सव्वड्ढीए, जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झमज्झेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइसए पासइ, पासित्ता सीय ठवेइ, ठवित्ता कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ। तए णं कालिं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

सूत्र २१ काल गाथापति ने विपुल आहार सामग्री तैयार कर मित्रो, परिजनों आदि को निमत्रण दिया। उनके आने पर आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो विपुल पुष्प, वस्त्र, गधादि से उसने अतिथियो का सत्कार-सन्मान किया। फिर उन सभी के सामने सोने-चाँदी के कलशों में भरे पानी से काली को स्नान करवाया और वस्त्रालकारों से विभूषित किया। उसे पुरुषसहस्रवाहिनी पालकी पर बैठाकर मित्रो, स्वजनो आदि के साथ अपनी सम्पूर्ण ऋद्धि सहित गाजे-बाजे से आमलकल्पा नगरी के बीच मे होते हुए आम्रशालवन की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर तीर्थंकर के अतिशय देखे। पालकी रुकवाकर काली को नीचे उतारा और उसे आगे कर उसके माता-पिता पुरुषादानीय अर्हत् पार्श्वनाथ के निकट गये। उन्हे यथाविधि वन्दना-नमस्कार कर वे बोले–

21. Citizen Kaal made arrangements for a great feast and invited all his family members, relatives, and friends When they arrived he got ready after bathing (etc) and greeted and honoured his guests by offering them flowers, dresses, perfumes, etc In their presence he anointed Kali with water poured from gold and silver urns and got her properly dressed and adorned with ornaments He helped her into a Purisasahassa palanquin Accompanied by all his guests, and with all due grandeur, and pomp and show, he moved through the city of Amalkalpa towards the Amrashalvan When he reached there, he witnessed the divine signs associated with the Tirthankar He then got Kali down from the palanquin and, keeping her in the lead, arrived near Arhat Parshvanath After offering due obeisance, the parents submitted—

सूत्र २२ 'एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कता जाव किमंग पुण पासणयाए ? एस णं देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुडा भवित्ता णं जाव पव्वइत्तए, त एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणीभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्खं।'

'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।'

सूत्र २२ · "देवानुप्रिय ! यह काली नाम की कन्या हमारी पुत्री है। यह हमे इष्ट, प्रिय आदि है। यह ससार-भ्रमण के भय से उद्विग्न होकर आपके पास दीक्षा लेना चाहती है। अत· हम आपको यह शिष्य-भिक्षा देते है। कृपया इसे स्वीकार करे।"

"देवानुप्रिय ! जिसमे सुख मिले वह निर्विलम्ब करो।"

22. "Beloved of gods! This is our cherished, adored, (etc) and beloved daughter Kali She is disturbed by the fear of the cycles of rebirth and desires to get initiated into your order Kindly accept her as a disciple-donation from us "

"Beloved of gods! Do as you please without any delay "

सूत्र २३ · तए ण सा काली कुमारी पास अरहं वंदइ, नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभाय अवक्कामइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो वंदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–आलित्ते ण भंते ! लोए, एव जहा देवाणंदा, जाव सयमेव पव्वावेउ।

सूत्र २३ कालीकुमारी ने अर्हत् पार्श्व को वन्दना की और उत्तर-पूर्व दिशा मे जाकर अपने आभूषण आदि उतारे और स्वय ही केश-लोच किया। फिर वह अर्हत् पार्श्व के पास लौटी और तीन बार वन्दन करके बोली–"भन्ते ! यह लोक धधक रहा है (भगवतीसूत्र मे वर्णित देवानन्दा के कथन के समान)। अत मेरा अनुरोध है कि आप स्वय मुझे दीक्षा प्रदान करे।"

23. Kali, then, formally offered salutations to Arhat Parshvanath She went in the northeastern direction and took off her ornaments, (etc) and pulled out her hair herself After this, she returned to Arhat Parshvanath and after offering three salutations said, "Bhante! This world is burning fiercely in the fire of aging and death (detailed description of the initiation is same as that of Devananda in Bhagavati Sutra) So I beg you to initiate me into your order "

सूत्र २४ . तए ण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयति।

तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालि कुमारिं सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ता ण विहरइ। तए णं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबभयारिणी। तए ण सा काली अज्जा पुप्फचूला अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं अहिज्जइ, बहूणि चउत्थ जाव विहरइ।

सूत्र २४ · अर्हत् पार्श्वनाथ ने स्वय कालीकुमारी को आर्या पुष्पचूला को शिष्या के रूप मे प्रदान किया।

आर्या पुष्पचूला ने काली को दीक्षित किया और वह दीक्षा ग्रहण कर श्रमण जीवन बिताने लगी। कालीकुमारी ईर्यासमिति आदि श्रमण गुणों से युक्त ब्रह्मचारिणी आर्या बन गई। आर्या पुष्पचूला से उसने सामायिक सहित ग्यारह अगो का अध्ययन किया तथा उपवास आदि अनेक प्रकार के तप करती जीवन बिताने लगी।

24. Arhat Parshvanath gave Kalı Kumarı as a dıscıple to Arya Pushpachula

Kalı got formally ınıtıated ınto the order by Arya Pushpachula and commenced the ascetıc lıfe She started followıng the Shraman conduct ıncludıng Irya Samıtı (dıscıplıne of movement) and became a celıbate Arya Wıth passage of tıme she acquıred the knowledge of the eleven canons and led a dıscıplıned ascetıc lıfe doıng a varıety of penance

सूत्र २५ . तए ण सा काली अज्जा अन्नया कयाइं सरीरबाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खण अभिक्खण हत्थे धोवइ, पाए धोवइ, सीसं धोवइ, मुहं धोवइ, थणंतराइं धोवइ, कक्खतराणि धोवइ, गुज्झतराइं धोवइ, जत्थ वि य ण ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएइ, त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता पच्छा आसयइ वा सयइ वा।

सूत्र २५ कालान्तर मे आर्या काली शरीरासक्त हो गई और बार-बार हाथ, पैर, सिर, मुख, वक्ष, कॉख और गुह्य-स्थान धोने लगी। अपने कायोत्सर्ग, सोने तथा स्वाध्याय करने के स्थानो के उपयोग से पहले वहाँ जल छिडकने लगी।

25. Later Kalı became more ındulgent toward the beauty and adornment of her body She would wash her lımbs, head, face, breasts, armpıts and genıtals many tımes Before standıng, sleepıng, medıtatıng or studyıng she would sprınkle water over the ground she used for these actıvıtıes.

सूत्र २६ : तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी-'नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिए ! समणीणं णिग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए, तुमं च णं देवाणुप्पिए, सरीरबाउसिया जाया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवसि जाव आसयाहि वा सयाहि वा, त तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि।'

सूत्र २६ · तब आर्या पुष्पचूला ने उससे कहा-"देवानुप्रिये ! श्रमणी-निर्ग्रन्थियो को शरीरासक्त होना नहीं कल्पता। पर तुम वैसी हो गई हो और बार-बार शरीर को धोती हो और धरती पर जल छिडकती हो। अतः तुम इस पापस्थान की आलोचना करो और प्रायश्चित्त अंगीकार करो।"

26. Arya Pushpachula warned her, "Beloved of gods! we are Nirgranth Shramanis (Jain female ascetics) and we are not allowed to indulge in so much care of the body But you are washing your limbs (etc) again and again and sprinkling water over the ground You have become indisciplined, and so you should condemn this state of disgraceful conduct and do the prescribed atonement "

सूत्र २७ तए ण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ।

सूत्र २७ आर्या काली ने गुरुणी की यह बात स्वीकार नही की और मौन ही रही।

27. Arya Kali did not accept these instructions of her teacher and remained silent

सूत्र २८ तए ण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालि अज्ज अभिक्खण अभिक्खण हीलेंति, णिंदंति, खिसंति, गरिहंति, अवमण्णंति, अभिक्खण अभिक्खण एयमट्ठ निवारेंति।

सूत्र २८ इस पर आर्या पुष्पचूला सहित अन्य आर्याएँ उसकी अवहेलना करने लगी, निन्दा करने लगी, अवज्ञा करने लगी, गर्हा करने लगी, चिढाने लगी और बार-बार उसके इस निषिद्ध कार्य मे बाधा देने लगी।

28. As a result of this, Arya Pushpachula and the other Sadhvis of the group started neglecting, criticizing, disregarding and disdaining her They also tried to restrain her from indulging in prohibited activities

सूत्र २९ . तए ण तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहि अभिक्खण अभिक्खण हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झित्थिए जाव समुप्पज्जित्था–'जया ण अह अगारवासमज्झे वसित्था, तया णं अह सयवसा, जप्पभिइ च ण अह मुंडा भविता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तप्पभिइ च ण अह परवसा जाया, त सेय खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्किय उवस्सयं उवसपज्जित्ताण विहरित्तए' त्ति कट्टु एव सपेहेइ, संपेहित्ता कल्ल जाव जलते पाडिएक्क उवस्सय गिण्हइ, तत्थ ण अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खण हत्थे धोवइ, जाव आसयइ वा सयइ वा।

सूत्र २९ इस व्यवहार से आर्या काली के मन मे विचार उठा–"जव मै गृहस्थ थी तव स्वाधीन थी। जब से मैने दीक्षा अगीकार की है तब से मै पराधीन हो गई हूँ। अत कल सूर्योदय होने पर अलग उपाश्रय (स्थान) ग्रहण करके रहना ही मेरे लिए अच्छा होगा।" दूसरे दिन प्रात.काल उसने अपने निश्चय के अनुसार पृथक् उपाश्रय मे रहना आरम्भ कर दिया। वहाँ कोई रोकने-टोकने वाला नहीं रहा इसलिए वह स्वच्छद हो गई और अगो को धोने आदि मनमाने कार्य जब-तब करने लगी।

29. This treatment by other Sadhvis forced Kali to think, "When I was a house-holder I had my freedom Since I got initiated I have lost my freedom So it would be good for me to leave this group and shift to another abode tomorrow." She resolved to do accordingly and the first thing she did in the morning was to shift to another suitable abode Living independently, she was free of any curbs and restraints She became unrestrained in her excessive indulgence in the care of her body.

सूत्र ३० . तए ण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछदा, अहाछंदविहारी, ससत्ता संसत्तविहारी, बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेदित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अप्पडिक्कंता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिया अगुलस्स असखेज्जाए भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववन्ना।

सूत्र ३० धीरे-धीरे आर्या काली मन मे शरीर के निकट रहने के कारण पार्श्वस्थ-विहारिणी (सयम से दूर) हो गई, नियम-पालन मे शिथिल होने के कारण अवसन्न-विहारिणी हो गई, अवगुणो मे लिप्त होने के कारण कुशील-विहारिणी हो गई, मनमाना व्यवहार करने के कारण यथा-छद-विहारिणी हो गई और गृहस्थादि से सम्पर्क-ससर्ग करने के कारण ससक्त-विहारिणी हो गई। इस प्रकार अनेक वर्षो तक श्रमण जीवन का पालन कर एक पक्ष की सलेखना द्वारा शरीर क्षीण कर आलोचना और प्रतिक्रमण किए विना शरीर त्यागकर चमरचचा नामक राजधानी मे कालावतसक विमान की उपपात सभा (देवो के उत्पन्न होने का स्थान) मे देवदूष्य वस्त्र से ढकी देवशय्या पर एक अगुल के असख्यातवे भाग की अवगाहना (स्थान ग्रहण करना) द्वारा काली देवी के रूप मे उत्पन्न हुई।

30. As she was inclined more towards her body she lost her discipline As she stopped caring for the codes of conduct she also became lax in her ascetic conduct Due to her indulgence in base activities she lost her grace Due to her brazen behaviour she became a wayward woman Her fondness for mundane physical pleasures made her overindulgent In this manner she lived for a long time as an ascetic In the end she observed the ultimate vow of fifteen days duration time and died without reviewing and atoning for her misconduct She reincarnated as goddess Kali, occupying a mini-micro space equivalent to an infinitesimal part of the width of a finger on a divine cot covered with a divine cloth, in the Upapata Sabha (the hall where gods are born) of the vehicle named Kalavatansaka in the capital city named Chamarchancha

सूत्र ३१ : तए णं सा काली देवी अहुणोववन्ना समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए।

सूत्र ३१ : उत्पन्न होने के पश्चात् वह क्षणमात्र मे सूर्याभ देव के समान भाषा, मन आदि पाँच पर्याप्तियो से युक्त हो गई। (पर्याप्ति = किसी कार्य करने की सम्पूर्ण क्षमता का होना।)

31. Within a second after her birth she fully acquired the five capacities of speech, thought, etc just like the Suryaabh goddess

सूत्र ३२ : तए ण सा काली देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीण जाव अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव विहरइ। एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए।

सूत्र ३२ : तत्पश्चात् वह काली देवी चार हजार सामानिक देवो आदि (सूत्र ७) पर आधिपत्य करती समय बिताने लगी। हे गौतम ! इस प्रकार काली देवी ने वह दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्य देवानुभव प्राप्त किये हैं और उपभोग योग्य बनाये है।

32. After this that goddess commenced her divine life ruling over the four thousand vehicle owning gods (etc as in para 7) Gautam! This is how goddess Kali acquired her divine capacities, divine aura, and divine experience and made them useful to her

सूत्र ३३ : कालीए णं भंते ! देवीए केवइय कालं ठिई पण्णत्ता ?

गोयमा ! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता।

काली ण भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उववट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अंतं काहिइ।

सूत्र ३३ : गौतम स्वामी–"भन्ते ! काली देवी की कितने काल की स्थिति (आयु) कही गई है ?"

भगवान–"गौतम ! अढाई पल्योपम की।"

"भन्ते ! काली देवी उस देवलोक के बाद च्यवन करके कहाँ उत्पन्न होगी।"

"गौतम ! महाविदेह में उत्पन्न होकर सिद्धि प्राप्त करेगी, दु:खों का अन्त करेगी।"

33. Gautam Swami, "Bhante! What is said to be the life-span of goddess Kali?"

Bhagavan, "Gautam! It is two and a half Palyopam "

"Bhante! Where will goddess Kali reincarnate on descending from her divine abode?"

"Gautam! She will reincarnate in the Mahavideh area and achieve liberation ending her sorrows "

सूत्र ३४ : एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमवग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि॥१४८॥

सूत्र ३४ हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा है। जैसा मैने सुना है वैसा ही तुमसे कहा है।

34. Jambu! This is the meaning of the first chapter of the first section as told by Shraman Bhagavan Mahavir So I have heard and so I confirm

॥ पढम अज्झयणं समत्तं ॥

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त॥

|| **END OF CHAPTER ONE** ||

बीइयं अज्झयण : राई
द्वितीय अध्ययन : राजी
SECOND CHAPTER : RAJI

सूत्र ३५ : जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र ३५ . जम्बू स्वामी ने प्रश्न किया–"भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने दूसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?"

35. Jambu Swami asked, "Bhante! What is the meaning of the second chapter as explained by Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र ३६ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णगरे, गुणसीलए चेइए, सामी समोसढे, परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ।

सूत्र ३६ : हे जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नगर में गुणशील नामक उद्यान में श्रमण भगवान महावीर पधारे। परिषद् निकली तथा उनकी उपासना में लीन हो गई।

36. Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Rajagriha and stayed in the Gunashil Chaitya A delegation of citizens came and commenced his worship.

सूत्र ३७ : तेण कालेण तेण समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एव जहा काली तहेव आगया, णट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया। 'भंते त्ति' भगव गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमसइ, वदित्ता णमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा।

सूत्र ३७ : काल के उस भाग मे राजी नामक देवी चमरचंचा राजधानी से काली देवी के समान ही भगवान की सेवा मे आई और नाट्यादि का प्रदर्शन कर लौट गई। गौतम स्वामी ने भगवान महावीर से उसके पूर्व-भव के विषय मे प्रश्न किया।

37. During that period of time, as did goddess Kali another goddess named Raji came from the capital city Chamarchancha, performed dances, etc and returned Gautam Swami asked Shraman Bhagavan Mahavir about her earlier births

सूत्र ३८ : एवं खलु गोयमा ! तेण कालेणं तेण समएण आमलकप्पा णयरी, अंबसालवणे चेइए, जियसत्तू राया, राई गाहावई, राईसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स समोसरण, राई दारिया जहेव काली तहेव णिक्खता तहेव सरीरबाउसिया, त चेव सव्व जाव अत काहिइ।

सूत्र ३८ : भगवान महावीर ने विस्तार से उसका वर्णन किया-"हे गौतम ! काल के उस भाग मे आमलकल्पा नगरी के बाहर आम्रशालवन था। वहाँ का राजा जितशत्रु था। वहाँ राजी नाम का एक गाथापति था। जिसकी पत्नी का नाम राजश्री और पुत्री का नाम राजी था। एक बार अर्हत् पार्श्वनाथ वहाँ पधारे और राजी उन्हे वन्दन करने गई। फिर उसने दीक्षा ले ली, पर कुछ समय बाद शरीर की शोभा मे आसक्त हो गई। अन्तत मृत्यु प्राप्त कर वह देवी बनी और भविष्य में महाविदेह मे जन्म ले सिद्धि प्राप्त करेगी। (विस्तृत विवरण काली देवी के समान)

38. Shraman Bhagavan Mahavir narrated her story in details—"Gautam! During that period of time there was a garden named Amrashalvan outside the city of Amalkalpa The king of this city was Jitshatru. In the city lived a citizen named Raji The name of his wife was Rajshri and that of his daughter was Raji Once Arhat Parshvanath arrived in the town and Raji went to pay him homage Later she got initiated. After some time she got excessively concerned about her body. In the end she died and reincarnated

as a goddess In future she will reincarnate in the Mahavideh area and achieve liberation. (Details same as goddess Kali)

सूत्र ३९ : एवं खलु जंबू ! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ।

सूत्र ३९ : जम्बू ! द्वितीय अध्ययन का यह निक्षेप समझना चाहिए।

39. Jambu! This is the end of chapter two

॥ बिइय अज्झयणं समत्तं॥

॥ द्वितीय अध्ययन समाप्त॥

|| END OF CHAPTER TWO ||

तइयं अज्झयणं : रयणी
तृतीय अध्ययन : रजनी
THIRD CHAPTER : RAJNI

सूत्र ४० : जइ णं भंते ! तइयस्स उक्खेवओ समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स बिइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेण के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र ४० : जम्बू स्वामी ने पूछा–"भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने तीसरे अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?"

40. Jambu Swami asked, "Bhante! What is the meaning of the third chapter as explained by Shraman Bhagavan Mahavir?"

सूत्र ४१ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए, एवं जहेव राई तहेव रयणी वि। णवरं–आमलकप्पा णयरी, रयणी गाहावई, रयणसिरी भारिया, रयणी दारिया, सेसं तहेव जाव अंते काहिइ।

सूत्र ४१ : सुधर्मा स्वामी ने उत्तर दिया–"जम्बू ! उस काल और उस समय मे राजगृह नामक एक नगर था ...... ?" आदि समस्त वृत्तान्त राजी देवी अथवा काली देवी के समान

ही है–अन्तर यह है कि गाथापति का नाम रजनी, गाथापत्नी का नाम रजनीश्री और पुत्री का नाम रजनी था।

41. Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir arrived in Rajagriha and stayed in the Gunashil Chaitya. The story goes exactly as in case of goddess Kali, the only difference being that the names of the citizen, his wife and daughter were Rajni, Rajnishri, and Rajni respectively

॥ तइयं अज्झयणं समत्त ॥

॥ तृतीय अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF CHAPTER THREE ॥

चउत्थं अज्झयणं : विज्जू
चतुर्थ अध्ययन : विद्युत्
FOURTH CHAPTER : VIDYUT

सूत्र ४२ : एवं विज्जू वि। आमलकप्पा नयरी। विज्जू गाहावई, विज्जूसिरी भारिया, विज्जू दारिया, सेसं तहेव।

सूत्र ४२ : विद्युतश्री का समस्त वृत्तान्त काली देवी के समान है। आमलकल्पा नगरी। नामान्तर–गाथापति का नाम विद्युत्, गाथापत्नी का नाम विद्युतश्री और पुत्री का नाम विद्युत्।

42. The story goes exactly as in case of goddess Kali, the only difference being that the names of the citizen, his wife and daughter were Vidyut, Vidyutshri, and Vidyut respectively

॥ चउत्थ अज्झयणं समत्तं ॥

॥ चतुर्थ अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF CHAPTER FOUR ॥

पंचमं अज्झयणं : मेहा
पंचम अध्ययन : मेघा
FIFTH CHAPTER : MEGHA

सूत्र ४३ : एवं मेहा वि। आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई, मेहसिरी भारिया, मेहा दारिया, सेसं तहेव।

सूत्र ४३ : इसका समस्त वृत्तान्त काली देवी के समान। नामान्तर–गाथापति का नाम मेघ, गाथापत्नी का नाम मेघश्री, पुत्री का नाम मेघा।

43. The story goes exactly as in case of goddess Kali, the only difference being that the names of the citizen, his wife and daughter were Megh, Meghshri, and Megha respectively

॥ पंचमं अज्झयण समत्तं ॥

॥ पचम अध्ययन समाप्त ॥

| | END OF CHAPTER FIVE | |

॥ पढमं वग्गो समत्तो ॥

| | END OF FIRST SECTION | |

पढमं अज्झयणं : सुंभा
प्रथम अध्ययन : शुंभा
FIRST CHAPTER : SHUMBHA

सूत्र ४४ जइ णं भते ! समणेण जाव सपत्तेणं–जाव दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ।

सूत्र ४४ जम्बू स्वामी–"भन्ते ! श्रमण भगवान महावीर ने जब प्रथम वर्ग का उपरोक्त अर्थ बताया है तो द्वितीय वर्ग का क्या अर्थ बताया है।"

44. Jambu Swami, "Bhante! When this is the meaning of the first section what is that of the second section as told by Shraman Bhagavan Mahavir "

सूत्र ४५ · एव खलु जम्बू ! समणेण जाव संपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–(१) सुभा, (२) निसुभा, (३) रभा, (४) निरभा, (५) मदणा।

सूत्र ४५ · सुधर्मा स्वामी–"जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने दूसरे वर्ग के पॉच अध्ययन बताये है–(१) शुभा, (२) निशुभा, (३) रभा, (४) निरंभा, (५) मदना।"

45. Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are five chapters in the second section—1 Shumbha, 2 Nishumbha, 3 Rambha, 4 Nirambha, and 5 Madana

सूत्र ४६ जइ ण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स ण भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

सूत्र ४६ "भन्ते ! यदि श्रमण भगवान महावीर ने द्वितीय वर्ग के पॉच अध्ययन बताये है तो उसके प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है?"

46. Bhante! When Shraman Bhagavan Mahavir has said that second section has five chapters, what has he explained about the first chapter?

सूत्र ४७ · एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे, गुणसीलए चेइए, सामी समोसढे, परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ।

सूत्र ४७ · जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नगर के गुणशील चैत्य में श्रमण भगवान महावीर पधारे। परिषद् निकली तथा उपासना करने लगी।

47. Jambu! Durıng that perıod of tıme Shraman Bhagavan Mahavır arrived in Rajagriha and stayed ın the Gunashıl Chaıtya A delegatıon of cıtızens came and commenced his worship.

सूत्र ४८ : तेणं कालेणं तेणं समएणं सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि विहरइ। कालीगमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया।

सूत्र ४८ · काल के उस भाग मे शुभा नामक देवी बलिचचा नाम की राजधानी मे शुभावतसक भवन मे शुंभ नामक सिंहासन पर आसीन थी। शेष वर्णन काली देवी के समान। वह भगवान के निकट नृत्यादि का प्रदर्शन कर लौट गई।

48. Durıng that perıod of tıme the goddess named Shumbha was sıtting on a throne named Shumbh ın the Vıman named Shumbhavatansak ın the capıtal cıty named Balıchancha. All other detaıls are the same as ın the case of goddess Kalı Goddess Shumbha appeared before Shraman Bhagavan Mahavır, performed dances, etc and returned

सूत्र ४९ : पुव्वभवपुच्छा। सावत्थी नयरी, कोट्ठए चेइए, जियसत्तू राया, सुंभे गाहावई, सुंभसिरी भारिया, सुंभा दारिया, सेसं जहा कालीए। णवरं–अद्धुट्ठाइं पलिओवमाइं ठिई।

एवं खलु निक्खेवओ अज्झयणस्स।

सूत्र ४९ . गौतम स्वामी के उसके पूर्व-भव के विषय मे प्रश्न करने पर भगवान ने बताया–श्रावस्ती नाम की नगरी में कोष्ठक नामक चैत्य था। वहाँ जितशत्रु नामक राजा था। शुभ नामक गाथापति वहाँ रहता था। उसकी पत्नी का नाम शुभश्री था तथा कन्या का नाम शुभा। शेष समस्त वृत्तान्त काली देवी के समान है। विशेष यह है कि शुभा देवी की आयु साढ़े तीन पल्योपम की है।

जम्बू ! प्रथम अध्ययन का यही अर्थ है।

49. When Gautam Swamı enquired about her earlıer ıncarnatıon Bhagavan saıd, "There was a Chaıtya named Koshthak ın the Shravastı cıty The ruler of that cıty was king Jıtshatru A cıtızen named Shumbh lıved there The name of hıs wıfe was Shumbhshrı and that of hıs daughter was Shumbha. The rest of the detaıls are exactly as those of goddess Kalı, the only dıfference beıng that the lıfe-span of goddess Shumbha ıs three Palyopam.

Jambu! Thıs ıs the meanıng of the first chapter.

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं॥

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त॥

|| END OF CHAPTER ONE ||

द्वितीय से पंचम अध्ययन
CHAPTERS 2-5

सूत्र ५० : एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणा। सावत्थीए। णवरं–माया पिता सरिसनामया।

सूत्र ५० . शेष चारों अध्ययन प्रथमानुसार ही हैं। नगरी का नाम प्रत्येक में श्रावस्ती है तथा माता-पिता के नाम समरूप हैं १ निशुभा–निशुंभ, निशुंभश्री; २. रंभा–रभ, रंभश्री; ३ निरंभा–निरंभ, निरंभश्री। और ४ मदना–मदन, मदनश्री।

50. These four chapters are same as the first one The name of the cıty was Shravastı ın each case The names of the parents also follow the same rule · 2 Nıshumbha—Nıshumbh and Nıshumbhshrı, 3. Rambha—Rambh and Rambhshrı, 4 Nırambha—Nırambh and Nırambhshrı, and 5 Madana—Madan and Madanashrı

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

॥ द्वितीय वर्ग समाप्त ॥

| | END OF SECOND SECTION | |

पढमं अज्झयणं : इला
प्रथम अध्ययन : इला
FIRST CHAPTER : ILA

सूत्र ५१ : एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं तइअस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे।

सूत्र ५१ तृतीय वर्ग के सम्बन्ध में जम्बू स्वामी के प्रश्न के उत्तर मे सुधर्मा स्वामी ने कहा– "हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने तीसरे वर्ग के चौपन अध्ययन बताये हैं।"

51. Answering the question of Jambu Swami regarding the third section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are fifty four chapters in the third section "

सूत्र ५२ : जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भते ! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

सूत्र ५२ : "भन्ते ! भगवान ने धर्मकथा के तृतीय वर्ग के चौपन अध्ययन कहे हैं तो प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?"

52. Bhante! what is the meaning of the first chapter therein?

सूत्र ५३ : एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए, सामी समोसढे, परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ।

तेणं कालेणं तेणं समएणं इला देवी धारणीए रायहाणीए इलावतंसए भवणे इलंसि सीहासणंसि, एवं कालीगमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया।

सूत्र ५३ : हे जम्बू ! राजगृह नगर के गुणशील चैत्य में भगवान महावीर विराजमान थे।

काल के उस भाग में इला देवी धरणी नामक राजधानी में इलावतंसक भवन में इला नाम के सिंहासन पर आसीन थी। शेष वर्णन काली देवी के समान।

53. Jambu! Shraman Bhagavan Mahavir was sitting in the Gunashil Chaitya in Rajagriha

During that period of time the goddess named Ila was sitting on a throne named Ila in the Viman named Ilavatansak in the capital city named Dharani All other details being same as in case of Goddess Kali

सूत्र ५४ : पुव्वभवपुच्छा। वाराणसीए णयरीए काममहावणे चेइए, इले गाहावई, इलसिरी भारिया, इला दारिया, सेस जहा कालीए। णवरं–धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ, सातिरेगं अद्धपलिओवमं ठिई। सेस तहेव।

सूत्र ५४ : उसके पूर्व-भव के विषय मे भगवान ने बताया–वाराणसी नगरी के बाहर काममहावन नामक चैत्य था। वाराणसी मे इला गाथापति रहता था। उसकी पत्नी इलाश्री थी और पुत्री इला। शेष वृत्तान्त काली देवी के समान। विशेष यह कि इला धरणेन्द्र की अग्रमहिषी है और उसकी आयु अर्द्ध पल्योपम से कुछ अधिक।

54. About her earlier incarnation Bhagavan said, "There was a Chaitya named Kamamahavan outside Varanasi city A citizen named Il lived there The name of his wife was Ilshri and that of his daughter was Ila The rest of the details are exactly as those of Goddess Kali, the only difference being that Ila is the principal-queen of Dharanendra, and her life-span is a little more than half Palyopam

सूत्र ५५ : एव खलु . . . निक्खेवओ पढमज्झयणस्स।

सूत्र ५५ प्रथम अध्ययन का भगवान ने यही अर्थ बताया है।

55. Jambu! This is the meaning of the first chapter

॥ पढमं अज्झयणं समत्तं ॥

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

॥ END OF CHAPTER ONE ॥

२-६ अज्झयणाणि
२-६ अध्ययन
CHAPTERS 2-6

सूत्र ५६ . एवं कमा सतेरा, सोयामणी, इंदा, घणा, विज्जुया वि; सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ।

सूत्र ५६ : इसी क्रम से सतेरा, सौदामिनी, इन्द्रा, घना और विद्युता के पाँच अध्ययन हैं। ये सभी धरणेन्द्र की अग्रमहिषियाँ है।

56. In this order the next five chapters are about the goddesses Satera, Saudamini, Indra, Ghana, and Vidyuta They all are the principal queens of Dharanendra

॥ २-६ अज्झयणाणि समत्तं ॥

॥ २-६ अध्ययन समाप्त ॥

| | END OF CHAPTER 2-6 | |

७-१२ अज्झयणाणि
७-१२ अध्ययन
CHAPTERS 7-12

सूत्र ५७ : एवं छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा।

सूत्र ५७ : इसी प्रकार बिना किसी विशेषता के छह अध्ययन वेणु देव की अग्रमहिषियों के हैं।

57. Similarly follow the next six chapters about the six principal queens of god Venu. There are no changes except the names.

॥ ७-१२ अज्झयणाणि समत्तं॥

॥ ७-१२ अध्ययन समाप्त ॥

| | END OF CHAPTER 7-12 | |

१३-५४ अज्झयणाणि
१३-५४ अध्ययन
CHAPTERS 13-54

सूत्र ५८ · एवं जाव घोसस्स वि एए चेव छ-छ अज्झयणा।

सूत्र ५८ · इसी प्रकार छह-छह अध्ययन हरि, अग्निशिखा पूर्ण, जलकान्त, अमितगति, वेलम्ब और घोष नाम के इन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं।

58. Similarly there are six chapters each for the principal queens of the Indras named Hari, Agnishikha, Purn, Jalakant, Amitgati, Velamb, and Ghosh

सूत्र ५९ : एवमेते दाहिणिल्लाण इंदाण चउप्पण्णं अज्झयणा भवंति। सव्वाओ वि वाणारसीए महाकामवणे चेइए

सूत्र ५९ · इस प्रकार दक्षिण दिशा के इन्द्रो के चौपन अध्ययन है। इन सबकी कथा वाराणसी के महाकामवन चैत्य से ही आरम्भ होती है।

भगवान ने तीसरे वर्ग का यही अर्थ कहा है।

59. Thus there are fifty four chapters about the Indras of the south All these stories start from the Mahakamavan of Varanasi

This is the meaning of the third section as told by Shraman Bhagavan Mahavir

॥ १३-५४ अज्झयणाणि समत्तं ॥

॥ १३-५४ अध्ययन समाप्त ॥

|| END OF CHAPTER 2-6 ||

॥ तइअं वग्गो समत्तो ॥

॥ तीसरा वर्ग समाप्त ॥

|| END OF THIRD SECTION ||

पढमं अज्झयणं : रूया
प्रथम अध्ययन : रूपा
FIRST CHAPTER : RUPA

सूत्र ६० : एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे।

सूत्र ६० : चतुर्थ वर्ग के सम्बन्ध मे जम्बू स्वामी के प्रश्न के उत्तर मे सुधर्मा स्वामी ने कहा–"जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने चौथे वर्ग के चौपन अध्ययन बताये हैं।"

60. Answering the question of Jambu Swami regarding the fourth section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are fifty four chapters in the fourth section."

सूत्र ६१ : पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ। एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ।

सूत्र ६२ : तेण कालेणं तेणं समएणं रूया देवी, रूयाणंदा रायहाणी, रूयगवडिंसए भवणे, रूयगंसि सीहासणंसि, जहा कालीए तहा; नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए; रूयगगाहावई, रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेसं तहेव। णवरं भूयाणंद-अग्गमहिसित्ताए उववाओ, देसूणं पलिओवमं ठिई।

निक्खेवओ।

सूत्र ६१-६२ : प्रथम अध्ययन का अर्थ पूछने पर सुधर्मा स्वामी ने बताया–जम्बू ! राजगृह नगर के गुणशील चैत्य मे जब श्रमण भगवान विराजमान थे उसी समय रूपा देवी, रूपानन्दा राजधानी में रूपकावतंसक भवन मे रूपक सिंहासन पर विराजमान थी। शेष समस्त वर्णन काली देवी के समान ही है। विशेषता यह है कि पूर्व-भव के कथानक में नगर का नाम चम्पा, चैत्य का नाम पूर्णभद्र, गाथापति का नाम रूपक, गाथापत्नी का नाम रूपकश्री और पुत्री का नाम रूपा था तथा मृत्यु के पश्चात् वह उत्तर दिशा के भूतानन्द नामक इन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में जन्मी है जिसकी आयु कुछ कम एक पल्योपम है। श्रमण भगवान ने प्रथम अध्ययन का यही अर्थ कहा है।

61-62. On asking about the meaning of the first chapter Sudharma Swami said—Jambu! Shraman Bhagavan Mahavir was sitting in the Gunashil

Chaitya in Rajagriha. At that time the goddess named Rupa was sitting on a throne named Rupak in the Viman named Rupakavatansak in the capital city named Rupananda All other details are the same as in the case of Goddess Kali The difference is that in the story of her earlier incarnation the name of the Chaitya was Purnabhadra outside Champa city, the name of the citizen was Rupak, the name of his wife was Rupakshri and that of his daughter was Rupa After her death she reincarnated as a principal queen of Bhutanand, an Indra in the north direction Her life-span is a little less than one Palyopam

This is the meaning of the first chapter

सूत्र ६३ एव सुरूया वि, रूयंसा वि, रूयगावई वि, रूयकंता वि रूयप्पभा वि।

सूत्र ६३ : इसी प्रकार २ से ६ तक पाँच अध्ययन भूतानन्द नामक इन्द्र की शेष पॉच अग्रमहिषियो के है, जिनके नाम हैं–सुरूपा, रूपाशा, रूपवती, रूपकान्ता और रूपप्रभा।

63. In this order the next five chapters are about the goddesses Surupa, Rupansha, Rupavati, Rupakanta, and Rupaprabha They all are the other five principal queens of Indra Bhutanand

सूत्र ६४ · एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इंदाणं भाणियव्वाओ जाव (वेणुदालिस्स हरिस्सहस्स अग्गिमाणवस्स विसिट्ठस्स, जलप्पभस्स अमितवाहणस्स पभंजणस्स) महाघोसस्स।

सूत्र ६४ : इसी प्रकार ७ से ५४ तक ४२ अध्ययन उत्तर दिशा के शेष आठ इन्द्रो की ६-६ अग्रमहिषियो के हैं, जिनके नाम हैं–वेणुदाली, हरिस्सह, अग्निमाणवक, विशिष्ट, जलप्रभ, अमितवाहन, प्रभजन, तथा महाघोष।

श्रमण भगवान ने चतुर्थ वर्ग का यही अर्थ कहा है।

64. Similarly there are forty eight chapters (7 - 54), six chapters each for the principal queens of remaining eight Indras of the north, named Venudali, Harissah, Agnimanavak, Vishishta, Jalaprabh, Amitvahan, Prabhanjan, and Mahaghosh

This is the meaning of the fourth section as told by Shraman Bhagavan Mahavir

॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥

॥ चतुर्थ वर्ग समाप्त ॥

॥ END OF FOURTH SECTION ॥

पढमं अज्झयणं : कमला
प्रथम अध्ययन : कमला
FIRST CHAPTER : KAMALA

सूत्र ६५ : एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

कमला कमलप्पभा चेव, उप्पला य सुदंसणा।
रूववई बहुरूवा, सुरूवा सुभगा वि य॥१॥
पुण्णा बहुपुत्तिया चेव, उत्तमा भारिया वि य।
पउमा वसुमती चेव, कणगा कणगप्पभा॥२॥
वडेंसा केउमइ चेव, वइरसेणा रइप्पिया।
रोहिणी नवमिया चेव, हिरी पुप्फवती ति य॥३॥
भुयगा भुयगवई चेव, महाकच्छाऽपराइया।
सुघोसा विमला चेव, सुस्सरा य सरस्सई॥४॥

सूत्र ६५ पचम वर्ग के सम्बन्ध मे जम्बू स्वामी के प्रश्न के उत्तर मे सुधर्मा स्वामी ने बताया– "हे जम्बू ! श्रमण भगवान ने पॉचवे वर्ग के बत्तीस अध्ययन बताये हैं। वे जिन देवियो के विषय में हैं उनके नाम हैं–(१) कमला, (२) कमलप्रभा, (३) उत्पला, (४) सुदर्शना, (५) रूपवती, (६) बहुरूपा, (७) सुरूपा, (८) सुभगा, (९) पूर्णा, (१०) बहुपुत्रिका, (११) उत्तमा, (१२) भारिका, (१३) पद्मा, (१४) वसुमती, (१५) कनका, (१६) कनकप्रभा, (१७) अवतंसा, (१८) केतुमती, (१९) वज्रसेना, (२०) रतिप्रिया, (२१) रोहिणी, (२२) नवमिका, (२३) ह्री, (२४) पुष्पवती, (२५) भुजगा, (२६) भुजगवती, (२७) महाकच्छा, (२८) अपराजिता, (२९) सुघोषा, (३०) विमला, (३१) सुस्वरा, (३२) सरस्वती।"

65. Answering the question of Jambu Swami regarding the fifth section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are thirty two chapters in the fifth section. The names of the goddesses discussed in these are—(1) Kamala, (2) Kamalprabha, (3) Utpala,

(4) Sudarshana, (5) Rupavatı, (6) Bahurupa, (7) Surupa, (8) Subhaga, (9) Purna, (10) Bahuputrika, (11) Uttama, (12) Bharıka, (13) Padma, (14) Vasumatı, (15) Kanaka, (16) Kanakprabha, (17) Avatamsa, (18) Ketumatı, (19) Vajrasena, (20) Ratıpriya, (21) Rohını, (22) Navamıka, (23) Hrı, (24) Pushpavatı, (25) Bhujaga, (26) Bhujagvati, (27) Mahakaccha, (28) Aparajıta, (29) Sughosha, (30) Vimala, (31) Suswara, and (32) Saraswatı"

सूत्र ६६ · एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ।

सूत्र ६७ : तेण कालेणं तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए तहेव। नवरं–पुव्वभवे नागपुरे नयरे, सहसंबवणे उज्जाणे, कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स अरहओ अंतिए निक्खंता, कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी, अद्धपलिओवमं ठिई।

सूत्र ६६-६७ · जम्बू स्वामी के प्रश्न के उत्तर में सुधर्मा स्वामी ने प्रथम अध्ययन के सम्बन्ध मे बताया–"जम्बू ! काल के उस भाग मे राजगृह नगर मे श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे। उसी समय कमला नाम की देवी, कमला नाम की राजधानी में कमलावतंसक भवन में, कमल नाम के सिंहासन पर आसीन थी। शेष समस्त घटना काली देवी के कथानक के समान ही है। विशेषता यह है कि पूर्व-भव के वर्णन में नगर का नाम नागपुर, चैत्य का नाम सहस्राम्रवन, गाथापति का नाम कमल, गाथापत्नी का नाम कमलश्री और पुत्री का नाम कमला था। मृत्यु-पर्यन्त कमला काल नाम के पिशाचेन्द्र की अग्रमहिषी के रूप मे जन्मी और उसकी आयु अर्ध पल्योपम की है।

66-67. On askıng about the meanıng of the first chapter Sudharma Swamı saıd—Jambu! Shraman Bhagavan Mahavır was sıttıng ın the Gunashıl Chaıtya ın Rajagrıha At that tıme the goddess named Kamala was sıttıng on a throne named Kamal ın the Vıman named Kamalavatansak ın the capital cıty named Kamala All other detaıls are the same as ın the case of Goddess Kalı The dıfference ıs that ın the story of her earlıer ıncarnatıon the name of the Chaıtya was Sahasramravan outsıde Nagapur cıty, the name of the cıtızen was Kamal, the name of hıs wıfe was Kamalshrı and that of his daughter was Kamala After her death she reıncarnated as a prıncıpal queen of Kaal, an Indra of the Pıshach demigods Her life-span is half Palyopam

सूत्र ६८ : एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ। सव्वाओ नागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे, माया-पिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं।

सूत्र ६८ : इसी प्रकार शेष इकत्तीस अध्ययन दक्षिण दिशा के वाणव्यन्तर देवों की अग्रमहिषियों के सम्बन्ध में हैं। कमलप्रभा आदि सभी ३१ देवियों ने पूर्व-भव में नागपुर में जन्म लिया था, सहस्राम्रवन में दीक्षा ली थी, उनके माता-पिता के नाम समरूप थे और उनकी आयु अर्ध पल्योपम है।

68. Similarly the remaining thirty one chapters are about the principal queens of the Indras of the Vanavyantar gods (a class of demigods) of the south. All these thirty two goddesses in their earlier incarnations were born in Nagapur, initiated in the Sahasramravan garden, the names of their parents followed the same pattern, and their life spans are half palyopam

|| पंचमो वग्गो समत्तो ||

|| पंचम वर्ग समाप्त ||

| | END OF FIFTH SECTION | |

१-३२ अध्ययन
CHAPTERS 1-32

सूत्र ६९ : छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्गसरिसो। णवरं महाकालिंदाणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ।

पुव्वभवे सागेयनयरे, उत्तरकुरु-उज्जाणे, माया-पिया धूया सरिसणामया। सेसं तं चेव।

सूत्र ६९ · छठा वर्ग पाँचवे वर्ग के समान ही है। विशेषता यह है कि इसमें उत्तर दिशा के आठ इन्द्रों की बत्तीस अग्रमहिषियो के वर्णन हैं। ये सभी अपने पूर्व-भव मे साकेत नगर में उत्पन्न हुई तथा उत्तरकुरु नामक उद्यान मे दीक्षित हुईं। इन सभी के माता-पिताओं के नाम इसके नामों के समरूप थे। शेष सभी वर्णन पूर्ववत् है।

69. The sixth section is just like the fifth section the only difference being that it discusses the thirty two principal queens of the eight Indras of the north In their earlier incarnations they all were born in the Saket city, were initiated in the Uttarkuru garden, and the names of their parents followed the same pattern. All other details are as already mentioned

॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥

॥ षष्ठ वर्ग समाप्त ॥

॥ END OF SIXTH SECTION ॥

१-४ अध्ययन

CHAPTERS 1-4

सूत्र ७० : एवं खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा।

सूत्र ७० : जम्बू स्वामी के सप्तम वर्ग के विषय मे प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने बताया–"हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने सातवे वर्ग के चार अध्ययन बताये हैं–(१) सूर्यप्रभा, (२) आतपा, (३) अर्चिमाली, और (४) प्रभंकरा।"

70. Answering the question of Jambu Swami regarding the seventh section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are four chapters in the seventh section—(1) Suryaprabha, (2) Atapa, (3) Archimali, and (4) Prabhankara"

सूत्र ७१ : एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ।

सूत्र ७१ प्रथम अध्ययन के विषय में प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने कहा–"हे जम्बू ! काल के उस भाग में श्रमण भगवान महावीर राजगृह में विराजमान थे तथा लोग उनकी उपासना कर रहे थे।"

71. On asking about the meaning of the first chapter Sudharma Swami said—Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir was in Rajagriha and people were doing his worship

सूत्र ७२ : तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए तहा, णवरं पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया। सूरस्स अग्गमहिसी, ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं। सेसं जहा कालीए। एवं सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए।

सूत्र ७२ : काल के उस भाग में सूर्यप्रभा देवी सूर्य विमान में सूर्यप्रभ सिंहासन पर आसीन थी। शेष समस्त विवरण काली देवी के समान ही है। विशेषता यह है कि इस देवी के पूर्व-भव के वर्णन में नगर का नाम–अरक्खुरी नगरी, गाथापति का नाम सूर्याभ, गाथापत्नी का नाम सूर्यश्री और पुत्री का नाम सूर्यप्रभा था। मृत्यु के पश्चात् वह सूर्य नाम के ज्योतिष्क इन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में जन्मी। उसकी आयु पाँच सौ वर्ष अधिक आधे पल्योपम की है।

इसी प्रकार शेष तीनों देवियों का वृत्तान्त भी अरक्खुरी नगरी में आरम्भ होता है और समान है।

72. During that period of time the goddess named Suryaprabha was sitting on a throne named Suryaprabh in the Viman named Surya. All other details are same as in the case of Goddess Kali The difference is that in the story of her earlier incarnation the name of the city was Arakkhuri, the name of the citizen was Suryaabh, the name of his wife was Suryashri and that of his daughter was Suryaprabha After her death she reincarnated as a principal queen of Surya, a Jyotishka Indra (a class of gods who are radiant) Her life-span is half Palyopam and five hundred years

The details about the remaining three goddesses are also same and start in the Arakkhuri city

॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥

॥ सातवाँ वर्ग समाप्त ॥

|| **END OF SEVENTH SECTION** ||

१-४ अध्ययन
CHAPTERS 1-4

सूत्र ७३ : एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—(१) चंदप्पहा, (२) दोसिणाभा, (३) अच्चिमाली, (४) पभंकरा।

सूत्र ७३ : जम्बू स्वामी के आठवें वर्ग के विषय में प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने बताया—"हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने आठवें वर्ग के चार अध्ययन बताये हैं—(१) चन्द्रप्रभा, (२) ज्योत्स्नाभा, (३) अर्चिमाली, और (४) प्रभंकरा।"

73. Answering the question of Jambu Swami regarding the eighth section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are four chapters in the eighth section—(1) Chandraprabha, (2) Jyotsanabha, (3) Archimali, and (4) Prabhankara."

सूत्र ७४ : एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं, जाव परिसा पज्जुवासइ।

सूत्र ७४ : प्रथम अध्ययन के विषय में प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने कहा—"हे जम्बू ! काल के उस भाग मे श्रमण भगवान महावीर राजगृह में विराजमान थे तथा लोग उनकी उपासना में लगे थे।"

74. On asking about the meaning of the first chapter Sudharma Swami said—Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir was in Rajagriha and people were doing his worship.

सूत्र ७५ : तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए। णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए चंदवडेंसए उज्जाणे, चंदप्पभ गाहावई, चंदसिरी भारिया, चंदप्पभा दारिया, चंदस्स अग्गमहिसी, ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससाहस्सेहिं अब्भहियं।

एवं सेसाओ वि महुराए णयरी, माया-पियरो वि धूया-सरिसमाणा।

सूत्र ७५ : काल के उस भाग में चन्द्रप्रभा देवी चन्द्रप्रभ विमान मे चन्द्रप्रभा सिंहासन पर आसीन थी। शेष समस्त विवरण काली देवी के समान ही है। विशेषता यह है कि पूर्व-भव के वर्णन

में नगर का नाम मथुरा, उद्यान का नाम चन्द्रावतंसक, गाथापति का नाम चन्द्रप्रभ, गाथापत्नी का नाम चन्द्रश्री और पुत्री का नाम चन्द्रप्रभा था। मृत्यु के पश्चात् वह चन्द्र नाम के ज्योतिष्क इन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में जन्मी। उसकी आयु पचास हजार वर्ष अधिक अर्ध पल्योपम की है। शेष तीनों देवियों का वृत्तान्त भी मथुरा नगरी से आरम्भ होता है और समान है।

75. During that period of time the goddess named Chandraprabha was sitting on a throne named Chandraprabha in the Viman named Chandraprabh All other details are the same as in the case of Goddess Kali The difference is that in the story of her earlier incarnation the name of the city was Mathura, the name of the garden was Chandravatansak, the name of the citizen was Chandraprabh, the name of his wife was Chandrashri and that of his daughter was Chandraprabha. After her death she reincarnated as a principal queen of Chandra, a Jyotishka Indra Her life-span is half Palyopam and fifty thousand years The details about the remaining three goddesses are also same and start in the Mathura city

|| अट्ठमो वग्गो समत्तो ||

|| आठवाँ वर्ग समाप्त ||

| | END OF EIGHTH SECTION | |

१-८ अध्ययन
CHAPTERS 1-8

सूत्र ७६ : एवं खलु जम्बू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–(१) पउमा, (२) सिवा, (३) सती, (४) अंजू, (५) रोहिणी, (६) णवमिया, (७) अचला, (८) अच्छरा।

सूत्र ७६ जम्बू स्वामी के आठवे वर्ग के विषय मे प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने बताया– "हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने नवे वर्ग के आठ अध्ययन बताये है–(१) पद्मा, (२) शिवा, (३) सती, (४) अजू, (५) रोहिणी, (६) नवमिका, (७) अचला, और (८) अप्सरा।

76. Answering the question of Jambu Swami regarding the ninth section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are eight chapters in the ninth section—(1) Padma, (2) Shiva, (3) Sati, (4) Anju, (5) Rohini, (6) Navamika, (7) Achala, and (8) Apsara."

सूत्र ७७ · एव खलु जम्बू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे समोसरणं। जाव परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेण तेण समएण पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए, पउमंसि सीहासणसि, जहा कालीए।

एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा। नवरं–सावत्थीए दो जणीओ, हत्थिणाउरे दो जणीओ, कपिल्लपुरे दो जणीओ, सागेयनयरे दो जणीओ, पउमे पियरो, विजया मायराओ। सव्वाओ वि पासस्स अतिए पव्वइयाओ, सक्कस्स अग्गमहिसीओ, ठिई सत्त पलिओवमाइं, महाविदेहे वासे अत काहिंति।

सूत्र ७७ · प्रथम अध्ययन के विषय मे पूछने पर सुधर्मा स्वामी ने कहा–"हे जम्बू ! काल के उस भाग मे श्रमण भगवान महावीर राजगृह मे विराजमान थे तथा लोग उनकी उपासना में लगे थे।"

उस समय पद्मावती देवी सौधर्म कल्प मे पद्मावतंसक विमान में, सुधर्मा सभा में पद्म नाम के सिहासन पर आसीन थी। शेष समस्त विवरण काली देवी के समान ही है।

इस सभी आठों देवियों का वर्णन भी काली देवी के समान ही है। विशेषता यह है कि पूर्व-भव के वर्णन में इनमें से दो-दो श्रावस्ती, हस्तिनापुर, काम्पिल्यपुर और साकेत नगरों में जन्मी थी। सभी के माता-पिता के नाम विजया और पद्म थे। सभी अर्हत् पार्श्व के पास दीक्षित हुई थीं। सभी शक्रेन्द्र की अग्रमहिषियाँ बनीं और सभी की आयु सात पल्योपम की है।

77. On asking about the meaning of the first chapter Sudharma Swami said—Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir was in Rajagriha and people were doing his worship

At that time the goddess named Padmavati was sitting on a throne named Padma in the Sudharma assembly in the Viman named Padmavatansak in the Saudharm Kalp (dimension of gods). All other details are the same as in the case of Goddess Kali

The details about all these eight goddesses are the same as those concerning goddess Kali The difference is that in the stories of their earlier incarnations, two each were born in the cities—Shravasti, Hastinapur, Kampilyapur, and Saket The names of the parents of all these were Vijaya and Padma They all were initiated by Arhat Parshva They all reincarnated as the principal queens of Shakrendra and their life-spans are seven Palyopams each

॥ नवमो वग्गो समत्तो ॥

॥ नवम वर्ग समाप्त॥

॥ END OF NINTH SECTION ॥

१-८ अध्ययन
CHAPTERS 1-8

सूत्र ७८ : एवं खलु जबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–

कण्हा य कण्हराई, रामा तह रामरक्खिया वसु या।

वसुगुत्ता वसुमित्ता, वसुंधरा चेव ईसाणे॥१॥

सूत्र ७८ जम्बू स्वामी के दसवे वर्ग के विषय में प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने बताया– "जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने दसवे वर्ग के आठ अध्ययन बताये हैं–(१) कृष्णा, (२) कृष्णाराजि, (३) रामा, (४) रामरक्षिता, (५) वसु, (६) वसुगुप्ता, (७) वसुमित्रा, और (८) वसुन्धरा।"

78. Answering the question of Jambu Swami regarding the tenth section Sudharma Swami said, "Jambu! According to Shraman Bhagavan Mahavir there are eight chapters in the tenth section—(1) Krishna, (2) Krishnaraji, (3) Rama, (4) Ramarakshita, (5) Vasu, (6) Vasugupta, (7) Vasumitra, and (8) Vasundhara "

सूत्र ७९ एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे समोसरणं, जाव परिसा पज्जुवासइ।

तेणं कालेण तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, कण्हंसि सीहासणसि, सेस जहा कालीए।

एवं अट्ठ वि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा। णवरं–पुव्वभवे वाणारसीए णयरीए दो जणीओ, रायगिहे णयरे दो जणीओ, सावत्थीए णयरीए दो जणीओ, कोसबीए नयरीए दो जणीओ। रामे पिया, धम्मा माया। सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अतिए पव्वइयाओ। पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए, ईसाणस्स अग्गमहिसीओ, ठिई णव पलिओवमाइं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति, बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाणं अत काहिंति।

एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ दसमवग्गस्स।

सूत्र ७९ · प्रथम अध्ययन के विषय में प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी ने बताया–"हे जम्बू ! काल के उस भाग मे श्रमण भगवान महावीर राजगृह नगर मे विराजमान थे और लोग उनकी उपासना में लगे थे।"

उसी समय कृष्णा देवी ईशान कल्प मे कृष्णावतसक विमान मे, सुधर्मा सभा में कृष्ण सिहासन पर आसीन थी। शेष समस्त विवरण काली देवी के समान ही है। आठों देवियों के वर्णन भी काली के समान ही हैं। विशेषता यह है कि पूर्व-भव में इनमें से दो-दो बनारस, राजगृह, श्रावस्ती और कौशाम्बी में जन्मी थीं। सभी के माता-पिता के नाम धर्मा और राम थे। सभी अर्हत् पार्श्व के निकट दीक्षित हुई थी। सभी आर्या पुष्पचूला की शिष्याएँ बनी थीं। सभी ईशानेन्द्र की अग्रमहिषियॉ बनीं और सभी की आयु नौ पल्योपम है।

79. On asking about the meaning of the first chapter Sudharma Swami said—Jambu! During that period of time Shraman Bhagavan Mahavir was in Rajagriha and people were doing his worship.

At that time the goddess named Krishna was sitting on a throne named Krishna in the Sudharma assembly in the Viman named Krishnavatansak in the Ishan Kalp (dimension of gods). The other details about all these eight goddesses are the same as those conerning goddess Kali The difference is that in the stories of their earlier incarnations two each were born in the cities—Varanasi, Rajagriha, Shravasti, and Kaushambi The names of the parents of all these were Dharma and Rama They all were initiated by Arhat Parshva and became disciples of Arya Pushpachula They all reincarnated as the principal queens of Ishanendra and their life-spans are nine Palyopams each

॥ दसमो वग्गो समत्तो ॥

॥ दसवाँ वर्ग समाप्त ॥

|| END OF TENTH SECTION ||

उपसंहार

सूत्र ८० : एव खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेण पुरिसुत्तमेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते।

सूत्र ८० · हे जम्बू ! श्रमण भगवान महावीर ने धर्मकथा नामक इस द्वितीय श्रुतस्कन्ध का यह अर्थ कहा है।

CONCLUSION

80. Jambu This is the meaning of the second part known as Dharmakatha as told by Shraman Bhagavan Mahavir

॥ धम्मकहासुयक्खंधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं ॥

॥ द्वितीय श्रुतस्कन्ध-धर्मकथा समाप्त ॥

| | END OF THE SECOND PART - DHARMAKATHA | |

॥ णायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

॥ ज्ञाताधर्मकथाग समाप्त ॥

| | END OF JNATA DHARMAKATHA | |

उपसंहार

द्वितीय श्रुतस्कन्ध में मूलत· एक ही विषय की चर्चा है। मोक्षमार्ग पर आचार-शैथिल्य एक बाधा स्वरूप है। पुण्योपार्जन मोक्ष की ओर नही ऋद्धि की ओर ले जाता है। किन्तु पापकर्मों के क्षय के कारण यदि आत्मा ने अपेक्षाकृत विशुद्धि प्राप्त करली है तो अगले भव मे सम्पूर्ण कर्मक्षय कर मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

CONCLUSION

The second part has just one theme On the spiritual path laxness in conduct is a hurdle Acquiring good karmas does not lead to liberation but to the acquisition of power and glory However, if the soul has shed bad karmas and attained comparatively greater purity it can shed all the remaining Karmas and attain liberation during the next birth

परिशिष्ट

पज्जत्तीए–पर्याप्ति–शरीर, अग, अथवा योग्यता का सम्पूर्ण विकास, किसी कार्य को करने की सम्पूर्ण क्षमता का होना। मनुष्य से सबधी छह कहीं गई हैं–१ आहार पर्याप्ति, २ शरीर पर्याप्ति, ३ इन्द्रिय पर्याप्ति, ४ श्वासोच्छवास पर्याप्ति, ५ भाषा पर्याप्ति, तथा ६ मन पर्याप्ति। मनुष्यो मे पर्याप्तियाँ क्रमश विकसित होती है और इस विकास-क्रम मे यथेष्ट समय लगता है। देवो में ये पर्याप्तियाँ होती तो क्रमश ही हैं किन्तु समय का अन्तराल क्षण मात्र ही होता है। अतिम दोनो पर्याप्तियाँ देवो मे एक साथ होती है अत देवो मे पर्याप्तियो की संख्या पॉच कही है।

श्रावस्ती–अठारहवी शती के जैन यात्रियो के अनुसार अयोध्या के निकट कोना ग्राम ही कभी श्रावस्ती था। एक यात्री ने श्रावस्ती का दरियाबाद से साठ मील होना बताया है। वर्तमान मे अयोध्या से उत्तर मे बलराम स्टेशन से बारह मील अकोना ग्राम है। वही प्राचीन कोना है। इससे पाच मील दूर सहेत-महेत का किला है। आजकल इसे ही श्रावस्ती माना जाता है। तीर्थकल्प मे लिखा है कि श्रावस्ती का वर्तमान नाम महेठी है। महेठी सहेत-महेत के निकट है। ये खंडहर गोडा जिले मे है और कुछ राप्ती नदी के दक्षिण मे हे जो बहराइच जिले में पडते हैं। कनिघम ने भी सहेत-महेत को ही श्रावस्ती माना है ।

साकेतपुरी–प्राचीन कौशल जनपद की राजधानी। इसका प्रचलित नाम अयोध्या भी है। आचार्य हेमचन्द्र ने इसका एक अन्य नाम कोशला भी बताया है।

कौशाम्बी–जिनप्रभ सूरि ने यमुना के किनारे पर बसी कौशाम्बी नगरी का उल्लेख किया है। यमुना के किनारे वर्तमान में कोसमई तथा कोसमखिराज नाम से दो गांव हैं। उन्हें ही कौशाम्बी कहा जाता है। फाह्यान ने भी कौशाम्बी को यही स्थित होना बताया है। अठारहवी सदी के जैन यात्रियो ने इसे मउ ग्राम-कौशाम्बी लिखा है। मउ ग्राम व कौशाम्बी मे लगभग अठारह मील की दूरी है। मऊ नाम के अनेक ग्राम है। पर यह सालक-मउ है तथा शाहजादपुर से छ मील दक्षिण में है। इस हिसाब से यह कोसम इलाहाबाद से लगभग अस्सी मील दूर है।

APPENDIX

Paryapti—Fully developed organs or faculties or capacities or abilities of living beings In case of human beings they are said to be six in number—1 Intake and digestion of food, 2 Anatomy, 3 Sense organs, 4 Breathing, 5 Speech, 6 Mind

The complete development of all these six is a gradual process in case of human beings and it takes a considerable time to reach perfection However, in case of gods although the process is gradual but the time taken is only seconds Also, the last two Paryaptis come together, as such, for gods only five Paryaptis have been mentioned

Shravasti—According to the eighteenth-century Jain pilgrims the Kona village near Ayodhya is the Shravasti of the past One pilgrim states that Shravasti is about sixty miles distant from Dariyabad At present there is a village named Akona north of Ayodhya and 12 miles away from Balram railway station, this is the ancient Kona Five miles away from Akona are the ruins of Sahet-Mahet fort Nowadays this is believed to be Shravasti It is mentioned in Tirthakalp that the modern name of Shravasti is Mahethi It appears that Sahet-Mahet is this Mahethi Some of these ruins are in district Gonda and others are south of Rapti river in district Baharaich Cunningham has also accepted Sahet-Mahet as Shravasti

Saketpuri—This was the Capital city of ancient Koshal state Its popular name is Ayodhya According to Acharya Hemchandra it was also known as Koshala

Kaushambi—Jinprabhsuri has mentioned that Kaushambi was located on the banks of the river Jamuna At present there are two villages on the banks of the Jamuna—Kosmai and Kosamkhiraj—that are believed to be the ancient Kaushambi Fahyan also indicates that Kaushambi was somewhere in the same location The eighteenth century Jain pilgrims mention it as Maugram-Kaushambi The distance between Maugram and Kaushambi is said to be 18 miles There are many villages named Mau but this particular one is Salak-Mau and is 6 miles south of Shahajadpur Accordingly Kosam (Kaushambi) is about 80 miles away from Allahabad

■■